अग्निशिखा Vol. 31 2000-1

Arya Samaj Foundation

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Stock Verification-2021

Stock Verification-2021

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

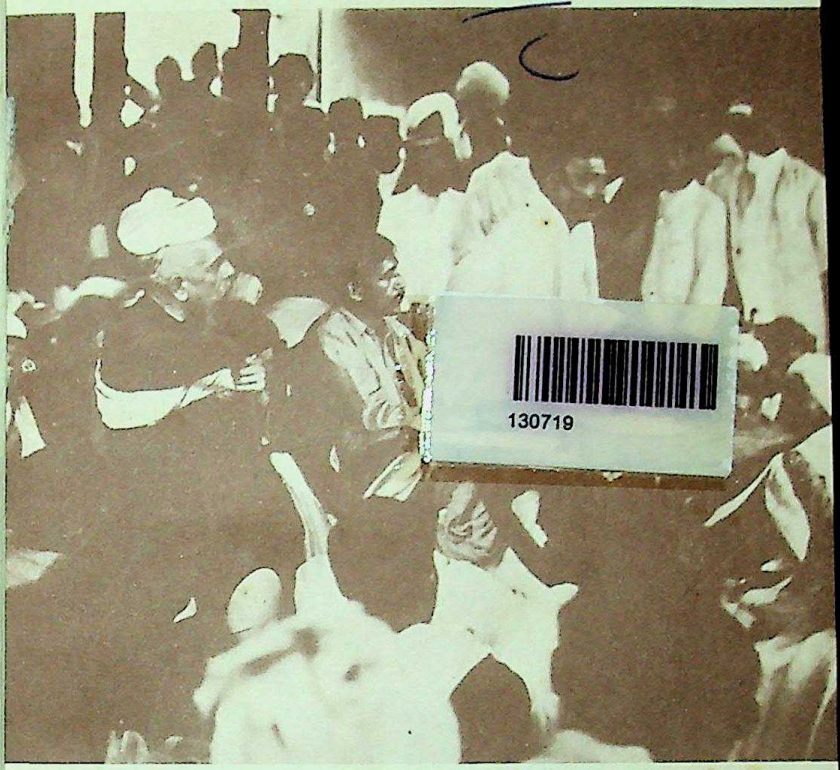

130719

अग्निशिखा

अगस्त २००० — २००१ अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा अगस्त २००० वर्ष ३१, अंक १, पूर्णांक ३६१

विषय-सूची

संदेश	श्रीमां	१
'सम्पादकीय' : सार्थकता	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		६
दुर्गा स्तोत्र	श्रीअरविन्द	११
प्रकाश की किरणें	श्रीमां	१४
माताजी के साथ भारत के बारे में कुछ प्रश्नोत्तर		२०
हमें क्या करना चाहिये	श्रीअरविन्द	२४
देश-भक्ति की भावनाएं	श्रीमां	२६
आत्मोत्सर्ग	श्रीअरविन्द	२७
मानव और अतिमानव	श्रीअरविन्द	२८
सोसायटी समाचार		३०

मुखपृष्ठ के चित्र का वर्णन

सूरत में राष्ट्रवादी और नरमदल में फूट के बाद श्रीअरविन्द राष्ट्रीय सभा का सभापतित्व करते हुए दिसम्बर १९०७ में। इस चित्र में उनकी दाईं ओर खापरडे हैं और बाईं ओर तिलक बोल रहे हैं।

"मैंचेस्टर गार्जियन" के विशेष संवाददाता हेनरी नेविनसन ने इस दृश्य का बड़े अच्छे शब्दों में वर्णन किया है—"गंभीर और मौन श्रीअरविन्द घोष ने एक भी शब्द बोले बिना अध्यक्ष-पद ग्रहण किया और कुर्सी पर स्थिर-शांत बैठे रहे, उनकी आंखें मानों सुदूर भविष्य की ओर टिकी हुई थीं। स्पष्ट, छोटे-छोटे वाक्यों में श्री तिलक वाक्पटुता या आवेश के बिना तबतक बोलते रहे जबतक तारे न चमकने लगे और किसी ने एक लालटेन जला कर उनके पास न रख दी।"

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अग्निशिखा सितम्बर २००० वर्ष २१, अंक ९, पूर्णांक ३६२

विषय-सूची

संदेश	श्रीअरविन्द	१
'सम्पादकीय' : चैम्पियन	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		५
प्रकाश की किरणें	श्रीमां	१०
असाधारण क्या है ?	'श्रीमातृवाणी' खण्ड ७ से	२१
माताजी के साथ एक युवा साधक का पत्र-व्यवहार		२५
सोसायटी समाचार		३१

मुखपृष्ठ के चित्र का श्रीमां द्वारा दिया गया आध्यात्मिक अर्थ

प्रफुल्लता

प्रकृति की आह्लादपूर्ण मुस्कान

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

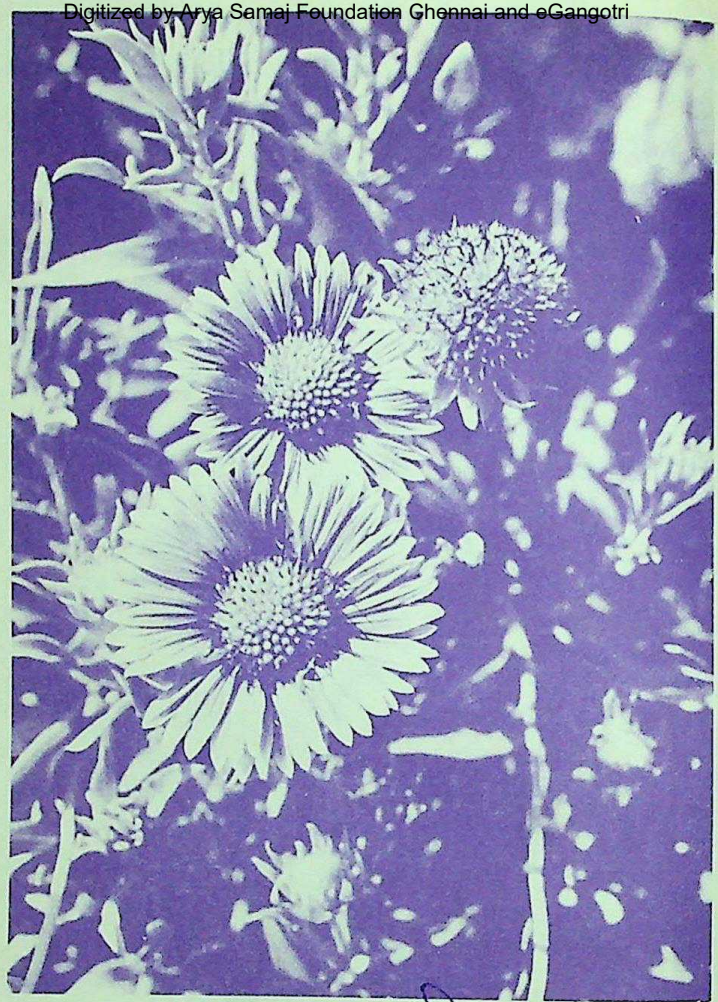

25/9/2000

अग्निशिखा

सितम्बर २००० अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अग्निशिखा अक्तूबर २००० वर्ष ३१, अंक ३, पूर्णांक ३६३

विषय-सूची

संदेश	श्रीअरविन्द	१
'सम्पादकीय' : हैरी गोल्ड	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		५
प्रकाश की किरणें	श्रीमां	८
स्वार्थ और अहंकार	श्रीमां	१५
प्रगति और पूर्णता	'श्रीमातृवाणी' खण्ड ४ से	१८
सभी रास्ते भगवान् की ओर ले जाते हैं	श्रीमां	२३
स्त्रियों की समस्या	श्रीमां	२५
शिष्ट व्यवहार	श्रीमां	२८
अधिक सचेतन बनो	श्रीमां	३०
सोसायटी समाचार		३२

मुखपृष्ठ के चित्र का श्रीमां द्वारा दिया गया आध्यात्मिक अर्थ

सफल भविष्य

प्रतिज्ञाओं तथा सुखद आश्चर्य से भरा हुआ

हिन्दी—जाफरान

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

31
3

अग्निशिखा

अक्तूबर २००० अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा नवम्बर २००० वर्ष ३१, अंक ४, पूर्णांक ३६४

विषय-सूची

दो संदेश	श्रीअरविन्द	१
'सम्पादकीय' : हैरी गोल्ड (२)	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		४
प्रकाश की किरणें	श्रीमां	७
कर्मयोग की पूर्णता	श्रीअरविन्द	१३
वर्ष मत गंवाओ	श्रीमां	१७
माताजी के साथ एक युवा साधक का पत्र-व्यवहार	श्रीमां	१९
'ऋषिवर बोले' : शुभ घड़ी		२४
कठिनाई में	श्रीमां	२७
उचित वृत्ति	श्रीमां	२९
'धम्मपद' से	श्रीमां	३१
सोसायटी समाचार		३३

मुखपृष्ठ का चित्र

पांडिचेरी में श्रीअरविन्द

खड़े हुए (बायें से दायें) : नगेन, द्यूमौं, मणि (सुरेश चक्रवर्ती)

बैठे हुए (बायें से दायें) : विजय नाग, श्रीअरविन्द, नलिनी कान्त गुप्त

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LIBRARY
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARIDWAR

अग्निशिखा

नवम्बर २००० अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संदेश	श्रीमां	१
'संपादकीय' : वामन के कदम	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		४
अनोखा अतिथि (एक प्रतीकात्मक कहानी)	अनुबेन	७
रोग से मुक्ति के उपाय	श्रीअरविन्द	१७
एकाग्रता	श्रीमां	२१
स्वर्णिम उपहार	अनुबेन	२३
संग्रह और वितरण		२५
आलस्य तथा बीमारी से बचो	श्रीमातृवाणी खण्ड ५ से	२६
तुम्हारे अन्दर का मन्दिर		३०
सोसायटी समाचार		३१

मुखपृष्ठ का चित्र

श्रीअरविन्द की महासमाधि

५ दिसम्बर १९५०

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

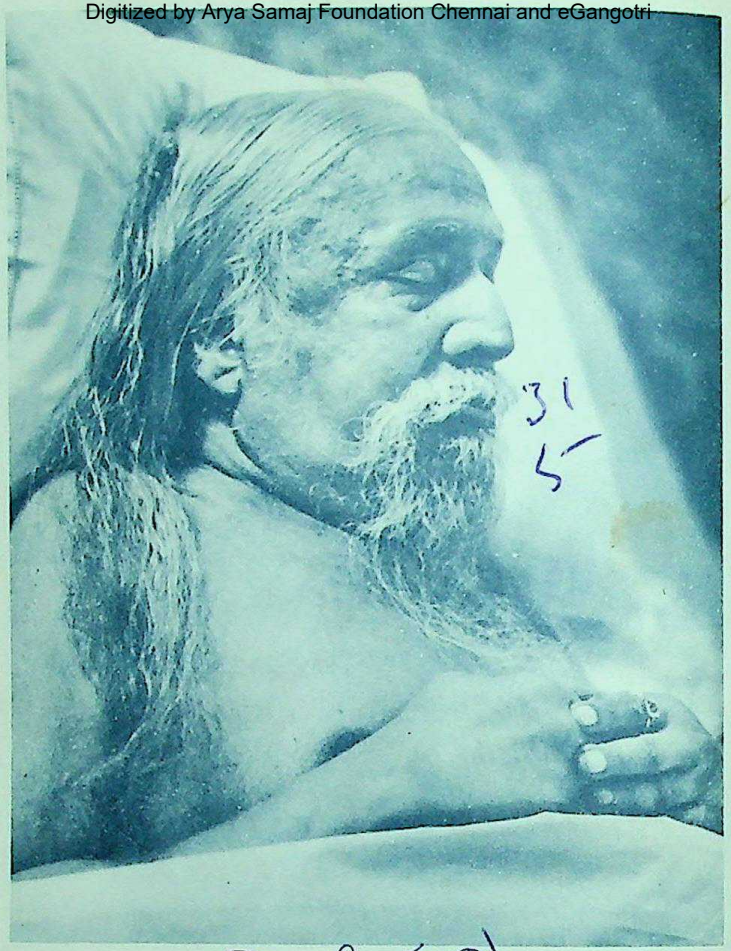

27/3/2001
LIBRARY
Vishwavidyalaya
WAR

अग्निशिखा

दिसम्बर २००० अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अग्निशिखा जनवरी २००१ वर्ष ३१, अंक ६, पूर्णांक ३६६

विषय-सूची

संदेश	श्रीमां	१
'सम्पादकीय' : शुभ मुहूर्त	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		६
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष	नीरदवरण	१०
अप्रत्याशित		११
अतिमानव	श्रीमां	२७
आश्रम का उद्देश्य	'श्रीमातृवाणी' खण्ड १३ से	२९
८ मार्च, १९५७ की वार्ता	'श्रीमातृवाणी' खण्ड ९ से	३१

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

31
6

27/3/2001

LIBRARY
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARDWAR

अग्निशिखा

जनवरी २००१ अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संदेश	श्रीअरविन्द	१
'सम्पादकीय' : ॐ का प्रभाव	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		६
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष	नीरदवरण	१०
स्वास्थ्य-लाभ		
सोसायटी समाचार		३१

मुखपृष्ठ का चित्र

श्रीमां रवीन्द्रनाथ ठाकुर के साथ

(१९१९ में जापान में माताजी टैगोर से मिलीं और वे दोनों एक ही होटल में कुछ समय तक रहे। टैगोर ने उनसे शान्तिनिकेतन का कार्य-भार संभालने का निवेदन किया, लेकिन माताजी ने स्वीकार नहीं किया, क्योंकि वे जानती थीं कि उनकी नियति कहीं और निश्चित है।)

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARIDWAR

अग्निशिखा

फरवरी २००१ अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा मार्च २००१ वर्ष ३१, अंक ८, पूर्णांक ३६८

विषय-सूची

दो संदेश	श्रीअरविन्द	१
'सम्पादकीय' : प्रत्याशा ...	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		६
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष	नीरदवरण	१०
प्रभु का सदन		
सच्ची देन	'श्रीमातृवाणी' खण्ड ८ से	२०
अपने अन्दर देखो ...	श्रीमां	२५
प्रत्येक सत्ता कुछ चाहती है	'श्रीमातृवाणी' खण्ड ७ से	२८

मुखपृष्ठ के चित्र का श्रीमां द्वारा दिया गया आध्यात्मिक अर्थ

स्वर्ग-विहग

ऐसा विहग जो कभी उड़कर चला नहीं जाता

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

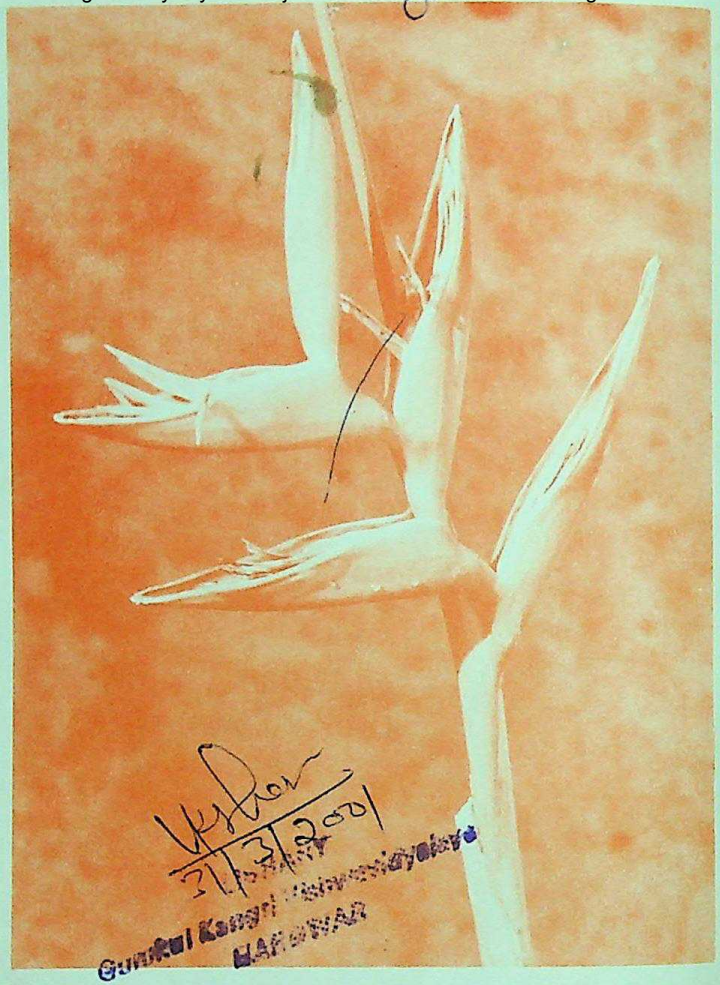

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARIDWAR

अग्निशिखा

मार्च २००१ अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा अप्रैल २००१ वर्ष ३१, अंक ९, पूर्णांक ३६९

विषय-सूची

संदेश	श्रीअरविन्द	१
'सम्पादकीय' : सच्चा सत्कर्म	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		५
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष	नीरदवरण	८
प्रभु का सदन		
जीवन का लक्ष्य		१६
क्रम-विकास तथा वैदिक युग	'श्रीमातृवाणी' खण्ड ७ से	२१
कक्षाओं से लाभ उठाओ	'श्रीमातृवाणी' खण्ड ५ से	२७
माताजी और श्रीअरविन्द के साथ एक शिष्य का पत्र-व्यवहार		३२
सोसायटी समाचार		३५

मुखपृष्ठ का चित्र :

श्रीअरविन्द तथा मृणालिनी देवी

अप्रैल १९०१ में (सौ वर्ष पहले) श्रीअरविन्द ने मृणालिनी बोस से विवाह किया था। श्रीअरविन्द, उनकी बहन सरोजिनी देवी तथा मृणालिनी देवी २९ मई को नैनीताल पहुंचे और यहां करीब एक महीने तक रहे।

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARDWAR

अग्निशिखा

अप्रैल २००१ अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा मई २००१ वर्ष ३१, अंक १०, पूर्णांक ३७०

विषय-सूची

संदेश	श्रीमां	१
'सम्पादकीय' :	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		७
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष प्रभु का सदन	नीरदवरण	११
उचित मूल्य	अजित सिंह	२०
'ऋषिवर बोले' : विजय के साझेदार		२७
गुरु का महत्त्व	'श्रीमातृवाणी' खण्ड ७ से	३१
माताजी तथा श्रीअरविन्द के साथ एक शिष्य का पत्र-व्यवहार		३४

मुखपृष्ठ का चित्र :

श्रीमां के चरण

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LIBRARY
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARIDWAR

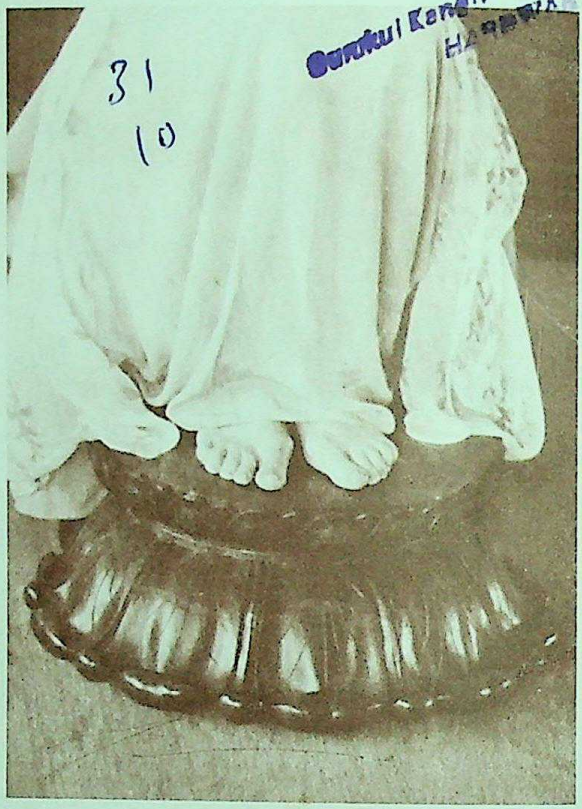

अग्निशिखा

मई २००१ अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा जून २००१ वर्ष ३१, अंक ११, पूर्णांक ३७१

विषय-सूची

संदेश	श्रीमां	१
'सम्पादकीय' : गुजरात की अस्मिता (२)	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		५
महान् कर्म	श्रीअरविन्द	११
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष	नीरदवरण	१३
दिव्य मां		
सचाई-निष्कपटता	श्रीअरविन्द	२०
योग करने का निश्चय करना	श्रीमां	२२
'ऋषिवर बोले' : आत्म-बलिदान		२४
माताजी तथा श्रीअरविन्द के साथ एक शिष्य का पत्र-व्यवहार		२८
सोसायटी समाचार		३४

मुखपृष्ठ का चित्र :

माताजी द्वारा आंके हुए पदक का चित्र
जो उन्होंने २९ फरवरी १९६० को वितरित किया था।

पदक पर अंकित चित्र का अर्थ—

नयी सृष्टि की बारह किरणें अवतार की अभिव्यक्ति से निकलती हैं

कमल—अवतार

चतुष्कोण—अभिव्यक्ति

१२ किरणें—नयी सृष्टि

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5/1/2007

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARDWAR

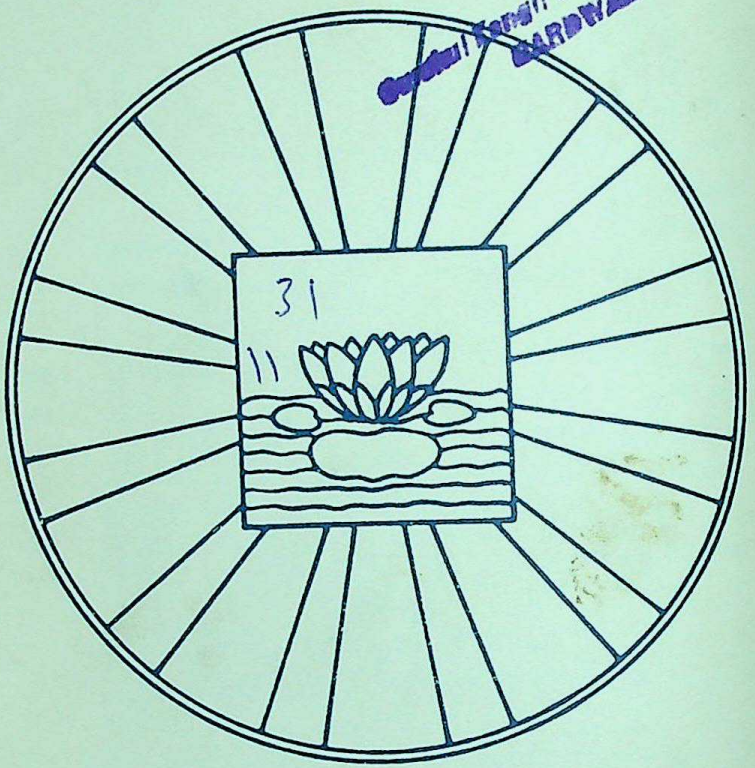

अग्निशिखा

जून २००१ अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा जुलाई २००१ वर्ष ३१, अंक १२, पूर्णांक ३७२

विषय-सूची

संदेश	श्रीमां	१
'सम्पादकीय' : अद्‌भुत उदाहरण	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		४
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष		
दिव्य मां	नीरदवरण	९
विचार	श्रीअरविन्द	१६
प्राण की तपस्या	श्रीमां	१८
सपनों का देश	'श्रीमातृवाणी', खण्ड ५ से	२१
बच्चे का-सा विश्वास	'सूर्यालोकित पथ' से	२५
भगवान् का लक्ष्य और अभिप्राय	श्रीमां	२६
आगे ही आगे बढ़ते चलो	'श्रीमातृवाणी', खण्ड ८ से	२८
माताजी तथा श्रीअरविन्द के साथ एक शिष्य का पत्र-व्यवहार		३३
हमारा लक्ष्य	श्रीमां	३६
सोसायटी समाचार		३७

मुखपृष्ठ के चित्र का श्रीमां द्वारा दिया गया आध्यात्मिक अर्थ

मानसिक निष्ठा

सर्वांगीण सचाई के लिये अनिवार्य शर्त

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LIBRARY
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARDWAR

31
12

अग्निशिखा

जुलाई २००१ अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

देश में एक ऐसा दल अवश्य होना चाहिये जो आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा भारत और विश्व की रक्षा करने की एक प्रबल और संहत संकल्पशक्ति का निर्माण करे। एकमात्र भारत ही विश्व में सत्य को ला सकता है। भागवत संकल्प और शक्ति को अभिव्यक्त करके एकमात्र भारत ही विश्व के सामने अपना संदेश प्रचारित कर सकता है, पर यह कार्य पश्चिम के जड़वाद का अनुकरण करने से नहीं होगा। भागवत इच्छा का अनुसरण करने पर भारत आध्यात्मिक पर्वत के शिखर पर जगमगा उठेगा, सत्य का मार्ग दिखायेगा और विश्व-ऐक्य का संगठन करेगा।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'संपादकीय' :

सार्थकता

हमारे यहां एक प्रचलित मान्यता है कि पृथ्वी चलती रहती है ऐसे मनुष्यों के पुण्य प्रताप से जो अपने आदर्शों पर दृढ़ रहते हैं, जो निःस्वार्थ भाव से समाज-कल्याण में लगे रहते हैं, जिन्हें अपने आंतरिक धर्म पर पूरी श्रद्धा है और उस धर्म-सत्य पर डटे रहते हैं। अपने आदर्श पर मर मिटनेवाले मनुष्य कम ही दीखते हैं, किंतु संसार उन्हीं को याद करता है और वे ही मनुष्य अगली पीढ़ी के लिये प्रेरणा-स्रोत बन पाते हैं।

पिछली शताब्दी के एक ऐसे उन्मत्त पागल की जीवनी पढ़कर सिर श्रद्धा से झुक गया। जर्मनी के एक समृद्ध परिवार का इकलौता बेटा इतना होनहार था कि छोटी उम्र में ही तीन-तीन डिग्रियां हासिल कर चुका था। वे थीं दर्शन में, ईसाई धर्म-शास्त्र में और संगीत में। इतना ही नहीं, इस उम्र में वह स्ट्रासबर्ग के विख्यात कॉलेज का प्रिन्सिपल बन गया था। एक दिन उसने ईसाई पत्रिका में अफ्रीका के निवासियों की गरीबी, अज्ञान और बीमारियों का ऐसा मार्मिक वर्णन पढ़ा कि इस अमीर घराने का लाडला तिलमिला उठा। पत्रिका में अफ्रीकियों की सहायता करने के लिये मुख्यतः डॉक्टरों से अपील की गयी थी। कई दिनों तक युवक परेशान रहा, कारण यह था कि वह डॉक्टर न था। उसने अफ्रीका के कोंगो प्रदेश में ओगोव नदी के तट पर स्थित ईसाइयों की संस्था के पास एक अस्पताल बनाने का निश्चय किया। जब उसने अपनी प्रेयसी हेलन से जीवन के इस नये मोड़ के विषय में बताया तो वह बौखला गयी और उसने प्रयत्न किया कि अपने होनेवाले दूल्हे का निश्चय डिगा पाये। हेलन का सबसे बड़ा अस्त्र था कि उसके पास डॉक्टर की डिग्री न थी। युवक आत्मविश्वास से बोल उठा, "उसमें कौन सी बड़ी बात है ? मैं डॉक्टरी सीख कर डिग्री प्राप्त कर लूंगा किंतु हजारों की संख्या में मरते अफ्रीकी लोगों को बचाऊंगा। इससे अधिक सार्थक कार्य क्या हो सकता है। तू नर्स है, यह मेरे लिये बोनस है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने वचन के अनुसार उसने कुछ सप्ताह में मेडिकल कॉलेज में दाखिला ले लिया। जैसे ही डिग्री दी गयी, मित्रों से अफ्रीका-यात्रा की चर्चा करने लगा। उसके कई मित्र, हितैषी उसे समझाने लगे कि अंधकार-पूर्ण, अज्ञात देश अफ्रीका में जाकर वह बरबाद हो जायेगा। इस समय अपनी चार डिग्रियों के कारण उसका भविष्य उज्ज्वल है। उसे ठोकर मारकर अफ्रीका जायेगा तो वह बहुत पछतायेगा। किंतु युवक ने उनकी एक न सुनी। हेलन से शादी कर अपने खर्च से उसने कई दवाइयां और अस्पताल के लिये आवश्यक सामग्री खरीद लीं। पति-पत्नी अफ्रीका के लिये चल पड़े। उनके सत्तर छोटे-बड़े बक्से थे। वे ओगोव नदी के मुहाने तक पहुंच कर अपने गंतव्य स्थान के लिये छोटी नौका में चल पड़े। इस तरह दो सौ मील का सफर करते समय उन्होंने देखा कि वहां की उमस और गर्मी असह्य थी, चारों ओर से पेड़-पौधे उस नदी को घेरे हुए थे। अंत में वे लम्बारेने नामक गांव में पहुंचे जहां ईसाई-संस्था चल रही थी। पादरियों ने बड़े उत्साह से उनका स्वागत किया लेकिन उन्हें ठहरने के लिये दीमक से भरा टूटा-फूटा एक बंगला ही दे पाये। यही उनका निवास-स्थान बन गया। दोनों ने दिन-रात एक करके अपना घर धोया, पोंछा और दीमकों से मुक्त कर घर का एक भाग डिस्पेंसरी में बदल दिया। ओगोव नदी के पास जो बोट-हाउस था, उसे तात्कालिक अस्पताल बना दिया गया। बंगले के पास एक नष्टप्रायः मुर्गी-घर को मरीजों की जांच करने, नाड़ी देखने के लिये रखा गया। आसपास के गांवों में आग की तरह बात फैल गयी कि लम्बारेने में एक गोरा ओगंगा, मतलब ओझा आया है, बस, जादू करता है। लंबारेने की तरफ एक कारवां चलने लगा और वह चलता चला गया। युवक का काम और भी कठिन था क्योंकि उसके मरीजों को यह भी पता न था कि दवाई कैसे लेनी है। कभी वे त्वचा पर लगाने का मरहम चाट जाते थे, तो कभी खाने के लिये दी गयी दवाई को शरीर पर चुपड़ते थे। उसकी उससे भी बड़ी दिक्कत थी भाषा! वह अपनी बात उन्हें समझा न पाता था किंतु सच्चे व्यक्ति की देखभाल भगवान् अच्छी तरह करते हैं। एक दिन जोसेफ नामक एक अफ्रीकी लड़का उसके पास आया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बात-बात में जोसेफ ने कहा कि उसे फरासीसी और अफ्रीकी, दोनों भाषाएं आती हैं। उसी दिन से वह उस युवक का सहायक बन गया। अफ्रीकी लोग एकदम बचकाने, अनियंत्रित और किसी नियम-पालन से अनभिज्ञ थे। जोसेफ ने उन्हें समझाया कि डिस्पेंसरी में दौड़ना नहीं चाहिये, चिल्लाना नहीं चाहिये, फर्श पर थूकना नहीं चाहिये।

जोसेफ थोड़ी-बहुत दवाइयों का उपयोग करना सीख गया। आगे चलकर जब ऑपरेशन होने लगे तब हेलन एनेस्थिसिया देती और वह रबर के दस्ताने लगाकर डॉक्टर को ऑपरेशन के लिये आवश्यक चीजें देता। एनेस्थिसिया को अफ्रीकी लोग जानते न थे इसलिये जब ऑपरेशन के बाद वे चंगे हो गये तो उन्होंने बात फैला दी कि यह ओगंगा जादूगर है या शायद देवता! वह बीमार को मार डालता है, फिर कुछ जादू कर उसे जिंदा और चंगा कर देता है। इस जादूगर की ख्याति इतनी फैल गयी कि लोग दो सौ मील दूर-दूर से आने लगे। युवा डॉक्टर इन गरीबों से कभी फीस न मांगता, वह कहता, "अगर तुम मुझे धन्यवाद देना चाहो तो किसी दिन मेरी मदद करना।"

इस सेवाभावी, निःस्वार्थ युवक का नाम है स्वात्ज़र। वह सुबह से रात देर तक बीमारों की सेवा करता। बीच में एक अच्छे, नये अस्पताल की योजना बनाता। जोसेफ के साथ मिलकर उमस-भरे, जंतुओं से ग्रस्त जंगल के हिस्से को, ग्रीष्म की असह्य गर्मी झेलते हुए उन दोनों ने बड़े-बड़े वृक्ष गिरा दिये, बांस के वन को काट डाला और कई बांबियों को सपाट कर दिया। इस श्रम से उनके एक-एक जोड़ कराहते रहते और हाथ फफोलों से छा जाते, किंतु बात के पक्के दीवाने रुकने का नाम न लेते। स्वात्ज़र की इस जी-तोड़ मेहनत से घबरा कर हेलन ने अनुरोध किया, "इस तरह मेहनत करते-करते तुम बीमार पड़ जाओगे।" हंस कर स्वात्ज़र ने उत्तर दिया, "तो मैं अपने नये अस्पताल में मरीज बनकर जाऊंगा और तुम मेरी परिचर्या करोगी।" ऐसे पति को पाकर हेलन अवश्य गौरवान्वित होती और कुछ-कुछ डरती भी। स्वात्ज़र के भूतपूर्व मरीजों ने जब नये अस्पताल की बात सुनी तो झुंड के झुंड इस काम में हाथ बंटाने के लिये आने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने अस्पताल का फर्नीचर बना दिया। दीवारें खड़ी कर दीं और इस तरह अपने ओगांगे की बात रखी।

जैसे-जैसे अस्पताल का काम बढ़ता गया स्वात्ज़र को सहायकों की कमी खलने लगी। उसने कई अफ्रीकी स्त्री, पुरुषों को छोटे-मोटे काम सिखाकर अस्पताल में रख लिया। तीन वर्ष तक अस्पताल जोरों से चलता रहा। फिर ? फिर आयी मुसीबत; प्रथम विश्व-युद्ध को छिड़े तीन वर्ष हो चुके थे। अचानक फरासीसी सरकार चौंक उठी, उसने सोचा, "अरे, यह जर्मन हमारे फरासीसी उपनिवेश में युद्ध-संकट के समय क्यों रहता है ?" झट सरकार का हुकुम हुआ कि स्वात्ज़र और हेलन को फ्रांस की जेल में बंद करना चाहिये। भारी हृदय से पति-पत्नी बरसों की मेहनत के काम को छोड़ कर जाने लगे। उनके जाने की खबर जंगल में आग की तरह फैल गयी और हजारों की संख्या में अफ्रीकी लोग ओगोव नदी के तट पर खड़े-खड़े आंसू बहाते रहे। वे कातर स्वर में पुकारने लगे, "ओगांग, लौट आना। जरूर आना, आओगे न ?" स्वात्ज़र ने केवल व्यथित होकर उन्हें अलविदा में हाथ हिला दिया।

युद्ध-समाप्ति के बाद स्वात्ज़र को लंबारेने लौटने में पूरे पांच वर्ष लगे। आकर देखा कि इतने जतन से बनाया अस्पताल एक खंडहर मात्र रह गया था। हारनेवाले का नाम स्वात्ज़र नहीं हो सकता। पुनः उत्साह से मरम्मत शुरू कर दी। उसके प्रेमी अफ्रीकी भी उछलते-कूदते स्वागत करने आ पहुंचे। वे चिल्लाने लगे, "हमारा ओगंगा लौट आया।" वे फिर से अस्पताल की मरम्मत में लग गये।

१९५२ में इस मानवता-प्रेमी को नोबेल पुरस्कार से विभूषित किया गया। इस तरह काम करते-करते स्वात्ज़र ने १९६५ में शरीर छोड़ा। इस तरह मौज-शौक में रहनेवाला, असामान्य संगीतवादक और धन प्राप्त करने के अवसरों को छोड़कर तृप्ति से अज्ञात, अंधकारपूर्ण अफ्रीका में जा, सार्थकता पाकर वह संतुष्ट होकर जिया।

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

अगस्त

१. लगभग सभी लोग परिणाम के बारे में आतुर होते हैं अथवा परिणाम प्राप्त करने के लिये महत्त्वाकांक्षी होते हैं। उन्हें परिणामों के विषय में उत्कंठित नहीं होना चाहिये; बस, इसलिये कार्य करो कि तुमने जान लिया है कि यही काम है जिसे तुम्हें अवश्य करना चाहिये; अपने-आपसे कहो : "मैं इसे कर रहा हूं, क्योंकि यही वह चीज है जिसे करना चाहिये, और पीछे चाहे जो हो उससे मेरा कोई मतलब नहीं।"

२. कोई चरम सीमा है ही नहीं—जो कुछ तुम करते हो उससे अधिक अच्छा करने की संभावना सर्वदा बनी रहती है, और ठीक और अधिक अच्छा करने की संभावना ही प्रगति का वास्तविक अर्थ है।

३. पूर्णता कोई निष्क्रिय स्थिति नहीं है, यह एक प्रकार की संतुलन की अवस्था है; पर एक प्रगतिशील, सक्रिय संतुलन है। मनुष्य पूर्णता से पूर्णता की ओर जा सकता है। एक ऐसी अवस्था आ सकती है जहां से और आगे जाने के लिये किसी निचली सीढ़ी पर उतर आने की आवश्यकता नहीं होगी; वर्तमान समय में प्रगति की चाल इसी प्रकार की है, पर इस नयी स्थिति में, पुनः आगे बढ़ने के लिये, पीछे लौटने के लिये बाध्य होने की जगह हम सदा आगे की ओर, कभी रुके बिना, चल सकते हैं।

४. जब तुम पूर्णतः सच्चे होते हो तो तुम अपनी सत्ता के उच्चतम आदर्श के साथ, अपनी सत्ता के सत्य के साथ समस्वर होकर जीवन बिताने का सतत प्रयत्न करते हो। प्रत्येक मुहूर्त, तुम जो कुछ सोचते, जो कुछ अनुभव करते और जो कुछ करते हो उस सबमें, यथासंभव समग्र रूप में, यथासंभव पूर्ण रूप से, तुम अपने-आपको उच्चतम आदर्श के साथ अथवा, यदि उसके विषय में सचेतन हो तो, अपनी सत्ता को सत्य के साथ समस्वर बनाते हो—तब तुम यथार्थ सच्चाई प्राप्त करते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. सब चीजों से अधिक कठिन है भौतिक रूपांतर, और इस कार्य को हाथ में लेने से पहले तुम्हें अपनी आंतरिक चेतना को 'सत्य' के अंदर दृढ़ और ठोस रूप से प्रतिष्ठित करना होगा ताकि यह रूपांतर 'सत्य' की अंतिम अभिव्यक्ति हो सके—कम-से-कम इस समय के लिये 'अंतिम'।

६. हमें अपना मूल्य न तो अत्यधिक बढ़ाना चाहिये और न घटाना, बल्कि अपनी सीमाओं को समझना और यह जानना चाहिये कि हम अपने सामने रखे हुए आदर्श की ओर कैसे प्रगति कर सकते हैं।

७. साहस के, निःस्वार्थभाव के, उच्च त्याग के कार्यों में एक प्रकार का सौंदर्य होता है जो हमें आनंद प्रदान करता है। यह कहा जा सकता है कि नैतिक उदारता का तात्पर्य है दूसरों की यथार्थ मूल्य-मर्यादा और श्रेष्ठता को पहचानने में समर्थ होना।

८. जिस किसी क्षेत्र का प्रयास हो—भौतिक, नैतिक या बौद्धिक प्रयास—केवल प्रयास ही वह चीज है जो तुम्हारे अंदर उन स्पंदनों को पैदा करती है जिनसे तुम विश्वव्यापी स्पंदनों के संपर्क में आने में सक्षम होते हो और यही वह चीज है जो तुम्हें आनंद प्रदान करती है।

९. प्रयास ही तुम्हें तमस् से बाहर खींच लाता है, प्रयास ही तुम्हें विश्व-शक्तियों के प्रति ग्रहणशील बनाता है। और सबसे बढ़कर, जो चीज तुम्हें सहजभाव से आनंद देती है वह है विश्व-शक्तियों के साथ अपनी शक्तियों का आदान-प्रदान।

१०. किसी समूह के अंदर अपने व्यक्तित्व को बनाये रखने के लिये यह आवश्यक है कि हम अपनी "आत्मा" के प्रति पूर्णतया सचेतन हों। पर किस "आत्मा" के प्रति ? अपनी उस 'आत्मा' के प्रति जो किसी भी प्रकार के मिश्रण से ऊपर है, जिसे मैं तुम्हारी सत्ता का 'सत्य' कहती हूं।

११. यदि तुम हर चीज को—अपने विचारों, अपनी भावनाओं, अपने आवेगों आदि को—अपने आंतरिक प्रकाश अर्थात् चैत्य-केंद्र के इर्द-गिर्द सुव्यवस्थित करो तो देखोगे कि सारी आंतरिक अस्तव्यस्तता, प्रकाशमय सुव्यवस्था में बदल जायेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२. यदि तुम्हारे शरीर की गठन बुरी हो, शरीर बेडौल हो तो अच्छी शिक्षा के बाद भी किसी सुगठित सुन्दर शरीरवाले व्यक्ति की तरह अच्छे ढंग से व्यायाम करना तुम्हारे लिये कठिन होगा। यही बात मन के साथ भी है—जिसका मन सुव्यवस्थित, विमिश्र, पूर्ण और परिमार्जित होता है वह साधारण स्तर के या कुव्यवस्थित प्रकार के मनवाले मनुष्य की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छी तरह अपने विचारों को व्यक्त कर सकेगा।

१३. सबसे पहले तुम्हें अपनी चेतना को शिक्षित करना चाहिये, अपने विषय में सचेतन होकर अपनी चेतना को अपने आदर्श के अनुरूप व्यवस्थित करना चाहिये, किंतु साथ-ही-साथ तुम उन यंत्रों की भी उपेक्षा नहीं कर सकते जो तुम्हारे शरीर में हैं।

१४. . . . तुम्हें खेलना चाहिये बस, खेलने के लिये; खेलना सीखने के लिये, खेल में प्रगति करने के लिये और इसलिये कि तुम्हारा खेल तुम्हारी उच्चतम आंतरिक चेतना की अभिव्यक्ति बन सके—बस, यही है महत्त्वपूर्ण चीज।

१५. मनुष्य का मन अपनी स्वाभाविक अवस्था में सदा सीमित दृष्टिवाला होता है, उसकी समझ संकीर्ण होती है, उसकी धारणा अनमनीय होती है। अतएव उसे विशालतर, नमनीय और गंभीर बनाने के लिये सतत प्रयास की आवश्यकता होती है।

१६. मन के लिये एक चीज बहुत कठिन होती है, किंतु मेरी दृष्टि में वह बहुत महत्त्वपूर्ण है। वह यह है कि अपने मन को चीजों और मनुष्यों के विषय में निर्णय मत करने दो। यह कहना कि "यह अच्छा है, वह बुरा है, यह ठीक है, वह गलत है, इसमें यह दोष है, उसमें वह बुरी चीज है," आदि, आदि—यह निंदात्मक फैसला होता है।

१७. जब मनुष्य अपनी श्रेष्ठतम स्थिति में रहता है, अपने निम्न पशुत्व से ऊपर रहता है, तब उससे एक ऐसी चीज विकीर्ण होती है जो उसमें उस समय नहीं होती जब वह पशुता की अवस्था में निवास करता है।

१८. मन केवल नीरवता में ही अपने-आपसे ऊपर उठ सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९. . . . जो कठिनाइयां तुम्हारे पास आती हैं वे ठीक-ठीक तुम्हारी शक्ति के अनुपात में ही आती हैं—ऐसा कुछ भी घटित नहीं हो सकता जिसका संबंध तुम्हारी चेतना के साथ नहीं है, और जो कुछ तुम्हारी चेतना से संबंधित है उस पर विजय पाने की सामर्थ्य तुम में है।

२०. संसार में, जो लोग आध्यात्मिक गुरु बनकर अपने-आपको धोखा देना चाहते हैं—जब लोग उनके पास आते और उनसे ऐसी बातें पूछते हैं जिन्हें वे नहीं जानते तो वे उन्हें गढ़ लेते हैं। अतएव, यदि तुम अपनी आंतरिक साधना में दिखावा करना आरंभ कर देते हो तो निश्चित रूप से अत्यंत बुरी खाई में गिर सकते हो—सभी चीजों में झूठा दिखावा अत्यंत सर्वनाशी होता है।

२१. परंतु आध्यात्मिक जगत् में; मनुष्यों के साथ तुम्हारा सरोकार नहीं होता, तुम्हारा सरोकार होता है भगवान् के साथ; वहां तुम्हारे लिये यह झूठा दावा करना असंभव है कि तुम ऐसे हो या वैसे, क्योंकि भगवान् तुमसे कहीं अधिक जानते हैं, जानते हैं न ? वे जानते हैं कि तुम क्या हो और यह बात नहीं है कि जो कुछ तुम कहोगे उससे वे प्रभावित हो जायेंगे।

२२. मनुष्य को अपने कथन में बिलकुल ठीक और यथार्थ होने के लिये अत्यधिक सावधान होना चाहिये।

२३. तुम्हें योग के इस मार्ग को तबतक ग्रहण नहीं करना चाहिये जबतक तुमने पहले से समस्त कठिनाइयों को जीतने का संकल्प न कर लिया हो। तुम्हारा निर्णय सच्चा और पूर्ण होना चाहिये। इसके अलावा, जब तुम धीरे-धीरे आगे बढ़ोगे तब देखोगे कि जिसे तुमने पूर्ण समझा था वह वैसा नहीं है, जिसे तुमने सच्चा समझा था वह वैसा नहीं है, और तब तुम थोड़ा-थोड़ा आगे बढ़ोगे, परंतु सफल होने के लिये तुम्हारे अंदर प्रगति करने के लिये जितना संभव हो उतना सर्वांगपूर्ण संकल्प होना चाहिये।

२४. भगवान् के प्रति अपने समर्पण को संपूर्ण बनाओ और तुम पूर्ण रूप से मुक्त हो जाओगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५. शिक्षण एक प्रकार की पुरोहिताई है, शिक्षा देना एक प्रकार की पुरोहिताई है, और किसी राज्य का अधिकारी होना एक प्रकार की पुरोहिताई है। अतएव अपने पार्ट को अदा करनेवाला व्यक्ति यदि उसे सर्वोत्तम रूप में अदा करने की अभीप्सा करे तो संसार की साधारण अवस्था बहुत सुंदर हो सकती है।

२६. अपनी प्रकृति की, अपनी मनोवृत्ति की धारा में अपने-आपको बहने देने के स्थान में मनुष्य को निरंतर अपने मन में इस प्रकार की भावना बनाये रखनी चाहिये कि हम 'परात्पर ज्ञान' के, 'परात्पर सत्य' के, 'परात्पर विधान' के प्रतिनिधि हैं और इस भाव को हमें यथासंभव अत्यंत शुद्ध, अत्यंत सच्चे रूप में अपने जीवन में उतारना चाहिये; तब हम स्वयं बहुत अधिक प्रगति करते हैं और दूसरों से भी करवा सकते हैं।

२७. . . . प्रत्येक मानव प्राणी के अंदर कोई ऐसी चीज है जो सच्ची महानता को पहचानती और उसके सामने माथा टेकती है; यहांतक कि बुरे-से-बुरे अपराधी भी उच्च और निष्काम कर्म का समादर करने में समर्थ होते हैं।

२८. चैत्य सत्ता वह वस्तु है जिसे हम "मनुष्य की पहुंच के भीतर विद्यमान भगवान्" कह सकते हैं।

२९. तुम प्रत्येक मुहूर्त अपने संकल्प को एक अभीप्सा के रूप में अर्पित कर सकते हो जो बहुत सरल ढंग से, ठीक यह नहीं कि "हे प्रभु! तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो," बल्कि यह रूप लेती है कि "ऐसी कृपा कर कि मैं यथासंभव अच्छे-से-अच्छे रूप में उस चीज को संपन्न करूं जो सर्वोत्तम हो।"

३०. हो सकता है कि तुम्हें प्रत्येक क्षण यह मालूम न हो कि सर्वोत्तम वस्तु क्या है और उसे कैसे करना चाहिये, पर तुम अपनी इच्छा को भगवान् के हाथों में सौंप सकते हो जिससे सर्वोत्तम संभवनीय, सर्वोत्तम संभाव्य वस्तु संपन्न हो सके। तुम देखोगे कि इसके अद्भुत परिणाम होंगे। तुम चेतनता, सच्चाई और लगन के साथ इसे करो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तुम अपने को विराट् पगों से आगे बढ़ते हुए पाओगे।

३१. मनुष्य को अपनी अंतरात्मा के समस्त आवेग के साथ, अपने संकल्प के समस्त बल-सामर्थ्य के साथ कार्य करना चाहिये, प्रत्येक मुहूर्त अधिक-से-अधिक संभव, अधिक-से-अधिक संभव कार्य करो। दूसरे लोग जो कुछ करते हैं उससे तुम्हारा कोई सरोकार नहीं—यह ऐसी चीज है जिसे मैं चाहे जितनी बार दोहराऊं कम ही रहेगी।

'श्रीमातृवाणी' खण्ड ४ से

दुर्गा स्तोत्र

मातः दुर्गे! सिंहवाहिनि, सर्वशक्तिदायिनि, मातः शिवप्रिये! तुम्हारी ही शक्ति के अंश हम भारतवर्ष के युवक तुम्हारे मंदिर में आसीन, प्रार्थना करते हैं। सुनो मातः, भारतवर्ष में प्रकट हो, प्रकाशमान हो।

मातः दुर्गे! हम युग-युग से मानव-शरीर में अवतीर्ण होकर जन्म-जन्मान्तर तुम्हारे ही कार्य संपन्न कर तुम्हारे आनन्दधाम में लौट जाते हैं। इस बार भी जन्म लेकर तुम्हारे ही कार्यव्रती हैं हम, सुनो मातः, भारतवर्ष में प्रकट हो, हमारी सहायक हो।

मातः दुर्गे! सिंहवाहिनि, त्रिशूलधारिणि, कवच से आवृत सुन्दर शरीर में जयदायिनि मातः, भारत तुम्हारी प्रतीक्षा में है, तुम्हारी उस मंगलमयी मूर्ति को देखने को उत्सुक है वह। सुनो मातः, भारतवर्ष में प्रकट हो, प्रकाशमान हो।

मातः दुर्गे! बलदायिनि, प्रेमदायिनि, ज्ञानदायिनि, शक्तिस्वरूपिणि, भीमे, सौम्य-रौद्र-रूपिणि! जीवन-संग्राम और भारत-संग्राम में हम तुम से प्रेरित योद्धा हैं, दो मां, प्राण और मन में असुर की शक्ति दो, असुर का उद्यम दो, मातः, हृदय में, बुद्धि में देवता का चरित्र दो, देवता का ज्ञान दो।

मातः दुर्गे! जगत्-श्रेष्ठ भारतजाति निबिड़ अंधकार में आच्छन्न थी। तुम ही मां, क्षितिज पर धीरे-धीरे उदित हुईं, तुम्हारे स्वर्गीय शरीर से तिमिर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनाशी आभा में उषा का प्रकाश हुआ। आलोक का विस्तार करो हे मातः, तिमिर का विनाश करो।

मातः दुर्गे! श्यामला, सर्वसौंदर्यालंकृता, ज्ञान-प्रेम-शक्ति की आधार तुम्हारी विभूति, भारतवर्ष शक्ति संहरण कर के आत्मगोपन किये हुए था। अब वह युग आ गया है, वह दिन आ गया है जब भारतवर्ष का भार अपने कंधों पर लिये भारत जननी उठ खड़ी हुई है, आओ मां, प्रकट हो।

मातः दुर्गे! हम तुम्हारी संतान हैं, तुम्हारे प्रसाद से, तुम्हारे प्रभाव से महान् कार्य के, महान् भाव के उपयुक्त हों। मातः, क्षुद्रता का विनाश करो, स्वार्थ का विनाश करो, भय का विनाश करो।

मातः दुर्गे! कालीरूपिणि, नरमुण्डमालिनि, दिगम्बरि, कृपाणपाणि, असुर-विनाशिनि देवि! क्रूर निनाद से अंतःस्थित रिपु का विनाश करो। वह हमारे अंदर बिलकुल जीवित न रहे, हम विमल निर्मल बनें, हे मातः यही हमारी प्रार्थना है, प्रकट हो।

मातः दुर्गे! स्वार्थ से, भय से, क्षुद्राशयता के कारण भारत म्रियमाण है। मातः हमें महान् बनाओ, महत्प्रयासी बनाओ, उदारचेता बनाओ, सत्य-संकल्प बनाओ और हम अल्पाशी, निश्चेष्ट, आलसी और भयभीत न हों।

मातः दुर्गे! योगशक्ति का विस्तार करो। तुम्हारी प्रिय आर्य संतान, जिनकी शिक्षा, चरित्र, मेधाशक्ति, भक्तिश्रद्धा, तपस्या, ब्रह्मचर्य, सत्यज्ञान लुप्त हो गये हैं इन सबका हमारे अंदर विकास कर जगत् में वितरण करो। मानव सहायता के लिये, दुर्गतिनाशिनि, जगदम्बे, प्रकट हो।

मातः दुर्गे, अंतःस्थित रिपु का संहार कर बाहर की विघ्नबाधाओं को निर्मूल करो। बलशाली, पराक्रमी, उन्नतचेता जाति भारत के पवित्र कानन में, उर्वर क्षेत्र में, गगनसहचर पर्वततल में, पूतसलिला नदी के तट पर, एकता में, प्रेम में, सत्य शक्ति में, शिल्प में, साहित्य में, विक्रम में, ज्ञान में श्रेष्ठ होकर निवास करे, मातृचरणों में यही प्रार्थना है। हे मातः प्रकट हो।

मातः दुर्गे! हमारे शरीर में योगबल से प्रवेश करो। तुम्हारे यंत्र हैं हम, हम तुम्हारे अशुभ-विनाशी खड्ग, अज्ञान-विनाशी प्रदीप हों। भारतवर्ष के युवकगण की इस इच्छा को पूरा करो। यन्त्री होकर यन्त्र चलाओ, अशुभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को हनन करनेवाली बनकर अपना खड्ग घुमाओ, ज्ञानदीप्तप्रकाशिनी बनकर प्रदीप दिखाओ। प्रकट हो।

मातः दुर्गे ! तुम्हें पाकर फिर से विसर्जन न करेंगे, श्रद्धा, भक्ति और प्रेम की डोर में बांध रखेंगे, हमारे मन, प्राण, शरीर में प्रकट हो।

वीर-मार्गप्रदर्शिनि, आओ ! अब तुम्हारा विसर्जन न करेंगे। हमारा सारा जीवन अविच्छिन्न दुर्गापूजा है, हमारा संपूर्ण कार्य अविरत, पवित्र, प्रेममय, शक्तिमय मातृसेवाव्रत हो, यही प्रार्थना है, हे मातः, भारतवर्ष में प्रकट हो, प्रकाशमान हो।[१]

—श्रीअरविन्द

हर रोज चीजें ज्यादा-से-ज्यादा बिगड़ती हुई मालूम होती हैं। वास्तव में हम पुराने सड़ते हुए जगत् से ज्यादा-से-ज्यादा घृणा करने लगते हैं और हमें इस बात का अधिक-से-अधिक विश्वास होने लगता है कि इन घिसे-पिटे रास्तों से अलग ऐसे जीवन के एक नये केंद्र की स्थापना करने की आवश्यकता है जिसमें एक नये और अधिक सच्चे प्रकाश को अभिव्यक्त किया जा सके, एक ऐसे नये जगत् की स्थापना की जा सके जो स्वार्थपूर्ण प्रतिस्पर्धा तथा अहंकारी संघर्ष पर आधारित न हो बल्कि सभी के कल्याण, प्रगति तथा ज्ञान की उन्नति के लिये सामान्य तथा उत्सुक प्रयास हो—एक ऐसा समाज हो जो पैसों की लालसा और भौतिक शक्ति पर नहीं बल्कि एक आध्यात्मिक अभीप्सा पर टिका हो।

—श्रीमां

[१] श्रीअरविन्द ने यह स्तोत्र बंगला में लिखा था। शब्दों के कम-से-कम हेर-फेर के साथ हम इसे यहां दे रहे हैं।—सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाश की किरणें

(९)

सत्ता के अंग

आत्मा (चैत्य)

आत्मा वह है जो भगवान् को कभी छोड़े बिना उनसे निकल आती है और अभिव्यक्ति को कभी छोड़े बिना भगवान् के अंदर वापिस चली जाती है।

आत्मा वह भगवान् है जो भगवान् होना छोड़े बिना व्यक्ति बन गयी है। आत्मा में व्यक्ति और भगवान् शाश्वत रूप से एक होते हैं।

अतः अपनी आत्मा को पाना भगवान् के साथ एक होना है। इसलिये यह कहा जा सकता है कि मनुष्य को सच्ची सत्ता बनाना ही आत्मा का काम है।

*

तुम्हारी आत्मा प्रकाश में उसी तरह खिलती है जैसे फूल सूर्य में।

३० मई १९५६

*

अपनी आत्मा की आज्ञा मानो, केवल उसे ही तुम्हारे जीवन पर शासन करने का अधिकार है। मन, जीवन और शरीर को वही बन जाना और जीना चाहिये जो आत्मा जानती है और जो वह है।

*

मानव सत्ता का केंद्र है चैत्य जो सर्वव्यापक भगवान् का निवास-स्थान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकीकरण का अर्थ है, सत्ता के सभी भागों को (मन, प्राण और शरीर) इसी केंद्र के चारों ओर व्यवस्थित और समन्वित करना ताकि सत्ता के सभी क्रिया-कलाप भागवत उपस्थिति की इच्छा की शुद्ध अभिव्यक्ति हों।

*

बाहरी सत्ता को अगर उसके अपने ऊपर छोड़ दिया जाये तो वह बहुत उत्तरदायी नहीं होती। प्रायः वह प्रकृति की शक्तियों का खिलौना होती है। परंतु भीतरी या उच्चतर सत्ता, अर्थात् गहरी चेतना हमारी नियति की निर्माणकारिणी और स्वामिनी होती है। इसी कारण इस परम चेतना को खोजना और इसके साथ एक होना इतना जरूरी होता है ताकि जीवन की सभी असंगतियों और प्रकृति के सभी संघर्षों का अंत हो जाये।

१७ मार्च १९६८

*

चैत्य को जानने के लिये तुम्हें अपने प्राण की कामनाओं को जीत लेना और मन को नीरव कर देना चाहिये और फिर भगवान् के प्रति निष्कपट समर्पण करना चाहिये जिनका मनुष्य के अंदर चैत्य एक साधन है।

चैत्य के साथ आंतरिक संपर्क एक ठोस और अखण्डनीय तथ्य है जो सभी निष्कपट चेतनाओं पर अपने-आपको आरोपित करता है।

५ अप्रैल १९७२

*

अहंकार के शासन से पीछा छुड़ाने का सबसे अच्छा उपाय है, चैत्य को पाना, जो मानव सत्ता में भगवान् का यंत्र है।

अपने अंदर गहराई में जाओ (उदाहरण के लिये, हृदय के क्षेत्र में) और स्थिरता के साथ अभीप्सा करो। चैत्य के साथ सच्चे मिलन में भूल नहीं हो सकती।

८ मई १९७२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन

क्या तुम गंदे पांव लेकर मंदिर में घुसते हो ?

इसी तरह तुम आत्मा के मंदिर में कलुषित मन के साथ नहीं जा सकते।

*

अहंकारमय मन की वृत्ति यह होती है कि मेरी सनकें तो संतुष्ट होनी ही चाहियें भले सारा संसार नष्ट-भ्रष्ट क्यों न हो जाये ! वह मन सभी के ऊपर अपने नियम लादना चाहता है।

दिव्य दृष्टि में सिद्धांत और कामनाएं सब एक हैं। सिद्धांत मन की सनकें हैं उसी तरह जैसे कामनाएं प्राण की सनकें हैं।

हम सदा उन्हीं चीजों से घिरे रहते हैं जिनके बारे में हम सोचते हैं।

*

चीन के किसी बुद्धिमान वृद्ध ने लिखा है, "विचार अपने लिये अपनी मुसीबतें बनाता है।"

जो मिथ्यात्व में सोचते हैं वे मिथ्यात्व और मुसीबतों में जियेंगे। गलत विचार से निकल आओ और तुम मुसीबत से निकल आओगे।

*

केवल प्रेम ही भागवत कार्य को समझ सकता और उसके रहस्यों को जान सकता है। मन, विशेष रूप से भौतिक मन, ठीक तरह देख सकने के अयोग्य है, लेकिन फिर भी वह हमेशा निर्णय करना चाहता है। मन के अंदर सच्ची, निष्कपट नम्रता, जो चैत्य को शासन करने देती है, वही मानव सत्ता को अज्ञान और धुंधलेपन से बचा सकती है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथाकथित मानव बुद्धिमत्ता की सभी पेचीदगियों से ऊपर भागवत कृपा की ज्योतिर्मयी सरलता होती है जो हमेशा कार्य करने के लिये तैयार होती है, बशर्ते कि हम उसे काम करने दें।

अगर मनुष्य का मन इतनी सारी व्यर्थ की पेचीदगियों को न लाये तो जीवन बहुत सादा और सरल हो सकता है।

२९ दिसम्बर १९६२

*

हम जितना अधिक जानते हैं उतना ही अधिक देख सकते हैं कि हम नहीं जानते।

*

शान्त मन : सीखने का सबसे अच्छा उपाय।

*

मन की नीरवता का अभ्यास करो। इससे समझने की क्षमता आती है।

हृदय

हमारे मन को नीरव और शांत होना चाहिये, परंतु हमारे हृदय को तीव्र अभीप्सा से भरा होना चाहिये।

१ जुलाई १९५४

*

भगवान् हमेशा तुम्हारे हृदय में आसीन होते हैं, सचेतन रूप से जीवित रहते हैं।

२३ जुलाई १९५५

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हें हमेशा समस्त सहायता दी जाती है, लेकिन तुम्हें उसे बाहरी उपायों से नहीं, हृदय की नीरवता में ग्रहण करना सीखना चाहिये। तुम्हारे हृदय की नीरवता में भगवान् तुम्हारे साथ बोलेंगे, तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करेंगे और तुम्हें लक्ष्य तक पहुंचायेंगे। लेकिन उसके लिये तुम्हें भागवत कृपा और प्रेम पर पूरा विश्वास और श्रद्धा होनी चाहिये।

१८ जनवरी १९६२

*

अनुभव तर्कशील मन से बहुत आगे जाता है। स्पष्ट है कि तर्कशील मन को भगवान् तक पहुंचना बहुत कठिन लगता है, परंतु सीधा-सादा हृदय बिना किसी विशेष प्रयास के उनके संपर्क में आ सकता है।

*

हृदय के अंदर पंख होते हैं, मन में नहीं।

प्राण

प्राण है हमारी शक्ति, ऊर्जा, उत्साह तथा प्रभावशाली गति का आसन। लेकिन उसे व्यवस्थित प्रशिक्षण की जरूरत होती है।

*

प्राण ही उत्साह प्रदान करता है, लेकिन अपने स्वभाव से ही प्राण अस्थिर होता है और हमेशा नयी-नयी चीजें चाहता है। जबतक कि उसका परिवर्तन न हो जाये और वह भगवान् का विनीत सेवक न बन जाये, तबतक चीजें हमेशा डांवाडोल होती रहती हैं।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं बहुत ज्यादा संवेदनशील हो गया हूं और जरा-जरा सी बात पर विचलित हो जाता हूं।

ये प्राणिक गड़बड़ें हैं जो साधना के दौरान अपने-आपको प्रकट करती हैं, इन्हें निकाल बाहर करना चाहिये। इन्हें स्वाभाविक गतिविधियां नहीं मान लेना चाहिये जिन्हें औरों की गलत क्रियाओं के द्वारा उचित माना जाता है और यह कि जबतक बाहरी कारण हैं ये जारी रहेंगी। वास्तविक कारण भीतरी होता है और उसे यौगिक नियंत्रण, जागरूकता, अनासक्ति, शांत लेकिन कठोर त्याग के द्वारा दूर किया जा सकता है।

*

प्राण में उचित वृत्ति :

अपनी सिद्धि और भगवान् की सहायता में आत्म-विश्वास और मानसिक और प्राणिक शांत श्रद्धा।

शरीर (भौतिक)

शरीर में सत्ता का आनंद भगवान् के प्रति कृतज्ञता की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति है।

१६ जून १९४१

*

कोषाणुओं की शुद्धि कामनाओं पर विजय के बिना नहीं पायी जा सकती; अच्छे स्वास्थ्य के लिये यही सच्ची शर्त है।

सामान्य

सच्ची समझ पाने के लिये अपने मन में से बाहर निकल आओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्ची भावनाएं पाने के लिये अपनी भावुकता में से बाहर निकल आओ।

सच्ची क्रियाशीलता पाने के लिये अपनी संवेदनशीलता में से बाहर निकल आओ।

*

मन के लिये—ज्ञान
हृदय के लिये—प्रेम और आनंद
जीवन के लिये—शक्ति
भौतिक के लिये—सौन्दर्य।

माताजी के साथ भारत के बारे में कुछ प्रश्नोत्तर

भारत आधुनिक मानवजाति की सारी कठिनाइयों का प्रतीकात्मक प्रतिनिधि बन गया है।

भारत उसके पुनरुत्थान का देश होगा—एक अधिक ऊंचे और अधिक सत्य जीवन में पुनरुत्थान।

*

भारत की सबसे पहली समस्या है अपनी अंतरात्मा को फिर से प्राप्त करना और उसे अभिव्यक्त करना।

प्र०—भारत की आत्मा को फिर से कैसे पाया जाये ?

उ०—अपनी अंतरात्मा के प्रति सचेतन होओ। तुम्हारी अंतरात्मा में भारत की आत्मा के लिये अत्यधिक रस हो और वह उसके लिये सेवावृत्ति के साथ अभीप्सा करे। अगर तुम सच्चे हुए तो सफल होओगे।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र०—वर्तमान संकटकाल में प्रत्येक भारतीय का आज क्या कर्तव्य है ?

उ०—अपने तुच्छ अहंकारपूर्ण व्यक्तित्व के परे उठ जाओ और हम सबकी मां, भारत की सुयोग्य संतान बनो, अपने कर्तव्यों को ईमानदारी और सरलता के साथ पूरा करो और भागवत कृपा पर अडिग विश्वास रखकर सर्वदा प्रसन्न और निश्चिंत बने रहो।

*

प्र०—अगर आपसे कहा जाये कि भारत के बारे में अपनी दृष्टि को एक वाक्य में प्रकट कीजिये तो आपका क्या उत्तर होगा ?

उ०—संसार का गुरु बनना भारत की सच्ची नियति है।

प्र०—इसी तरह अगर आपसे कहा जाये कि अपनी दृष्टि के अनुसार आज की वास्तविकता पर एक वाक्य में टिप्पणी कीजिये तो आप क्या कहेंगी ?

उ०—वर्तमान वास्तविकता का एक बहुत बड़ा मिथ्यात्व है, जो शाश्वत सत्य को ढके हुए है।

प्र०—आपके अनुसार अंतर्दर्शन और वास्तविकता के बीच तीन मुख्य बाधाएं कौन-सी हैं ?

उ०—१. अज्ञान, २. भय, ३. मिथ्यात्व।

प्र०—स्वाधीनता के बाद भारत ने सब मिलाकर जो प्रगति की है क्या आप उससे संतुष्ट हैं ?

उ०—नहीं।

प्र०—वर्तमान काल में हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि क्या है ? आप उसे इतना अधिक महत्त्व क्यों देती हैं ?

उ०—सत्य के लिये जिज्ञासा का जागना क्योंकि सत्य के बिना कोई यथार्थता नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र०—इसी तरह क्या आप सबसे अधिक दुःखदायी असफलता बता सकती हैं ? आप किस आधार पर उसे इतना दुःखदायी मानती हैं ?

उ०—कपट, क्योंकि कपट विनाश की ओर ले जाता है।

*

प्र०—राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जीवन के वर्तमान और भविष्य की दृष्टि से भारत को शिक्षा का लक्ष्य क्या बनाना चाहिये ?

उ०—अपने बच्चों को मिथ्यात्व के त्याग और सत्य की अभिव्यक्ति के लिये तैयार करना।

प्र०—इस ऊंचे आदर्श तक पहुंचने के लिये देश को कौन-से कदम उठाने चाहियें ? इस दिशा में आरंभ कैसे किया जा सकता है ?

उ०—जड़त्व को आत्मा को अभिव्यक्ति के लिये तैयार करके।

प्र०—भारत की सच्ची विशिष्टता क्या है और उसकी नियति क्या है ?

उ०—जगत् को यह सिखाना कि जबतक जड़तत्त्व आत्मा की अभिव्यक्ति न बन जाये वह मिथ्या और निर्वीर्य है।

प्र०—आप भारत की वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति को किस दृष्टि से देखती हैं ? आप मनुष्य में आत्मा के विकास के लिये क्या योगदान दे सकती हैं ?

उ०—उसका एकमात्र उपयोग है, आत्मा की अभिव्यक्ति के लिये भौतिक आधार को अधिक मजबूत, अधिक पूर्ण और अधिक समर्थ बनाना।

प्र०—देश राष्ट्रीय एकता के बारे में बहुत चिंतित है। इस विषय में आपकी दृष्टि क्या है ? भारत अपने प्रति और संसार के प्रति अपना कर्तव्य किस तरह पूरा करेगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ०—राष्ट्रों की एकता संसार की अटल नियति है। लेकिन राष्ट्रों की एकता संभव होने के लिये, पहले हर राष्ट्र को अपनी एकता सिद्ध करनी होगी।

प्र०—भारत को भाषा का प्रश्न बहुत तंग करता है। इस मामले में हमारी ठीक वृत्ति क्या होनी चाहिये ?

उ०—एकता को जीवित तथ्य होना चाहिये, ऊपर से लादा हुआ मनमाना नियम नहीं। जब भारत एक होगा तो सहज रूप से उसके पास ऐसी भाषा होगी जिसे सब समझ सकते हों।

प्र०—शिक्षा सामान्य रूप से साक्षरता और सामाजिक प्रतिष्ठा बन गयी है। क्या यह दूषित प्रवृत्ति नहीं है ? लेकिन शिक्षा को उसका आंतरिक मूल्य और उसका मूलभूत आनंद तत्त्व कैसे दिया जाये ?

उ०—परिपाटियों से बाहर निकलो और आत्मा के विकास के लिये आग्रह करो।

प्र०—हमारी शिक्षा किन भ्रमों और भ्रांतियों से भरी है ? हम उनसे कैसे बच सकते हैं ?

उ०—(क) सफलता, आजीविका और धन को दिया जानेवाला ऐकांतिक महत्त्व,

(ख) आत्मा के साथ संपर्क और अपनी सत्ता के सत्य के विकास और उसकी अभिव्यक्ति को सबसे अधिक महत्त्व देने का आग्रह करो।

*

भारत की आत्मा एक और अविभाज्य है। भारत विश्व में किये जानेवाले अपने जीवनकार्य के विषय में सचेतन है। वह उसकी अभिव्यक्ति के बाहरी साधनों की प्रतीक्षा कर रहा है।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें क्या करना चाहिये

भगवान् इस आंदोलन के पीछे हैं और उन्हें किसी ऐसे की जरूरत नहीं है जो उन्हें सफलता का उपाय बताये। इस बारे में वे स्वयं देख लेंगे। हम चाहे जो योजनाएं बनायें, जब कार्य का समय आयेगा तो हम उन्हें बिलकुल बेकार पायेंगे। क्रांतियां हमेशा आश्चर्यों से भरी होती हैं और जो भी यह सोचता हो कि वह क्रांति के साथ शतरंज खेल सकता है वह शीघ्र ही जान जायेगा कि भगवान् की पकड़ कितनी जबर्दस्त है और उनके श्वास के बवण्डर के आगे मानव बुद्धि कितनी नगण्य है। क्रांति के अवसरों पर वही आदमी प्रभुत्व पा सकता है जो कोई योजना नहीं बनाता लेकिन अपने हृदय को पवित्र रखता है ताकि भगवान् अपनी इच्छा घोषित कर सकें। जीवन का महान् नियम यह है कि योजनाएं न हों लेकिन एक अपरिवर्तनशील ध्येय हो। अगर संकल्प उस ध्येय पर लगा हो जिसे प्राप्त करना है तो परिस्थितियां अपने-आप उचित मार्ग दिखा देती हैं लेकिन योजना बनानेवाला हमेशा अप्रत्याशित की ठोकरें ही खाता रहता है।

*

हम व्यक्ति से और विशेष रूप से उठते हुए युवकों से कहते हैं कि भारत का काम करो, जगत् का काम करो, भगवान् का काम करो। तुम इन आदर्शों को सिद्ध करना तो दूर रहा पोस भी नहीं सकते अगर तुम अपने मन को यूरोपीय विचारों के अधीन रखो या जीवन को भौतिक दृष्टि से देखो। भौतिक दृष्टि से तुम कुछ भी नहीं हो, आध्यात्मिक दृष्टि से तुम सब कुछ हो . . .। आर्य विचारों का, आर्य संयम का, आर्य चरित्र का और आर्य जीवन का उद्धार करो। वेदांत, गीता, योग का उद्धार करो। केवल अपनी बुद्धि या भाव में ही नहीं, अपने जीवन में उनका उद्धार करो। उन्हें अपने जीवन में उतारो और तुम महान्, बलवान्, शक्तिशाली, अजेय और निर्भय बन जाओगे। जीवन या मृत्यु में तुम्हारे लिये कोई आतंक न होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठिनाई और असंभाव्यता के शब्द तुम्हारे शब्दकोष से उड़ जायेंगे। क्योंकि आत्मा में शाश्वत बल है, तुम्हें साम्राज्य पाने से पहले अपने अंदर का राज्य, आंतरिक स्वराज्य प्राप्त करना होगा। वहां माता निवास करती हैं और पूजा की प्रतीक्षा में हैं ताकि वे तुम्हें शक्ति दे सकें। मां पर विश्वास रखो, उनकी सेवा करो, अपने संकल्पों को उनके संकल्प में खो दो, अपने अहं को देश के बड़े अहं में और अपने पृथक् स्वार्थ को मानवता की सेवा में मिला दो। अपने ही अंदर सारी शक्ति के सोते को पा लो। तुम्हें सब कुछ, सामाजिक सामर्थ्य, बौद्धिक उत्कर्ष, राजनीतिक स्वाधीनता, मानव-विचार पर प्रभुत्व, संसार का नेतृत्व, सब कुछ मिल जायेगा।

*

उनमें यह दृढ़ श्रद्धा होनी चाहिये कि भारत को उठना होगा और महान् बनना होगा और चाहे कुछ भी हो, प्रत्येक कठिनाई, प्रत्येक पराजय को उनकी सहायता करनी होगी, उनके उद्देश्य को आगे बढ़ाना होगा। यह विश्वास होना चाहिये कि अब प्रवाह ऊपर की ओर है, पतन का समय समाप्त हो चुका। सवेरा बस होने को है और एक बार प्रकाश दिखायी दे जाये तो फिर रात कभी नहीं हो सकती। उषा पूरी होने को है और सूर्य क्षितिज से ऊपर उठेगा। भारत के भाग्य का सूर्योदय होगा और वह सारे भारत को अपने प्रकाश से भर देगा, भारत को प्रकाशमग्न करके सारे एशिया को प्रकाशमग्न करेगा, सारे संसार को प्रकाशमग्न करेगा। हर घण्टा, हर पल उन्हें भगवान् द्वारा आदिष्ट दिवस की उज्ज्वलता के निकट ही ला सकता है।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-भक्ति की भावनाएं

माताजी,

आप भारत[१] की राजनीतिक स्थिति को भली-भांति जानती हैं। क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूं : हम जो आपके बालक हैं, इस समय हमारी मनोवृत्ति और हमारा कर्तव्य क्या होना चाहिये ?

माताजी, मैं जानता हूं कि हमें चीजों की उनके बाहरी रूप-रंग से जांच न करनी चाहिये पर मैं इस यौगिक स्थिति से बहुत दूर हूं और मैं आपके पथ-प्रदर्शन के लिये प्रार्थना करता हूं।

क्या देश-प्रेम के भाव हमारे योग के साथ मेल नहीं खाते ?

देश-प्रेम के भाव हमारे योग के साथ असंगत नहीं हैं—बिलकुल नहीं—अपनी मातृभूमि की शक्ति और अखंडता के लिये संकल्प करना बिलकुल उचित भाव है। यह इच्छा कि वह प्रगति करे, वह अधिकाधिक, पूर्ण स्वाधीनता में, अपनी सत्ता के सत्य में अभिव्यक्त हो, एक सुंदर और उदात्त इच्छा है जो हमारे योग के लिये हानिकर नहीं हो सकती।

लेकिन तुम्हें उत्तेजित नहीं होना चाहिये, काम में समय से पहले धंस नहीं जाना चाहिये। तुम प्रार्थना कर सकते हो और करनी भी चाहिये, सत्य की विजय के लिये अभीप्सा और संकल्प करो और साथ ही अपने दैनिक कार्य करते चलो और चुपचाप सुस्पष्ट चिह्न की प्रतीक्षा करो जो किये जाने योग्य कार्य की ओर संकेत दे।

मेरे आशीर्वाद सहित।

२७ अक्तूबर १९६२ —श्रीमां

[१] २० अक्तूबर १९६२ को चीन ने भारत की उत्तरी सीमा पर दो स्थानों पर आक्रमण किया। अगले आठ दिनों में चीनी सेनाओं ने कई सैनिक चौकियों को जीत लिया, लेकिन फिर वापिस लौट गयीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मोत्सर्ग

स्वभावतः समस्त योग एक नवजन्म है। यह सामान्य में से जन्म है, मनुष्य के मानसिक-भौतिक जन्म में से उच्चतर आध्यात्मिक चेतना और महत्तर तथा अधिक दिव्य जीवन में जन्म है। कोई योग तबतक सफलता के साथ नहीं अपनाया जा सकता और न उसका अनुसरण किया जा सकता है जब तक कि वह उस आध्यात्मिक बृहत्तर अस्तित्व के प्रति प्रबल जागरण न हो। जिस आत्मा को इस गहरे और विशाल परिवर्तन के लिये बुलाया जाता है वह प्रारंभिक प्रस्थान के लिये कई तरीकों से आ सकती है। वह उस स्वाभाविक विकास से आ सकती है जो उसे बिना जाने जागृति की ओर ले जाता है; वह किसी धर्म के प्रभाव के कारण या दर्शन के आकर्षण, धीमे प्रकाश, अकस्मात् स्पर्श या धक्के की वजह से आ सकती है। वह बाहरी परिस्थितियों के दबाव या किसी भीतरी आवश्यकता द्वारा, एक शब्द द्वारा आ सकती है जो मन की मोहर तोड़ देता है या वह लंबे मनन द्वारा आ सकती है, किसी ऐसे के दूरस्थ उदाहरण द्वारा जो रास्ता पार कर चुका है या वह स्पर्श और दैनिक प्रभाव द्वारा आ सकती है। प्रकृति तथा परिस्थितियों के अनुसार ही पुकार आयेगी।

लेकिन वह चाहे जिस तरीके से आये, मन और इच्छा-शक्ति का निर्णय होना चाहिये और उसके परिणामस्वरूप होना चाहिये पूर्ण और प्रभावकारी आत्मोत्सर्ग। एक नयी आध्यात्मिक विचार-शक्ति की स्वीकृति होनी चाहिये और साथ ही सत्ता में एक ऊर्ध्वगामी अवस्थिति, एक प्रदीप्ति, इच्छा-शक्ति और हृदय की अभीप्सा से अभिभूत एक घुमाव या परिवर्तन भी होना चाहिये—यह वह महत्त्वपूर्ण क्रिया है जो बीज की तरह योग से मिलनेवाले सभी परिणामों को अपने अंदर लिये रहती है। किसी उच्चतर चीज का विचार मात्र या बौद्धिक खोज, चाहे मन को उसमें कितनी अधिक रुचि क्यों न हो, तबतक व्यर्थ होती है जबतक हृदय उसको एकमात्र वांछनीय चीज न मान ले और इच्छा-शक्ति इसे करने योग्य एकमात्र चीज न माने। आत्मा के सत्य का केवल विचार ही नहीं करना चाहिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल्कि उसे जीना चाहिये, और उसे जीने के लिये सत्ता की एकीकृत एकनिष्ठता की मांग होती है; योग में इतने बड़े परिवर्तन का विचार किया जाता है जिसे विभक्त इच्छा-शक्ति या ऊर्जा का कोई अंश या सकपकाता हुआ मन प्रभावित नहीं कर सकता। जो भी भगवान् की खोज करता है उसे भगवान् के प्रति और केवल भगवान् के प्रति अपना उत्सर्ग करना चाहिये।

—श्रीअरविन्द

मानव और अतिमानव[१]

एक अर्थ में मानवता से अतिमानवता में संक्रमण, आत्म-अतिक्रमण, या हम अभी जो हैं उसे त्यागना है ताकि हम कुछ और या कुछ अधिक बन सकें। दूसरे अर्थ में यह है आत्म-संभवन, हमारी वर्तमान अवस्था में छिपी हुई किसी वस्तु—सुप्त देवत्व का प्रस्फुटन जो हमेशा से हमारी सच्ची सत्ता है और रहा है।

हमारे लिये अतिमानवता आत्म-अतिक्रमण है क्योंकि मनुष्य व्यावहारिक रूप से और अपनी सतही अभिज्ञता में अभी तक विकसनशील प्रकृति की लघु, भ्रांत, सीमित और अज्ञानी रचना है। अगर अतिमानवता निर्दिष्ट है तो या तो मनुष्य को स्वयं अतिमानव बनना होगा या फिर, अगर वह उसे प्राप्त करने में असमर्थ हो या प्राप्त न करे तो उसे ऐसे प्राणी के लिये स्थान छोड़ देना चाहिये जो उससे अधिक विशाल हो और जिसमें संकल्प और शक्ति दोनों हों।

फिर अतिमानवता भी मूलतः आत्म-संभवन ही है क्योंकि अभी हम जिसे अपना स्व कहते हैं वह तो केवल ऊपरी तल का मनुष्य है, केवल

[१] श्रीअरविन्द के तीन लघु लेख। पहला करीब १९२८-२९ में लिखा गया था, दूसरा १९४० में और तीसरा करीब १९४२ का है। अंतिम दो का शीर्षक मानव और अतिमानव था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्तनशील और जीवन्त शरीर है। यह तो लहर का केवल ऊपरी भाग है, संपूर्ण समुद्र नहीं जो हम गुप्त रूप से हैं। अतिमानवता जिससे बनती है वह सब जड़ भौतिक रूप में हमारी गुप्त गहराइयों में मौजूद है, और उससे भी अधिक हमारी गुह्य ऊंचाइयों में है। जो कुछ बाहरी तथ्य में, प्रत्यक्ष रूप से, वर्तमान आत्म-अभिज्ञ मनुष्य है वह नहीं, बल्कि मनुष्य को जो बनना है वह उसमें पहले से मौजूद है, उसे केवल अपने-आपको पाना है ताकि वह वही विशालतर स्व और प्रकृति बन जाये।

*

मनुष्य संक्रमणशील सत्ता है, वह क्रम-विकास का अंतिम छोर और पार्थिव जीवन का मुकुट नहीं है।

परिश्रमशील अनिश्चित विचार और अर्द्ध सफल इच्छावाली यह अज्ञानी, अपूर्ण और विभक्त सत्ता, एड़ी-चोटी का पसीना एक करनेवाला यह अस्थिर परीक्षण, होने के लिये प्रयास करनेवाली हजारों चीजों के आविर्भाव का यह प्रयास-क्षेत्र वैश्व शक्ति के संघर्ष की पूर्णाहुति नहीं है। यह केवल एक प्रयोगशाला है जिसमें प्रकृति अपने मुहरबन्द रहस्य की खोज करती है, उसे जो प्राप्त करने का काम सौंपा गया है उसके लिये प्रारंभिक प्रयत्न करती है।

जैसे पशु में से मनुष्य उठा उसी तरह मानव से अतिमानव का प्रादुर्भाव होगा।

*

मनुष्य संक्रमणशील सत्ता है, वह अंतिम नहीं है। जैसे क्रम-विकास का आरंभ इसके साथ नहीं हुआ उसी तरह अंत भी इसके साथ नहीं होगा। वह प्रकृति का प्रत्यक्ष मुकुट, उसका उच्चतम परिणाम, उसका अंतिम स्पष्ट निष्कर्ष नहीं है। प्रकृति ने मनुष्य के अंदर अपनी उच्चतम संभावनाएं प्रकट नहीं की हैं, उसने उसके अंदर चेतना और सत्ता की परम ऊंचाइयों को नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाया है। जिस तरह पहले मनुष्य के अंदर, अवमानव, कीट और पशु था उसी तरह बाद में उसके अंदर परम मानव और अतिमानव होगा।

मनुष्य अपने-आपमें अतिमानव बन सकता है, वह, वह सब कुछ बन सकता है जो वह अभी नहीं है, लेकिन इसके लिये उसे अपने-आपका अतिक्रमण करना होगा। अपनी वर्तमान अपूर्ण चेतना के साथ चिपके रहने से वह क्रम-विकास में अगला कदम नहीं उठा सकता। उसे अपने अंदर के आध्यात्मिक देवत्व की खोज करनी और उसे मुक्त करना है, अपनी भागवत संभावनाओं को चरितार्थ करना है, स्वयं कुछ महान्, समर्थ भागवत वस्तु या भागवत व्यक्ति बनना है जो भूत-प्लाविका से बाहर निकलने के लिये संघर्ष करता आ रहा है—जिसमें वह तब से बंदी है जब से पार्थिव प्रकृति की पहेली का आरंभ हुआ था।

—श्रीअरविन्द

सोसायटी समाचार

"योग और भय एक साथ नहीं चल सकते," १५ अगस्त १९५६ माताजी ने अपनी बुधवार की कक्षा में कहा था। "कोई सुरक्षा, कोई कृपा उन्हें नहीं बचा सकती जो अनिवार्य पवित्रीकरण से इंकार करते हैं।

"और मैं यह भी जोड़ दूं कि भय एक अशुद्धि है, सबसे बड़ी अशुद्धियों में से एक, ऐसी अशुद्धि जो सीधी उन भागवत विरोधी शक्तियों से आती है जो पृथ्वी पर भगवान् की क्रिया को नष्ट कर देना चाहती हैं; और जो सचमुच योग करना चाहते हैं उनका सबसे पहला कर्तव्य है अंदर से, सारी ताकत लगाकर, पूरी सचाई के साथ, यथासंभव सहनशक्ति के साथ भय की छाया तक को अपने अंदर से निकाल फेंकें। मार्ग पर चलने के लिये तुम्हें निर्भय होना चाहिये और उस तुच्छ, नगण्य, कमजोर, घिनौनी, अपने ऊपर झुक जाने की उस अवस्था में कभी न डूब जाना चाहिये जिसे भय कहते हैं।

"तुम्हें अदम्य साहस, पूर्ण निष्कपटता और सच्चे आत्मदान के साथ आगे बढ़ना चाहिये, हिसाब-किताब, लाभ-हानि का लेखा-जोखा न करो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाने के विचार से मत दो, इस विचार से श्रद्धा मत रखो कि तुम्हारी सुरक्षा की जा रही है, ऐसी श्रद्धा मत रखो जो प्रमाणों की मांग करती हो—पथ पर आगे बढ़ने के लिये यही चीजें अनिवार्य हैं और इन्हीं के द्वारा तुम समस्त संकटों से बच सकते हो।''

इस वर्ष १५ अगस्त को श्रीअरविन्द की १२८वीं जयन्ती मनायी जायेगी। उस दिन आश्रम में विशेष कार्यक्रम ये होंगे—श्रीअरविन्द के कमरे का दर्शन, सवेरे श्रीअरविन्द की समाधि के पास ध्यान, शाम को खेल के मैदान में मार्च-पास्ट और ध्यान।

११ से १३ अगस्त तक श्रीअरविन्द सोसायटी के सदस्यों की वार्षिक बैठक होगी। डॉ० नाडकरणी १७ से २६ अगस्त तक सावित्री-सत्र का आयोजन करेंगे। जो आना चाहें उन सबका स्वागत है।

१८ से ३० मई तक सोसायटी बीच ऑफिस में शिक्षा शिविर का आयोजन होगा। इसका मुख्य उद्देश्य होगा अध्यापकों को ऐसी राह दिखाना कि वे विद्यार्थियों को अपनी क्रियाओं, अपने आवेगों के प्रति सचेतन बनायें, उनकी योग्यताओं और कौशल को निखारें और उनकी भौतिक, प्राणिक और मानसिक क्षमताओं के प्रति उन्हें अवगत करायें। इस शिविर में शैक्षिक खेल, साहित्य, कला, प्रकृति इत्यादि के बारे में भी बताया जायेगा।

कालीकट (केरला) केंद्र में श्री प्रदीप नारंग ने नवयुग के बारे में एक भाषण दिया और नारी आयोग और युवा संघ, दो केंद्रों का उद्घाटन भी हुआ। इस अवसर पर अंग्रेजी, मलयालम में विभिन्न लोगों के भाषण भी हुए।

बैंगलोर में साधना विषय पर एक शिविर २२ तथा २३ अप्रैल को हुआ। इसमें श्री प्रदीप नांरग, एस० वी० सबनीस तथा डॉ० अमूर के भाषण हुए।

चण्डीगढ़, उड़ीसा, चेन्नई, गुजरात इत्यादि केंद्रों में विभिन्न कार्यक्रम हुए।

ओमपुरी (गुजरात) में ११ से १५ मई तक शिविर हुआ, इसमें कई भाषणों के साथ-साथ "पंचामृत" नामक पुस्तिका का भी विमोचन हुआ।

इन स्थानों पर सोसायटी के पांच नये केंद्र अप्रैल तथा मई के महीने में खुले—अमरावती (महाराष्ट्र), रेहाबाड़ी (आसाम), रामनगर (उ० प्र०), मोतीकुंज (उ० प्र०) तथा सिरुमुगई (तमिलनाडु)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SRI AUROBINDO SOCIETY

Society House, Pondicherry – 605 002

Notice for the Annual General Meeting

The Annual General Meeting of the members of Sri Aurobindo Society will be held on Saturday the 21st October 2000, at 4.00 p.m., at Sri Aurobindo Bhavan, 8, Shakespeare Sarani, Calcutta – 700 071, to transact the following business:

1. To confirm the minutes of the last Annual General Meeting held on 28th October 1999.

2. To consider and approve the audited Balance Sheet as on 31.03.2000 and Income & Expenditure Account of the Society for the year ended 31.03.2000.

3. To consider and adopt the Executive Committee's Annual Report of Activities for the year 1999-2000.

4. To appoint an auditor for the Society for the year 2000-2001.

5. To amend Rule 14 of the Rules & Regulations under the Memorandum of Association of the Sri Aurobindo Society which pertains to legal suits. The amendment relates to delegation of authority.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6. To consider any other matter with the permission of the chair.

Sd/-
(Pradeep Narang)
General Secretary

17th June, 2000
Pondicherry

Note: The members are entitled to appoint proxy. Proxies must be deposited at the Registered Office of the Society at No. 8, Shakespeare Sarani, Calcutta – 700 071, during office hours, in advance, but not less than 48 hours before the time fixed for holding the meeting.

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा..... ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Hanuman Prasad Dharam Chand
Dinodiya Welfare Trust
CALCUTTA

J. J. Charitable Trust
7C Kiron Shankar Rai Road
CALCUTTA - 1

Kayan Foundation
9/2 Hungerford street
CALCUTTA - 17

Pannalal Kandoi Seva Kosh
132/1 M. G. Road
CALCUTTA - 7

G. N. B. Motors Ltd.
8 Camac Street, 9th Floor
CALCUTTA - 700 017

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Sri Madhopur Vikas Parishad Trust
48 Dobson Road
HOWRAH - 711101

Sharad Seva Nidhi Trust
26 Amherst Street
CALCUTTA - 700009

Seth Chiranjilal Khaitan Trust
7 Keyatala Lane
CALCUTTA - 700009

Mamraj Jayatri Trust
6A Ironside Road
CALCUTTA - 700019

Dhanuka Charity Trust
Dhanseri House, 4A Woodburn Park
CALCUTTA - 700020

M/S ODC Carrier (P) Ltd.
15 India Exchange Place
CALCUTTA - 700001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Salarpuria Public Charity Trust
7, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 072

M/s Patton Ltd.
3C, Camac Street
CALCUTTA - 700 016

Naurangrai Lohia Charitable Trust
14A Loudon Street
CALCUTTA - 700 017

Charu Enterprises
42B Shakespear Sarani, 13, Shalimar Apt.
CALCUTTA - 17

Kitply Industries Ltd.
White House, 'A' Block, 4th Floor, 119 Park Street
CALCUTTA - 700 016

Eastern Enterprises Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Manav Seva Trust
CALCUTTA

Saria Charitable Trust
(J. P. Saria)
D-9 Kirti Nagar
NEW DELHI - 110 015

Shri Gopal Kamal Kumar
196, Jamuna Lal Bajaj Street
CALCUTTA - 700 007

Adukia Industrial Concern
17, Ganesh Ch. Avenue
CALCUTTA - 700 013

Sri Keshar Deo Saraf & Sons (HUF)
35, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 012

Maikal Fibres Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको उस नये प्रकाश के प्रति खोलो जो धरती पर उदित हुआ है और तुम्हारे सामने एक ज्योतिर्मय पथ खुल जायेगा।

— श्रीमां

WITH THE BEST COMPLIMENTS OF

S. L. Deorah Group of Enterprises

ASSAM TEA WAREHOUSING CORPORATION
INDIAN TEA STORAGE AGENCY
INDIAN TRANSPORT AGENCY
AURO IMPEX PRIVATE LIMITED
AURO LABORATORIES LIMITED
AURO BUSINESS CENTRE

Calcutta Office:

'SHIVANGAN' - Flat No. 2C, 53/1/2, Hazra Road
CALCUTTA - 700 019
Phone No.: 474 - 2059, 474 - 2060
Fax No.: 476 - 2348

Bombay Office:

408 Navratan, 69 P. DeMellow Road
BOMBAY - 400 009
Phone No.: 343 - 5341, 342 - 9027
Fax No.: 342 - 5022

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

जब तुम योग करने आते हो तो तुम्हें अपनी सारी मानसिक इमारतों के और अपने सारे प्राणिक पाड़ों के नष्ट-भ्रष्ट हो जाने के लिये तैयार रहना चाहिये। तुम्हें इसके लिये तैयार रहना चाहिये कि तुम केवल अपनी श्रद्धा के सहारे हवा में लटके रहो। तुम्हें अपने पुराने आपे को और उसके लगावों को पूरी तरह भूलना होगा, उसे अपनी चेतना से उखाड़ कर एक नूतन चेतना में जन्म लेना होगा, हर प्रकार के बंधन से मुक्त होना होगा। यह न सोचो कि तुम क्या थे, बल्कि यह सोचो कि तुम क्या बनने की अभीप्सा करते हो। तुम हर चीज में वही बनो जो तुम सिद्ध करना चाहते हो। अपने मृत अतीत से मुड़कर सीधे भविष्य की ओर देखो। तुम्हारा धर्म, देश, कुटुम्ब, सभी वहां हैं। वह **भगवान्** है।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

चैम्पियन

आजकल लोगों में यह मान्यता फैली हुई है कि जबतक बहुत-से लोग किसी विशेष काम में हाथ न बंटायें तबतक सफलता हाथ न लगेगी। लेकिन बार-बार ऐसे मनुष्य आते हैं जो इस मान्यता को झुठला देते हैं और मानवजाति की कूच में अपना अविस्मरणीय स्थान बना लेते हैं।

ऐसे एक मनुष्य थे कुमार स्वामी ! आज शायद कोई उन्हें याद न करता हो किंतु उनके कार्य, उनकी लोक-कल्याण-भावना हजारों को ऊपर उठा चुकी है। यह जानकर हमें आश्चर्य होता है कि वे जुलाहों की जाति में जन्मे थे। जुलाहों की जाति को भले हम नीच समझें किंतु इसी जाति में कबीर जैसे आशु कवि हुए जिनका नाम आज के पंडित और विद्वान् श्रद्धा से दोहराते हैं और इसी जाति में कुमार स्वामी का जन्म हुआ जो कवि नहीं थे किंतु कवि की व्याख्या को हम विस्तृत करें तो उन्होंने अपने कार्यों से कविता की रचना की थी। दक्षिण भारत के नागरकोईल नगरवासी शाश्ता और शिवकामी के यहां बालक कुमार स्वामी ने १२ अक्तूबर १८९७ में जन्म लिया। जुलाहा उत्तर भारत का हो या दक्षिण भारत का, गरीब जरूर होता है। कुमार स्वामी चौथी कक्षा तक ही पढ़ पाये, फिर पैसे कमाने के लिये सूत बेचनेवाली दुकान में नौकर रहे। वहां से दवाई बेचनेवाले की दुकान में नौकरी की, फिर बढ़िया लकड़ी की दुकान में नौकर रहे किंतु हर जगह उन्हें तनखाह कम ही मिलती रही।

एक दिन कुमार स्वामी ने सोचा कि अगर मैं मद्रास चला जाऊं तो शायद मुझे अच्छी नौकरी मिल जाये। जब अपने पिता के सामने उन्होंने यह प्रस्ताव रखा तो उन्होंने साफ मना कर दिया क्योंकि उन दिनों मद्रास जाना उतना ही दुष्कर माना जाता था जितना विदेश जाना। पिता ने मना कर दिया किंतु शिवकामी बेटे का दिल तोड़ना नहीं चाहती थी। उसने पति से छिपाकर अपनी सोने की चूड़ियां बेच डालीं ताकि कुमार अपने मद्रास-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफर का सपना पूरा कर पाये। इस बड़े शहर में कुमार की किसी से जान-पहचान न थी, न पैसा था। किंतु ऐसा लगता था कि भाग्य उसका साथ दे रहा था। कुमार मद्रास की सड़कों पर यों ही निरुद्देश्य डोल रहे थे कि मद्रास विश्वविद्यालय के विख्यात तमिल विद्वान्, प्रोफेसर के० एन० शिवराज पिल्लै ने उन्हें देखा और जुलाहों की धोती बांधने की विशिष्ट शैली के कारण जान गये कि यह लड़का जुलाहा है। प्रोफेसर स्वयं उसी जाति के थे। उन्होंने कुमार से पूछा कि वे क्या कर रहे हैं तो सहानुभूति पाकर उन्होंने अपना दिल खोलकर सारी राम कहानी सुनायी। प्रोफेसर ने उन्हें यातायात की कंपनी में नौकरी दिलवा दी। धीरे-धीरे उस कंपनी में फिटर से लेकर कार की मरम्मत तक का पूरा काम उन्होंने सीख लिया। अब आयी कार चलाने की बारी, उन्होंने यह भी सीख लिया और प्रोफेसर शिवराम पिल्लै की सहायता से उन्हें कार चलाने का लाइसेंस मिल गया। चार वर्ष मद्रास में काम करने के बाद वे अपने घर नागरकोईल लौट आये। माता-पिता ने खोये हुए पुत्र को पुनः प्राप्त कर उसे गले लगा लिया। ड्राइवर का लाइसेंस बहुत काम आया। उन्हें लक्ष्मी विलास मोटर सर्विस में ड्राइवर की नौकरी मिल गयी। मां-बाप के साथ अपने घर में रहने के कारण वे अपनी पूरी तनखाह बचा पाते थे इसलिये कुछ समय बाद उनके दिमाग में एक बस खरीदने का विचार कौंधा। और उन्होंने सेकण्ड हैण्ड बस एक हजार रुपयों में खरीद ली। मोटर सर्विस का नाम रखा चैम्पियन मोटर सर्विस।

१९१७ में पुरानी बस बेचकर उन्होंने धीरे-धीरे कई नयी बसें खरीद लीं। बसों की एक कतार हमेशा उनके पास रहती और गरीबी से अमीरी की ओर उनके कदम बढ़ने लगे। लोग उनको चैम्पियन कहने लगे क्योंकि जो लड़का चौथी क्लास तक ही पढ़ पाया था और एक समय फटेहाल घूमता था आज कई बसों का मालिक बन गया था !! कुमार स्वामी ने अपने छोटे भाइयों को भी अपने साथ काम दिया।

१९३८ में त्रावनकोर सरकार ने बस सर्विसों का राष्ट्रीयकरण किया और किसी को भी हरजाना न दिया। कुमार स्वामी हारना जानते ही न थे। अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने नागरकोईल में बिजली लाने की ठानी। उन्होंने नागरकोईल सप्लाई कॉर्पोरेशन खड़ा किया। नागरकोईल के नागरिकों में कुमार स्वामी का नाम प्रेम और आदर से लिया जाने लगा।

दूसरे विश्व-युद्ध के समय पेट्रोल की कमी से कई व्यापार लड़खड़ाने लगे। कुमार स्वामी कम पढ़े-लिखे थे किंतु उनका दिमाग तेज था और मनुष्यों की कठिनाइयों से उनका हृदय द्रवित हो जाता था, तो इस कठिन काल में उन्होंने कोयले से पेट्रोल की क्षतिपूर्ति करने की कोशिश की। मद्रास की विख्यात सिमसन एण्ड कंपनी से एक पुराना गैस जेनरेटर खरीद कर, अपनी बुद्धि लड़ा कर उसकी मरम्मत की और सफलता पाकर ऐसे कई जेनरेटर बनाये और मुसीबत के मारे लोगों ने उन्हें धड़ाधड़ खरीद लिया। तीन वर्ष के बाद उन्होंने यह काम छोड़ दिया क्योंकि तबतक विश्व-युद्ध समाप्त हो चुका था और पेट्रोल आसानी से मिलने लगा था। मद्रास की सरकार ने कुमार स्वामी की सेवाओं के लिये उन्हें सर्टीफिकेट ऑफ ऑनर दिया। उन्हें यह मान देते समय कानून और व्यापार मंत्री श्री वी० वी० गिरि ने उनकी अन्वेषण-क्षमता और बुद्धि की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

अंत में कुमार स्वामी ने पत्नी के नाम एक कपड़े की मिल स्थापित की जिसमें अनेक जुलाहों को रोजी-रोटी मिलने लगी।

तो एक प्रायः अनपढ़ पुरुष ने अपने जीवन में कई साहसिक कार्य किये, असंख्य मनुष्यों को दो जून रोटी की सुविधा दी और इस चुने हुए कार्य में जीवन सफल किया। उन्होंने शांति से १८ अक्तूबर, १९६० में प्राण त्यागे। उनकी शव-यात्रा में हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए।

आखिर क्या है वह तत्त्व जो मनुष्य को ऊपर उठने के लिये प्रेरित करता है ? महत्त्वाकांक्षा, सद्भावना या मनुष्यों के लिये प्रेम ?

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

सितम्बर

१. मोह का अर्थ है, बाहरी रूप को ही सद्वस्तु समझना और क्षणभंगुर वस्तुओं को ही एकमात्र अनुकरणीय वस्तु, चिरस्थायी सत्य मानना।

२. तुम्हारी सच्चाई के अनुपात में, तुम्हारा अंतर्ज्ञान अधिकाधिक यथार्थ और अधिकाधिक सही होता जाता है।

३. जीवन में जब-जब तुम्हें कोई आघात मिले तब-तब तुम तुरत अपने-आपसे कहो : 'आह ! मुझे प्रगति करनी है'; तब आघात आशीर्वाद बन जायेगा। तुम अपने सिर को कंधों के बीच झुकाने के बदले हर्ष के साथ उसे ऊपर उठा लो और कहो : "वह कौन-सी चीज है जिसे मुझे अभी सीखना है ? मैं यह जानना चाहता हूं। कौन-सी चीज है जिसे मुझे परिवर्तित करना है ? मैं उसे जानना चाहता हूं।" बस, तुम्हें यही करना चाहिये।

४. यहां जिस चीज की तुमसे मांग की जाती है वह है ग्रहणशील आत्मार्पण, शरीर का या मन का या प्राण का, तुम्हारी सत्ता के एक अंश का नहीं, बल्कि तुम्हारी संपूर्ण सत्ता का अर्पण। कोई दूसरी चीज तुमसे नहीं मांगी जाती, सिवाय इसके कि तुम अपने-आपको उद्घाटित करो; बाकी कार्य मैं अपने हाथ में लेती हूं।

५. . . . स्वयं साधना के लिये ही हम साधना करना नहीं चाहते। हम तो यह चाहते हैं कि हम जो कुछ करें उस सबमें, सब समय, अपने सभी कर्मों में और प्रत्येक मुहूर्त में भगवान् पर एकाग्र रहें।

६. भक्ति और आंतरिक समर्पण के साथ कार्य करना, कर्म करना भी एक प्रकार की आध्यात्मिक साधना है।

७. आत्मोत्सर्ग करने का तात्पर्य है "किसी कार्य के लिये अपने-आपको अर्पित कर देना।" अतएव, यौगिक अर्थ में इसका मतलब है किसी भागवत कर्म को संपन्न करने की भावना के साथ उस भागवत कर्म के लिये अपने-आपको अर्पित कर देना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. यदि तुम अपने जीवन के आधे घंटे को लो और उसपर विचार करो और अपने-आपसे प्रश्न पूछो, "क्या यह भगवान् के प्रति उत्सर्ग है ?" तो तुम देखोगे कि छोटी-छोटी चीजें एक बड़ी चीज बन गयी हैं और तुम्हें यह लगेगा कि जीवन समृद्ध और प्रकाशपूर्ण बन गया है।

९. हम कह सकते हैं कि तीव्रावेग और उत्साह के साथ किया गया कोई भी कार्य अपेक्षाकृत सहज होता है (वह तुम्हारे अंदर की कार्य करने की तीव्रता पर निर्भर करता है), परंतु जब अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में और उसके समस्त ब्योरे में अपनी अभीप्सा को संसिद्ध करने का प्रश्न होता है तो उत्साह थोड़ा पीछे हट जाता है और मनुष्य कठिनाई अनुभव करता है . . . लेकिन तुम्हें कभी हतोत्साह नहीं होना चाहिये और हमेशा डटे रहना चाहिये।

१०. सभी अनुभवों का मूल्य केवल उसी अनुपात में होता है जिस अनुपात में अनुभव करनेवाले में सच्चाई होती है।

११. अभीप्सा में एक ऐसी चीज होती है जिसे मैं निःस्वार्थ ज्योति कह सकती हूं जो कामना के अंदर नहीं होती। तुम्हारी अभीप्सा—तुम्हारा अपनी ओर लौटना नहीं है—कामना में मनुष्य हमेशा ही अपनी ओर लौटता है।

१२. विशुद्ध मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, अभीप्सा है आत्मदान, सर्वदा ही, जब कि कामना सदा एक ऐसी चीज होती है जिसे मनुष्य अपनी ओर खींचता है; अभीप्सा एक ऐसी चीज है जो अपने-आपको दे देती है, आवश्यक रूप से विचार के रूप में नहीं बल्कि क्रिया में, स्पंदन में, प्राणिक आवेग में।

१३. सच्ची अभीप्सा मस्तक से नहीं आती; जब यह विचार के द्वारा भी निर्मित होती है तो यह एक लौ की तरह हृदय से फूट पड़ती है।

१४. अभीप्सा तुम्हें हर्ष प्रदान कर सकती है, पर वह एक बहुत विशिष्ट हर्ष होता है, जिसमें किसी प्रकार की उत्तेजना नहीं होती।

१५. मनुष्य एकाग्रता की शक्ति के द्वारा और अधिक अच्छी तरह तथा अधिक शीघ्रता से कार्य पूरा करने में सफल हो सकता है। इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम कर्म का उपयोग विकास के साधन के रूप में कर सकते हो; अन्यथा तुम्हें यह अस्पष्ट धारणा बनी रहेगी कि कर्म "निष्काम भाव" से संपन्न करना चाहिये, परंतु इसमें एक महान् खतरा है, क्योंकि मनुष्य बड़ी तेजी से उदासीनता को ही निष्काम भाव मानने की भूल कर बैठता है।

१६. चैत्य पुरुष केवल भौतिक जीवन में और पृथ्वी पर ही प्रगति कर सकता और अपना गठन कर सकता है।

१७. प्रत्येक बार जब तुम कोई पुस्तक पढ़ते हो, जिसमें चेतना बड़ी निम्न होती है, तो वह तुम्हारी अवचेतना और निश्चेतना को बलवती बनाती है—वह तुम्हारी चेतना को ऊपर उठने से रोकती है। वह चीज मानों ऐसी है कि तुमने अपनी अवचेतना को शुद्ध करने के लिये जो कुछ प्रयास किया था उसपर गंदे पानी की कई बाल्टियां उंडेल दी हों।

१८. . . . सच्चे शिथिलीकरण के लिये हमें एक डिग्री ऊपर उठना चाहिये, अपने-आपको अतिक्रांत करना चाहिये।

१९. यदि मनुष्य नीचे जाता है तो इससे उसकी थकावट बढ़ जाती है और जड़ता आती है। इसके अतिरिक्त, जितनी बार मनुष्य नीचे आता है, अवचेतना के बोझ को बढ़ाता है—उस विशाल बोझ को जिसे हमें बार-बार साफ करना चाहिये, साफ करते रहना चाहिये यदि हम ऊपर चढ़ना चाहें, यह चीज हमारे पैरों की बेड़ियों की तरह है। परंतु इस बात को सिखाना कठिन है, क्योंकि इसे दूसरों को सिखाने से पहले मनुष्य को स्वयं अपने-आप जानना चाहये।

२०. स्वयं अपने से नीचे डूबकर हम थकावट दूर नहीं कर सकते। हमें सीढ़ी के ऊपर चढ़ना होगा और वहां हमें सच्चा विश्राम प्राप्त होगा, क्योंकि वहां आंतरिक शांति, ज्योति, वैश्व शक्ति विद्यमान हैं। और इस तरह धीरे-धीरे मनुष्य उस सत्य के संपर्क में आता है जो उसके जीवन का सच्चा कारण है।

२१. जब कोई अपनी भूल जान जाता है और फिर भी उसे दुहराता है तो इसका अर्थ है कि उसकी चेतना के किसी बाहरी भाग ने ही उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना है और बाकी भाग उससे पूर्णतः संतुष्ट है और साधारण तौर पर उसका समर्थन करता है। तुम कोई भूल करने का खतरा उठाये बिना अपने-आपसे कह सकते हो : "यदि मैं एक ही भूल को दुहराता हूं तो मैं सच्चा नहीं हूं।" अतएव सच्चा बनने का प्रयास करो।

२२. . . . किसी एक व्यक्ति के द्वारा जो कुछ संपन्न हो चुका है, जो कुछ संसिद्ध हो चुका है वह दूसरे के द्वारा भी संसिद्ध हो सकता है। यह काफी है कि एक व्यक्ति, एक मानव-शरीर उसे उपलब्ध करने में समर्थ हो चुका हो और उससे यह आश्वासन मिलता है कि वह किया जा सकता है।

२३. एक ही बात से मुझे शांति मिलती है और वह यह है कि प्रत्येक वस्तु सर्वदा, अनंत रूप से चलती रहती है और सर्वदा ही कुछ-न-कुछ नया करने का अवकाश रहता है।

उपलब्ध लक्ष्य चाहे जो कुछ भी हो, वह सदा ही एक प्रारंभ होता है।

२४. वास्तव में देखा जाये तो केवल पृथ्वी पर ही चैत्य जीवन प्रारंभ होता है, और बस ठीक यही वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा भगवान् ने भौतिक जीवन को अपने दिव्य मूलस्रोत से पुनः मिलने की आवश्यकता के प्रति जाग्रत् किया है। चैत्य के बिना, जड़तत्त्व कभी अपनी निश्चेतना से जाग्रत् न हुआ होता, उसने कभी अपने मूलस्रोत के जीवन या अपने आध्यात्मिक जीवन के लिये अभीप्सा न की होती।

२५. अभीप्सा की प्रत्येक झलक सर्वदा ही चैत्य प्रभाव की अभिव्यक्ति होती है। चैत्य की उपस्थिति के बिना, चैत्य प्रभाव के बिना, मनुष्य में कभी प्रगति का कोई बोध या प्रगति के लिये कोई संकल्प नहीं होगा।

२६. विरोधी शक्तियों का सामना करने का सर्वोत्तम पथ है सदा अभीप्सा करना, सर्वदा भगवान् को स्मरण करते रहना; और कभी भय न करना।

२७. सभी गतियां, सभी प्रकंपन सामान्य होते हैं—वे अंदर घुसते हैं, बाहर निकल जाते हैं, वे चारों ओर घूमते रहते हैं, परंतु वे केवल उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हदतक तुम्हारे ऊपर टूट पड़ते हैं और तुम्हारे अंदर घुस जाते हैं जितनी हदतक तुम अपने अंदर दरवाजा खोले रखते हो।

२८. यदि तुम किसी दोष से या किसी कठिनाई से अपने-आपको मुक्त करना चाहते हो तो बस एक ही पद्धति है : पूर्ण रूप से जाग्रत् रहना, बहुत सतर्क और सावधान होकर चेतना प्राप्त करना। ... सबसे पहले, तुम्हें ठीक-ठीक यह जानना चाहिये कि तुम क्या चाहते हो—जानना चाहिये, मन से नहीं, बल्कि एकाग्रता के द्वारा, अभीप्सा के द्वारा और बहुत सचेतन संकल्प-शक्ति द्वारा। यही महत्त्वपूर्ण बात है।

२९. युवा होने का मतलब है भविष्य में रहना।
युवा होने का मतलब है हमें जो बनना चाहिये उसके लिये हम जो हैं उसे छोड़ने के लिये हमेशा तैयार रहना।
युवा होने का मतलब है यह कभी न स्वीकारना कि कोई चीज सुधारी नहीं जा सकती।

३०. शुभचिन्तक बनो और तुम सब कष्टों से मुक्ति पा लोगे, सदा सन्तुष्ट और प्रसन्न रहो और तुम अपनी शांत प्रसन्नता को चारों ओर फैला दोगे।

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा..... ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५ ००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाश की किरणें

(१०)

समय, प्रगति, रूपान्तर

भूतकाल

भूतकाल का उस फलक की तरह उपयोग करो जिससे तुम भविष्य में छलांग मार सको।

२५ दिसम्बर १९५३

*

प्रायः हम उससे चिपटे रहते हैं जो था, हमें डर रहता है कि कहीं हम पिछले अनुभव के परिणाम को न खो बैठें, हमें डर रहता है कि कहीं विशाल और उच्च चेतना को न खो बैठें और फिर से निचली स्थिति में न जा गिरें। लेकिन हमें हमेशा सामने देखना और आगे बढ़ना चाहिये।

१३ अक्तूबर १९५४

*

हर क्षण हमें जानना चाहिये कि हर चीज को कैसे खोएं, ताकि हर चीज को पा सकें, अतीत को मृत शरीर की तरह छोड़ देना और महानतर प्रचुरता में फिर से जन्म लेना हमें सीखना चाहिये।

१२ दिसम्बर १९५४

*

योग करने के लिये सबसे महत्त्वपूर्ण चीज है, भूतकाल के समस्त लगाव से पीछा छुड़ाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूतकाल को गुजर जाने दो और जो प्रगति तुम करना चाहते हो केवल उसी पर केंद्रित रहो और तुम जो प्राप्त करना चाहते हो उसे भगवान् के समर्पण कर दो।

१० जनवरी १९६७

*

जबतक कि हम अतीत की आदतों और विश्वासों से पिंड नहीं छुड़ा लेते तबतक तेजी से आगे बढ़ने की बहुत आशा नहीं रहती।

२३ दिसम्बर १९६७

*

भूतकाल को भूल जाना और सोचते रहने की आदत को भूल जाना सचमुच कठिन है और साधारणतः इसके लिये कठिन "तपस्या" की जरूरत होती है। लेकिन अगर तुम्हारे अंदर भगवान् की कृपा पर श्रद्धा है और तुम उसे पूरे हृदय से पुकारो तो तुम अधिक आसानी से विजय पा लोगे।

२२ नवम्बर १९६८

वर्तमान

जीवन में ऐसे अनोखे क्षण आते हैं जो स्वप्न की तरह गुजर जाते हैं। तुम्हें उन्हें पंखों से ही पकड़ लेना चाहिये अन्यथा वे कभी नहीं लौटते।

*

जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण क्षण कौन-सा है? वर्तमान क्षण। क्योंकि भूतकाल का तो अस्तित्व ही नहीं रहता और भविष्य का अभी तक कोई अस्तित्व नहीं है।

१९५२

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमेशा ऊंचे उड़े चलो, दूर-दूर चलते चलो, बिना हिचके चले चलो। आज की आशाएं कल की सिद्धियां होंगी।

भविष्य

मेरा सुझाव है कि हम वही करते चलें जो सही और उचित है। भविष्य के बारे में ज्यादा चिन्ता न करो। भविष्य को भागवत कृपा के हाथ में छोड़ दो।

*

हर नया प्रभात नयी प्रगति की संभावना लाता है। हम बिना जल्दबाजी के आगे बढ़ते जायेंगे क्योंकि हम भविष्य के बारे में निश्चित हैं।

*

धन्य हैं वे जो भविष्य में छलांग मारते हैं।

१ जनवरी १९७१

प्रगति

प्रगति है सृष्टि पर भगवान् के प्रभाव का चिह्न।

*

प्रगति है, तुम्हारे पास जो कुछ है और तुम जो कुछ हो, मार्ग पर आगे बढ़ने के लिये उस सबका हर क्षण त्याग कर देने के लिये तैयार रहना।

२९ जून १९५०

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस क्षण तुम संतुष्ट हो जाओ और अभीप्सा करना छोड़ दो, उसी क्षण से तुम मरना शुरू कर देते हो। जीवन गति है, जीवन प्रयास है। यह आगे ही आगे की ओर कूच है, भावी उद्‌घाटनों और सिद्धियों की ओर आरोहण है। आराम करना चाहने से ज्यादा भयंकर और कुछ नहीं है।

*

यह न सोचो कि तुम क्या थे, केवल यही सोचो कि तुम क्या होना चाहते हो और निश्चय ही तुम प्रगति करोगे।

१ जून १९५४

*

हम अपने-आप प्रगति करें, औरों से प्रगति करवाने का यह सबसे अच्छा तरीका है।

२३ जुलाई १९५४

पूर्णता

पूर्णता कोई शिखर नहीं है, यह कोई अंतिम सीमा नहीं है। तुम जो कुछ करो किसी में अंत नहीं है, हमेशा कुछ ज्यादा अच्छा करने की संभावना रहती है और ज्यादा अच्छा करने की संभावना ही प्रगति का सच्चा अर्थ है।

*

पूर्णता कोई महत्तम या अन्तिम छोर की चीज नहीं है। यह संतुलन और समन्वय है।

*

हम पूर्णता के प्यासे हैं। इस मानव पूर्णता के नहीं जो अहंकार की पूर्णता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और भागवत पूर्णता का रास्ता रोकती है।

बल्कि उस एकमात्र पूर्णता के जिसके अंदर धरती पर शाश्वत सत्य को अभिव्यक्त करने की शक्ति है।

१ जनवरी १९६२

*

पूर्णता है वह सब कुछ जो हम अपनी उच्चतम अभीप्सा में बनना चाहते हैं।

९ अक्तूबर १९६६

सफलता

अपने लक्ष्य को कभी न भूलो, कभी अभीप्सा करना बंद न करो। अपनी प्रगति में कभी न रुको, और तुम्हारी विजय सुनिश्चित है।

*

सफलता की शक्ति : यह उनकी शक्ति है जो अपने प्रयास को निरंतर बनाये रखना जानते हैं।

*

वह सब जो जनता को खुश करने और सफलता पाने के उद्देश्य से किया जाता है वह सब गंवारू है और मिथ्यात्व की ओर ले जाता है।

१८ जनवरी १९६५

*

दुर्भाग्य की अपेक्षा सफलता में से गुजरना ज्यादा कठिन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफलता की घड़ी में तुम्हें अपने से ऊपर उठने के लिये विशेष रूप से जागरूक रहना चाहिये।

विजय

वर दे कि हमारे अंदर निष्कपट अभीप्सा हो और उसके साथ सतत सद्भावना हो, और विजय निश्चित है।

१९ मई १९५४

*

हमारे विश्वास की निष्कपटता में हमारी विजय की निश्चिति है।

३ अक्तूबर १९५४

*

विजय की निश्चिति हमें अनंत धैर्य और अधिकतम ऊर्जा देती है।

*

कोई भी मानव इच्छा-शक्ति भगवान् की इच्छा-शक्ति के सामने नहीं खड़ी रह सकती। आओ हम पूरी तरह से और ऐकान्तिक रूप में भगवान् की ओर हों, तब हमारी विजय सुनिश्चित है।

१ जनवरी १९५५

रूपांतर

एक परम दिव्य चेतना है। हम इसी दिव्य चेतना को भौतिक जीवन में प्रकट करना चाहते हैं।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्य यह नहीं है कि हम अपने-आपको दिव्य चेतना में खो दें। लक्ष्य है कि हम दिव्य चेतना को भौतिक में प्रवेश करने और उसका रूपांतर करने दें।

*

सभी चीजों में सबसे ज्यादा कठिन है दिव्य चेतना को भौतिक जगत् में उतार लाना। क्या इस कारण हमें अपना प्रयास छोड़ देना चाहिये ? हर्गिज नहीं।

२ जुलाई १९५५

*

तुम आध्यात्मिकता की उस स्थिति में हो जो भौतिक को अस्वीकार करती और उससे भाग निकलना चाहती है। आनेवाले कल की आध्यात्मिकता भौतिक को अपना कर उसे रूपांतरित कर देगी।

३० जुलाई १९६५

*

सच्ची आध्यात्मिकता जीवन को रूपांतरित कर देती है।

*

एक चीज है जिसे तुम्हें जानना और कभी न भूलना चाहिये। रूपांतर के काम में वह सब जो सत्य है, निष्कपट है उसे हमेशा रखा जायेगा; केवल वही जो मिथ्या और कपटपूर्ण है, लुप्त हो जायेगा।

*

बाहर के सारे शोर-गुल को चुप कर दो, भागवत सहायता के लिये अभीप्सा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करो, जब वह आये तो अपने-आपको उसके प्रति पूरी तरह से खोल दो और उसकी क्रिया के प्रति समर्पित हो जाओ, और वह प्रभावशाली ढंग से तुम्हारा रूपांतर ले आयेगी।

*

न केवल मन और प्राण बल्कि शरीर को भी अपने सभी कोषाणुओं के साथ भागवत रूपांतर की अभीप्सा करनी चाहिये।

*

रूपांतर ऐसा परिवर्तन है जिसके द्वारा सत्ता के सभी तत्त्व और सभी गतियां अतिमानसिक सत्य को प्रकट करने के लिये तैयार हो जाती हैं।

*

किसी ने मुझसे पूछा—

"रूपांतर के काम में भगवान् और मनुष्य दोनों में से कौन ज्यादा धीमा है?"

मैंने उत्तर दिया—

मनुष्य को लगता है कि भगवान् उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर देने में बहुत धीमे हैं।

उधर भगवान् को लगता है कि मनुष्य उनके प्रभाव को ग्रहण करने में बहुत धीमा है।

परंतु सत्य चेतना के लिये सब कुछ उसी तरह चलता जा रहा है जैसे चलना चाहिये।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो रूपांतर के लिये तैयार हैं वे उसे किसी भी जगह कर सकते हैं। और जो तैयार नहीं हैं वे जहां कहीं भी हों नहीं कर सकते।

१२ नवम्बर १९७१

बुढ़ापा और मृत्यु

केवल वही वर्ष जो व्यर्थ में गुजरते हैं, तुम्हें बूढ़ा बना देते हैं।

वह वर्ष व्यर्थ जाता है जिसमें कोई प्रगति नहीं होती, चेतना की कोई वृद्धि नहीं होती, पूर्णता की ओर कोई पग नहीं उठाया जाता।

अपना जीवन किसी उच्चतर और बृहत्तर चीज की उपलब्धि की ओर निवेदित कर दो तो तुम्हें कभी गुजरते हुए वर्षों का भार अनुभव न होगा।

२१ फरवरी १९५८

*

जन्म से मरण तक जीवन एक भयानक चीज है।

वीर लोग भयों की परवाह किये बिना उसे पार कर जाते हैं।

समझदार लोग सावधानी बरतते हैं।

भीरु हर चीज से डरते हैं।

परंतु अंततः प्रत्येक के लिये होता वही है जो परम प्रभु ने निश्चय किया हो।

१९ जून १९६६

*

मृत्यु वह हर्गिज नहीं है जो तुम उसे समझते हो। तुम आशा करते हो कि मृत्यु अवचेतन विश्राम की तटस्थ अचंचलता हो, परंतु वह विश्राम पाने के लिये तुम्हें उसके लिये तैयारी करनी चाहिये।

जब तुम मरते हो तो तुम केवल अपने शरीर को खोते हो, साथ ही भौतिक जगत् से संबद्ध क्रियाओं को भी खो बैठते हो। लेकिन भौतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थ के साथ-साथ वह सब भी नहीं खो जाता जो प्राणिक जगत् का है—तुम्हारी सभी कामनाएं तुम्हारे लगाव, तुम्हारी इच्छाएं, निराशा और अवसाद के भाव के साथ बनी रहती हैं और इस कारण तुम प्रत्याशित शांति को नहीं पा सकते। शांत और घटनारहित मृत्यु का रस पाने के लिये तुम्हें उसके लिये तैयारी करनी होगी। और इसकी एकमात्र प्रभावशाली तैयारी है, सभी कामनाओं का लोप।

जबतक हमारा शरीर बना रहे, हमें क्रिया करनी चाहिये, कुछ काम करना चाहिये। लेकिन अगर हम काम सिर्फ इसलिये करें क्योंकि हमें वह करना चाहिये, परिणाम न चाहें, उसे इस या उस तरह से न चाहें तो हम धीरे-धीरे अनासक्त हो जाते हैं और इस तरह अपने-आपको आरामदायक मृत्यु के लिये तैयार कर लेते हैं।

१. मनुष्यों को अपना शरीर क्यों छोड़ना पड़ता है ?

क्योंकि वे प्रकृति के साथ-साथ भगवान् की ओर प्रगति करना नहीं जानते।

२. क्या हमें मृत शरीर का मान करना चाहिये ? अगर हां, तो कैसे ?

तुम्हें हर चीज का मान करना चाहिये, चाहे वह जीवित हो या मृत, और यह जानना चाहिये कि हर चीज दिव्य चेतना में रहती है।

मान का अनुभव हृदय और आंतरिक वृत्ति में होना चाहिये।

३. क्या मृत पुरुष के शरीर में भी भगवान् हैं ?

भगवान् हर जगह हैं, मैं दोहराती हूं कि भगवान् के लिये न कोई जीवित है न मृत—हर चीज शाश्वत रूप में जीती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. हमें आत्मा को खुश रखने के लिये क्या करना चाहिये ताकि वह अच्छी परिस्थितियों में पुनर्जन्म ले, उदाहरण के लिये, आध्यात्मिक वातावरण में जन्म ले।

दुःख न करना, बहुत शांत और अचंचल रहना और जो चला गया है उसके लिये प्रेमभरी याद रखना।

क्या आत्माएं रोती हैं ?

जब कोई चीज उन्हें भगवान् से अलग कर देती है।

हम किसी को रोने से कैसे रोक सकते हैं ?

निष्कपट भाव से उससे प्रेम करो और उसके आंसू रोकने की कोशिश न करो।

*

जीवन शाश्वत है। केवल शरीर लुप्त हो जाता है।

१० मार्च १९६९

— — — —

इच्छा-शक्ति को विकसित करो—और इच्छा-शक्ति विकसित होती है उसके स्थिर प्रयोग से। ठीक वैसे ही जैसे मांसपेशियां उतनी ही अधिक सुदृढ़ होंगी जितना अधिक उनका प्रयोग किया जायेगा।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असाधारण क्या है ?

श्रीअरविन्द यहां कहते हैं : "भागवत कार्य वह कार्य नहीं है जिसे अहंकारमय मन चाहता या जिसकी अनुमति देता है; क्योंकि भगवान् सत्य पर पहुंचने के लिये भ्रांति का, आनंद तक पहुंचने के लिये दुःख का, पूर्णता तक पहुंचने के लिये अपूर्णता का उपयोग करते हैं।"

कैसे ?

वैसे ही। जैसा आज संसार है।

उन्होंने आगे चलकर यह विस्तार से समझाया है। वे कहते हैं कि मानव मन श्रद्धा रखना तभी स्वीकार करेगा जब भगवान् उसकी धारणा के अनुसार कार्य करें; और मनुष्य की, भगवान् क्यों हैं इस बारे में साधारण धारणा, निरंतर चमत्कारों की होती है—जिसे वह चमत्कार कहता है, यानी, ऐसी चीज जो बिना किसी कारण, बिना किसी तुक के होती रहे। तो, चूंकि वह ऐसी चीज की उपस्थिति में नहीं होता . . .। लेकिन यह उससे बहुत अधिक सूक्ष्म है . . .। अगर हम एक और ही जगत् से आते जहां चीजें बिलकुल ही अलग ढंग से होती हों, जिसकी कल्पना करना भी हमारे लिये मुश्किल हो . . . जो इस तरह से हो जिसका तर्क ही एकदम निराला हो—घटनाओं का, कारणों का, कार्यों का और परिणामों का तर्क ही एकदम भिन्न हो—अगर हम अचानक एक ऐसे जगत् से इस जगत् में आ पहुंचें, तो हम जो कुछ देखेंगे, हमें बिलकुल चमत्कार मालूम होगा, क्योंकि हम घटनाओं के तर्क को न समझ पायेंगे।

जो कुछ होता है और जैसे होता है हम उसके अभ्यस्त हैं; यह बस, आदत की बात है, क्योंकि पृथ्वी पर पहली सांस लेने के समय से हम चीजों को इस तरह देखने के अभ्यस्त हैं, और इसलिये हमें वे बिलकुल साधारण मालूम होती हैं, क्योंकि वे इसी तरह से होती हैं। लेकिन अगर हम इस आदत से बाहर निकल पायें, अगर हम चीजों को किसी और दृष्टि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिंदु से देख सकें, तो हमें तुरंत उस प्रकार के चमत्कारिक प्रभाव का अनुभव होगा, क्योंकि तब हम अभ्यास के अनुसार घटनाओं के तर्क को न देखेंगे।

हमें कार्य-कारण के एक विशेष तर्क की, सभी चीजों के परिणामों की, सभी गतिविधियों के संबंध के बारे में अमुक आदत है। हमारे लिये वह यह तथ्य है जिसे हम बिना सोचे-विचारे ही स्वीकार करते हैं, क्योंकि हम हमेशा उसीके अंदर रहते आये हैं। लेकिन अगर हम सदा उसके अंदर न रहे होते, तो हम उसे और ही ढंग से देखते। और हम यह परीक्षण कर सकते हैं। अगर हम अभी जैसा जगत् है उसकी नियति से बाहर आ जायें—यह जगत् जो भौतिक, प्राणिक, मानसिक और थोड़े-से छिपे हुए आध्यात्मिक प्रभाव या संयोजन का मेल है, जो भी घटित होता है वह इन सबका मिश्रण है—अगर हम उस सबसे बाहर आ जायें (हम ऐसा कर सकते हैं), अगर हम भौतिक, जड़ जगत् से, जैसा कि वह है, ऊपर उठ जायें और किसी और चेतना में प्रवेश करें, तो हम चीजों को एकदम अलग तरह से देखेंगे।

और तब हम देखते हैं कि इन रंग-रूपों के पीछे, जो हमें एकदम तर्क-संगत और बहुत स्वाभाविक, और लगभग अनिवार्य मालूम होते हैं, एक ऐसी क्रिया है जिसे अगर मनुष्य की साधारण चेतना से देखा जाये, तो वह **सारे समय** चमत्कारपूर्ण दिखायी देगी।

शक्तियों, चेतनाओं, गतिविधियों, प्रभावों का हस्तक्षेप होता है जो हमारी सामान्य चेतना के लिये अदृश्य और अगोचर होता है और वह परिस्थितियों के सारे मार्ग में **निरंतर** परिवर्तन लाता रहता है।

हमें बहुत दूर जाने की जरूरत नहीं है; इसे अनुभव करने के लिये सामान्य चेतना से, बस, एक कदम बाहर जाना ही काफी है। मैं पहले भी कई बार कह चुकी हूं कि अगर तुम अपने अंदर चैत्य चेतना को पा लो और उसके साथ एक हो जाओ, तो, तुम्हें तुरंत परिस्थितियों के पूरे उलटाव का अनुभव होता है और तुम सामान्यतः चीजों को जिस रूप में देखते हो उससे एकदम भिन्न रूप में देखोगे। क्योंकि तुम क्रिया के परिणाम को न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखकर उस शक्ति को देखते हो जो काम कर रही है।

अभी तुम केवल शक्तियों की क्रिया के परिणाम को देखते हो, और वही तुम्हें स्वाभाविक और तर्क-संगत मालूम होता है। केवल जब कोई असाधारण बात होती है—या जो तुम्हारे लिये असाधारण हो—तो तुम आश्चर्य करना शुरू करते हो। लेकिन अगर तुम चेतना की एक और ही अवस्था में हो, तो अभी जो स्वाभाविक मालूम हो रहा है वह स्वाभाविक न रह जायेगा। तुम देखोगे कि यह किसी और चीज का, तुम जिस क्रिया को देखते हो उससे भिन्न किसी क्रिया का प्रभाव है।

लेकिन शुद्ध जड़-भौतिक दृष्टि से भी तुम कुछ चीजों के लिये अभ्यस्त हो, वे तुम्हें समझायी गयी हैं : उदाहरण के लिये, बिजली की रोशनी, या यह कि एक बटन दबाने से ही मोटरकार चल पड़ती है। तुम इसे समझा सकते हो, तुम्हें बतलाया गया है कि ऐसा क्यों होता है, इसलिये वह तुम्हें बिलकुल स्वाभाविक मालूम होता है। लेकिन मैंने ऐसे लोगों के उदाहरण देखे हैं जो न जानते थे, जो बिलकुल अनजान थे। वे ऐसे स्थान से आये थे जहां इन चीजों का प्रवेश नहीं हुआ था। उन्हें अचानक एक मूर्ति दिखलायी गयी जो प्रकाश की किरणों से चमक रही थी; वे पूजा भाव से एकदम घुटने टेककर बैठ गये : यह दिव्य अभिव्यक्ति थी।

और मैंने किसी और को देखा है जो इसी हालत में था। वह एक बालक था जो कुछ न जानता था। उसके सामने एक बटन दबाया गया और मोटर चल पड़ी; उसके लिये यह बहुत बड़ा चमत्कार था। हां तो, ऐसी बात है। तुम किन्हीं चीजों के अभ्यस्त हो, वे तुम्हें बिलकुल स्वाभाविक मालूम होती हैं। अगर तुम्हें उनका अभ्यास न होता और तुम उन्हें देखते, तो उन्हें चमत्कार मान लेते।

अब जरा समस्या को बदलो। ढेर सारी चीजें हैं जिन्हें तुम अपने-आपको नहीं समझा सकते, बहुत सारे हस्तक्षेप हैं जो परिस्थितियों की गति को बदल देते हैं, जिनकी ओर तुम्हारा ध्यान भी नहीं जाता। इसलिये तुम्हें हर चीज सामान्य, एकरस और बिना किसी विशेष महत्त्व की मालूम होती है। लेकिन अगर तुम्हारे अंदर ज्ञान होता और तुम यह देख पाते कि ये सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीजें जो तुम्हें बिलकुल सामान्य मालूम होती हैं क्योंकि तुम उनके अभ्यस्त हो, जिनके बारे में तुमने अपने-आपसे कभी यह भी नहीं पूछा: "यह इस तरह कैसे होती है ?"—अगर तुम्हारे अंदर ज्ञान होता, अगर तुम देख सकते कि वह कैसे होता है, कौन-सी चीज कार्य करती है और क्यों, उदाहरण के लिये, कोई ऐसी लापरवाही से काम करता है कि उसका सिर फट जाना चाहिये था, लेकिन वह फटा नहीं, जब कि भयंकर दुर्घटना की पूरी तैयारी मालूम होती है और वह नहीं होती, और ऐसी ही हजारों, लाखों चीजें जो हर रोज, हर जगह होती रहती हैं—उनके बारे में अगर तुम्हारे अंदर इतना पर्याप्त ज्ञान होता कि तुम देख सकते कि ऐसा क्यों होता है, तो उसी समय तुम कह सकते: "देखो, शक्ति के जैसी कोई चीज है, एक चेतना है, एक सामर्थ्य है जो कार्य करती है। वह भौतिक क्षेत्र की नहीं है। भौतिक दृष्टि से, तर्क की दृष्टि से, ऐसा होना चाहिये था, और ऐसा हुआ नहीं।" तुम कहते हो: "ओह! यह उसका सौभाग्य था," कहते हो न? और तुम संतुष्ट हो जाते हो, तुम्हारे लिये वही ठीक होता है।

(मौन)

वह अज्ञानी, सीमित, अहंकारी चेतना है जो चमत्कारों की मांग करती है। जिस क्षण मनुष्य प्रबुद्ध हो उठता है, वह जानता है कि सब जगह और हमेशा चमत्कार ही हो रहा है।

और मनुष्य को इस चमत्कार और इस 'कृपा' पर जितनी अधिक श्रद्धा हो, वह उसे सब जगह, जहां वह निरंतर उपस्थित है, देखने या अनुभव करने में उतना ही अधिक समर्थ होता है। अज्ञान और कृपा में श्रद्धा की कमी, अंधा अहंकार ही मनुष्य को देखने से रोकता है।

२३ नवम्बर १९५५

'श्रीमातृवाणी', खण्ड ७
पृ० ३६५-३६८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजी के साथ एक युवा साधक का पत्र-व्यवहार

मां, मेरी चेतना को अपनी तरफ मोड़ लो।

मेरे प्रेम पर कभी शंका मत करो, तब एकदम स्वाभाविक रूप से तुम मेरी तरफ मुड़ जाओगे।
१० जून, १९३५

अगर मुझे चैत्य चेतना प्राप्त हो जाये तो ये सभी कठिनाइयां फिर और बनी न रहेंगी ?

निश्चित रूप से, चैत्य चेतना में ऐसी कोई कठिनाइयां नहीं होतीं; उसे मेरी उपस्थिति और मेरे प्रेम की सतत अनुभूति होती है।
१० जून, १९३५

कल मैंने प्रकाश और हर्ष में लौटने के लिये बहुत प्रयास किया लेकिन मैं असफल रहा।

यह बहुत अच्छा है कि तुमने प्रयास किया, लेकिन तुम्हें इतनी जल्दी हतोत्साह नहीं होना चाहिये मात्र इसलिये कि तुम्हें सफलता तुरंत नहीं मिल रही। इसके विपरीत, तुम्हें अपने प्रयास में तबतक लगे रहना चाहिये जबतक तुम सफल न हो जाओ।

मेरी सहायता हमेशा तुम्हारे साथ होगी।
११ जून, १९३५

लेकिन मैं इस चैत्य चेतना को कैसे पा सकता हूं ?

अभीप्सा, प्रार्थना और एकाग्रता द्वारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद मेरी अभीप्सा पर्याप्त तीव्र नहीं है ?

सबसे बढ़कर यह स्थायी नहीं है।

कृपया मुझे बताइये कि मैं अपने प्रयास में तुरंत सफल क्यों नहीं होता ?

क्योंकि बाहरी अज्ञान बहुत हठी है और सतत प्रयास के द्वारा ही वह झुकेगा।

मेरे अंदर आपकी उपस्थिति मुझे दुराचरण करने से रोकती क्यों नहीं ?

क्योंकि बाहरी सत्ता—जो दुराचरण करती है—वह या तो उस उपस्थिति को जानती नहीं या उसे जानने से इंकार करती है।

मैं अपने पूरे हृदय के साथ चैत्य-चेतना पाना चाहता हूं; मैं इसके लिये कोई भी कीमत चुकाने के लिये तैयार हूं।

एकमात्र कीमत जो चुकानी है वह है **एक आग्रही और दृढ़ निश्चयी संकल्प-शक्ति।**

११ जून, १९३५

हमारे योग में, पशुओं के प्रति हमें कैसी वृत्ति अपनानी चाहिये ?

सच्ची वृत्ति केवल तभी आ सकती है जब तुमने भागवत एकात्मता की चेतना को पा लिया हो; तबतक के लिये हमेशा यही अच्छा होता है कि पशुओं के साथ सम्मान, प्रेम और करुणा के साथ व्यवहार किया जाये।

११ जून, १९३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन क्या हमें कीड़ों को मारना नहीं चाहिये ?

निस्संदेह।
१२ जून, १९३५

अंधकार मेरे अंदर ही है या यह बाहर से आता है ?

जड़-भौतिक चीजों में—बाहर और अंदर—हर जगह अंधकार है।
१२ जून, १९३५

जब दुःख-दर्द सिर पर सवार हो जाये तो हम क्या कर सकते हैं ?

एक सुन्दर फूल को निहारो।
१३ जून, १९३५

लेकिन जब आदमी बहुत दुःख-दर्द में हो तो सुंदर फूल भी उबा देता है—अगर मैं गलत नहीं कह रहा।

यह उस प्राणिक भाग के प्रति—जो दुःख झेल रहा है—पूरी तरह से दासता का चिह्न होगा। तुम्हें पीछे हटकर खड़े रहना और अपने-आपको निम्न, बाहरी गतिविधियों से अलग करना सीखना होगा।
१४ जून, १९३५

मेरे ख्याल से दूसरों के दुःख-दर्द को सह न पाना और दुःख-दर्द झेलनेवालों से कतराना एक कमजोरी है।

अगर तुम्हारे पास उन्हें आराम पहुंचाने के लिये न मनोवैज्ञानिक साधन हैं न भौतिक तो मुझे इसमें कोई तुक नहीं दीखता कि तुम उसीके बारे में सोचते रहो।
१६ जून, १९३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह की वही गलतियां हमेशा मुझे आपसे अलग करती हैं और मुझे एकांत की शरण लेनी पड़ती है।

तुम्हें यह जानना चाहिये कि तुम अवसाद में डूबे बिना यह कर सकते हो या नहीं, वह तो बकबक करने से अधिक बुरा होगा।
१८ जून, १९३५

वही समान आग मुझे चारों तरफ से बरबाद किये जा रही है।

तुम्हें उसे बुझाना होगा अगर वह सचमुच तुम्हें बरबाद कर रही हो, या अगर वह तुम्हें शुद्ध कर सके तो उसे उपयोग में लाना होगा।
२० जून, १९३५

मेरे अंदर एक आग जल रही है। यह भीषण है। यह मेरी प्राणिक ऊर्जा को सोख लेती है। मुझे लगता है कि कोई मुझे निगले जा रहा है। मेरी समझ में नहीं आता कि क्या करूं।

ये सारी चीजें विरोधी सुझाव हैं जिन्हें छोड़ना होगा। क्या तुम्हें बुखार है? अगर है तो किसी चिकित्सक के पास जाकर इलाज कराओ। लेकिन अगर तुम्हें बुखार नहीं है तो आग का यह मामला गलत कल्पना है जिसे तुरंत छोड़ देना चाहिये।

एक पवित्र आग है जो हृदय में प्रज्ज्वलित होती और सारी सत्ता को घेरे रहती है। यह अग्नि है जो सब कुछ प्रकाशित करती और शुद्ध करती है। हर बार जब तुम मुझसे कुछ प्रगति की मांग करते हो तो मैं तुम्हारे अंदर इसी अग्नि को प्रज्ज्वलित करती हूं; लेकिन यह मिथ्यात्व और अंधकार के सिवा और किसी चीज को नष्ट नहीं करती।
२० जून, १९३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप कहती हैं कि आप मेरे अंदर उस अग्नि को प्रज्ज्वलित करती हैं—फिर मिथ्यात्व और अंधकार अभीतक बने क्यों हैं ?

सर्वांगीण शुद्धि एक लंबा, धीमा और श्रमसाध्य कार्य है।
२१ जून, १९३५

क्या नरक के जैसी कोई चीज है ?

हां, मनुष्य के विचार से बने कई नरक हैं जिनका अस्तित्व प्राण-जगत् के अमुक क्षेत्रों में है।
२१ जून, १९३५

क्या यह सच है कि भगवान् ही ने हमें अज्ञानी और अचेतन बनाया ?

यह बकवास है।

मैं निश्चल नीरवता के बारे में कुछ जानना चाहूंगा; क्या यह निम्न प्रकृति पर एकाग्र होने की अपेक्षा अधिक लाभदायक है ?

निम्न प्रकृति पर एकाग्र होना कभी अच्छा नहीं है; तुम्हें उस चीज पर एकाग्र होना चाहिये जिसे तुम विकसित करना चाहते हो, उसपर नहीं जिसे तुम नष्ट करना चाहते हो।

मेरे ख्याल से व्यक्ति को बाहरी रूप से भी शांत और चुप रहना चाहिये।

शांत, निश्चित रूप से; चुप रहना हमेशा संभव नहीं होता।
२३ जून, १९३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन हम अज्ञानी और अचेतन कैसे हो गये ?

मेरे ख्याल से "हम" से तुम्हारा मतलब मनुष्यों से है। मनुष्य अज्ञानी और अंधकरमय बने नहीं, वे हमेशा से वैसे ही थे क्योंकि मनुष्य के आने से बहुत पहले जड़ भौतिक प्रकृति अचेतन और अंधकारमय थी।

क्या निश्चल-नीरवता शुद्धि और रूपांतर के लिये समस्त आवश्यक शक्ति ला सकती है ?

यह ठीक लाना नहीं है, लेकिन निश्चल-नीरवता में हम इसे ग्रहण कर सकते हैं।
२४ जून, १९३५

क्या हम मृत्यु के बाद उन यातनाओं को भोगते हैं ?

हां, अगर तुम उनमें विश्वास करो।
२४ जून, १९३५

"जब हम सुख-भोगों से परे चले जायें तब हमें आनंद प्राप्त होगा। कामना सहायक थी, कामना बाधक है।" (श्रीअरविन्द : 'विचार और सूत्र' के प्रसंग से)

क्या यह आनंद कामना से मिलता है ?

नहीं, कामना केवल क्रम-विकास के आरंभ में चेतना को उसकी जड़ता से जगाने के लिये थी, लेकिन कामना तुम्हें आनंद तक नहीं पहुंचा सकती— केवल आत्मदान ही यह कर सकता है।
२४ जून, १९३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे यह बताइये कि मैं आपसे प्रेम क्यों करता हूं ?

सभी चैत्य सत्ताओं की तरह, यह तुम्हारी चैत्य सत्ता है जो मुझसे प्रेम करती है।

२५ जून, १९३५

हर एक के अंदर चैत्य सत्ता होती है लेकिन सब आपसे प्रेम नहीं करते ?

या तो वे अपनी चैत्य चेतना के बारे में सचेतन नहीं हैं या वे मुझे जानते नहीं हैं।

क्या अब मैंने अपने प्रेम के साथ सौदा करना छोड़ दिया ?

चैत्य प्रेम कभी सौदेबाजी नहीं करता—लेकिन प्राण हमेशा सभी परिस्थितियों में अपने लिये कुछ-न-कुछ लाभ पाने की कोशिश करता है।

—श्रीमां

सोसायटी समाचार

१५ अगस्त श्रीअरविन्द की १२८वीं जन्मगांठ थी और भारत की स्वतंत्रता की ५३वीं जयन्ती। श्रीअरविन्द ने १५ अगस्त १९४७ को आकाशवाणी द्वारा प्रसारित राष्ट्र के नाम संदेश में कहा, "मैं इस संयोग को आकस्मिक घटना के रूप में नहीं लेता, बल्कि मैं मानता हूं कि यह भागवत शक्ति की स्वीकृति तथा मुहर है जो मेरे उस कार्य का पथ-प्रदर्शन कर रही है जिसे मैंने अपने जीवन में शुरू किया और आज के दिन उसके पूर्ण रूप से खिलने का कार्य शुरू हो गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रम में दिन की शुरूआत समाधि के चारों ओर ध्यान से हुई। श्रीअरविन्द के कक्ष का दर्शन १४ और १५ को हुआ क्योंकि भीड़ बहुत ज्यादा थी। शाम को खेल के मैदान में मार्च-पास्ट हुआ, बैंड बजाया गया और अंत में ध्यान हुआ। आश्रम में माताजी का एक संदेश बांटा गया जिसमें श्रीअरविन्द का चित्र था और माताजी के ये वचन थे :

"श्रीअरविन्द मानव शरीर में अतिमानस चेतना के अवतार थे। वे केवल हमें मार्ग दिखाने के लिये नहीं आये जिस पर हम चल सकते हैं और इस तरह चलें कि अतिमानस लक्ष्य तक पहुंच सकें, बल्कि उन्होंने अपनी वैयक्तिक उपलब्धि का उदाहरण बन कर यह प्रमाण दिया है कि यह चीज की जा सकती है और उसे करने का समय आ गया है।"

श्रीअरविन्द सोसायटी का वार्षिक सम्मेलन ११, १२ और १३ अगस्त को बीच ऑफिस में हुआ। देश भर के प्रतिनिधियों ने बड़े रस के साथ इसमें भाग लिया और माताजी ने सोसायटी के कार्य के बारे में १९६० में जो रूपरेखा तैयार की थी उसके अनुसार अधिक सचेतन रूप से अग्रसर होने का उत्साह भी सबने दिखाया।

डॉ० नाडकरणी का सावित्री अध्ययन सत्र १७ से २६ अगस्त तक सोसायटी के बीच ऑफिस में हुआ।

सोसायटी के सदस्यों का वार्षिक सम्मेलन २१ अक्तूबर २००० को कलकत्ता में होगा। इसकी सूचना हम अगस्त के अंक में विस्तारपूर्वक दे चुके हैं।

१७ नवम्बर १९७३ में माताजी ने अपना भौतिक शरीर छोड़ा था और २० नवम्बर को उनका शरीर समाधिस्थ किया गया था। हर वर्ष ये दोनों दिन आश्रम में उचित रूप से मनाये जाते हैं।

पार्थिव चेतना के लिये की गयी श्रीअरविन्द की साधना का शीर्ष परिणाम २४ नवम्बर १९२६ को धरती पर एक उच्चतर शक्ति के अवतरण से सम्पन्न हुआ। इसे श्रीअरविन्द ने "अधिमानस के देवत्व" की शक्ति बताया। माताजी ने यह दिन 'विजय-दिवस' के रूप में घोषित किया क्योंकि यह अवतरण श्रीअरविन्द के योग में लिया गया एक महान् कदम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। यह चार दर्शन दिवसों में से एक दिवस है और हर वर्ष इसे समुचित रूप से मनाया जाता है।

२१ से २३ नवम्बर तक नारी आयोग सोसायटी के बीच ऑफिस में एक सेमिनार आयोजित करेगा। विषय है 'इंट्रीगल इंटिमेसी विद द डिवाइन'' (भगवान् के साथ पूर्ण घनिष्ठता) सेमिनार निःशुल्क है तथा सभी इच्छुकों का स्वागत है।

केंद्रों तथा शाखाओं के समाचार

बैंगलोर में श्रीअरविन्द ध्यान-कक्ष का उद्घाटन कर्णाटक के मुख्य मंत्री श्री एस. एम. कृष्ण ने ११ जून २००० को किया। श्रीअरविन्द के पवित्र देहावशेष की स्थापना आश्रम के प्रोफेसर अरिन्दम् बसु ने की। इस अवसर पर शाम को एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुआ।

श्रीअरविन्द सोसायटी हैदराबाद के नारी आयोग ने १० तथा ११ जून को सभा की। इसमें २२ केंद्रों से महिलाओं ने भाग लिया।

नैवेली में श्री गोपाल भट्टाचार्य ने २४ मई को इंजीनियरिंग इंस्टिट्यूट में एक भाषण दिया। विषय था, तकनीकी विकास में श्रीअरविन्द की दृष्टि क्या है।

नागपुर में १६ अप्रैल को प्रो० अरिन्दम बसु का भाषण हुआ।

डेहरी ऑन सोन (बिहार) केंद्र ने २२ से २८ मई तक बच्चों का शिविर लगाया। अगला शिविर दिसम्बर २००० में लगेगा।

गया में २१ मई को डॉ० डी० पी० खेतान श्रीअरविन्द की "लाइफ डिवाइन" पुस्तक पर बोले।

नवसारी में श्री किरीट ठक्कर का भाषण ४ जून को हुआ। विषय था—श्रीअरविन्द के प्रकाश में गीता का संदेश।

गोहाटी में उद्घाटित केंद्र में ४ जून को कार्यक्रम हुआ। इसकी अध्यक्षता की श्री मनोज भट्टाचार्य ने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Hanuman Prasad Dharam Chand
Dinodiya Welfare Trust
CALCUTTA

J. J. Charitable Trust
7C Kiron Shankar Rai Road
CALCUTTA - 1

Kayan Foundation
9/2 Hungerford street
CALCUTTA - 17

Pannalal Kandoi Seva Kosh
132/1 M. G. Road
CALCUTTA - 7

G. N. B. Motors Ltd.
8 Camac Street, 9th Floor
CALCUTTA - 700 017

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Sri Madhopur Vikas Parishad Trust
48 Dobson Road
HOWRAH - 711101

Sharad Seva Nidhi Trust
26 Amherst Street
CALCUTTA - 700009

Seth Chiranjilal Khaitan Trust
7 Keyatala Lane
CALCUTTA - 700009

Mamraj Jayatri Trust
6A Ironside Road
CALCUTTA - 700019

Dhanuka Charity Trust
Dhanseri House, 4A Woodburn Park
CALCUTTA - 700020

M/S ODC Carrier (P) Ltd.
15 India Exchange Place
CALCUTTA - 700001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Salarpuria Public Charity Trust
7, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 072

M/s Patton Ltd.
3C, Camac Street
CALCUTTA - 700 016

Naurangrai Lohia Charitable Trust
14A Loudon Street
CALCUTTA - 700 017

Charu Enterprises
42B Shakespear Sarani, 13, Shalimar Apt.
CALCUTTA - 17

Kitply Industries Ltd.
White House, 'A' Block, 4th Floor, 119 Park Street
CALCUTTA - 700 016

Eastern Enterprises Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Manav Seva Trust
CALCUTTA

Saria Charitable Trust
(J. P. Saria)
D-9 Kirti Nagar
NEW DELHI - 110 015

Shri Gopal Kamal Kumar
196, Jamuna Lal Bajaj Street
CALCUTTA - 700 007

Adukia Industrial Concern
17, Ganesh Ch. Avenue
CALCUTTA - 700 013

Sri Keshar Deo Saraf & Sons (HUF)
35, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 012

Maikal Fibres Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको उस नये प्रकाश के प्रति खोलो जो धरती पर उदित हुआ है और तुम्हारे सामने एक ज्योतिर्मय पथ खुल जायेगा।

— श्रीमां

WITH THE BEST COMPLIMENTS OF

S. L. Deorah Group of Enterprises

ASSAM TEA WAREHOUSING CORPORATION
INDIAN TEA STORAGE AGENCY
INDIAN TRANSPORT AGENCY
AURO IMPEX PRIVATE LIMITED
AURO LABORATORIES LIMITED
AURO BUSINESS CENTRE

Calcutta Office:

'SHIVANGAN' - Flat No. 2C, 53/1/2, Hazra Road
CALCUTTA - 700 019
Phone No.: 474 - 2059, 474 - 2060
Fax No.: 476 - 2348

Bombay Office:

408 Navratan, 69 P. DeMellow Road
BOMBAY - 400 009
Phone No.: 343 - 5341, 342 - 9027
Fax No.: 342 - 5022

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

माताजी,

मैं बिलकुल नहीं जानता कि आपका योग क्या है, अतः योग करने का सवाल ही कहां उठता है ? मेरे अंदर योग के बारे में कोई विचार भी नहीं है और मुझे नहीं मालूम कि उसके लिये क्या करना चाहिये।

योग करने के दो मार्ग हैं, एक है, ज्ञान तथा अपने प्रयास के द्वारा, दूसरा है, माताजी पर भरोसे के द्वारा। दूसरे में व्यक्ति को अपने मन और हृदय को माताजी को सौंप देना होता है ताकि उनकी शक्ति उसपर काम कर सके। सभी कठिनाइयों में उन्हें पुकारो, श्रद्धा और भक्ति रखो। पहले इसमें समय लगता है, बहुधा बहुत अधिक समय, ताकि चेतना इस मार्ग के लिये तैयार हो सके, और उस काल में बहुत-सी कठिनाइयां आ सकती हैं, लेकिन अगर तुम डटे रहो तो एक समय आता है जब सब कुछ तैयार हो जाता है, माताजी की शक्ति चेतना को पूरी तरह भगवान् की ओर खोल देती है, तब जो कुछ अंदर विकसित होना चाहिये वह सब विकसित हो जाता है और उसके साथ-साथ ज्ञान तथा भगवान् के साथ ऐक्य आ जाता है।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

हैरी गोल्ड

भारत को स्वाधीन हुए पचास वर्ष हो चुके फिर भी वह अब तक उस स्थिति तक नहीं पहुंच पाया है जिसकी भविष्यवाणी श्रीअरविन्द और माताजी ने की थी। राष्ट्र संघ में उसका वह स्थान नहीं बन पाया जो उसकी अस्मिता के अनुरूप है। अभी तक एशिया में उसने अन्य पूर्वीय राष्ट्रों के नेता का पद प्राप्त नहीं किया है और संसार के आध्यात्मिक गुरु बनने के अपने दायित्व के लिये वह योग्य नहीं हो पाया है। ऐसा क्यों हो रहा है ? क्योंकि हम पूरे-पूरे भारतीय नहीं बन पाये हैं। श्रीअरविन्द ने कहा था कि आर्य-गुणप्राप्त भारतीय ही भारत को ऊपर उठा पायेंगे। क्या हम आर्य हैं ? वे कहते हैं कि आर्य कोई जाति विशेष का नाम नहीं है। संस्कृत नाटकों में आर्य शब्द का प्रयोग श्रेष्ठ, उत्तम पुरुष को संबोधित करने के लिये होता था। अब देखें श्रेष्ठ, उत्तम पुरुष हमारे पूर्वजों की दृष्टि में कैसा था। उसे आत्म-संयमी, पूर्णता के लिये प्रयत्नशील, सत्य पर दृढ़ रहने-वाला, उदार, साहसी और प्रत्येक कार्य में निपुणता के लिये प्रयत्नशील होना चाहिये। हम समझ पायेंगे कि यह किसी भारतवासी का विशेष अधिकार नहीं हो सकता, कोई भी व्यक्ति आर्य कहलाने योग्य हो सकता है अगर उसमें आर्य-गुण हों। भारतवासी आज नहीं तो कल आर्य-गुण अवश्य प्राप्त करेंगे क्योंकि यह उनके रक्त में है किंतु आज एक ऐसे आर्य की याद आ रही है जो भारतवासी नहीं हैं। शायद हम उनसे आर्यत्व पाने की प्रेरणा प्राप्त कर पायेंगे। उस व्यक्ति को हम पचास साल बाद १९९३ में एक ऐसे स्थान पर देखते हैं जिसकी वह खुद कल्पना नहीं कर पाया था। न्यूयॉर्क के लौंग आइलैण्ड विश्वविद्यालय में आज स्नातकों को उपाधि देने का महत्त्वपूर्ण उत्सव है। स्नातकों के माता-पिता और मित्रों से बड़ा हॉल खचाखच भरा हुआ है। प्रत्येक स्नातक जब उपाधि लेने मंच पर चढ़ता है तो तालियों की गड़गड़ाहट, सीटियों, उत्साह और उत्तेजना से हॉल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गूंज उठता है। अंत में उस विद्यार्थी का नाम घोषित किया जाता है जो पहली पंक्ति में बैठा है। वह अपाहिज है, जल्दी मंच पर चढ़ न पायेगा, किंतु जब वे बुजुर्ग किसी तरह खड़े होकर, लाठी के सहारे मुश्किल से कुछ कदम चलकर मंच तक पहुंच जाते हैं तो सारे हॉल में तूफान मच जाता है। तालियों का शोर, चिल्ल-पों, लगातार बजती सीटियां और पांव पटकते विद्यार्थियों ने खड़े होकर हॉल सिर पर उठा लिया। इतने मान और प्रेम का प्रदर्शन देखकर किसी ने पूछ लिया, "वह आदमी है कौन ? तुम उसे जानते हो ?" उसे जवाब मिला, "इन्हें सब जानते हैं। ये तो यहां बहु प्रचलित कहानी बन गये हैं।"

इस बहु चर्चित व्यक्ति का नाम है हैरी गोल्ड। हैरी और उसका मौसेरा भाई प्रायः हमउम्र थे। दोनों गरीब थे किंतु उसके मौसरे भाई लौरेन्स का परिवार उसके परिवार से अच्छी हालत में था। दोनों में अच्छा संबंध था किंतु जब कॉलेज में जाने का प्रश्न उठा तो लौरेन्स किसी तरह प्रवेश कर पाया किंतु हैरी ने परिवार की अवस्था देखकर काम ढूंढ़ लिया। कभी-कभी दो भाई बतियाते तो लौरेन्स शिकायत करता कि प्रोफेसर पूरा हेमलेट का नाटक दो दिन में पढ़ने को कहते हैं, कभी दो हजार शब्दों का गृहकार्य देते हैं; तो हैरी मुस्कुरा कर कहता, "उसमें इतना मुश्किल क्या है ?" ऐसी मुलाकातों से लौरेन्स समझ गया कि हैरी कॉलेज जाने के लिये तरस रहा है। इसी बीच दूसरा विश्व-युद्ध छिड़ गया और दोनों को युद्ध-क्षेत्र में उतरना पड़ा। युद्ध समाप्त हुआ और दोनों अपने-अपने काम में जुट गये। लौरेन्स कॉलेज में पढ़ाई समाप्त करने गया और हैरी फिर से काम ढूंढ़ने लगा। युद्ध के बाद बाजार में मंदी थी। हैरी को एक कम्पनी ने 'कोल्ड ड्रिंक' बेचने का काम दिया। जब हैरी ट्रक भरकर छोटी-छोटी दुकानों में जाता तो दुकानदार उसे खाली शीशियों को दिखाकर कहते, "इसका बकाया तुम्हारी कम्पनी ने नहीं चुकाया है, ऊपर से नया बोझ डालने आये हो ?" हैरी मुस्कुरा कर कहता, "चलिये, ये खाली शीशियां मैं मुफ्त में ले जाता हूं, आप मेरी भरी हुई शीशियां रखिये। आपके ग्राहक आयेंगे। आपको और हमें फायदा होगा।" पहली बार न माननेवाले लोग हैरी की बातों को सुनकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंत में मान ही जाते थे। धीरे-धीरे हैरी ने कई दुकानदारों को अपना मित्र बना लिया और व्यापार अच्छा चलने लगा। हैरी का ओहदा बढ़ता गया किंतु वह किसी काम से कतराता न था। एक बार छोटी-छोटी गलियों में जिस आदमी को माल बेचने के लिये भेजा जाता था वह बार-बार गायब रहने लगा। "कोई बात नहीं" हैरी ने कहा। वह स्वयं उसका काम करने लगा। उसकी पदोन्नति होती गयी, सुपर वाइज़र, मैनेजर, नये रंगरूटों को काम सिखाना, सब हैरी के लिये समान था। उसके मित्र बढ़ते गये।

किंतु, बस यह किंतु न होता तो कितना अच्छा रहता !! जब अच्छा समय आया तो काल ने धोखा दे दिया। हैरी के हाथ-पांव में झुनझुनी होने लगी। चलते समय संतुलन बिगड़ने लगा। डॉक्टरों ने जांच करके बताया कि यह स्नायुतन्त्र की विरल बीमारी है, और उसे सुधारना नामुमकिन है। जब लौरेन्स को अपने भाई की बीमारी का पता लगा तो अपने उमड़ते आंसुओं को रोककर, हंसते हुए बोला, "तुम केवल अंगुली की त्वचा में धंसते नाखूनों की बीमारी से संतुष्ट न हो पाये कि ..." और वाक्य अधूरा ही रह गया। लौरेन्स मन-ही-मन सोचता था, "मैं इधर, उधर घूमता हूं। रिपोर्ट लिखता हूं, मौज करता हूं जब कि मुझसे अधिक अच्छा मेरा भाई चलने के लिये संघर्ष कर रहा है।" हैरी मुस्कुराया, बोला, "बौखलाते क्यों हो ? मैं तो बिलकुल चिंतित नहीं हूं।" सचमुच वह परेशान न था। जब ब्रेस लगाने पड़े तो लगाये, लाठी लेनी पड़ी तो ले ली। न कोई शिकायत, न दुःख।

एक दिन भोजन करते समय हैरी ने लौरेन्स से कहा, "पता है निवृत्त हो कर मैं क्या करूंगा ? मैं कॉलेज जाऊंगा।" लौरेन्स भौचक्का हो उसे देखता रहा, अंत में बोला, "पता है कॉलेज कठिन है।" हैरी बोला, "जिंदगी भी कठिन है, यही तो मजे की बात है।"

(क्रमशः)

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

अक्तूबर

१. तुम्हें किसी आदमी का मूल्य आंकने का कोई अधिकार नहीं है जबतक कि वह जो काम करता है तुम उससे ज्यादा अच्छी तरह न कर सको।

२. और लोग क्या करते हैं, इससे अपने-आपको व्यथित न करो, यह बात जितनी बार कही जाये कम है।
मूल्यांकन न करो, आलोचना न करो, तुलना न करो, यह तुम्हारा काम नहीं है।

३. औरों के साथ सख्ती करने से पहले अपने साथ कठोर बनो।

४. औरों की मूर्खताओं की परवाह न करो, अपनी मूर्खताओं को देखो।

५. कातरता एक प्रकार का दर्प है। जब तुम कातर होते हो तो इसका अर्थ होता है कि तुम अपने कार्य की सचाई की अपेक्षा अपने बारे में औरों की राय को बहुत अधिक महत्त्व देते हो।

६. जब तुम अपने-आपको किसी निःस्वार्थ लक्ष्य को चरितार्थ करने के लिये अर्पित करते हो तो यह आशा कभी न करो कि सामान्य लोग तुम्हारी प्रशंसा या तुम्हारा समर्थन करेंगे। इसके विपरीत वे हमेशा तुम्हारे विरुद्ध लड़ेंगे, तुमसे घृणा करेंगे और तुम्हें बुरा-भला कहेंगे। लेकिन भगवान् तुम्हारे साथ होंगे।

७. जाओ और अपने-आपको तैयार करो और सबसे अच्छी तैयारी है, भगवान् के काम में उपयोगी होना।

८. अनुशासन के बिना कोई अच्छा काम नहीं हो सकता। हर एक अपने-अपने स्थान पर, ईमानदारी के साथ अपना नियत काम करे तो सब कुछ ठीक होगा।

९. अगर काम में कुछ कठिनाइयों का सामना होता है तो सचाई से अपने अंदर देखो और तुम उनके मूल को पा जाओगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०. अगर लोग काम को हमारा काम कहना छोड़ सकें तो बहुत-सी कठिनाइयों का अंत आ जायेगा। यहां सभी काम भगवान् के हैं।

११. काम के लिये वर्तमान सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण चीज है। भूतकाल को रास्ते में न आना चाहिये और भविष्य को तुम्हें खींच न लेना चाहिये।

१२. समस्त कार्य को एक खेल होना चाहिये। लेकिन दिव्य-खेल जो भगवान् के और भगवान् के साथ खेला जाता है।

१३. हमें, हममें से हर एक को एक भूमिका पूरी करनी है। एक कार्य करना है, हमारी एक जगह है जिसे हम ही भर सकते हैं।

१४. अपनी अंतरात्मा का आदेश मानो, केवल उसे ही तुम्हारे जीवन पर शासन करने का अधिकार है।

१५. तुम जिसे खोजते हो वह हमेशा तुम्हारे लिये तैयार है। चैत्य घुमाव को पूरा होने दो और वह स्वयं तुम्हें उसतक ले जायेगा जिसकी तुम अभीप्सा करते हो।

१६. मन को यह सीखना चाहिये कि केवल भगवान् के आदेशों को ही अभिव्यक्त करे।

१७. मानसिक अभिव्यक्ति की शक्ति का तबतक कोई मूल्य नहीं जबतक कि वह भगवान् की सेवा में न हो।

१८. जब मन भगवान् की ओर मुड़ता है तो वह शक्तिशाली यंत्र बन जाता है।

१९. क्या कोई मंदिर में गंदे पैरों से प्रवेश करता है ?
उसी तरह, व्यक्ति आत्मा के मंदिर में दूषित मन के साथ प्रवेश नहीं करता।

२०. हम हमेशा उन चीजों से घिरे रहते हैं जिनके बारे में हम सोचते हैं।

२१. अप्रिय भावनाएं तुम्हें भगवान् से दूर ले जाती हैं और तुम्हें उस शैतान के हाथों में निःशस्त्र फेंक देती हैं जो तुम्हें केवल हड़प लेना चाहता है—और यही अनंत दुःख और कष्ट का मूल है।

२२. हमारे हृदय की गहराई में हमेशा महान् आनंद रहता है और हम उसे हमेशा वहां पा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३. तुम्हारे हृदय की नीरवता में ही भगवान् तुमसे बोलेंगे, तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करेंगे और तुम्हें अपने लक्ष्य तक पहुंचायेंगे।

२४. सरल और निष्ठावान हृदय की नीरवता में तुम अवतार का रहस्य समझ सकते हो।

२५. विचार अपने-आप दुःख पैदा करता है।

२६. भौतिक मन का एक प्रमुख कार्य है संदेह करना। अगर तुम उस पर कान दो तो वह संदेह के हजारों कारण ढूंढ़ निकालेगा। लेकिन तुम्हें यह जानना चाहिये कि भौतिक मन अज्ञान में काम करता है और पूरी तरह मिथ्यात्व से भरा है।

२७. अपने प्राण से कहो कि रूप-रंग के आधार पर मूल्यांकन न करे और सहयोग न दे। आगे चलकर सब कुछ अच्छा होगा।

२८. मन जितना अज्ञानी होता है उतनी ही ज्यादा आसानी से हर उस चीज का मूल्यांकन करता है जिसे वह नहीं जानता या जिसे समझने में वह अक्षम है।

२९. जो व्यक्ति केवल अपनी ही राय को मानता है वह अधिकाधिक संकीर्ण होता जाता है।

३०. जबतक कि तुम किसी के पक्ष में और किसी के विपक्ष में हो, तुम निश्चित रूप से सत्य के बाहर हो।

३१. *प्रश्न*—प्राण को किसी अच्छी चीज में बदलने का क्या परिणाम होगा, दूसरे शब्दों में कहें तो क्या परिवर्तन होगा ?

उत्तर—प्राण सभी बुरे आवेगों, समस्त दुष्टताओं, भीरुता, दुर्बलता और धन-लोलुपता का आधान है।

जब प्राण परिवर्तित हो जाता है तो आवेश बुरे होने की जगह अच्छे हो जाते हैं, दुष्टता भलाई में बदल जाती है और धन-लोलुपता की जगह लेती है उदारता; दुर्बलता गायब हो जाती है, बल और सहन-शक्ति उसका स्थान ले लेते हैं और भीरुता के स्थान पर साहस और ऊर्जा आ जाते हैं . . . .

—'श्रीमातृवाणी' खण्ड १४ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाश की किरणें

(११)

धर्म, सरकार, मानव एकता

धर्म

भगवान् अपने-आपको अपनी समस्त सृष्टि को देते हैं। किसी एक धर्म को उनकी कृपा का एकाधिकार नहीं है।

*

एक दूसरे को अलग करने की जगह धर्मों को एक दूसरे की पूर्ति करनी चाहिये।

*

आध्यात्मिक भाव धार्मिक पूजाभाव, भक्ति और उत्सर्ग का विरोधी नहीं है। धर्म में गलती यह है कि मन एक ही सिद्धांत को ऐकान्तिक रूप से सत्य मानकर उससे ही चिपका रहता है। तुम्हें हमेशा याद रखना चाहिये कि सिद्धांत सत्य की केवल मानसिक अभिव्यक्ति हैं और यह भी कि यह सत्य हमेशा विभिन्न रूपों में प्रकट हो सकता है।

६ दिसम्बर १९६४

*

लोग धर्म के साथ क्यों चिपके रहते हैं ?

धर्म ऐसे विश्वासों पर आधारित होते हैं जो सचमुच ऐसी आध्यात्मिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभूतियां हैं जिन्हें नीचे उतार कर उस स्तर पर ले आया गया है जहां उन्हें पकड़ना ज्यादा आसान होता है, परंतु वे अपनी पूर्ण शुद्धि और पूर्ण सत्य को खो बैठती हैं।

धर्मों का समय समाप्त हो गया है।

हम वैश्व आध्यात्मिकता, आध्यात्मिकता की प्रारंभिक शुद्धि में प्रवेश कर चुके हैं।

*

तुम्हें आध्यात्मिक शिक्षा और धार्मिक शिक्षा में गड़बड़ न करनी चाहिये।

धार्मिक शिक्षा भूतकाल की चीज है और वहां प्रगति रुक जाती है।

आध्यात्मिक शिक्षा भविष्य की शिक्षा है। वह चेतना को प्रज्ज्वलित करती और उसे भावी उपलब्धि के लिये तैयार करती है।

आध्यात्मिक शिक्षा धर्मों से ऊपर है और सार्वभौम सत्य के लिये प्रयास करती है।

वह हमें सीधा भगवान् के साथ संबंध स्थापित करना सिखाती है।

१५ जुलाई १९७२

नैतिकता

तुम्हें नैतिकता को छोड़ने का तबतक कोई अधिकार नहीं है जबतक कि तुम अपने-आपको एक ऐसे विधान के हाथों में न सौंप दो जो किसी भी नैतिक नियम से उच्चतर और कठोरतर हो।

२८ मई १९४७

*

तुम नैतिक नियमों को तभी तोड़ सकते हो जब तुम भागवत नियम के अनुसार चलो।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी बाहरी रंग-रूप के आधार पर निर्णय न करो, गप्पों के आधार पर तो और भी नहीं।

जो बात एक देश में नैतिक है वह एक और देश में अनैतिक बन जाती है।

भगवान् की सेवा ऐसे आत्मोत्सर्ग की निष्कपटता की मांग करती है जिसे कोई भी नैतिकता नहीं जानती।

२६ फरवरी १९६९

ज्योतिष

तुम ज्योतिषियों की बात पर क्यों विश्वास करते हो? यह विश्वास ही मुश्किलें लाता है।

श्रीअरविन्द कहते हैं कि मनुष्य वही बन जाता है जो वह अपने-आपके बारे में सोचता है।

१९६५

*

जन्मपत्री का उन लोगों के लिये कोई महत्त्व नहीं है जो योग-मार्ग अपना लेते हैं, क्योंकि योग के द्वारा जो प्रभाव कार्य करता है वह नक्षत्रों के प्रभाव से कहीं ज्यादा सक्षम होता है।

सामुद्रिक शास्त्र

सामुद्रिक शास्त्र बहुत मजेदार है परंतु अपनी यथार्थता और सत्यता के लिये वह प्रायः पूरी तरह से उस व्यक्ति की सच्ची क्षमता पर निर्भर करता है जो इसका अभ्यास करता है। और फिर, यह शास्त्र केवल भौतिक नियति से संबंध रखता है और इस नियति को उच्चतर शक्तियों के हस्तक्षेप से बदला जा सकता है।

३ जनवरी १९५१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पत्ति और धन

धन का उद्देश्य और धन कमाने के लिये नहीं होता, उसका उद्देश्य है पृथ्वी को नवसर्जन के आविर्भाव के लिये तैयार करना।

*

सारी सम्पत्ति भगवान् की है। भगवान् ही उसे सब जीवित सत्ताओं को प्रदान करते हैं और स्वभावतः उसे भगवान् के पास ही लौट जाना चाहिये।

*

सच्चा ऐश्वर्य है, उचित तरीके से खर्च करना।

तुम सचमुच समृद्ध बन जाते हो जब तुम अपने धन को अच्छे-से-अच्छे तरीके से खर्च करो।

फरवरी १९६२

*

समृद्धि केवल उसी के साथ टिकी रह सकती है जो उसे भगवान् के अर्पित करता है।

*

तुम उसी धन के साथ अधिक धनवान हो जो तुम देते हो, उसके साथ नहीं जिसे तुम अपने कब्जे में रखते हो।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन प्रचुर मात्रा में अच्छे काम के लिये आता और जाता रहे।

*

लोग कहते हैं, "भगवान् निर्धन के मित्र हैं," लेकिन यह गलत और मिथ्या लगता है। भगवान् धनाढ्य के मित्र हैं। हमें पता नहीं कि हम किस गिनती में हैं।

धनाढ्य को भगवान् धन देते हैं, परंतु निर्धन को अपने-आपको देते हैं। सब कुछ इस पर निर्भर है कि निर्धन किसे ज्यादा मूल्य देता है, धन को या भगवान् को।

२२ अगस्त १९६४

*

धन के लिये लोभ : अपनी चेतना को घटाने और सीमित करने का सबसे निश्चित तरीका।

*

अपने विचार में कभी आध्यात्मिक शक्ति और धन में घालमेल न करो। यह महाविपत्ति का सीधा रास्ता है।

*

क्या व्यक्ति की चेतना के सुधार के साथ-साथ उसकी आर्थिक स्थिति भी ज्यादा अच्छी हो जाती है ?

अगर "चेतना के सुधार" का मतलब है, अधिक विस्तृत और विशालतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतना, उसकी अच्छी व्यवस्था, तब परिणामतः, स्वाभाविक रूप से बाहरी चीजों पर ज्यादा अच्छा नियंत्रण होना चाहिये ("आर्थिक अवस्था" की भी इसीमें गिनती है)। और साथ ही स्वभावतः जब चेतना "ज्यादा अच्छी" हो तब आदमी आर्थिक स्थिति जैसी चीजों की कम ही परवाह करता है।

शासन

दूसरों पर शासन करने की आशा करने से पहले व्यक्ति को अपने ऊपर शासन कर सकना चाहिये।

*

१. औरों पर नियंत्रण कर सकने से पहले अपने ऊपर पूरा नियंत्रण कर सकना अनिवार्य शर्त है।
२. वरीयता नहीं होनी चाहिये, एक को चाहना और दूसरे को न चाहना—सबके साथ एक-सा होना चाहिये।
३. धैर्यशील और सहनशील होना चाहिये।

और केवल वही बोलना चाहिये जो बिलकुल अनिवार्य हो, ज्यादा कुछ नहीं।

मार्च १९५४

*

उनके लिये जिनका काम है औरों पर शासन करना या उनको राह दिखाना

जब तुम लोगों को खुश करना चाहते हो तो तुम चीजों को वैसे ही चलने देते हो जैसे वे चलती हैं। तुम प्रतीक्षा करते हो कि प्रकृति अपनी प्रगति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को मनुष्य पर लादे। परंतु यह सृष्टि का सत्य नहीं है। मनुष्य का सच्चा आदर्श यह है कि वह प्रकृति पर अपनी प्रगति को आरोपित करे।

२ दिसम्बर १९५४

*

अपनी साधारण चेतना में मनुष्य किसी और का अधिकार नहीं सह सकते, वह चाहे जितना वैध क्यों न हो, यदि अधिकार लादनेवाले को वे अपने ही स्तर का समझते हों।

दूसरी ओर यदि मानव अधिकार को दूसरों पर वैध रूप से लादना हो तो उसे इस हदतक ज्योतिर्मय, निष्पक्ष और अहंकारशून्य होना चाहिये कि कोई उसके मूल्य को चुनौती न दे सके।

जब मैं कहती हूं कि "बुद्धिमान" लोगों को जगत् पर शासन करना चाहिये तो इससे मेरा मतलब राजनीतिक दृष्टि से नहीं बल्कि आध्यात्मिक दृष्टि से होता है।

शासन के जो बहुत-से रूप हैं वे जैसे-के-तैसे रह सकते हैं, यह बात गौण है। लेकिन शासन करनेवालों का जैसा भी सामाजिक स्तर हो उन्हें अपनी प्रेरणा ऐसे लोगों से मिलनी चाहिये जिन्होंने सत्य को पा लिया हो और जो भागवत इच्छा के सिवा और किसी इच्छा को नहीं जानते।

१७ सितम्बर १९५९

———

जब-जब तुम अपने-आपको चंचल अनुभव करो, अपने अंदर ही अंदर, कोई बाह्य आवाज किये बिना, मेरा नाम लेते हुए कहो: "शांति, शांति, ओ मेरे हृदय!" . . . ऐसा लगातार करते रहो। इसका फल तुम्हारे लिये सुखकर होगा।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वार्थ और अहंकार

माताजी धम्मपद से अत्तवग्गो (अहं) अध्याय पढ़कर व्याख्या करती हैं:

ऐसा लगता है कि यहां प्रश्न अहं की अपेक्षा स्वार्थपरता का अधिक है।

स्वार्थपरता ऐसी चीज है जिसे अपेक्षाकृत, आसानी से सुधारा जा सकता है, क्योंकि सभी जानते हैं कि वह क्या है। उसे ढूंढ़ना आसान है और सुधारना आसान है, अगर हम सचमुच चाहें, और उसे करने के लिये कृतसंकल्प हों।

किंतु अहं को पकड़ पाना अधिक कठिन काम है, क्योंकि वस्तुतः यह समझने के लिये कि अहं क्या है तुम्हें उससे बाहर होना चाहिये, अन्यथा तुम उसे ढूंढ़ ही न पाओगे। तुम पूरी तरह उससे ओत-प्रोत हो, सिर से लेकर पांवतक, बाहर से लेकर अंदर तक, शरीर से लेकर अध्यात्म तक, सब अहं से ओत-प्रोत हैं। वह हर चीज में घुल-मिल गया है और तुम्हें पता ही नहीं लगता कि वह क्या है। अहं क्या है यह समझ सकने के लिये तुम्हें उसे अपनी सत्ता के किसी छोटे-से हिस्से में क्यों न हो, कम-से-कम आंशिक रूप से जीतना ही होगा, उससे बाहर निकलना और अपने-आपको उससे मुक्त करना ही होगा।

अहं वह है जो हमें व्यक्तित्व पाने में सहायता देता है और वही हमें दिव्य बनने से रोकता है। यह इसी तरह है। इनको एक साथ रख दो और तुम अहं को ढूंढ़ लोगे। सृष्टि की जिस तरह व्यवस्था हुई है उसमें अहं के बिना व्यक्ति ही नहीं बन सकता था और अहं के साथ सृष्टि दिव्य नहीं बन सकती।

यह निष्कर्ष निकालना तर्क-संगत होगा: "चलो, सबसे पहले हम सचेतन व्यक्ति बनें, फिर अहं से पीछा छुड़ा लेंगे और दिव्य बन जायेंगे।" लेकिन, जब हम सचेतन व्यक्ति बन जाते हैं तो हमें अपने अहं के साथ रहने की इतनी आदत हो चुकती है कि हम उसे पहचान तक नहीं पाते और उसकी उपस्थिति का बोध पाने के लिये बहुत परिश्रम की आवश्यकता होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब कि स्वार्थ को सब जानते हैं। जब तुम सब कुछ अपने लिये प्राप्त करना चाहते हो और तुम्हें दूसरों में कोई रुचि नहीं होती तो वह स्वार्थपरता कहलाती है; जब तुम अपने-आपको विश्व के केंद्र में स्थापित करते हो और जब सब चीजें बस तुम्हारे लिये ही अस्तित्व रखती हैं, तो वह स्वार्थपरता है। लेकिन यह बहुत स्पष्ट है। हम स्वार्थी हैं। यह न देख सकने के लिये हमें अंधा होना चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति कुछ, थोड़ा-बहुत स्वार्थी होता है, साधारणतः, एक अनुपात में स्वार्थपरता स्वीकार कर ली जाती है; लेकिन सामान्य जीवन में भी, जब हम कुछ अधिक स्वार्थी होते हैं, तो नाक पर मुक्का लगता है, क्योंकि जहां हर एक स्वार्थी होता है वहां एक को दूसरे का स्वार्थ बहुत अच्छा नहीं लगता।

यह मानी हुई बात है, यह सार्वजनिक नैतिकता का एक भाग है। हां, जरा-सा स्वार्थ तो होना ही चाहिये, लेकिन बहुत ज्यादा नहीं, बस इतना कि कोई देख न पाये! इधर अहं की कोई बात ही नहीं करता, क्योंकि उसे कोई नहीं जानता। यह इतना निकट का साथी है कि हमें उसके अस्तित्व का भी पता नहीं चलता; और फिर भी, जबतक वह है हमें दिव्य चेतना प्राप्त न होगी।

अहं वह है जो हमें सचेतन करता है कि हम दूसरों से अलग एक व्यक्ति हैं। अगर अहं न होता तो तुम्हें यह बोध न होता कि तुम दूसरों से अलग, एक व्यक्ति हो। तुम्हें यह प्रतीति होती कि तुम समष्टि के छोटे-से अंश हो, एक बहुत बड़ी समष्टि के एक बहुत छोटे-से अंश। जब कि तुम में से प्रत्येक बहुत निश्चित रूप से सचेतन है कि वह एक अलग व्यक्ति है। तो, यह अहं ही है जो तुम्हें यह प्रतीति देता है। जबतक तुम इस तरह सचेतन रहोगे तबतक यही अर्थ होगा कि तुम्हारे अंदर एक अहं है।

जब तुम यह अनुभव करना शुरू करो कि सब कुछ तुम ही हो, कि तुम वही व्यक्ति हो जो सब जगह मौजूद है, और यह कि लाखों-करोड़ों बिंदुओं के बीच एक छोटा-सा बिंदुमात्र हो, जब तुम अनुभव करो कि तुम हर एक चीज में हो, कि कोई अलगाव नहीं है, तब तुम जानते हो कि तुम अहंहीन होने की राह पर हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ऐसा क्षण भी आता है जब यह सोचना, यह कहना असंभव हो जाता है : "यह मैं नहीं हूं," क्योंकि अपने-आपको अभिव्यक्त करने का यह तरीका भी, यह कहना कि 'सब कुछ' तुम हो, या कि तुम 'सब कुछ' हो, और यह कि तुम भगवान् हो, या यह कि भगवान् तुम हो, यह प्रमाणित करता है कि अभीतक कोई चीज बची हुई है।

एक क्षण होता है—वह बिजली की कौंध की भांति आता है और मुश्किल से ही ठहरता है—जहां 'सब कुछ' है जो सोचता है, 'सब कुछ' है जो जानता है, 'सब कुछ' है जो अनुभव करता है, 'सब कुछ' है जो जिंदा है। यह भी ... यह धारणा भी नहीं रहती कि ... तुम वहांतक पहुंच गये हो।

तब ठीक है लेकिन तबतक उसका यह अर्थ होता है कि किसी कोने में अभीतक अहं का एक छोटा-सा अंश है, साधारणतः, वह अंश जो निरीक्षण करता है, एक साक्षी जो निरीक्षण करता है।

इसलिये यह घोषणा मत करो कि तुम्हारे अंदर अहं नहीं रहा। यह ठीक नहीं है। यह कहो कि तुम अहंविहीन होने की राह पर हो, यही बात ठीक है।

मुझे नहीं लगता कि तुम वहां पहुंच गये हो, है न ?—अभीतक तो नहीं ! फिर भी, अगर तुम सचमुच अतिमानस क्या है यह जानने का इरादा रखते हो तो यह अनिवार्य है। अगर तुम अतिमन के उम्मीदवार हो तो तुम्हें अपने अहं को पार करने का निश्चय करना चाहिये, उससे ऊपर उठने का संकल्प करना चाहिये; क्योंकि जबतक तुम उसे अपने पास रखोगे तबतक तुम्हारे लिये अतिमानस एक अपरिचित, अप्राप्य वस्तु बना रहेगा।

लेकिन अगर प्रयास करके, साधना के द्वारा, प्रगतिशील आत्म-संयम के द्वारा, तुम अपने अहं पर विजय प्राप्त कर लो और उससे परे चले जाओ, भले ही वह तुम्हारी सत्ता के छोटे-से-छोटे भाग में क्यों न हो तो यह चीज कहीं पर छोटी-सी खिड़की के खुलने की तरह क्रिया करती है जिसमें से सावधानी से देखने पर तुम्हें अतिमानस की एक झलक मिल सकती है। और यह एक वादा है। जब तुम उसे देखते हो तो वह इतना सुंदर लगता है कि तत्क्षण बाकी सारे ... अहं से मुक्त होने की इच्छा होती है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी तरह ख्याल रखो, मैं यह नहीं कह रही कि अतिमानस की झांकी के लिये अहं से पूरी तरह मुक्त होना चाहिये; क्योंकि तब वह प्रायः असंभव बात होगी। नहीं, किसी एक भाग में अहं से थोड़ा-सा मुक्त होना, तुम्हारी सत्ता के एक कोने में, चाहे मन के एक छोटे-से कोने में क्यों न हो; अगर मन या प्राण हो तो अच्छा ही है, लेकिन अगर संयोगवश—ओ! संयोगवश नहीं—अगर कई प्रयत्नों के बाद तुम अपने चैत्य पुरुष के साथ संबंध स्थापित कर सके हो तो वहां का दरवाजा पूरा-पूरा खुला होता है। चैत्य पुरुष के द्वारा अचानक ही तुम्हें अतिमानस क्या है इसकी स्पष्ट और सुंदर झांकी मिल सकती है; एक झांकी भर, उपलब्धि नहीं। वह, बाहर निकलने का मुख्य द्वार है। लेकिन उस सुंदर उपलब्धि, चैत्य पुरुष की उपलब्धि तक गये बिना भी—अगर तुम अपने मानसिक जगत् का एक हिस्सा या प्राणिक जगत् का एक हिस्सा मुक्त करने में सफल हो जाओ, तो वह दरवाजे में एक छिद्र की भांति होगा, दरवाजे में चाबी का एक छेद, उस छेद में से तुम्हें एक छोटी, बहुत छोटी झलक मिलती है। और वह भी बहुत आकर्षक, बहुत रोचक होती है।

२ मई १९५८ —श्रीमां

प्रगति और पूर्णता

"हम सफलता की खोज नहीं करते, हमारा लक्ष्य तो है पूर्णता। हम यश और प्रसिद्धि की इच्छा नहीं करते, हम एक भागवत अभिव्यक्ति के लिये अपने-आपको तैयार करना चाहते हैं।"

(श्रीमां : बुलेटिन, अप्रैल १९५०)

'पूर्णता' क्या है ?

कुछ लोग पूर्णता को शीर्ष स्थान पर रखते हैं। सामान्यतया लोग सोचते हैं कि मनुष्य जो कुछ अधिक-से-अधिक कर सकता है वही पूर्णता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परंतु मैं कहती हूं कि शीर्षाग्र ही पूर्णता नहीं है, वह कोई चरम सीमा नहीं है। कोई चरम सीमा है ही नहीं—जो कुछ तुम करते हो उससे अधिक अच्छा करने की संभावना सर्वदा बनी रहती है, और ठीक और अधिक अच्छा करने की संभावना ही प्रगति का वास्तविक अर्थ है।

जब कोई चरम सीमा ही नहीं है तब भला हम पूर्णता कैसे प्राप्त कर सकते हैं ?

यदि हम कोई प्रगति करें तो क्या यह कहा जा सकता है कि हम 'पूर्णता' की ओर जा रहे हैं ?

तुम 'पूर्णता' और 'प्रगति' को एक साथ मिला-जुला रहे हो। तुम अनिवार्य रूप से 'पूर्णता' की ओर प्रगति नहीं करते। प्रगति में संभवतः एक विशेष प्रकार की पूर्णता है, परंतु यह नहीं कहा जा सकता कि प्रगति ही 'पूर्णता' है। बल्कि 'प्रगति' एक प्रकार का आरोहण है।

'पूर्णता' एक प्रकार की समस्वरता, साम्यावस्था है।

परंतु साम्यावस्था क्या है ? यहां किसने थोड़ी-सी भौतिकी पढ़ी है ?

तराजू में, जब दोनों पलड़ों में समान भार रख दिया जाता है तब कहा जाता है कि साम्यावस्था या संतुलन स्थापित हो गया है।

हां, ठीक है। और जब मैं कहती हूं कि 'पूर्णता' एक प्रकार की साम्यावस्था या संतुलन है तो मेरा क्या मतलब होता है ?

जब, एक विशेष परिस्थिति में, सिद्धि के विपरीत जो कुछ होता है, अर्थात् जो कुछ विरोध होता है उसे एक सचेतन शक्ति द्वारा जीत लिया जाता है तो परिणाम सिद्धि की अभिव्यक्ति होता है।

हां, कुछ-कुछ ऐसा ही होता है, परंतु मैं इसे दूसरी तरह से कहना चाहूंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्णता की भावना एक ऐसी चीज है जो हमारे पास भगवान् से आती है, यह एक स्तर से दूसरे स्तर में उतरती है; और हम एक स्तर से दूसरे स्तर में वापस ऊपर उठते हैं।

यह भी एक विकसनशील भावना है। हमेशा ही यही कहा जाता है कि जब कोई सृष्टि अपनी अधिकतम संभावना को प्राप्त हो जाती है तो उसे ही पूर्णता कहते हैं; पर यही पूर्णता नहीं है! और ठीक यही वह भावना है जिसका मैं प्रतिवाद करती हूं। यह सब प्रगति का एक पग है। अर्थात्, प्रकृति के पास जो कुछ होता है उसकी चरम सीमा पर पहुंचकर जब वह देखती है कि वह और आगे नहीं बढ़ सकती, और अधिक नहीं हिल सकती तो वह सब कुछ नष्ट कर देती है और फिर से आरंभ करती है। इसे पूर्णता नहीं कहा जा सकता, क्योंकि पूर्णता का विनाश नहीं किया जा सकता। पूर्णता केवल तभी आयेगी जब प्रकृति जो कुछ आरंभ कर चुकी है उसे फिर नष्ट न कर सके। अभीतक ऐसा कोई उदाहरण नहीं है जिसमें उसने जो कुछ आरंभ किया था उसे यह समझकर नष्ट न कर दिया हो कि यह पर्याप्त नहीं था या वह जो कुछ करना चाहती थी वह नहीं था। अतएव यह नहीं कहा जा सकता कि उसने अपनी सृष्टि में पूर्णता प्राप्त कर ली है। उसने जो कुछ किया है उसे यदि विनष्ट करने की आवश्यकता न पड़े तभी उसे अधिकतम कहा जा सकता है।

आप कहती हैं कि हमें सफलता की खोज नहीं है, पर क्या सफलता एक प्रकार की पूर्णता नहीं है?

साधारण मानव मन के लिये शायद सफलता एक प्रकार की पूर्णता है, पर हमारे लिये नहीं।

पूर्णता कोई निष्क्रिय स्थिति नहीं है, यह एक प्रकार की संतुलन की अवस्था है; पर एक प्रगतिशील, सक्रिय संतुलन है। मनुष्य पूर्णता से पूर्णता की ओर जा सकता है। एक ऐसी अवस्था आ सकती है जहां से और आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने के लिये किसी निचली सीढ़ी पर उतर आने की आवश्यकता नहीं होगी; वर्तमान समय में प्रगति की चाल इसी प्रकार की है, पर इस नयी स्थिति में, पुनः आगे बढ़ने के लिये, पीछे लौटने के लिये बाध्य होने की जगह हम सदा आगे की ओर, कभी रुके बिना, चल सकते हैं। वास्तविकता यह है कि मनुष्य एक बिंदु पर आ जाता है और, मानव सत्ता की वर्तमान परिस्थिति में वह असीम रूप में प्रगति नहीं कर सकता, उसे या तो एक उच्चतर जाति में बदल जाना होगा अथवा वर्तमान जाति को छोड़कर अन्य जाति पैदा करनी होगी। मनुष्य, जैसा कि वह है, तबतक पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता जबतक कि वह अपने-आपसे बाहर नहीं निकल जाता—मनुष्य एक मध्यवर्ती सत्ता है। साधारण भाषा में यह कहा जा सकता है : "ओह ! यह मनुष्य पूर्ण है।" परंतु यह एक साहित्यिक अलंकार है। ठीक आज की स्थिति में मनुष्य अधिक-से-अधिक जो कुछ प्राप्त कर सकता है वह है एक ऐसा संतुलन जो प्रगतिशील नहीं होता। संभवतः वह एक स्थितिशील संतुलन प्राप्त कर सकता है, पर जो कुछ स्थितिशील होता है वह सब प्रगति के अभाव के कारण भंग हो सकता है।

क्या सत्ता के प्रत्येक भाग में भगवान् की संसिद्धि ही पूर्णता नहीं है ?

नहीं, जो तुम सोच रहे हो वह फिर प्रगति की सीढ़ी का एक डंडा है, 'पूर्णता' नहीं है।

अब हम एक ऐसी परिभाषा पाने की चेष्टा करेंगे जो सभी अवस्थाओं में—अर्थात् व्यक्ति, समष्टि, पृथ्वी और विश्व में—लागू हो सके।

हम कह सकते हैं कि 'पूर्णता' व्यक्ति में, समष्टि में, पृथ्वी पर और विश्व में तभी प्राप्त होगी जब कि प्रत्येक 'मुहूर्त', अभिव्यक्त होनेवाली 'शक्ति' के प्रति हमारी ग्रहणशीलता प्रकार और मात्रा में एक समान होगी।

यही है परम संतुलन की अवस्था।

अतएव, जो कुछ ऊपर से आता है और जो कुछ नीचे से प्रत्युत्तर देता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है उन दोनों के बीच कोई पूर्ण संतुलन की अवस्था अवश्य होगी, और इन दोनों का मिलन ही पूर्ण संतुलन की अवस्था है और वही है 'सिद्धि'—सतत प्रगति में सिद्धि।

(फिर माताजी वही लेख पढ़ना जारी रखती हैं) :

"... 'प्रतीत' होने की अपेक्षा 'होना' कहीं अधिक अच्छा है। यदि हमारी सच्चाई पूर्ण हो तो हमें अच्छा प्रतीत होने की आवश्यकता नहीं। और पूर्ण सच्चाई से हमारा तात्पर्य यह है कि हम अपने सभी विचारों, सभी हृद्गत भावों, सभी इंद्रिय संवेदनों और सभी कर्मों में अपनी सत्ता के केंद्रीय सत्य के सिवा और कोई चीज अभिव्यक्त न करें।"

जब तुम पूर्णतः सच्चे होते हो तो तुम अपनी सत्ता के उच्चतम आदर्श के साथ, अपनी सत्ता के सत्य के साथ समस्वर होकर जीवन बिताने का सतत प्रयत्न करते हो। प्रत्येक मुहूर्त, तुम जो कुछ सोचते, जो कुछ अनुभव करते और जो कुछ करते हो उस सबमें, यथासंभव समग्र रूप में, यथासंभव पूर्ण रूप से, तुम अपने-आपको उच्चतम आदर्श के साथ अथवा, यदि उसके विषय में सचेतन हो तो, अपनी सत्ता के सत्य के साथ समस्वर बनाते हो—तब तुम यथार्थ सच्चाई को प्राप्त करते हो। और, यदि तुम वैसे हो, यदि तुम अहंकारजन्य उद्देश्यों से या व्यक्तिगत कारणों से कार्य नहीं करते, यदि तुम अपने आंतरिक सत्य के द्वारा परिचालित होकर कार्य करते हो, अर्थात्, यदि तुम पूर्णतः सच्चे हो तो, चाहे सारा जगत् तुम्हारा विचार किसी भी ढंग से क्यों न करे, तुम्हारे लिये कोई फर्क नहीं पड़ता। पूर्ण सच्चाई की इस अवस्था में तुम्हें अच्छा प्रतीत होने की अथवा दूसरों के द्वारा समर्थित होने की कोई आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि जब तुम अपनी सत्य चेतना के साथ समस्वर होते हो तो तुम सबसे पहली चीज यह अनुभव करते हो कि तुम इस बात की परवाह नहीं करते कि तुम कैसे दीखते हो। चाहे तुम ऐसे दीखो या वैसे, चाहे तुम उदासीन, तटस्थ, निर्लिप्त,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्वित प्रतीत होओ, इस सबका कोई महत्त्व नहीं है, बशर्ते कि, मैं इसे फिर दुहरा दूं, तुम पूर्ण रूप से सच्चे होओ। अर्थात्, तुम कभी यह न भूलो कि अपने आंतर, केंद्रीय सत्य को उपलब्ध करने के लिये ही जीते हो।

अन्य किसी को प्रसन्न करना नहीं, बल्कि भगवान् को ही प्रसन्न करना, पूर्णता नहीं है क्या ?

हां, यदि तुम चाहो, ऐसा कह सकते हो पर मनुष्य जब सच्चा नहीं होता तो वह बहुत आसानी से अपने-आपको धोखा दे देता है, और यदि कोई अपने को सुखी अनुभव करता है तो वह कहता है : "ओह, मुझे विश्वास है कि मैं भगवान् को प्रसन्न कर रहा हूं।"

३० दिसंबर १९५० —श्रीमातृवाणी खण्ड ४

पृ० १४—१७

सभी रास्ते भगवान् की ओर ले जाते हैं

"... पूर्ण योग का साधक तबतक संतुष्ट न होगा जबतक वह अपनी धारणा में भगवान् के अन्य सभी नाम-रूपों को न मिला ले ..."

हां।

क्यों ? इसका अर्थ वही है जो इसमें कहा गया है। तुम इसमें क्या नहीं समझे ?

क्या नहीं समझते तुम ?

मैं अर्थ नहीं समझता।

(मौन)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन, मेरे वत्स . . .। तुमसे कहा गया है कि केवल एक ही सद्वस्तु है, और जो कुछ भी है वह केवल उसी एक सद्वस्तु की बहुविध अभिव्यक्ति है। अतः, सभी भागवत अभिव्यक्तियां, काल-चक्र में उसने जितने भी रूप धारण किये हैं, उसे मनुष्यों के द्वारा जितने भी नाम दिये गये हैं, वे सब केवल अभिव्यक्तियां हैं, एकमात्र एकमेव भागवत के नाम-रूप हैं।

चूंकि मनुष्य बहुत सीमित होते हैं, इसलिये साधारणतः उनके लिये किसी और मार्ग की जगह एक का अनुसरण करना ज्यादा आसान होता है। लेकिन यह केवल छोटा-सा आरंभ है; अगर कोई ऊंचाइयों पर पहुंचना चाहे, तो उसे सभी पथों के द्वारा भगवान् को समान रूप से पा सकना चाहिये, और यह समझ लेना चाहिये कि रंग-रूप चाहे जितने भिन्न हों, वह एक और वही भगवान् हैं।

श्रीअरविन्द तुमसे यही कहते हैं: तुम तबतक रुक नहीं सकते, संतुष्ट नहीं हो सकते जबतक तुम बिलकुल ठोस रूप से यह न अनुभव कर लो कि भगवान् केवल एक हैं, कि 'सद्वस्तु' केवल एक ही है, और यह कि तुम चाहे जिस कोण से देखो, उसे पाने के लिये चाहे जो पथ अपनाओ, तुम हमेशा उसी, एकमात्र चीज को पाओगे। तो जो काफी विकसित है, जो, हम जिसे पूर्ण योग कहते हैं, उसका अनुसरण करने के लिये काफी विशाल है, उसमें यह क्षमता होनी चाहिये कि सभी संभव पथों से भगवान् की ओर जा सके। अगर वह अपने-आप उनका अनुसरण न करना चाहे, क्योंकि इसमें समय लगता है . . . यद्यपि विकास की एक स्थिति तुम्हें इस योग्य बना देती है कि जो मार्ग सारा जीवन ले ले, वह कुछ ही दिनों में या कुछ घंटों में तय कर सको . . . फिर भी अगर तुम्हारे अंदर इस प्रकार की कसरत के लिये रुचि नहीं है, तो कम-से-कम तुम्हारी समझ इतनी खुली तो होनी ही चाहिये कि तुम्हें यह भान हो कि यह सब मौलिक रूप से एक और अभिन्न वस्तु हैं। तुम उसे भले यह या वह नाम दे लो या कोई नाम न दो, समझे, या बहुत-से नाम दे लो, तुम हमेशा उसी चीज के बारे में बोलोगे जो एकमेव भगवान् है, जो सब कुछ है।

नहीं पकड़ पा रहे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल मन और सीमित मानव चेतना भेद-भाव करते हैं। और इन भेद-भावों के द्वारा तुम गड़बड़ में पड़ जाते हो। तुम केवल भेदों के द्वारा ही पहचानते हो, और भेदों का मतलब है भ्रामक बाह्य चेतना। जैसे ही तुम सचमुच अंदर प्रवेश करते हो, वैसे ही तुरंत तुम्हें समग्र तादात्म्य का संवेदन होता है और तुम्हें ये सब भेद बिलकुल बेतुके मालूम होते हैं।

मधुर मां, परम मानव और दिव्य मानव में क्या फर्क है ?

एक मानवता का शिखर है। "परम" का अर्थ है ऐसा मनुष्य जो मानवता के शिखर पर हो, यानी, पूर्ण मनुष्य।

दूसरा है मानव शरीर में प्रविष्ट भगवान्। उसमें केवल शरीर, बाह्य रूप मानव होता है, चेतना नहीं। पहले में मानव चेतना ही पूर्णता को प्राप्त करती है।

बस ?

२३ नवम्बर १९५५

—श्रीमातृवाणी खंड ७; पृ० ३६३-३६५

स्त्रियों की समस्या

मैं आज स्त्रियों की समस्या के विषय में कुछ कहना चाहती हूं। यह समस्या देखने में तो उतनी ही पुरानी है जितनी कि मनुष्यजाति, परंतु अपने मूल में यह इससे भी बहुत अधिक पुरानी है। कारण, यदि कोई एक ऐसे नियम को ढूंढ़ना चाहे जो इसका शासन तथा समाधान करता है तो उसे विश्व के उद्गम तक, बल्कि सृष्टि के भी परे जाना होगा।

कुछ प्राचीनतर परंपराएं, संभवतः प्राचीनतम परंपराएं विश्व की उत्पत्ति का कारण 'सर्वोच्च सत्ता' का वह संकल्प बताती हैं जो आत्मनिष्ठ रूप में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको व्यक्त करने के लिये होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस विषयीकरण का पहला कार्य था सृजनात्मक 'चेतना' का प्रकट होना। यह सत्य है कि ये प्राचीन परंपराएं अभ्यासवश ही 'सर्वोच्च सत्ता' की पुल्लिंग के रूप में और 'चेतना' की स्त्रीलिंग के रूप में चर्चा करती हैं तथा इस आदि भाव को ही पुरुष और स्त्री के विभेद का स्रोत बना देती हैं, इसीके द्वारा वे पुरुष को स्त्री पर प्रधानता भी दे देती हैं, जब कि वास्तविक बात यह है कि अभिव्यक्ति से पहले दोनों ही एक, अभिन्न तथा सहवर्ती थे ...

फिर भी, यह प्रश्न किया जा सकता है कि क्या ये अनुभव और इनके द्वारा प्रदर्शित सत्य प्रधानता के उस भाव के लिये उत्तरदायी हैं जो पुरुष स्त्री के प्रति हमेशा बनाये रखता है, या इसके विपरीत, सामान्य रूप से प्रचलित यह प्रधानता का भाव ही अनुभूतियों के उस सूत्रबद्ध रूप के लिये उत्तरदायी है ...

बहरहाल, यह तथ्य तो निर्विवाद ही है कि पुरुष अपने-आपको बड़ा समझता है तथा अपना प्रभुत्व जमाना चाहता है, उधर स्त्री अपने-आपको उत्पीड़ित अनुभव करती है और फिर परोक्ष या अपरोक्ष रूप में विद्रोह करती है, और इन दोनों का यह झगड़ा युग-युग से चला आ रहा है; यह मूल में एक ही है, पर अनगिनत रूप-रंगों में प्रकट होता है।

यह तो मानी हुई बात है कि पुरुष सारा दोष स्त्री पर थोपता है और उसी प्रकार स्त्री सारा दोष पुरुष पर थोपती है। पर, वास्तव में, दोष समान रूप से दोनों का मानना चाहिये और दोनों में से किसी को भी अपने-आपको दूसरे से बड़ा मानने का गर्व नहीं करना चाहिये। बल्कि जबतक प्रधानता और हीनता का यह विचार दूर नहीं कर दिया जायेगा तबतक कोई भी वस्तु या कोई भी व्यक्ति इस भ्रांति को दूर नहीं कर सकेगा जो मानवजाति को दो विरोधी शिविरों में बांट देती है, और न तबतक समस्या का कोई समाधान ही हो पायेगा ...।

पारस्परिक संबंध में पुरुष और स्त्री एक-दूसरे के पूरी तरह निरंकुश स्वामी और साथ ही कुछ दयनीय दास भी होते हैं।

हां, सचमुच दास, क्योंकि जबतक मनुष्य में इच्छाएं हैं, अभिरुचियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और आसक्तियां हैं, तबतक वह इन वस्तुओं का और उन व्यक्तियों का भी दास है जिन पर वह इन इच्छाओं की पूर्ति के लिये निर्भर रहता है।

अतएव, स्त्री पुरुष की दासी इसलिये है कि वह पुरुष और उसके बल के प्रति आकर्षण का अनुभव करती है, उसके अंदर घर बसाने की इच्छा होती है, वह घर से प्राप्त होनेवाली सुरक्षा को चाहती है, और अंत में उसके अंदर मातृत्व के प्रति मोह भी होता है। इधर पुरुष भी स्त्री का दास है, अधिकार-भावना के कारण, शक्ति और प्रभुत्व की तृष्णा के कारण, काम-वासना की तृप्ति की इच्छा तथा विवाहित जीवन की छोटी-मोटी सुख-सुविधाओं के प्रति आसक्ति के कारण।

इसलिये कोई भी कानून स्त्री को तबतक बंधनमुक्त नहीं कर सकता जबतक वह स्वयं ही बंधनमुक्त न हो जाये; इसी प्रकार पुरुष भी अधिकार जमाने की आदतों के होते हुए तबतक दासता से मुक्त नहीं हो सकता जबतक वह अपने अंदर की सारी दासता से मुक्त न हो जाये।

यह गुप्त संघर्ष की अवस्था, जिसे प्रायः कोई स्वीकार नहीं करता, किंतु जो अच्छे-से-अच्छे दृष्टांतों में भी सदा अवचेतन में उपस्थित रहती है, तबतक अनिवार्य प्रतीत होती है, जबतक मनुष्य सर्वोच्च सत्ता के साथ एक होने के लिये अपनी सामान्य चेतना से ऊपर नहीं उठ जाते। कारण, जब तुम उस उच्च चेतना को प्राप्त कर लेते हो तो देखते हो कि पुरुष और स्त्री का भेद केवल शारीरिक भेद रह जाता है . . .

पुरुष और स्त्री, दोनों ही अपने अच्छे क्षणों में लिंग-भेद भूल जाते हैं, किंतु जरा-सी उत्तेजना पाते ही वह भेद फिर से आ जाता है; स्त्री अनुभव करने लगती है कि वह स्त्री है, और पुरुष तो यह जानता ही है कि वह पुरुष है और झगड़ा फिर अनिश्चित अवधि के लिये, किसी-न-किसी रूप में, प्रत्यक्ष या परोक्ष स्तर पर चलने लगता है और प्रकट रूप में जितना कम स्वीकार किया जाता है उतना ही कटु होता है। कोई पूछ सकता है कि क्या यह झगड़ा तबतक ऐसा ही न चलता रहेगा जबतक पुरुष और स्त्री न रहकर ऐसी जीवंत आत्माएं नहीं बन जातें जो लिंग-रहित शरीरों में अपने एक ही अभिन्न स्रोत को अभिव्यक्त करती हों . . .।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो भी हो, जबतक एक ऐसी नयी जाति को, जिसे प्रजनन की आवश्यकता के अधीन होने की जरूरत न हो और जो सत्ता के दो पूरक लिंगों में विभाजित होने के लिये बाध्य न हो, उत्पन्न करने के लिये प्रकृति को प्रेरित करनेवाला नया विचार एवं नयी चेतना प्रकट नहीं हो जाते, तबतक वर्तमान मानवजाति की उन्नति के लिये अधिक-से-अधिक यही किया जा सकता है कि पुरुष और स्त्री दोनों के साथ पूर्ण समानता का व्यवहार किया जाये, दोनों को एक ही शिक्षा तथा प्रशिक्षा दी जाये तथा दिव्य सत्ता के साथ, जो कि समस्त लिंग-भेदों से ऊपर है, सतत संपर्क स्थापित करके समस्त संभावनाओं और समस्त समस्वरताओं के उद्गम को प्राप्त किया जाये।

—श्रीमां

शिष्ट व्यवहार

अध्यापकों ने अपने कुछ विद्यार्थियों के नियंत्रण, सदाचार और सद्व्यवहार के बारे में चिंता प्रकट की।

मैं शिष्ट व्यवहार की आवश्यकता पर जोर देती हूं। मैं नाली के कीड़े जैसे व्यवहार में कोई बड़ी बात नहीं देखती।

(४-३-१९६०)

*

सच्चा बल और सुरक्षा हृदय में स्थित भागवत सत्ता से आते हैं।

अगर तुम इस सत्ता को हमेशा अपने अंदर रखना चाहो तो सावधानी के साथ वाणी, आचार और क्रिया से समस्त अशिष्टता और गंवारूपन को दूर रखो।

स्वाधीनता को स्वच्छंदता और आजादी को अभद्र व्यवहार न मान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठो : विचार शुद्ध होने चाहियें और अभीप्सा तीव्र।

(२३-२-१९६५)

*

क्या यह जो स्वाधीनता हमें दी गयी है वह उन लोगों के लिये खतरनाक नहीं है जो अभीतक जाग्रत् नहीं हैं, जो अभीतक अचेतन हैं? किस बिरते पर हमें यह सौभाग्य प्रदान किया गया है?

संकट और जोखिम हर प्रगति का भाग होते हैं। उनके बिना, कभी कोई चीज आगे न बढ़ेगी, इसके अतिरिक्त, ये उन लोगों के चरित्र-निर्माण के लिये अनिवार्य हैं जो प्रगति करना चाहते हैं।

(१३-४-१९६६)

*

दो चीजें करने की जरूरत है। बच्चों को यह सिखाना चाहिये :

(क) परिणाम चाहे कुछ क्यों न हो, वे कभी झूठ न बोलें,

(ख) उग्रता, कोप, क्रोध पर संयम रखें।

अगर ये दो चीजें की जा सकें, तो वे अतिमानवता की ओर ले जाये जा सकते हैं।

यह ख्याल है कि अगर हम परंपराओं और बंधनों को तोड़ें तो हम सामान्य मानवजाति की सीमाओं से मुक्त हो जाते हैं। लेकिन यह गलत है।

जिसे हम "परामानव" कह सकते हैं वह होने के लिये इन दो चीजों को पाना जरूरी है : झूठ न बोलना और अपने-आपको वश में रखना।

भगवान् के लिये संपूर्ण भक्ति सबसे अंतिम अवस्था है, लेकिन ये दो बातें पहले चरितार्थ करनी होंगी।

(१८-७-१९७१)

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियों से

कक्षा में शोर मचाना स्वार्थपूर्ण मूढ़ता का कार्य है।

अगर तुम चुपचाप ध्यान देकर कक्षा में उपस्थित होने का इरादा नहीं रखते तो न आना ज्यादा अच्छा है।

*

विद्यालय में लड़ना, कक्षा में लड़ना, क्रीड़ांगण में लड़ना, गली में लड़ना, घर पर लड़ना (चाहे अपने घर में हो या छात्रावास में) मना है।

हमेशा और हर जगह बच्चों को आपस में लड़ने की मनाही है, क्योंकि हर बार, जब तुम किसी पर प्रहार करते हो तो वह तुम्हारी अपनी अंतरात्मा पर प्रहार होता है।

(१४-१-१९६३

—श्रीम

अधिक सचेतन बनो

... अधिक सचेतन बनो। थोड़ा-सा सीखना बहुत बुरा है। तुम्हें अधिक सीखना चाहिये, यहांतक कि तुम उस स्थिति में आ जाओ जहां तुम देख सको कि तुम्हें कुछ नहीं आता ...। मैंने तुम्हें उस नौसिखिये की बात बतायी थी जो, उसने जो कुछ सीखा था उसे औरों तक पहुंचाना चाहता था—जबतक कि उसे यह पता नहीं लग गया कि उसके पास औरों तक पहुंचाने के लिये कुछ अधिक नहीं है। सामान्यतः सभी धार्मिक शिक्षाएं इसी पर आधारित होती हैं। बहुत थोड़ा-सा ज्ञान, पक्के बंधे-बंधाये सूत्र जो प्रायः अच्छी तरह लिखे होते हैं (प्रायः काफी अच्छी तरह लिखे हुए) दिमाग में जम जाते हैं और दावे के साथ कहते हैं : "वास्तव में यही सत्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है।" तुम बस इतना ही पढ़ लो जो इस पुस्तक में लिखा है। यह कितना आसान है! हर एक धर्म में एक पुस्तक होती है चाहे वह प्रश्नोत्तरी हो, हिंदू शास्त्र हों, कुरान हो, संक्षेप में, सभी पवित्र ग्रंथ—तुम उन्हें रट डालो। तुमसे कहा जाता है कि बस यही सत्य है और तुम इस बारे में निश्चिंत होते हो कि यही सत्य है और आराम से रहते हो। यह बहुत सुविधाजनक है, तुम्हें समझने की कोशिश करने की जरूरत नहीं। जो लोग उसी चीज को नहीं जानते जिसे तुम जानते हो वे मिथ्यात्व में हैं, और तुम उनके लिये प्रार्थना भी करते हो जो "सत्य" के बाहर हैं! सभी धर्मों में यह एक सामान्य तथ्य है। लेकिन सभी धर्मों में ऐसे लोग हैं जो ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं और इन बातों पर विश्वास नहीं करते। मुझे ऐसा एक आदमी मिला था जो कैथोलिक धर्मावलंबी था। वह एक बड़ा आदमी था। मैंने उससे मैं जो जानती थी उसके बारे में बातचीत की और पूछा : "आप इस तरीके का उपयोग क्यों करते हैं ? आप अज्ञान को स्थायी क्यों बनाना चाहते हैं ?" उन्होंने उत्तर दिया : "यह शांति की नीति है। अगर हम यह न करें तो लोग हमारी बात न सुनेंगे। वास्तव में, यही धर्मों का रहस्य है।" उन्होंने मुझसे कहा : "हमारे धर्म में भी, प्राचीन दीक्षाओं की तरह जाननेवाले लोग हैं। ऐसे विद्यालय हैं जहां प्राचीन परंपराएं सिखायी जाती हैं। लेकिन हमें उनके बारे में बातचीत करना मना है। ये सभी धार्मिक बिंब किसी चीज को चित्रित करनेवाले प्रतीक हैं। उनका अर्थ जो सिखाया जाता है उससे भिन्न है, लेकिन वह अर्थ बाहर नहीं सिखाया जाता।"

उनके अनुसार इसका कारण बहुत उदारतापूर्ण और दयापूर्ण है : जिन लोगों के छोटे-से दिमाग हैं—और ऐसे बहुत-से हैं—अगर हम उन्हें किसी ऐसी चीज के बारे में बताएं जो उनके लिये बहुत ऊंची है तो वह उन्हें कष्ट देती है और परेशान करती है और वे दुःखी हो जाते हैं। वे कभी न समझ सकेंगे। उन्हें व्यर्थ में क्यों परेशान किया जाये ? उनके अंदर सत्य को पाने की क्षमता नहीं है। जब कि अगर तुम उनसे कहो : "अगर तुम्हें इस बात पर श्रद्धा है तो तुम स्वर्ग जाओगे," तो वे बहुत खुश रहते हैं। तो देखो, यह बहुत सुविधाजनक है। इसीलिये इसे स्थायी बनाया जाता है, अन्यथा कोई धर्म न टिकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं तुमसे यह बात किसी धर्म की तुलना में किसी और विशेष धर्म को प्रोत्साहित करने के लिये नहीं कह रही। पर यह ऐसी प्रक्रिया है जो उदार मालूम होती है . . .। अन्यथा कोई धर्म ही न होंगे। गुरु और शिष्य होंगे, ऐसे लोग जिनके पास उच्चतर शिक्षा और विरल अनुभूति है। यह बहुत अच्छी चीज होगी। लेकिन जैसे ही गुरु चला जाता है तो होता यह है कि उसकी शिक्षा को धर्म में बदल दिया जाता है, कठोर मतवाद बन जाते हैं, धार्मिक नियम बन जाते हैं और धर्म के विधान के आगे झुकना अनिवार्य हो जाता है। और फिर भी, आरंभ में ऐसा न था। तुमसे कहा जाता है: "यह सत्य है, यह मिथ्या है। गुरु ने कहा है . . .।" कुछ समय बाद गुरु भगवान् बन जाता है और तुमसे कहा जाता है: "भगवान् ने यह कहा है।"

ध्यान रखो कि मैं तुमसे यह सब इसलिये कह रही हूं क्योंकि मैं जानती हूं कि यहां तुम सब धर्मों से मुक्त हो। यदि मेरे सामने कोई ऐसा व्यक्ति हो जो किसी धर्म पर विश्वास रखता है तो मैं उससे कहूंगी: "यह बहुत अच्छा है, अपना धर्म बनाये रखो, जारी रखो।" तुम्हारे सबके सौभाग्य से तुम्हारा कोई धर्म नहीं है। और मैं आशा करती हूं कि होगा भी नहीं। क्योंकि उसका अर्थ होता है समस्त प्रगति के लिये द्वार बंद।

२९ अप्रैल, १९५३

'श्रीमातृवाणी' खण्ड ५
पृ० २८-२९

सोसायटी समाचार

वडोदरा (गुजरात) शाखा ने पहली जुलाई से एक बाल-विभाग शुरू किया है जिसमें तीन से छह वर्ष के बच्चे हर शनिवार और रविवार को श्रीअरविन्द निवास में आते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य है बच्चों को अपने-आपको जानने और अपना अन्वेषण करने में मदद देना।

धारी (गुजरात) की उन्मीलन शाखा ने २९ मई को अपना विशेष दिन मनाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरेली (गुजरात) शाखा ने 'लायन्स क्लब' के सौजन्य से २३ जुलाई को हृद्‌रोग निदान विषयक शिविर का आयोजन किया जिसमें तीन चिकित्सकों ने अच्छी जानकारी दी।

उत्तर-प्रदेश में बांदा, कड़वी, मसूरी और लखनऊ (उस्मानपुर) में सोसायटी के चार नये केंद्र खुले।

श्रीअरविन्द की १२८वीं वर्षगांठ पर रांची-केंद्र में विशेष कार्यक्रम हुआ। श्री दीपंकर घोष की शंख-ध्वनि के साथ कार्यक्रम का आरंभ हुआ। बंगला, हिंदी तथा अंग्रेजी में विभिन्न लोगों ने भाषण दिये, संगीत का कार्यक्रम भी हुआ और अंत में वन्दे मातरम् का सहगान हुआ।

इसके पहले यहां २ अगस्त को श्रीअरविन्द के पवित्र देहावशेष पधराने की दूसरी जयन्ती पर विशेष ध्यान तथा अन्य कार्यक्रम हुए।

श्रीअरविन्द की पुस्तक "मां" का पंजाबी अनुवाद 'शब्द' से उपलब्ध है। मूल्य १० रु०, डाक-व्यय अतिरिक्त।

हिन्दू धर्म पर अंग्रेजी की कई छोटी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। कृपया विस्तृत जानकारी के लिये श्रीअरविन्द सोसायटी, बीच ऑफिस, पांडिचेरी—६०५००१ से सीधा पत्र-व्यवहार करें।

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा..... .... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Hanuman Prasad Dharam Chand
Dinodiya Welfare Trust
CALCUTTA

J. J. Charitable Trust
7C Kiron Shankar Rai Road
CALCUTTA - 1

Kayan Foundation
9/2 Hungerford street
CALCUTTA - 17

Pannalal Kandoi Seva Kosh
132/1 M. G. Road
CALCUTTA - 7

G. N. B. Motors Ltd.
8 Camac Street, 9th Floor
CALCUTTA - 700 017

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Sri Madhopur Vikas Parishad Trust
48 Dobson Road
HOWRAH - 711101

Sharad Seva Nidhi Trust
26 Amherst Street
CALCUTTA - 700009

Seth Chiranjilal Khaitan Trust
7 Keyatala Lane
CALCUTTA - 700009

Mamraj Jayatri Trust
6A Ironside Road
CALCUTTA - 700019

Dhanuka Charity Trust
Dhanseri House, 4A Woodburn Park
CALCUTTA - 700020

M/S ODC Carrier (P) Ltd.
15 India Exchange Place
CALCUTTA - 700001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Salarpuria Public Charity Trust
7, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 072

M/s Patton Ltd.
3C, Camac Street
CALCUTTA - 700 016

Naurangrai Lohia Charitable Trust
14A Loudon Street
CALCUTTA - 700 017

Charu Enterprises
42B Shakespear Sarani, 13, Shalimar Apt.
CALCUTTA - 17

Kitply Industries Ltd.
White House, 'A' Block, 4th Floor, 119 Park Street
CALCUTTA - 700 016

Eastern Enterprises Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Manav Seva Trust
CALCUTTA

Saria Charitable Trust
(J. P. Saria)
D-9 Kirti Nagar
NEW DELHI - 110 015

Shri Gopal Kamal Kumar
196, Jamuna Lal Bajaj Street
CALCUTTA - 700 007

Adukia Industrial Concern
17, Ganesh Ch. Avenue
CALCUTTA - 700 013

Sri Keshar Deo Saraf & Sons (HUF)
35, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 012

Maikal Fibres Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको उस नये प्रकाश के प्रति खोलो जो धरती पर उदित हुआ है
और तुम्हारे सामने एक ज्योतिर्मय पथ खुल जायेगा।

— श्रीम

WITH THE BEST COMPLIMENTS OF

S. L. Deorah Group of Enterprises

ASSAM TEA WAREHOUSING CORPORATION
INDIAN TEA STORAGE AGENCY
INDIAN TRANSPORT AGENCY
AURO IMPEX PRIVATE LIMITED
AURO LABORATORIES LIMITED
AURO BUSINESS CENTRE

Calcutta Office:

'SHIVANGAN' - Flat No. 2C, 53/1/2, Hazra Road
CALCUTTA - 700 019
Phone No.: 474 - 2059, 474 - 2060
Fax No.: 476 - 2348

Bombay Office:

408 Navratan, 69 P. DeMellow Road
BOMBAY - 400 009
Phone No.: 343 - 5341, 342 - 9027
Fax No.: 342 - 5022

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो संदेश

प्रकृति की यह आदत कि चिन्ता करे और अपनी त्रुटियों का राग अलापती रहे—यही भाव तुम्हें शांत रहने से रोकता है। अगर तुम उसे निकाल कर फेंक सको तो शांत रहना अधिक आसान होगा। नम्रता जरूरी है परंतु सतत आत्म-निन्दा से कोई लाभ नहीं होता। अत्यधिक आत्म-तुष्टि और आत्म-निन्दा दोनों ही गलत वृत्तियां हैं। अपने दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर न देखना उपयोगी है पर एक बार उन्हें पहचान लेने के बाद फिर हमेशा उन्हीं का राग अलापते रहना अच्छा नहीं है। तुम्हें यह विश्वास होना चाहिये कि भागवत शक्ति हर चीज को बदल सकती है और तुम्हें उस शक्ति को अपने अंदर काम करने देना चाहिये।

—श्रीअरविन्द

माताजी प्रचार को बहुत मूल्य नहीं देतीं, फिर भी इस प्रकार का काम उनका काम हो सकता है। हां, केवल उसे उनकी प्रेरणा से होना चाहिये, उसे शक्ति के साथ, उचित रूप में करना चाहिये और उसी तरीके से करना चाहिये जैसा वे चाहती हैं। उसे प्राणमय-मानसिक उत्सुक आवेग के द्वारा नहीं बल्कि माताजी की इच्छा के एकत्व के साथ आन्तरिक सत्ता के द्वारा करना चाहिये। साधक की पहली आवश्यकता है, अपनी आध्यात्मिक प्रगति और अनुभूति पर एकाग्र होना—दूसरों की सहायता के लिये उत्सुक रहना आन्तरिक कार्य से अपने-आपको खींच लेना है। अपने-आप चेतना में विकसित होना वह सबसे बड़ी सहायता है जो हम दूसरों को दे सकते हैं, क्योंकि तब हमारे अंदर से स्वाभाविक रूप में कोई ऐसी चीज प्रवाहित होती है जो हमारे चारों तरफ के लोगों की सहायता करती है।

९ अप्रैल १९३७

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

हैरी गोल्ड

(२)

(गतांक से आगे)

१९९३ की वसंत में एक दिन हैरी लौंग आइलैण्ड के विश्व-विद्यालय में पहुंच गया, डियाना कौफमैन नामक महिला के सामने खड़ा होकर बोला कि वह डिग्री पाने के लिये अपना नाम दर्ज करवाना चाहता है। आश्चर्य से उसने पूछा, "स्कूल कब गये थे ?" हैरी बेझिझक बोला, "ओह, बहुत समय पहले। बताओ, हस्ताक्षर कहां करूं ?" और वह कॉलेज में दाखिला पा गया। कॉलेज पहुंच कर हैरी पहली बार कक्षा में कुछ झिझक से घुसा, सिर नीचा किये लिखता रहा।

कुछ दिन बाद एक युवा सहपाठी ने पूछ ही लिया, "आप पढ़ने क्यों आये ? हम सब तो खैर अच्छी नौकरी पाने के लिये यहां आते हैं।" बस इसके साथ हैरी में जान आ गयी, उसने कहा, "मुझे तुमसे उल्टा रास्ता अपनाना पड़ा। मेरे लिये पहले नौकरी थी, फिर यहां पहुंचने में मुझे पचास साल लग गये।" उस युवक के कंधे पर हाथ रखकर वह बोला, "मैंने समझ लिया कि शिक्षा का मतलब केवल अच्छी नौकरी पाना नहीं है।"

बस, बात फैल गयी कि बूढ़ा मजेदार बातें करता है। हैरी के प्रश्न कक्षा में खलबली मचा देते। धीरे-धीरे विद्यार्थी उसे घेर कर रहते, और उसके साथ कॉलेज के बाहर जाते। वे पूछते, "आप वियतनाम के युद्ध को रोक नहीं पाये, क्यों ?" कोई विद्यार्थी पूछता, "जब कैनेडी की हत्या हुई तो अमरीका में वातावरण कैसा था ? आपको कैसा लग रहा था ?" दूसरा विद्यार्थी पूछता, "आपने प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट को सचमुच देखा था ?"

कक्षा में हैरी प्रोफेसर से पूछता, "जर्मनी ने हिटलर को उठने कैसे दिया ? क्यों उठने दिया ?" कभी पूछता, "रूस के अंदर लोकतन्त्र सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं बन सकती ?'' ऐसे प्रश्नों के कारण कक्षा में गरमा-गरम चर्चा होती। विद्यार्थी भी अधिक रुचि लेते और प्रोफेसर जो पढ़ाते-पढ़ाते थक गये थे, नये सिरे से सोचने लगते। वे अब हैरी की कक्षा में जाने के लिये उत्सुक रहते। एक विद्यार्थी ने कहा, "हैरी हमारी कक्षा का रत्न है। वह अमरीका की विषम आर्थिक स्थिति से गुजर चुका है। दूसरे विश्वयुद्ध को देख चुका है और अमरीका, रूस, चीन के शीतयुद्ध के दौरान कितने संघर्षों का अनुभव कर चुका है। उसके साथ मानों इतिहास चलता रहता है।''

दूसरे विद्यार्थी ने कहा, "वैसे ये यहां सीखने आये हैं किंतु सचमुच हम उनसे बहुत कुछ सीख रहे हैं। वे कभी कोई विशेष मांग नहीं करते, कभी यह नहीं कहते कि वे नहीं कर पायेंगे। वे जब भी आते हैं तो जाने से पहले अपना रंग अवश्य छोड़ जाते हैं।''

इतना ही नहीं प्रोफेसर भी हैरी के ऋण को स्वीकार करते हैं। एक प्रोफेसर ने कहा, "अभी तक मैं विद्यार्थियों का मूल्यांकन करता आया हूं किंतु कुछ वर्षों से मैं हैरी का विद्यार्थी बन गया हूं।''

डिग्री लेकर लौटते हुए हैरी के चेहरे पर मुस्कान थी और आंखों में आंसू।

जब सब विद्यार्थियों ने उसे बधाई देने के लिये पार्टी दी, तो किसी ने पूछ लिया, "अब आपका क्या करने का विचार है ?'' तपाक हैरी का उत्तर आया, "अब मैं एम० ए० करूंगा।'' एक विद्यार्थी ने मजाक में पूछा, "तो फिर बाद में पी० एच० डी० करेंगे ?'' हैरी ने जवाब दिया, "निश्चय !'' हैरी का भाई जो उस पार्टी में उसके साथ बैठा था बोल पड़ा, "तब तो तुम मुझसे बहुत अधिक चुस्त और चतुर बन जाओगे।'' हैरी हंस कर बोला, "मैं तो जानता ही था कि मैं तुमसे बढ़कर हूं।''

उस समय हैरी तिहत्तर साल का युवक था। है न विशेष व्यक्तित्व !

हमारे पूर्वज आशीर्वाद देते समय कहते हैं, "जीवेः शरदः शतम्'' और साथ ही यह भी आशा करते हैं कि तुम्हारी सारी इन्द्रियां पूरी, विकसित और सक्रिय बनी रहें। तो इस वाक्य के अनुसार हैरी गोल्ड सच्चे आर्य हैं और हमें उनका अनुकरण करना चाहिये।

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

नवम्बर

१. जानना काफी नहीं है, तुम्हें उसे अभ्यास में लाना चाहिये। दिखाव
करना काफी नहीं है, तुम्हें बनना चाहिये।

२. अगर लोग बोलने, काम करने या लिखने से पहले थोड़ा शांत रहें तं
काफी मुश्किलें टाली जा सकती हैं। बेकार में की गयी काफी बातें
से जो गलतफहमियां और खराब भावनाएं आती हैं, शांत रहने द
उनसे बचा जा सकता है।

३. व्यर्थ शब्दों के कारण सृष्टि बहरी हो गयी है।

४. गुस्से ने कभी किसी को कुछ नहीं बोलने दिया—सिवाय मूर्खताओं
के।

५. आलोचना करने की आदत अनेक बुरी आदतों की अपेक्षा कहीं ज्याद
विनाशक है।

६. सत्य न तो विभाजन में है न एकरूपता में।
सत्य उस एकता में है जो विभिन्नता द्वारा अपने-आपको अभिव्यक्त
करती है।

७. मिथ्याचार और आडंबर अज्ञान द्वारा सत्य को दी गयी श्रद्धांजलि है।
मिथ्याचार और आडंबर, चेतना के प्रति, अचेतना की अभीप्सा के
पहले चिह्न हैं।

८. मरने से पहले असत्य पूरे वेग के साथ उठता है।
फिर भी लोग केवल विपत्ति के पाठ को ही समझते हैं। क्या वे
अपनी आंखें सत्य के प्रति तभी खोलेंगे जब विनाश उपस्थित हो
जायेगा ?
अतः मैं सबसे प्रयास की मांग करती हूं ताकि यह विपत्ति न आये।

९. केवल सत्य ही हमें बचा सकता है; वाणी में सत्य, क्रिया में सत्य
इच्छा में सत्य, भावनाओं में सत्य। यह सत्य की सेवा करने द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने अस्तित्व को मिटा देने के बीच चुनाव है।

१०. सहिष्णुता बुद्धिमत्ता की ओर जानेवाला पहला कदम है।

सहन करने की आवश्यकता अभिरुचियों की उपस्थिति की ओर इशारा करती है।

वह जो दिव्य चेतना में रहता है, सब चीजों को पूर्ण समचित्तता से देखता है।

११. अथक परोपकार, समस्त निजी प्रतिक्रिया से मुक्त, स्पष्ट और बोधशील दृष्टि, भगवान् को चाहने और उनकी सेवा करने का सबसे अच्छा रास्ता है।

परोपकार से मेरा मतलब है, विचार और वाणी में सहजता और निष्कपटता। कार्य में वह दिखावेभरी परोपकारिता नहीं जो बहुधा कृपा के अरुचिकर भाव से लैस रहती है और मुख्य रूप से मानव गर्व के लिये मंच का काम करती है।

१२. प्रसन्नता अवसाद की तरह छुतहा है—और लोगों के अंदर सच्ची तथा गहरी प्रसन्नता फैलाने से अधिक उपयोगी और कुछ नहीं हो सकता। दूसरों से सुख लेने की अपेक्षा दूसरों को सुख देने से तुम्हें ज्यादा खुशी मिलती है।

१३. अगर तुम हमेशा जीवन की ओर मुस्कुराते रहो तो जीवन भी हमेशा तुम्हारी ओर मुस्कुरायेगा।

१४. अपने दुश्मन की ओर यथार्थ रूप में तुम तभी मुस्कुरा सकते हो जब तुम समस्त अपमान और तिरस्कार से ऊपर हो। यौगिक मनोवृत्ति की यह प्राथमिक शर्त है।

१५. दुश्मन की ओर मुस्कुराना उसे शस्त्र-रहित करने जैसा है।

१६. हमेशा सत्यनिष्ठ होने से बढ़कर और कोई साहस नहीं है।

१७. जो लोग वास्तव में बलवान और प्रभावशाली होते हैं हमेशा बहुत शांत रहते हैं। केवल कमजोर ही बेचैन हो उठते हैं। सच्ची शांति हमेशा शक्ति का चिह्न है।

१८. हर बुराई संतुलन के अभाव से आती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः हम हमेशा हर स्थिति में अपना संतुलन सावधानी के साथ बनाये रखें।

१९. सच्चे साहस में कभी अधीरता और जल्दबाजी नहीं होती।

२०. न कभी जल्दबाजी को हिम्मत और न कभी धीरज को उदासीनता समझने की भूल करनी चाहिये।

२१. अपनी मुश्किलों के पीछे लगे रहने से आदमी उन्हें जीत सकता है, उनसे दूर भागने से नहीं। जो उनके पीछे लगा रहता है उसकी जीत निश्चित है। सबसे अधिक सहनशील व्यक्ति को विजय मिलती है। हमेशा अपना अच्छे-से-अच्छा करो और परिणाम भगवान् पर छोड़ दो।

२२. आध्यात्मिकता परम सरलता और सादगी है।

२३. जबतक तुम अपने हृदय में शांति नहीं पाओगे तबतक तुम उसे और कहीं नहीं पा सकोगे।

२४. खतरे के समय पूर्ण स्थिरता जरूरी है।

२५. तुम्हें कठिनाइयों के बीच भी शांत और स्थिर रहना सीखना होगा। सभी बाधाओं पर विजय पाने का यही उपाय है।

२६. आत्मोत्सर्ग सच्ची प्रार्थना है।

२७. अपने-आपको भगवान् को दे दो—अपने-आपको जानने का यह सबसे अच्छा उपाय है।

२८. जीवन को पुष्प की भांति खिलना चाहिये जो अपने-आपको भगवान् के समर्पित करे।

२९. जब तुम्हारे जीवन में कठिनाई आये तो उसे भागवत कृपा के रूप में लो और तब वह सचमुच कृपा बन जायेगी।
भागवत कृपा पर पूरा भरोसा रखने से जो शांति आती है उसकी किसी के साथ तुलना नहीं की जा सकती।

३०. भागवत कृपा के लिये प्रार्थना करनी चाहिये—अगर न्याय का अवतरण हो जाये तो बहुत कम लोग उसके सामने खड़े रह पायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाश की किरणें

मानव-एकता

अमरीका को संदेश

यह सोचना छोड़ दो कि तुम पश्चिम के हो और अन्य लोग पूर्व के हैं। सभी मनुष्य एक ही भागवत उत्स के हैं और धरती पर उसी उत्स की एकता को प्रकट करना चाहिये।

४ अगस्त १९४९

*

सारी संकीर्णता, स्वार्थ, सीमाओं को झाड़ फेंको और मानव एकता की चेतना को जगाओ। शांति और सामंजस्य पाने का यही एकमात्र तरीका है।

मई १९५५

*

पृथ्वी स्थायी और सजीव शांति का लाभ तभी पा सकेगी जब मनुष्य यह समझ जायेंगे कि उन्हें अपने अंतर्राष्ट्रीय व्यवहारों में भी सत्यनिष्ठ और निष्कपट होना चाहिये।

सरकारों के लिये ईमानदारी केवल इसीमें नहीं है कि वे वही कहें जो वे कर रहे हैं बल्कि जो कहें वही करें।

*

पृथ्वी का भविष्य चेतना के परिवर्तन पर निर्भर है।

भविष्य के लिये एकमात्र आशा है मनुष्य की चेतना के परिवर्तन पर और परिवर्तन जरूर आयेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन यह मनुष्य पर छोड़ दिया गया है कि वे इस परिवर्तन के लिये सहयोग देंगे या फिर उसे उनके ऊपर कुचलनेवाली परिस्थितियों की शक्ति से लादना होगा।

अतः जागो और सहयोग दो!

अगस्त १९६४

*

मानव जाति कैसे एक हो सकती है?

अपने स्रोत के बारे में सचेतन होकर।

मनुष्य के अंदर मानव एकता की चेतना को बढ़ाने का क्या तरीका है?

आध्यात्मिक शिक्षा, यानी ऐसी शिक्षा जो तथाकथित धार्मिक, नैतिक या भौतिक शिक्षा को नहीं बल्कि आत्मा के विकास को अधिक महत्त्व देती है।

चेतना का परिवर्तन क्या है?

चेतना का परिवर्तन नवजन्म के समान है, सत्ता के उच्चतर नवजन्म के समान।

चेतना का परिवर्तन पृथ्वी पर जीवन को कैसे बदल सकता है?

मानव चेतना में परिवर्तन पृथ्वी पर उच्चतर शक्ति, पवित्रतर ज्योति और अधिकतम पूर्ण सत्य की अभिव्यक्ति को संभव बनाता है।

अगस्त १९६४

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानवजाति जिस भयंकर कीचड़ में फंसी हुई है उसमें से उसे चेतना के आमूल परिवर्तन के सिवा और कोई नहीं बचा सकता।

*

अगर तुम पृथ्वी पर शांति चाहते हो
तो पहले अपने हृदय में शांति स्थापित करो।
अगर तुम जगत् में एकता चाहते हो
तो पहले अपनी ही सत्ता के विभिन्न भागों को एक करो।

फरवरी १९६५

*

मानव जाति की एकता जानी हुई और मानी हुई बात है।

परंतु मानव जाति की बाहरी एकता मनुष्य की सद्भावना और निष्कपटता पर निर्भर है।

१२ अगस्त १९६७

(१२)

प्रार्थनाएं

सचाई के साथ भगवान् को पुकारो

हमारा सारा जीवन भगवान् को निवेदित एक प्रार्थना होना चाहिये।

*

नींद से निकलकर तुम्हें कुछ क्षणों के लिये चुप रहना और आते हुए दिन को भगवान् के प्रति निवेदित कर देना चाहिये और प्रार्थना करनी चाहिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि हमेशा और सभी परिस्थितियों में तुम उनको याद रखो। सोने से पहले तुम्हें कुछ क्षणों के लिये एकाग्र होना चाहिये, फिर सारे दिन पर नजर डालो और याद करो कि कब और कैसे तुम भगवान् को भूल गये थे और प्रार्थना करो कि आगे कभी न भूलने पाओ।

३१ अगस्त १९५३

*

सारी सच्ची प्रार्थनाएं स्वीकार की जाती हैं, लेकिन उनके भौतिक रूप में सफल होने में कुछ समय लगता है।

२८ जून १९५४

*

भगवान् के प्रति की गयी सच्ची और तीव्र प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती।

१९ दिसम्बर १९५४

*

उनके लिये कुछ भी मुश्किल नहीं है जो भगवान् को सच्चाई के साथ पुकारते हैं।

२८ जनवरी १९७३

प्रार्थनाएं

मेरे प्रभो, हर रोज, सभी परिस्थितियों में, अपने हृदय की पूरी सचाई के साथ मैं यही जपती रहूं, "तेरी इच्छा पूरी हो, मेरी नहीं।"

५ नवम्बर १९४९

*

मेरे प्रभो, मुझे समस्त गर्व से मुक्त कर; मुझे विनीत और सच्चा बना।

५ नवम्बर १९४९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दैनिक प्रार्थना

हे प्रभो, मुझे भय और चिन्ता से मुक्त कर ताकि मैं अपनी सर्वोत्तम क्षमता के साथ तेरी सेवा कर सकूं।

दिसम्बर १९४८

*

मेरे प्रभो, मुझे तेरे ऊपर वह शांत विश्वास प्रदान कर जो सभी कठिनाइयों को जीत लेता है।

*

हे प्रभो, मैं तुझसे प्रार्थना करता हूं कि तू मेरे चरणों को रास्ता दिखा, मेरे मन को प्रकाशित कर ताकि मैं हर क्षण और हर चीज में ठीक वही करूं जो तू मुझसे करवाना चाहता है।

१६ जनवरी १९६२

*

हे दया के स्वामी, मुझे अपनी कृपा के योग्य बना।

२७ अक्तूबर १९७२

*

प्रभो, हमें सच्चा आनंद प्रदान कर, वह आनंद जो सिर्फ तेरे ऊपर निर्भर है।

१९४०

*

हे प्रभो, मुझे अदम्य साहस प्रदान कर जो तेरे ऊपर पूर्ण विश्वास से आता है।

४ अप्रैल १९४२

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे प्रभो, हमें वह शक्ति प्रदान कर जिससे हम पूरी तरह उस आदर्श के अनुसार जियें जिसकी हम घोषणा करते हैं।

*

परम प्रभो, हमें नीरव रहना सिखा ताकि नीरवता में हम तेरी शक्ति पा सकें और तेरी इच्छा जान सकें।

११ फरवरी १९७२

*

हे प्रभो, परम सत्य,

हम तुझे जानने और तेरी सेवा करने के लिये अभीप्सा करते हैं।

हमारी सहायता कर कि हम तेरे योग्य बालक बन सकें।

और इसके लिये हमें अपने सतत उपहारों के बारे में सचेतन बना ताकि हमारा हृदय कृतज्ञता से भरा रहे और हमारे जीवन पर शासन करे।

*

हे प्रभो, सौन्दर्य और सामंजस्य के स्वामी,

कृपा कर कि हम जगत् में तेरे परम सौन्दर्य को अभिव्यक्त करने के योग्य यंत्र बन सकें।

यह हमारी प्रार्थना और हमारी अभीप्सा है।

हे प्रभो, जो कुछ है और जो कुछ होगा उसकी गहराई में तेरी दिव्य और सतत मुस्कान है।

*

हे प्रभो, तेरी इच्छा पूरी हो। तू ही परम और पूर्ण सुरक्षा है।

[समाप्त]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मयोग की पूर्णता

कर्म से मेरा मतलब ऐसे काम से नहीं है जो अहंकार और अज्ञान में अहंकार की तुष्टि और राजसिक कामना की प्रेरणा से किया जाये। अहंकार, रजस और कामना से पिंड छुड़ाने की इच्छा के बिना, जो अज्ञान की छाप हैं, कर्मयोग नहीं हो सकता।

मेरा मतलब परोपकार, मानवजाति की सेवा आदि नैतिक या आदर्शवादी चीजों से भी नहीं है जिन्हें मनुष्य का मन कर्म के अधिक गहरे सत्य के स्थान पर ला बिठाता है।

कर्म से मेरा मतलब है भगवान् के लिये, केवल भगवान् के लिये, और किसी के लिये नहीं, भगवान् के साथ अधिकाधिक ऐक्य में किया गया काम। स्वभावतः यह आरंभ में आसान नहीं है, ठीक उसी तरह जैसे गहरा ध्यान और प्रबुद्ध ज्ञान अथवा सच्चा प्रेम और भक्ति आसान नहीं हैं। लेकिन औरों की तरह इसे भी उचित भाव और वृत्ति के साथ, अपने अंदर उचित संकल्प के साथ शुरू करना चाहिये। बाकी सब आ जायेगा।

इस भाव से किये गये कर्म ठीक वैसे ही प्रभावशाली होते हैं जैसे भक्ति या ध्यान। तुम्हें कामना, रजस और अहंकार के त्याग द्वारा अचंचलता और शुद्धि प्राप्त होती है जिसमें अनिर्वचनीय शांति का अवतरण हो सकता है। अपनी इच्छा भगवान् को समर्पित करने से, अपनी इच्छा को भगवान् की इच्छा में विलीन करने से, अहंकार की मृत्यु और वैश्व चेतना में विस्तार, अथवा वैश्व चेतना से ऊपर उत्थान प्राप्त होता है। तुम प्रकृति से पुरुष के अलगाव का अनुभव करते हो और बाह्य प्रकृति की जंजीरों से छुटकारा पा लेते हो, अपनी भीतरी प्रकृति का भान पाकर यह देख पाते हो कि बाहरी प्रकृति केवल यंत्र है। तुम्हें यह अनुभव होता है कि वैश्व शक्ति तुम्हारा काम कर रही है और पुरुष साक्षी के रूप में देखता है लेकिन स्वतंत्र रहकर। तुम अनुभव करते हो कि तुम्हारा सारा काम तुमसे ले लिया गया है और वैश्व या परम जननी उसे कर रही है या हृदय के पीछे से नियंत्रण या कार्य करनेवाली दिव्य शक्ति कर रही है। अपने सभी कार्य और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकल्प सदा भगवान् की इच्छा के सुपुर्द करने से प्रेम और आराधना की वृद्धि होती है, चैत्य सत्ता आगे आती है। ऊपर की शक्ति के सुपुर्द करने से हम ऊपर उसका अनुभव कर सकते हैं और बढ़ती हुई चेतना और ज्ञान में उसके अवतरण और उद्घाटन का अनुभव करते हैं। अंत में कर्म, भक्ति, ज्ञान एक साथ हो जाते हैं और आत्म-परिपूर्णता संभव हो जाती है, जिसे हम प्रकृति का रूपांतर कहते हैं।

निश्चय ही ये सब परिणाम एकदम नहीं आ जाते, वे न्यूनाधिक रूप से धीरे-धीरे आते हैं और सत्ता की अवस्था तथा उसके विकास के अनुसार न्यूनाधिक रूप से पूरी तरह आते हैं। भागवत उपलब्धि के लिये कोई राजपथ नहीं है।

यह गीता द्वारा प्रतिपादित कर्मयोग है और मैंने उसे पूर्ण आध्यात्मिक जीवन के लिये विकसित किया है। यह चिन्तन, अनुमान या तर्कणा पर नहीं, अनुभूति पर आधारित है। यह ध्यान को अलग नहीं छोड़ देता और निश्चय ही भक्ति का बहिष्कार नहीं करता क्योंकि भगवान् के प्रति आत्मनिवेदन, भगवान् को पूरी तरह से अपने सब कुछ का समर्पण ही इस कर्मयोग का सारतत्त्व है और यह तत्त्वतः भक्ति की क्रिया है। हां, यह जीवन से भागनेवाले ऐकांतिक ध्यान को अलग रखता है या ऐसी भावुकता-भरी भक्ति को अलग रखता है जो अपने-आपको अपने ही सपने में बंद रखती है और उसी को योग की सारी गतिविधि मान लेती है। तुम घंटों शुद्ध तल्लीन ध्यान में अथवा आंतरिक निश्चल आराधना और आनंद में लगे रह सकते हो लेकिन वे पूर्णयोग का सब कुछ नहीं हैं।

यदि तुम भगवान् के कामों के सच्चे कर्ता बनना चाहते हो तो तुम्हारा पहला लक्ष्य यही होना चाहिये कि तुम सारी कामनाओं से और अपने-आपको सर्वस्व माननेवाले अहंकार से सर्वथा मुक्त हो जाओ। तुम्हारा सारा जीवन भगवान् के प्रति निवेदन और यज्ञ-रूप होना चाहिये। कर्म में तुम्हारा एकमात्र लक्ष्य हो भगवती शक्ति की सेवा करना, उन्हें ग्रहण और चरितार्थ करना, और उनके कार्यों में उन्हें प्रकट करनेवाला यंत्र बनना। तुम्हें भागवत चेतना में तबतक विकसित होते जाना होगा जबतक तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छा और उनकी इच्छा में कोई भेद न रह जाये, तुम्हारे अंदर उनकी प्रेरणा के अतिरिक्त कोई और प्रेरक हेतु न रहे, कोई कर्म ऐसा न हो जो तुम्हारे अंदर और तुम्हारे द्वारा होनेवाला उन्हीं का सचेतन कर्म न हो।

जबतक तुम इस संपूर्ण सक्रिय एकत्व के योग्य नहीं हो जाते तबतक तुम्हें यही मानना चाहिये कि तुम्हारी देह और आत्मा मां की सेवा के लिये ही बनी हैं, जो सब कुछ उन्हीं के लिये करती हैं। यदि तुम्हारे अंदर यह बोध प्रबल हो कि तुम अलग एक कर्ता हो और तुम यह अनुभव करो कि तुम ही कर्म कर रहे हो तब भी कर्म मां के लिये ही किया जाना चाहिये। अहंकारमय पसंद के सारे दबाव, वैयक्तिक लाभ की सारी लालसा और स्वार्थभरी कामनाओं की सारी मांगों को प्रकृति में से मिटा देना होगा। फल की कोई मांग या पुरस्कार की कोई चाहना शेष न रहे। तुम्हारे लिये एकमात्र फल है भगवती मां की प्रसन्नता और उनके कार्य की पूर्ति। तुम्हारा एकमात्र पुरस्कार होगा भागवत चेतना, शांति, बल और आनंद में उत्तरोत्तर वृद्धि। सेवा का आनंद और कर्मों के द्वारा आंतरिक विकास का आनंद ही निःस्वार्थ कार्यकर्ता के लिये यथेष्ट पुरस्कार है।

पर एक समय आयेगा जब तुम अधिकाधिक यह अनुभव करोगे कि तुम यंत्र हो, कर्ता नहीं। क्योंकि पहले तो अपने भक्ति-बल द्वारा भगवती मां के साथ तुम्हारा संबंध इतना घनिष्ठ हो जायेगा कि हमेशा उनका उपस्थित पथ-प्रदर्शन, उनका सीधा आदेश या प्रेरणा पाने के लिये तुम्हें केवल एकाग्र होकर सब कुछ उनके हाथों में सौंपना होगा। इस बात का निश्चित संकेत पाने के लिये क्या करना है, कैसे करना है और क्या फल होगा। बाद में तुम यह अनुभव करोगे कि भगवती शक्ति तुम्हें केवल प्रेरणा ही नहीं देतीं, मार्ग ही नहीं दिखातीं बल्कि तुम्हारे कामों को शुरू भी करती हैं और पूरा भी, तुम्हारी सारी गतियां उन्हींसे निकलती हैं, तुम्हारी सारी शक्तियां उन्हींकी हैं, तुम्हारे मन, प्राण, शरीर उन्हींके कर्म के सचेतन और आनंदमय यंत्र हैं, उनकी लीला के साधन हैं, स्थूल जगत् में उनकी अभिव्यक्ति के सांचे हैं। इस एकता और निर्भरता से अधिक सुखद स्थिति और कोई नहीं हो सकती, क्योंकि यह पग तुम्हें अज्ञान के संघर्ष और भारमय जीवन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदेश की सीमा के पार ले जाता है, तुम फिर अपनी अध्यात्म सत्ता के सत्य में, उसकी गंभीर शांति में, उसके तीव्र आनंद में जा पहुंचते हो।

जब यह रूपांतर हो रहा हो तो यह पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो जाता है कि तुम अपने-आपको अहंकार की समस्त विकृतियों के दोष से मुक्त रखो। किसी भी मांग या हठ को लुक-छिपकर अपने अंदर घुसने और आत्मदान और बलिदान को कलंकित न करने दो। कर्म में या फल में कोई आसक्ति न हो, अपनी कोई शर्त न रखी जाये, तुम्हें जिस शक्ति के अधीन रहना है, उसपर अपने अधिकार का कोई दावा न हो। भगवती के यंत्र होने का कोई अभिमान, कोई घमंड या दंभ न हो। मन में या प्राण और देह के किसी भाग में कोई ऐसी चीज न रहनी चाहिये जो तुम्हारे द्वारा काम करती हुई महती शक्ति की महत्ता को अपने निजी काम में लगाकर विकृत कर दे या उनका अपनी व्यक्तिगत और पृथक् तृप्ति के लिये प्रयोग करे। तुम्हारी श्रद्धा, तुम्हारी सचाई और तुम्हारी अभीप्सा की विशुद्धता संपूर्ण हो और सत्ता के सब क्षेत्रों और स्तरों में व्याप जाये। तब, विघ्न उत्पन्न करनेवाला प्रत्येक तत्त्व, विकृत करनेवाला प्रत्येक प्रभाव उत्तरोत्तर तुम्हारी प्रकृति से झड़ जायेगा।

इस परिपूर्णता की अंतिम अवस्था तब आयेगी जब भगवती मां के साथ तुम्हारा पूरा तादात्म्य होगा, जब तुम यह अनुभव करोगे कि तुम कोई पृथक् भिन्न सत्ता, यंत्र, सेवक या कर्ता नहीं हो, वरन् वास्तव में भगवती मां की संतान, उनकी चेतना और शक्ति के सनातन अंश हो। सदा वे तुम्हारे अंदर रहेंगी और तुम उनके अंदर। तुम्हें यह सतत, सहज और स्वाभाविक अनुभव होगा कि तुम्हारा सब सोचना, देखना, सुनना और कर्म करना, तुम्हारा श्वास-प्रश्वास और हिलना-डुलना भी उन्हीं से आता है, उन्हीं का है। तुम जानोगे, देखोगे और अनुभव करोगे कि उन्होंने ही तुम्हें अपने-आपमें से एक व्यक्ति और शक्ति के रूप में निर्मित किया है, अपने अंदर से लीला के हेतु प्रकट किया है, और फिर भी तुम सदा उन्हीं के अंदर सुरक्षित हो, उन्हीं की सत्ता के सत्, उन्हीं की चेतना की चेतना, उन्हीं की शक्ति की शक्ति और उन्हीं के आनंद के आनंद हो। जब यह स्थिति पूर्ण होगी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिमानसिक शक्तियां तुम्हें बिना रोक के परिचालित कर सकेंगी, तभी तुम उनके दिव्य कर्मों में पूर्णता प्राप्त करोगे; तब ज्ञान, संकल्प और कर्म निश्चित, सरल, ज्योतिर्मय, अबाध निर्दोष-परमेश्वर से निःसृत एक प्रवाह, शाश्वत की एक दिव्य गतिधारा होंगे।

—श्रीअरविन्द

वर्ष मत गंवाओ

सच्ची बात यह है कि मानवजाति जिस रोग से सबसे अधिक पीड़ित है वह है ऊब। मनुष्य जो मूर्खताएं करते हैं उनमें सबसे अधिक ऊब से बचने के लिये की जाती हैं। लेकिन मैं कहूंगी कि कोई बाहरी उपाय उपयोगी नहीं होते, उनमें से कोई भी नहीं, और तुम ऊब से बचने के लिये जो कुछ करो ऊब तुम्हारे पीछे लगी रहती है और लगी रहेगी। ऊब का सबसे अधिक पूर्ण, निश्चित और आश्वासन देनेवाला उपाय तब संभव है जब तुम अपनी सत्ता और उसकी गतिविधियों तथा उसके समस्त तत्त्वों को अपनी केंद्रीय चेतना और भागवत उपस्थिति के चारों ओर व्यवस्थित करने का काम शुरू करो। वह तुम्हें अत्यधिक रुचि और अश्रुतपूर्व विभिन्नता देगा। तुम्हारे पास ऊबने के लिये समय भी न रहेगा! लेकिन तुम्हें अध्यवसायी होना चाहिये।

और अधिक मजेदार बात यह है कि यह काम, भागवत केंद्र के चारों ओर सत्ता के समन्वय और व्यवस्था का यह काम केवल भौतिक शरीर में और पृथ्वी पर ही किया जा सकता है। निःसंदेह, भौतिक जीवन का पहला और मूलभूत हेतु यही है क्योंकि जैसे ही तुम अपना भौतिक शरीर छोड़ देते हो, तुम यह काम नहीं कर सकते।

इससे भी अधिक द्रष्टव्य बात यह है कि केवल मनुष्यों के केंद्र में ही, चैत्य-सत्ता में वह दिव्य उपस्थिति होती है। उदाहरण के लिये आत्म-विकास और आत्म-व्यवस्था और सत्ता के सभी तत्त्वों की अभिज्ञता प्राणमय जगत् के प्राणियों को या मनोमय जगतवालों को प्राप्त नहीं होती,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें भी नहीं जिन्हें सामान्यतः "देवता" कहा जाता है। जब वे यह कार्य करना चाहते हैं, जब सचमुच वे अपने-आपको व्यवस्थापित करना चाहते हैं और पूर्णतया सचेतन होना चाहते हैं तो उन्हें मानव शरीर धारण करना पड़ता है।

तो बात यूं है कि सभी मनुष्य शरीर धारण करते हैं लेकिन उन्हें पता नहीं होता कि क्यों! उनमें से अधिकतर जीवन में से निकलते हैं और उन्हें पता नहीं होता कि क्यों, वे अपना शरीर त्याग देते हैं और उन्हें पता नहीं होता कि क्यों, और उन्हें वह की वही चीज अनिश्चित काल तक चलानी पड़ती है जबतक कि वह दिन न आ जाये कि कोई उनसे कह बैठे– "सावधान! क्या तुम जानते हो कि जीवन का एक हेतु है। तुम यहां इस काम के लिये हो, अपना अवसर मत गंवाओ!"

और तुम कितने वर्ष गंवा देते हो . . . ।

*

अपनी आत्मा की मुक्ति के बारे में अभिज्ञ होने का अर्थ है कि तुम अपनी आत्मा के बारे में इतने पर्याप्त रूप से सचेतन हो कि यह अनुभव कर सको कि तुम्हारे अंदर गहराई में कोई चीज पूरी तरह मुक्त है, जो लोगों और परिस्थितियों से स्वतंत्र, दुःख, अप्रसन्नता या क्रोध से अछूती है, सदा अचंचल और शांति के साथ संतोष में रहती है।

यह भाव अचानक भी आ सकता है और क्रमशः भी। वह कम या अधिक समय के लिये रह सकता है—यह सब इस पर निर्भर है कि तुम्हारी चेतना कितने समय के लिये और कितनी बार तुम्हारी आत्मा के संपर्क में आती है।

लक्ष्य तो यह है कि वह सदा संपर्क में रहे, लेकिन यह चीज बाद में और थोड़ी-थोड़ी करके आती है जब तुम्हारी सत्ता के सभी भाग बाह्य भौतिक चेतना की ओर मुड़ने की जगह और उसमें फंस जाने की जगह तुम्हारी आत्मा की ओर मुड़ें।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजी के साथ एक युवा साधक का पत्र-व्यवहार

केवल मेरी चैत्य सत्ता ही आपसे प्रेम करती है क्या ?

जिस हद तक मन, प्राण और शरीर चैत्य सत्ता के वश में हों वे भी मुझसे प्रेम करते हैं।
२६ जून, १९३५

"जब हम वैयक्तीकरण के परे चले गये हों, तभी हम सच्चे व्यक्ति बनेंगे। अहं सहायक था, अहं बाधक है।"

(श्रीअरविन्द—'विचार और सूत्र' के प्रसंग से)

अहं तबतक सहायक है जबतक भौतिक व्यक्तित्व को गढ़ने में उसकी आवश्यकता हो, लेकिन एक बार उसने आकार ले लिया तो अहं को विलीन हो जाना चाहिये।
२६ जून, १९३५

मुझे कैसी वृत्ति अपनानी चाहिये ताकि कोई भी चीज मुझे नुकसान न पहुंचा सके ?

पूर्ण अनासक्ति, समानता, निस्पृहता।

यह बताइये कि महत्त्वाकांक्षा के खतरे से कैसे बचूं, जो अबतक बना हुआ है, हालांकि मैं सत्य को जानता हूं।

उसकी क्षणभंगुरता की असारता और खोखले संतोषों को देखना सीखकर।

चूंकि पूर्वजन्म में मैंने रूपांतर पाये बिना प्रयास किया, तो मेरा उसे अपने इस जीवन में पा लेने का क्या प्रमाण है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि तुम्हारे पिछले जन्म में वह समय नहीं आया था जब सर्वांगीण रूपांतर संभव होता।
२९ जून, १९३५

"दूसरे मनुष्यों की तरह, पूर्णताप्राप्त मनुष्य अब नये शरीरों में आत्मशुद्धि के लिये बाधित न थे।" 'नये शरीरों में आत्मशुद्धि' का अर्थ क्या है ?

मनुष्य को जगत् में रहते हुए अपने भौतिक जीवन में ही अपने-आपको शुद्ध करने और आध्यात्मिक विकास करने का सुअवसर मिलता है।
१ जुलाई, १९३५

"जब हम मानवता से परे चले जायेंगे, तभी मानव बनेंगे। पशु सहायक था, पशु ही बाधक है।"

(श्रीअरविन्द—'विचार और सूत्र' के प्रसंग से)

मानवता प्राप्त करने के लिये पशु सहायक है, लेकिन बाद में यही बाधक बन जाता है।

मानवजाति अपनी वर्तमान अवस्था में अब भी पशु के स्तर पर है; इसलिये भगवान् के बारे में सचेतन बन सकने के लिये, सच्चा मनुष्य बनने के लिये हमें इस सामान्य मानव स्तर से परे जाना होगा।
१ जुलाई, १९३५

कुछ रोज पहले 'श' ने मुझे प्राणिक सत्ताओं और भूत-प्रेतों की कुछ कहानियां सुनायी थीं। तबसे मुझे अंधेरे में डर लगता है।

तुम भला ऐसी कहानियां सुनते क्यों हो ? ये बड़ी बेहूदा होती हैं। बहुत बार भूत-प्रेत केवल मनुष्यों की कल्पना होते हैं। रही बात प्राणिक सत्ताओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की, अगर हम उनसे भय नहीं खायें तो वे हमें कोई हानि नहीं पहुंचा सकतीं। और जब भागवत सुरक्षा साथ हो तो तुम्हें किस बात का भय? किसी का नहीं।

मुझे प्रेम और शांति कहीं नहीं मिल रहे।

प्रेम और शांति ने तुम्हें नहीं छोड़ा; तुम्हीं अब उन्हें नहीं देखते। निस्संदेह यह फिर से वही शक्ति है—जिसका तुमने जिक्र किया—जो तुम्हें अंधा बनाने की कोशिश में है।
३ जुलाई, १९३५

कौन-सी शक्ति मुझे अंधा बनाने की कोशिश में है और उसे दूर भगाने के लिये मुझे क्या करना चाहिये?

विरोधी इच्छा जो सुझाव देती है—तुम्हें उसके सुझावों पर विश्वास करने से एकदम इंकार करना होगा, बस यही।
४ जुलाई, १९३५

आपने लिखा है कि विरोधी इच्छा सुझाव भेज रही है, लेकिन मैं इससे अभिज्ञ नहीं हूं। कृपया आप मुझे यह समझायेंगी?

तुम भला यह कैसे कह सकते हो कि उसके बारे में अभिज्ञ नहीं हो जब कि तुम स्वयं लिखते हो: "लेकिन बहुधा कोई मुझे अंधा बना देता है और उसके बाद मैं आपका प्रकाश नहीं देख पाता।" जिसे तुम "कोई" कहते हो उसे मैं "विरोधी सुझाव" कहती हूं।
६ जुलाई, १९३५

मैं केवल इन सुझावों का परिणाम देखता हूं—वे कैसे आते हैं यह नहीं। मैं यह जानना चाहूंगा कि विरोधी शक्ति कैसे काम करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह एक मानसिक रचना बनाती है जिसका उस व्यक्ति के मन के साथ कुछ सादृश्य होता है जिस पर प्रभाव डालना है। यह रचना उस व्यक्ति के मानसिक वातावरण में बनी रहती है और जरा-सा अवसर पाते ही चुपचाप अंदर खिसक आती है। अगर व्यक्ति पर्याप्त सचेतन और चौकन्ना न हो तो वह उसके बारे में तभी अभिज्ञ होता है जब वह उसके मस्तिष्क में जा चुकी होती है, और फिर वह रचना को अपना विचार मान लेने की भूल करता है।

७ जुलाई, १९३५

मेरे ख्याल से पिछले दो दिनों से आश्रम के सामान्य वातावरण में कुछ असामान्य था। प्रयास, अभीप्सा और शांति के बावजूद मेरा अवसाद बना हुआ है।

मेरे ख्याल से चीजें ऐसी नहीं हैं जैसा कि तुम कह रहे हो, बहरहाल, जहांतक तुम्हारा संबंध है, सबसे अच्छी बात है कि चिंता मत करो और तबतक शांति के साथ अभीप्सा करते जाओ जबतक तुम्हारी कठिनाइयां दूर न हो जायें।

मेरे ख्याल से कोई महान् शक्ति उतरनेवाली है और यह सब केवल प्रतिरोध है।

हमेशा प्रतिरोध ही अस्तव्यस्तता पैदा करता है।

८ जुलाई, १९३५

मुझे अबतक ऐसा महसूस हो रहा है कि आश्रम का वातावरण भारी है। लेकिन ज्यादा अच्छा है कि मैं इसके बारे में सोचूं ही नहीं।

निश्चित रूप से ज्यादा अच्छा होगा कि इसपर कोई ध्यान न दिया जाये।

८ जुलाई, १९३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी अवस्था इतनी शुष्क क्यों हो गयी है ? क्या यह कोई परीक्षा है ?

परीक्षा से तुम्हारा क्या मतलब है ? निश्चित रूप से मनमाने ढंग से तुम्हारे ऊपर थोपी गयी कोई चीज नहीं है। तुम्हारी अवस्था हमेशा तुम्हारे सोचने, अनुभव करने और क्रिया करने के तरीके का स्वाभाविक परिणाम होती है।

मुझे ऐसा पूर्वाभास हो रहा है कि मेरे साथ कोई प्रतिकूल चीज होनेवाली है।

किसी बुरी चीज का पूर्वाभास निरर्थक है अगर तुम उससे फायदा उठाकर बुरी चीज को अस्वीकार न कर दो।
११ जुलाई, १९३५

मुझे मालूम नहीं कि यह बुरी चीज क्या है या यह कब आयेगी। अगर मैं इसे समझ नहीं पा रहा हूं, तो मुझे पता नहीं कि इसे कैसे दूर भगाऊं।

तुम बस इस विचार को त्याग सकते हो कि तुम्हारे साथ कोई बुरी चीज घटनेवाली है।

भगवान् का दास बनने का मेरा प्रयास जीवन के अंत तक चलता रहेगा। योग छोड़ देने की अपेक्षा मैं मर जाना पसंद करूंगा।

योग को त्यागने का कोई प्रश्न नहीं है और मुझे पूरा विश्वास है कि तुम ऐसा नहीं करोगे, ना ही तुम्हारे मरने का कोई कारण है। तुम जियोगे और तुम भगवान् के लिये जियोगे।
१२ जुलाई, १९३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे मां, मैं आपसे दूर, बहुत दूर अनुभव करता हूं, मैं आपको बुला रहा हूं—विरोधी शक्तियों को पार करने, मेरी निम्न प्रकृति और जो कुछ मुझे पीड़ा दे रहा है उस सबको जीतने के लिये मुझे शक्ति दीजिये।

मुझे नहीं लगता कि चिंता करने की कोई बात है। तुम मुझसे पहले जितनी दूर थे उससे अधिक दूर नहीं हो। तुम्हारी सत्ता के वही समान भाग भागवत जीवन में हिस्सा लेने से इंकार करते हैं; पहले, तुम इनके बारे में अभिज्ञ न थे, लेकिन इसके विपरीत अब तुम इनके बारे में अधिकाधिक सचेतन हो रहे हो और चेतना सच्ची प्रगति है—यह प्रभुता की ओर जानेवाला रास्ता है।

१५ जुलाई, १९३५

अतः मुझे क्या करना चाहिये ताकि ये निम्न भाग भागवत जीवन में हिस्सा लें ?

तुम्हें इन्हें उसी तरह प्रशिक्षित करना चाहिये जैसे बच्चे को प्रशिक्षित किया जाता है।

१६ जुलाई, १९३५ —श्रीमां

'ऋषिवर बोले' :

शुभ घड़ी

ऋषिवर ने कहा, आओ, तुम्हें एक कहानी सुनाएं। नारद मुनि का नाम तो तुमने सुना ही है। ये भक्त शिरोमणि किसी जगह ढाई घड़ी से ज्यादा नहीं रहा करते, भगवान् का भजन करते-करते इधर से उधर घूमते रहते हैं। मारकण्डेय भी बहुत बड़े ऋषि हैं। ये जब बालक थे तो इनकी मृत्यु का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय आ गया। ये मरना न चाहते थे। इन्होंने भगवान् शंकर के पांव पकड़ लिये। फिर भला यमदूत इनके पास भी फटक सकते थे क्या ? तब से मारकण्डेय अमर हैं और इनके सामने न जाने कितने ब्रह्मा आ और जा चुके हैं।

आज सुबह नारद मुनि की कृपा से मुझे उनकी और मारकण्डेय की बातचीत सुनने का सौभाग्य मिल गया। मारकण्डेय कह रहे थे, 'मुने ! बहुत-सी सृष्टियां देख चुका हूं, न जाने कितनी बार कलियुग आया और गया पर ऐसी हालत तो मैंने कभी नहीं देखी थी। इस बार एक अजीब बात है, कलियुग समाप्त हो चुका है, पर संधिकाल उससे भी भयंकर लग रहा है। कलिकाल में कम-से-कम कलि की तो चलती थी, पर आजकल तो ऐसा लगता है कि धरती पर पूरी अराजकता है। धरतीवासी प्रकृति पर अधिक-से-अधिक अधिकार पाने की कोशिश कर रहे हैं। अभी पिछले दिनों उन्होंने अणु को तोड़ कर उसकी शक्ति का उपयोग करना सीखा है। आप तो जानते ही हैं विधाता ने कितने यत्न से एक-एक अणु में शक्ति भरी थी, अब मनुष्यों ने मार-काट के लिये, अपने जैसे दूसरे मनुष्यों के विनाश के लिये उसका उपयोग करना शुरू कर दिया है। उन्होंने पुराने जमाने के राक्षसों से भी बड़ा एक राक्षस बनाया है जिसका नाम है अणुबम। जबसे इसका उपयोग हुआ है मनुष्य मनुष्य नहीं रहा। ऐसा लगता है कि सद्भावना और सदाशय का अंत हो गया है। हर एक इसी तलाश में रहता है कि कैसे दूसरे व्यक्ति, दूसरी जाति और दूसरे देश को लूट कर, कहीं खुले रूप में और कहीं छिपे तौर पर, उसे हड़प सके। जो जितना लूट सकता है वह उतनी ही मौज में है। आज का मनुष्य केवल खाना जानता है, वह अपने भाई को भी पका कर या कच्चा ही खा सकता है। एक समय था जब धरती पर स्वाधीनता, न्याय, सामंजस्य, एकता, पूजा, अर्चना आदि की चर्चा हुआ करती थी, चारों ओर यज्ञ की अग्नि भड़का करती थी, पर आज इन सबको देश निकाला मिल गया है और ये यहीं-कहीं पड़े दिन काट रहे हैं। धरती पर कोई भला आदमी है भी तो 'जिमि दसनन बिच जीभ बिचारी', किसी तरह अपने दिन काट रहा है। इसका क्या उपाय है, महामुने ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारद जी की वीणा जरा रुकी। वे धीरे से बोले, 'मारकण्डेय, तुम्हें धरती छोड़े न जाने कितने युग बीत चुके हैं, फिर भी तुम्हें उसके लिये अनुराग है। ठीक ही तो है। भगवान् ने धरती को अनूठा स्थान दिया है। नीचे-से-नीचे कीचड़ में घुसकर वहां तक भगवान् का प्रकाश पहुंचाना और साथ ही भगवान् की ऊंची-से-ऊंची चेतना तक पहुंच कर, उसके रंग में रंग कर उसे अपने साथ नीचे लाना। इसी के बस का काम है।

'मारकण्डेय ! धरतीवासियों ने और खुद धरती ने बहुत दुःख सहे हैं। मैंने तुम्हारे जन्म से भी पहले धरती को विश्वास दिलाया था कि एक दिन स्वर्ण युग आयेगा। वह दिन आयेगा जब सब जगह भगवान् का ही राज्य होगा। धरती उसी भरोसे पर जी रही है। कभी ऊंची उठती है, कभी नीचे गिरती है और कभी हिचकोले खाती है, लेकिन फिर भी हिम्मत नहीं हारती, निराश नहीं होती। तुम्हें और तुम्हारे जैसे दूसरों को देखकर ढाढ़स मिलता है। अब वह समय आ गया है जब तुम जैसों को फिर से धरती पर बसाना होगा। आज वहां ऐसे व्यक्तियों की जरूरत है जो नये रास्ते बना सकें, जो धरती को स्वर्ग से मिलाने के लिये पुल बना सकें।

'तुम धरती पर जाओ और वहां के लोगों से कहो कि निराश होने की जरूरत नहीं है। दूसरों का मुंह ताकने की जगह तुम ही वह अग्निकुण्ड बनो जिसमें सब दुःख-दैन्य और दरिद्रता भस्म हो जायें। उन्हें बतलाओ कि वे अकेले नहीं हैं। जो कोई भगवान् की ओर चलता है भगवान् उसके साथ चलते हैं। तुम धरतीवासियों से कहना कि हर एक के अंदर भगवान् मौजूद हैं। अपने दिल के आईने पर से मैल हटा दो, वह चमकने लगेगा और उसमें भगवान् दिखाई देंगे। पहले व्यक्ति को आगे बढ़ना होगा, पहाड़ों को, झाड़-झंखाड़ को काट कर रास्ता बनाना होगा। समाज उसके पीछे-पीछे आयेगा।

'मारकण्डेय ! यह धरती के लिये बहुत ही शुभ घड़ी है। हमारी, तुम्हारी और हमारे जैसे सैकड़ों की तपस्या अब सफल होने को है। भगवान् की करुणा धरती पर बरस रही है। सारे जीवन में भगवान् प्रकट होने को हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठिनाई में

आपके इस कथन का क्या अर्थ है "तुम जब कठिनाई में हो तो अपने-आपको विस्तारित करो।"

जब मैं "कठिनाई" की बात कहती हूं तो स्वभावतः उसका अर्थ योग-मार्ग की कठिनाइयों से होता है : अज्ञान, सीमाएं आदि ऐसी चीजों से जो ऐसे रोड़ों की तरह हैं जो तुम्हें आगे बढ़ने से रोकते हैं। जब मैं कहती हूं, "अपने-आपको विस्तारित करो" तो मेरा मतलब होता है अपनी चेतना को विस्तारित करो।

कठिनाइयां हमेशा अहंकार से आती हैं, यानी, परिस्थितियों, घटनाओं, तुम्हारे इर्द-गिर्द के लोगों और तुम्हारे जीवन के ब्योरों के प्रति तुम्हारी व्यक्तिगत प्रतिक्रिया से जो तुम्हारे अंदर न्यूनाधिक रूप से अहंकारमय होती है। ये कठिनाइयां ऐसी भावना से भी आ सकती हैं मानों तुम्हें लग रहा हो कि तुम एक सीप के अंदर बंद हो, जो तुम्हारी चेतना को उच्चतर और विशालतर वास्तविकताओं के साथ एक होने से रोकती है।

चूंकि तुम भली-भांति सोच सकते हो कि तुम विशाल बनना चाहते हो, तुम वैश्व बनना चाहते हो, कि सब कुछ भगवान् की अभिव्यक्ति है, कि तुम्हारे अंदर स्वार्थ नहीं होना चाहिये—तुम बहुत-सी चीजें सोच सकते हो—लेकिन यह जरूरी नहीं है कि यह उपचार हो, क्योंकि बहुत बार तुम जानते तो हो कि तुम्हें क्या करना चाहिये परंतु किसी-न-किसी कारण से तुम उसे नहीं करते।

लेकिन जब तुम्हें किसी मनोव्यथा, किसी दुःख, विद्रोह, पीड़ा या शक्तिहीनता का सामना करना पड़े—इसका महत्त्व नहीं है कि किसका—तो वे सब चीजें जो मार्ग में तुम्हें अनुभव होती हैं, जो यथार्थ रूप में बाधाएं होती हैं, उस समय यदि तुम भौतिक रूप से, यानी अपनी शारीरिक चेतना में यह संस्कार ले आओ कि तुम अपने-आपको विस्तृत कर रहे हो, अपनी तह खोल रहे हो (क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि तुम कोई एकदम से तह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की हुई चीज हो, तह किये हुए कपड़े की तरह, तह पर तह, बार-बार तहाई हुई चीज की तरह) तब तुम अनुभव कर सकते हो कि जो चीज तुम्हें गतिहीन बना देती है वह बहुत जोर से, बहुत कड़ी तरह से तहाए हुए कपड़े की तरह या एक ऐसे पैकेट की तरह है जिसे बहुत सख्ती से बांध दिया गया है और जो बहुत ज्यादा बंद है; तब तुम जरा-जरा करके धीरे-धीरे तहों को सीधा करते हो और अपने-आपको फैलाते हो—तुम अपने-आपको चौड़ा और विस्तृत कर लेते हो, उतना अधिक जितना तुम्हारे लिये संभव है। तुम अपने-आपको जितना हो सके उतना खींचते हो, अपने-आपको खोलते हो, पूर्ण निष्क्रियता के भाव में अपने-आपको शिथिल छोड़ देते हो, जिसे हम कह सकते हैं, "प्रकाश की ओर मुंह करके" (अपनी कठिनाई पर दोहरे न होकर, अपने-आपको उसके चारों ओर न लपेटते हुए, उसे घेरते हुए या यूं कहें अपने अंदर लेते हुए, इसके विपरीत जहां तक हो सके पूरी तरह अपने-आपको खोलते हुए, अपनी कठिनाई को प्रकाश के आगे प्रस्तुत करते हुए, ऐसे प्रकाश के आगे जो ऊपर से आता है)—अगर तुम इसे केवल मानसिक रूप से ही नहीं, सभी क्षेत्रों में कर सको, कभी-कभी यह कठिन होता है और तुम उसमें सफल नहीं होते—अगर तुम यह कल्पना करो कि तुम इसे केवल **भौतिक रूप से**, लगभग शरीर से कर रहे हो, हां जब तुम अपनी तहें खोल सको, अपने-आपको फैला लो तो तुम देखोगे कि तुम्हारी तीन-चौथाई कठिनाई चली गयी। उसके बाद प्रकाश के लिये ग्रहणशीलता का जरा-सा काम—और बाकी चौथाई कठिनाई भी लुप्त हो जायेगी।

विचार के द्वारा कठिनाई के साथ लड़ने की अपेक्षा यह बहुत ज्यादा आसान है क्योंकि अगर तुम अपने साथ बहस करना शुरू करो तो तुम देखोगे कि पक्ष और विपक्ष में इतनी विश्वासोत्पादक युक्तियां हैं कि उच्चतर प्रकाश के बिना अपने-आपको उनमें से निकालना लगभग असंभव है। दूसरे तरीके में तुम्हें कठिनाई के साथ जूझना नहीं पड़ता। तुम अपने-आपको विश्वास दिलाने की कोशिश नहीं करते, तुम बस अपने-आपको प्रकाश के आगे खोल देते हो मानों तुम अपने-आपको धूप में रेत पर फैला देते हो और प्रकाश को अपना काम करने देते हो।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित वृत्ति

जिसे हम अपना आपा कहते हैं वह केवल अहंकार है। हमारा सच्चा व्यक्तित्व है भगवान्।

*

अपने अहंकार और भौतिक चेतना को ही अपना व्यक्तित्व मान लेने की भूल न कर बैठो।

*

मैंने लिखा था कि यह ठीक और गलत का प्रश्न नहीं है क्योंकि केवल प्रभु ही जान सकते हैं कि क्या सचमुच गलत है और क्या सचमुच ठीक है।

इस पृथ्वी पर हर सत्ता और विशेष रूप से हर अहंकार को यह विश्वास होता है कि वह ठीक है और वह अपनी कामनाओं को सत्य मान लेता है।

*

... अहंकार तभी गायब होता है जब तुम अपने-आपको बिना किसी निजी प्रयोजन के, बिना किसी लाभ की आशा के, पूरी तरह परम प्रभु के हाथ में छोड़ देने के लिये तैयार हो—तुम इसलिये देते हो क्योंकि तुम इसके सिवा कुछ कर ही नहीं सकते।

*

जब प्राण सहयोग देना स्वीकार कर ले (जो अपने-आपमें एक बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदम है), जब वह निश्चय कर ले कि वह भी कर्म करेगा, अपना सारा प्रयास, अपनी सारी ऊर्जा कार्य को संपादित करने में लगायेगा, तब भी कहीं पर नीचे पूरी तरह छिपी हुई, कैसे कहूं—एक प्रत्याशा रहती है कि चीजें ठीक रूप लेंगी और परिणाम अनुकूल आयेगा। और यह पूर्ण सचाई पर पर्दा डाल देती है, क्योंकि यह प्रत्याशा अहंकारमय व्यक्तिगत वस्तु है और यह पूर्ण सचाई पर पर्दा डाल देती है।

*

एक ऐसा प्रयास हो सकता है जो जरा भी स्वार्थपूर्ण नहीं होता फिर भी अहंकारमय होता है, क्योंकि जिस क्षण वह व्यक्तिगत हो जाता है, वह अहंकारमय बन जाता है—यानी वह अहंकार पर आधारित होता है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि वह उदार नहीं होता, अनुकंपापूर्ण और निःस्वार्थ नहीं होता, और यह भी नहीं कि वह संकरे व्यक्तिगत उद्देश्यों के लिये होता है। बात ऐसी नहीं होती। वह बहुत निःस्वार्थ काम के लिये हो सकता है लेकिन जबतक अहं रहे तबतक वह अहंकारपूर्ण होता है और जबतक अपने निजी व्यक्तित्व का भाव रहता है तबतक स्वभावतः वह कोई अहंकारमय चीज होती है। वह अहं की उपस्थिति पर आधारित होती है।

*

अपनी चैत्य सत्ता के बारे में सचेतन होने और चैत्य जीवन जीने के लिये तुम्हें समस्त अहंकार को लुप्त कर देना चाहिये, लेकिन आध्यात्मिक जीवन जीने के लिये तुम्हारे अंदर अहंकार ही न होना चाहिये।

*

. . . लोग मेरे पास आते और मुझसे कहते हैं, "मैं मर जाना चाहता हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं भाग जाना चाहता हूं, मैं मर जाना चाहता हूं।" उन्हें यह उत्तर मिलता है, "तो अपने प्रति मर जाओ!" तुमसे यह नहीं कहा जाता कि अपने अहं को बनाये रखो! चूंकि तुम मरना चाहते हो इसलिये अपने प्रति मर जाओ! वह साहस रखो, अपने अहंकार के प्रति मरने का सच्चा साहस रखो।"

*

कर्म अहंकार की रचना है, कर्म अहंकार के कार्यों का परिणाम है और सचमुच जब अहंकार अपदस्थ होता है तभी कर्म विलीन होता है।

—श्रीमां

'धम्मपद' से

अचरित्वा ब्रह्मचरियं अलद्धा योब्बने धनं।
जिण्णकोंचा'व क्खायन्ति खीणमच्छे'व पल्लले।

जिन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन नहीं किया है और जिन्होंने अपने यौवन काल में सच्ची समृद्धि नहीं पायी है, वे मछलियों से रहित सरोवर के पास बूढ़े क्रौंच पक्षी की तरह जान पड़ते हैं।

अचरित्वा ब्रह्मचरियं अलद्धा योब्बणे धनं।
सेन्ति चापातिखीणा'व पुराणानि अनुत्थनं।

जिन्होंने ब्रह्मचर्य का जीवन नहीं बिताया है और जिन्होंने अपने यौवन-काल में सच्ची समृद्धि को नहीं पाया है, वे टूटे चाप की भांति हैं; वे अपनी खोयी हुई शक्ति पर रोते हैं।

यहां एक निश्चित बात है जो स्पष्टता से नहीं कही गयी है, फिर भी बाकी सबसे कम महत्त्वपूर्ण नहीं है, वह यह है कि एक ऐसा बुढ़ापा भी है जो वर्षों के संग्रह से भी कहीं अधिक खतरनाक और कहीं अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तविक है : वह है विकसित होने और प्रगति करने की अक्षमता।

जैसे ही तुम बढ़ना बंद कर देते हो, जैसे ही तुम प्रगति करना बंद कर देते हो, जैसे ही तुम ज्यादा अच्छा होना बंद कर देते हो, बढ़ना और विकसित होना बंद कर देते हो, अपने-आपको बदलना बंद कर देते हो, वैसे ही तुम सचमुच बूढ़े हो जाते हो, यानी, तुम विलय की ओर गिरने लगते हो।

ऐसे युवक हैं जो बूढ़े हैं और ऐसे बूढ़े हैं जो युवक हैं। अगर तुम्हारे अंदर प्रगति और रूपांतर के लिये ज्वाला उठती है, अगर तुम सावधानी के साथ आगे बढ़ने के लिये, सब कुछ पीछे छोड़ने के लिये तैयार हो, अगर तुम नयी प्रगति के लिये, नयी उन्नति, नये रूपांतर के लिये हमेशा खुले रहते हो तो तुम चिरयुवा हो। लेकिन अगर तुम जो पा चुके हो उसीसे संतुष्ट होकर बैठे रहो; अगर तुम्हें लगता है कि तुम अपने लक्ष्य तक पहुंच चुके हो और अब अपनी कमाई का फल खाने के सिवाय और कुछ करना-धरना नहीं है तो तुम्हारा आधे से अधिक शरीर कब्र में जा चुका है, यही जरा और सच्ची मृत्यु है।

जो कुछ किया जा चुका है वह उसकी तुलना में कुछ भी नहीं है जो करने के लिये बाकी है।

पीछे न देखो, सामने देखो, आगे, और आगे, हमेशा आगे।

(श्रीमातृवाणी खंड ३ से)

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा..... ... ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५ ००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

सोसायटी की महाराष्ट्र प्रादेशिक शाखा ने मुम्बई में ४ से ६ अगस्त तक सर्वांगीण शिक्षण का आयोजन किया। इसकी अध्यक्षता पांडिचेरी के श्रद्धालु रानाडे ने की। इसमें सात सौ अध्यापकों, विद्यार्थियों तथा अभिभावकों ने भाग लिया।

केरला के कालीकट केन्द्र ने "श्रीअरविन्द—एक परिचय" पुस्तिका मलयालम भाषा में प्रकाशित की है। यह पुस्तिका विद्यार्थियों, अध्यापकों इत्यादि को निःशुल्क दी जा रही है।

नैवेली केन्द्र (तमिलनाडु) ने शब्द के सहयोग से नैवेली में २८ जुलाई से ६ अगस्त तक पुस्तक-मेला आयोजित किया। लगभग एक लाख व्यक्ति इस मेले में आये।

बहुत-सी शाखाओं और केन्द्रों से १५ अगस्त के उत्सव के समाचार आ रहे हैं, लेकिन स्थानाभाव के कारण हम उन्हें देने में असमर्थ हैं।

सन् २००१ का 'पॉकेट कैलेण्डर' सोसायटी के सभी सदस्यों को निःशुल्क भेजा जायेगा। जो केन्द्र तथा इच्छुक व्यक्ति उनकी अतिरिक्त प्रतियां लेना चाहें वे कृपया इस पते पर पत्र लिखकर विस्तृत जानकारी पा लें—जनरल सेक्रेटरी, श्रीअरविन्द सोसायटी, बीच-ऑफिस, न. १ रंगपिल्लई स्ट्रीट, पांडिचेरी—६०५००१।

नारी आयोग की बैठक २१ नवम्बर से २३ नवम्बर २००० तक पांडिचेरी के सोसायटी बीच-ऑफिस में होगी। इस बार का विषय है "भगवान् के साथ सर्वांगीण घनिष्ठता।" सभी इच्छुकों का इसमें स्वागत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Hanuman Prasad Dharam Chand
Dinodiya Welfare Trust
CALCUTTA

J. J. Charitable Trust
7C Kiron Shankar Rai Road
CALCUTTA - 1

Kayan Foundation
9/2 Hungerford street
CALCUTTA - 17

Pannalal Kandoi Seva Kosh
132/1 M. G. Road
CALCUTTA - 7

G. N. B. Motors Ltd.
8 Camac Street, 9th Floor
CALCUTTA - 700 017

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Sri Madhopur Vikas Parishad Trust
48 Dobson Road
HOWRAH - 711101

Sharad Seva Nidhi Trust
26 Amherst Street
CALCUTTA - 700009

Seth Chiranjilal Khaitan Trust
7 Keyatala Lane
CALCUTTA - 700009

Mamraj Jayatri Trust
6A Ironside Road
CALCUTTA - 700019

Dhanuka Charity Trust
Dhanseri House, 4A Woodburn Park
CALCUTTA - 700020

M/S ODC Carrier (P) Ltd.
15 India Exchange Place
CALCUTTA - 700001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Salarpuria Public Charity Trust
7, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 072

M/s Patton Ltd.
3C, Camac Street
CALCUTTA - 700 016

Naurangrai Lohia Charitable Trust
14A Loudon Street
CALCUTTA - 700 017

Charu Enterprises
42B Shakespear Sarani, 13, Shalimar Apt.
CALCUTTA - 17

Kitply Industries Ltd.
White House, 'A' Block, 4th Floor, 119 Park Street
CALCUTTA - 700 016

Eastern Enterprises Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Manav Seva Trust
CALCUTTA

Saria Charitable Trust
(J. P. Saria)
D-9 Kirti Nagar
NEW DELHI - 110 015

Shri Gopal Kamal Kumar
196, Jamuna Lal Bajaj Street
CALCUTTA - 700 007

Adukia Industrial Concern
17, Ganesh Ch. Avenue
CALCUTTA - 700 013

Sri Keshar Deo Saraf & Sons (HUF)
35, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 012

Maikal Fibres Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको उस नये प्रकाश के प्रति खोलो जो धरती पर उदित हुआ है और तुम्हारे सामने एक ज्योतिर्मय पथ खुल जायेगा।

— श्रीमां

WITH THE BEST COMPLIMENTS OF

S. L. Deorah Group of Enterprises

ASSAM TEA WAREHOUSING CORPORATION
INDIAN TEA STORAGE AGENCY
INDIAN TRANSPORT AGENCY
AURO IMPEX PRIVATE LIMITED
AURO LABORATORIES LIMITED
AURO BUSINESS CENTRE

Calcutta Office:

'SHIVANGAN' - Flat No. 2C, 53/1/2, Hazra Road
CALCUTTA - 700 019
Phone No.: 474 - 2059, 474 - 2060
Fax No.: 476 - 2348

Bombay Office:

408 Navratan, 69 P. DeMellow Road
BOMBAY - 400 009
Phone No.: 343 - 5341, 342 - 9027
Fax No.: 342 - 5022

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

हमारे युग में केवल सफलता तथा वह जिन भौतिक संतोषों को लाती है बस उसीका महत्त्व है। फिर भी असंतुष्ट व्यक्तियों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है जो जीवन के कारण ढूंढ़ने के इच्छुक हैं और दूसरी ओर ऐसे संत भी हैं जो जानते हैं और पीड़ित मानवता की सहायता करने और ज्ञान के प्रकाश को फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। जब दोनों मिलते हैं—वह जो जानता है और जो जानना चाहता है, तो संसार में एक नयी आशा का संचार होता है, और प्रबल अंधकार में कुछ प्रकाश का प्रवेश होता है।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'संपादकीय' :

वामन के कदम

श्रीअरविन्द ने अपनी दिव्य दृष्टि से देखा था कि भारत ऊपर उठेगा और वह उठ रहा है। उन्होंने यह घोषणा भी की थी कि सारे राष्ट्र उसकी ओर मार्गदर्शन के लिये ताकते रहेंगे। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि ऐसा समय भी आ रहा है जब कवि मैथिली शरण गुप्त की कविता "ताक रहे सब तेरी ओर" सचमुच चरितार्थ होगी।

खुशी की बात यह है कि हमारी नयी पौध, हमारे नौनिहाल कुछ-कुछ समाज-सुधार में अपनी जिम्मेदारी की ओर जाग रहे हैं। गुजरात के साठ स्कूलों ने एक छोटा कदम उठाया है जो कुछ-कुछ वामन अवतार के एक विराट् कदम-सा प्रतीत होता है। कदम यह है कि स्कूल के वार्षिक उत्सवों के समय राजनैतिक नेताओं को विशेष निमंत्रण दिया जाता है। सब जानते हैं कि हमारे नेतागण समय पर कभी नहीं पहुंचते, देर से पहुंचना उनका जन्मसिद्ध अधिकार माना जाता है। और इन नन्हें-मुन्नों ने निमंत्रण पत्र में बेझिझक लिखवा दिया कि उन्होंने निश्चय किया है कि प्रत्येक समारोह का निश्चित समय पर आरंभ होगा और निश्चित समय पर समाप्ति। अगर वे सहयोग देकर समय पर आयेंगे तो वे कृतज्ञ होंगे। उन्होंने बेखटके इस नियम का पालन किया और नेतागण समय पर आने लगे और लंबा अरुचिकर भाषण छोड़कर संक्षिप्त उक्तियों से संतुष्ट रहने लगे।

यह तो हुआ वामन का पहला कदम, दूसरा भी कुछ कम न था। भारत में दूरदर्शन छूत की बीमारी-सा फैला हुआ है क्योंकि वह अभीतक हमारे लिये नया है। यूरोप में लोग उसे देख-देख कर कुछ तंग आ चुके हैं और समाज-सुधारकों का कहना है कि दूरदर्शन के कारण लोगों का सामाजिक जीवन लुप्त हो गया है। कार्यक्रम देखते-देखते लोग कुछ-न-कुछ चबेना चबाते रहते हैं इसलिये उनका शरीर भी इतना स्वस्थ नहीं रहता। इसलिये दूरदर्शन का नाम पड़ गया "ईडियट बॉक्स" मतलब "बुद्धू बक्सा"। बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है भी ठीक, लोगों की अपनी सृजन-शक्ति क्षीण हो गयी; एक तरह का बौद्धिक और शारीरिक आलस्य उनमें फैलता गया, तो जो बक्सा मनुष्य को उसकी कलात्मक उर्वरता से वंचित करे, बौद्धिक क्षमता को सुला दे और सामाजिक जीवन को लुप्त कर दे उसे "बुद्धू बक्सा" ही कहा जायेगा। अब भारत की भी ऐसी स्थिति हो रही है, मित्रों से मिलने जाओ तो वे दूरदर्शन देख रहे हैं; वे तुम्हें भी अपने साथ बिठा लेते हैं, तो फिर विचारों का आदान-प्रदान, परिवार की बातें, यह सब कहां हो पाता है ?

हमारे नये वीरों ने इस समस्या का भी हल ढूंढ़ निकाल लिया है। हर महीने एक सप्ताह दूरदर्शन बंद रहेगा और जो समय वह खा जाता था उसका दूसरे कार्यों में उपयोग होगा। कैसा होगा उसका उपयोग ? शाम को सारा परिवार आपस में बैठकर बातें करेगा, समस्याओं पर विचार करेगा, बाहर घूमने निकलेंगे। बगीचे में जायेंगे, चिड़ियाघर देखेंगे, पूर्व सूचना देकर किसी मित्र के घर जायेंगे। बस एक सप्ताह के बाद फिर तरोताजा हो कर दूरदर्शन को देखने बैठेंगे। इस योजना से परिवारों के संबंध काफी घनिष्ठ हो गये हैं, घर में अधिक शांति और एक दूसरे के प्रति सहानुभूति है।

एक तीसरी योजना भी दूसरी के साथ-साथ चल रही है। विद्यार्थी छः महीनों के लिये अखबार, पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पुस्तकें पढ़ेंगे और एक फाइल में अखबारों से रुचिकर लेख काटकर उसमें चिपकायेंगे, जो पुस्तक पढ़ी हो उसके बारे में अपनी राय लिखेंगे और स्कूल के प्रिंसिपल के सुपुर्द अपनी-अपनी फाइल करेंगे। सबसे अच्छे संकलन करनेवाले विद्यार्थियों को पुरस्कार दिये जायेंगे।

तीनों योजनाएं बड़ी सफलता से चल रही हैं।

चलो, हम नव वीरों को बधाई दें और आशा करें कि उन जैसे अन्य वीर उभर आयेंगे। इनके हाथों में भारत का भावी सुरक्षित है, है न ??

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

दिसम्बर

१. हे प्रभु, तू हमारे जीवन का परम सम्राट् बन जा और सारे अंधकार को दूर भगा दे जो हमें तेरे दर्शन करने से, तेरे साथ सतत संपर्क रखने से रोकता है।

२. जब मेरे विचार तेरी ओर उड़ान भरते हैं और तेरे साथ एक हो जाते हैं, तब सब कुछ कितना सुन्दर, भव्य, सरल और शांत बन जाता है।

३. अपने हृदय में शांति के साथ, अपने मन में प्रकाश के साथ, हे स्वामी, हम तुझे अनुभव करते हैं। उसे हम अपने अंदर इतना जीवंत पाते हैं कि यह जानते हुए कि सर्वत्र तेरा ही मार्ग है, हम घटनाओं की प्रतीक्षा प्रसन्न चित्त से कर रहे हैं।

४. तेरा विधान हमारा विधान है और अपनी सारी शक्ति से हम यह अभीप्सा करते हैं कि तेरी शाश्वत चेतना के साथ हमारी चेतना का तादात्म्य हो, कि हर क्षण, हर वस्तु में हम तेरा उदात्त कार्य चरितार्थ करें।

५. वर दे कि अब से हम केवल तेरी ही आंखों से देखें और तेरी ही इच्छा द्वारा कार्य करें।

६. मेरे सब कार्य तेरे विधान का समर्थन हों, तेरी और मेरी इच्छा में कोई भेद न रहे।

७. मैं तुझसे विनती करती हूं, वर दे, कि मेरी समस्त सत्ता तेरे साथ एक हो जाये, तेरी उपलब्धि की ओर पूर्णतः जाग्रत् प्रेम की एक ज्वाला के सिवा मैं और कुछ न बनूं।

८. हे ईश्वर, मैं अत्यंत नम्रता के साथ तुझसे प्रार्थना करती हूं कि मेरे अंदर सचेतन या अवचेतन रूप से कुछ भी तुझे धोखा न दे। तेरे पवित्र कार्य की सेवा में जरा भी लापरवाही न आये।

९. प्रत्येक दिवस, प्रत्येक क्षण नये और अधिक पूर्ण समर्पण के लिये एक अवसर होना चाहिये,—गभीर और नीरव समर्पण का जो दिखायी तो न दे किंतु जो गहरे पैठकर समस्त कार्य को रूपांतरित कर दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०. एकाकी और शांत, हमारे मन को हमेशा तेरे अंदर विश्राम करना चाहिये और उस पवित्र शिखर से वास्तविकता का सच्चा रूप देख पाना चाहिये, एकमात्र और शाश्वत सद्वस्तु को देखना चाहिये जो सब चीजों के पीछे विद्यमान है।

११. स्वामी, वर दे कि मैं अपने भटकते विचारों का स्वामी बन जाऊं, कि तेरे अंदर जीते हुए मैं जीवन को तेरे द्वारा देखूं।

१२. वर दे कि मैं हमेशा तेरे दिव्य प्रेम में रहूं ताकि वह मेरे अंदर, मेरे द्वारा जीवित रहे।

१३. मैं अपनी पूर्णताओं को, कठिनाइयों को, दुर्बलताओं को जानता हूं लेकिन मैं तेरे ऊपर पूर्ण विश्वास करता हूं और नीरव भक्ति में तेरे सामने झुकता हूं।

१४. हे प्रभु, हमारा जो कुछ है वह सब तेरी आराधना करे, तेरी सेवा करे। सबको शांति प्राप्त हो।

१५. प्रत्येक वस्तु में तुझे ढूंढ़ना, प्रत्येक परिस्थिति में तुझे अधिक-से-अधिक अच्छी तरह अभिव्यक्त करने की इच्छा करना; इसी मनोवृत्ति में परम शांति, पूर्ण प्रसन्नता और सच्चा संतोष है।

१६. हे ईश्वर, तू हमारी सुरक्षा है, हमारा एकमात्र सुख है, तू हमारा देदीप्यमान प्रकाश, हमारा विशुद्ध प्रेम, हमारी आशा और शक्ति है।

१७. जिस व्यक्ति ने अपनी सत्ता की पूरी सच्चाई के साथ अपने-आपको तुझे अर्पित कर दिया है . . . वह पाता है कि उसके जीवन में सब चीजें बदल जाती हैं और सारी परिस्थितियां तेरे विधान को अभिव्यक्त करना आरंभ करती हैं और उसके समर्पण में सहायक होती हैं।

१८. आह, यह व्याकुलता क्यों कि मेरे लिये घटनाओं का मोड़ इस तरह या उस तरह होना चाहिये! क्यों न मैं अपनी शक्ति को शांत आंतरिक विश्वास से इच्छा करने के लिये लगाऊं कि तेरा विधान विजयी हो।

१९. प्रत्येक क्षण की क्रियाशीलता में हमें तेरी सेवा करनी और अपने-आपको तेरे साथ एक करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०. हे प्रभु, अब मुझे अपने-आपको पूरी तरह अर्पित कर एक कोरे कागज-सा बनना चाहिये जिसपर तेरे विचार और तेरी इच्छा मेरी ओर से विकृति के खतरे के बिना अंकित हो पायें।

२१. यह शरीर तेरा यंत्र है, यह इच्छा तेरी चेरी है और यह बुद्धि तेरा औजार है, समस्त सत्ता केवल तू है।

२२. किसी क्षण, किसी भी परिस्थिति में, हमें यह न भूलना चाहिये कि तेरे बाहर हमारे "मैं" की कोई वास्तविकता नहीं है।

२३. वर दे कि यह यंत्र सचेतन रूप से अपने-आपको जानते हुए तेरी सेवा करे, मेरी यह चेतना तेरी चेतना में विलीन होकर तेरी दिव्य दृष्टि से सब चीजों पर मनन करे।

२४. इस शरीर के द्वारा तू संसार को देखेगा, इस यंत्र के द्वारा तू संसार में कार्य करेगा।

२५. हे मेरे दिव्य स्वामी, मेरा प्रेम तेरी ओर पहले से कहीं अधिक तीव्रता से अभीप्सा करता है। संसार में मुझे केवल अपना जीवंत प्रेम बना दे और कुछ नहीं।

२६. मुझे पता है कि सब कुछ तेरी इच्छा के अनुसार चलता है और पवित्र पूजा-भाव से मैं आनंद सहित तेरी इच्छा पर भरोसा कर रहा हूं। हे ईश्वर, मैं वही बनूंगा जो तू चाहे।

२७. वर दे कि प्रत्येक बाधा दूर हो जाये। मेरे हर भाग में अज्ञान के अंधकार का स्थान तेरा दिव्य ज्ञान ले ले।

२८. समस्त विश्व में तेरे जीवन, तेरे प्रकाश, तेरे प्रेम के सिवा कुछ भी नहीं है।

२९. वर दे कि तेरे लिये मेरा प्रेम बढ़ता चला जाये ताकि मैं समस्त प्रेम बन जाऊं, तेरा ही प्रेम और तेरा प्रेम होने के कारण संपूर्ण रूप से तेरे साथ एक हो जाऊं।

३०. वर दे कि विचार स्पष्ट, व्यवस्थित, आलोकित हो जायें और तेरे प्रेम से रूपांतरित भी हो जायें।

३१. सारी जीवन-शक्तियां केवल तेरे प्रेम द्वारा गठित होकर, उससे व्याप्त होकर, अप्रतिरोध्य पवित्रता, और सतत ऊर्जा, शक्ति और आर्जव पाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनोखा अतिथि

(एक प्रतीकात्मक कहानी)

बात एक अनोखे देश की है। वहां की हर चीज अनोखी थी। वहां के पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सभी निराले थे। लेकिन सबसे अद्‌भुत और अनोखी थी एक हिरनी। उसकी बड़ी-बड़ी आंखें हीरों-सी चमकती थीं, उसका कोमल, सुन्दर शरीर सुनहरी झलक से झिलमिलाता था, छलांग मारती तो आकाश को भी नीचे छोड़ जाती। उस अनोखे प्रदेश की हरी-भरी सुगंधित दूब चरते-चरते एक दिन हिरनी ने नीचे झांका। अरे, यह क्या ? ... नीले, हरे रंग का एक गोला सफेद बादलों के बीच नाच रहा था। हिरनी ने अपनी आंखों को फैलाकर अच्छी तरह देखा। टप ... टप ... उसकी विशाल आंखों से मोती टपकने लगे। हाय ... नाचती गेंद दुःख के भार से दबी जा रही थी। कितने प्राणी रोते थे, चिल्लाते थे और बिलखते हुए टूट-टूट पड़ते थे। उसने देखा हिरनों के झुंड भागे जा रहे हैं। उनकी बदहवासी देखकर हिरनी का सिर चकरा उठा। जी में आया आंखें बंद कर ले। लेकिन नहीं, वह कायर नहीं है। उसने फिर देखा, सुन्दर सुनहरे सिंह निरीह हिरनों का पीछा कर रहे थे और मौका पाते ही उनके सुकुमार शरीर को तोड़-मरोड़कर कवलित कर लेते। दोपाये प्राणी तो और भी अजीब थे, बेबातके लड़ पड़ते और बिना कारण अपनी जाति को मारकर फेंक देते या धरती में गाड़ देते। करुणा से आर्द्र हिरनी ने सोचा, आह! क्या जीवन है! कष्ट, दुःख और आंसू, यही इस गोले की गाथा मालूम होती है। चलो मैं उस गोले पर ही चलकर देखूं। उनके आंसू पोंछूंगी, उनके दुःख-दर्द दूर करूंगी, यहां के जीवन का समाचार सुनाकर उनमें आशा का संचार करूंगी। बेचारे कैसे तड़प रहे हैं। इतने प्रकाश के होते हुए भी अंधों की तरह एक-दूसरे से टकराते रहते हैं, ठोकरें खाकर गिरते हैं और दूसरे उन्हें कुचलते हुए निकल जाते हैं। लेकिन आगे चलकर खुद उनकी भी तो यही दुर्दशा होती है। हाय आंखें होते हुए भी ये अंधे दीखते हैं। हर एक दूसरे का दुःख बढ़ाने में लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। यह प्रकाश और जीवन फैलाता हुआ सूर्य, यह सुधा बरसाता हुआ चन्द्र, ये किरणों के रेशमी सोपान इनके लिये कुछ अर्थ नहीं रखते ? देखने में कितने सुन्दर हैं ये दोपाये ! पर इनके अंदर ... हिरनी सिहर उठी। वह गोले की ओर आंखें गड़ाये देखती गयी, देखती ही गयी। अचानक एक जोर की चीख सुनायी दी। बहुत-से दोपाये मिलकर गोले को फोड़ने की कोशिश कर रहे थे। हिरनी से और न देखा गया। उसने बिजली की तरह छलांग मारी और एक कौंध के साथ धरती पर जा पहुंची। दोपायों में खलबली मच गयी। ऐसा सौन्दर्य, ऐसा तेज और ऐसा माधुर्य उन्होंने कभी न देखा था। सौन्दर्य पर उनकी आंख न टिकती थी, पास जाने का साहस न होता था। हिरनी का जबर्दस्त आकर्षण था लेकिन डर भी कम न था।

हिरनी घने जंगल में इधर-से-उधर टहलने लगी। यहां के वन-वाटिका, यहां के पर्वत और उपत्यकाएं देखकर वह मग्न हो रही थी। जहां इतना सौन्दर्य है, जहां की हवा में आनंद भरा है वहां का जीवन कुत्सित कैसे हो गया ? यह दुर्गन्ध कहां से आ गयी ? यह भय, यह दुःख, यह विलास कैसे समा गया ? विचारमग्न हिरनी आगे बढ़ती गयी, बढ़ती ही गयी। अब उसने अपने-आपको दोपायों के नहीं, चौपायों के बीच में पाया। थोड़ी-सी देर में उसके इर्द-गिर्द विस्मित प्राणियों का जमघट लग गया। हर प्राणी हिरनी को अपनी ओर बुलाता था। हिरनी अनायास आगे बढ़ती तो बुलानेवाले प्राणी भाग खड़े होते। हिरनी आश्चर्य में पड़ गयी, क्या रहस्य है इसमें ? यहां की तो हर बात निराली है, हर चीज में विरोध दीखता है। ये जानवर मेरी ओर देखते हैं, मुग्ध दृष्टि से देखते हैं और फिर ऐसे भागते हैं मानों उनकी जान पर बन आयी हो।

उस तरफ बहुत-से जानवर भागे जा रहे थे। एक भागते सिंह को रोककर हाथी ने पूछा, अरे ! वनराज ! भागते क्यों हो ? सिंह ठिठका, सकपकाया, फिर इधर-उधर देखकर बोला, अरे देखते नहीं ? उसकी हीरों-सी आंखों में से ज्वाला निकल रही है ! मुझे मरना थोड़े ही है, अपनी खैर चाहो तो तुम भी भाग चलो। सिंह से लेकर सियार तक सबका यही हाल था। हिरनी को बुरा तो लगा पर कर ही क्या सकती थी। वह धीरे-धीरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जंगल के एक छोर पर आकर खड़ी हो गयी। दूर से भयंकर कोलाहल जंगल की ओर आता हुआ सुनायी दिया। समान शत्रु की गंध पाकर सांप भी नेवले का डर भूल जाता है। दोपायों का कोलाहल सुनकर जानवर भी हिरनी का डर भूल गये। उससे भी भागने का आग्रह करने लगे। हिरनी ध्रुव बनी खड़ी रही। अपनी जान सभी को प्यारी होती है। हिरनी को उसके हठ के साथ छोड़कर सभी प्राणी अपने-अपने प्राण बचाने के लिये सिर पर पैर रखकर भागे। कोलाहल पास आता गया। जंगल के चौपाये इससे परिचित मालूम होते थे पर उसके लिये तो यह नया अनुभव था। झुंड में अनेक दोपाये थे। प्रत्येक का रंग अलग, रूप अलग और शरीर का गठन भी अलग था। कइयों के हाथ में विचित्र चीजें थी जिनसे वे भयंकर आवाजें निकालते थे। दोपाये जिस प्राणी की ओर उस चीज को फेंकते वही ढेर हो जाता था। दोपाये खुशी-खुशी उसके पास जाते, उसे घसीटते, उसकी खाल खींचते और टुकड़े करके उसे चबा जाते। हिरनी का हृदय मुंह को आने लगा। ओह, ये प्राणी, अपने-आपमें काफी सुन्दर थे किंतु इनके काम कैसे असुन्दर, असुन्दर ही नहीं घिनौने थे! हिरनी को देखते ही भीड़ ठिठक गयी। धीरे-धीरे कानाफूसी होने लगी। आपस में कुछ बात करके बहुत-से प्राणी अदृश्य हो गये। फिर धीरे-धीरे एक दोपाया जरा-सी घास लेकर पुचकारता हुआ हिरनी के नजदीक आने लगा। हिरनी को उसकी मूर्खता पर दया भी आयी और हंसी भी। सोचने लगी—सचमुच, यह प्राणी आंखों वाला होते हुए भी अंधा है। मेरे चारों ओर घास है फिर भी, वह मुझे घास दिखाकर ललचाने की कोशिश कर रहा है। हिरनी ने सोचा क्या हर्ज है? चलो, चली जाऊं उसके पास। मैं यहां मदद करने ही तो आयी हूं, उसे अपने इन्द्रधनुषी रंगों से झिलमिलाते सुन्दर प्रदेश और उसके प्राणियों की बातें सुनाने आयी हूं। पास न गयी तो बात कैसे होगी, उसके दुःख को कैसे हल्का करूंगी। अपनी नाजुक गर्दन को आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ाते हुए हिरनी दोपाये के पास आकर खड़ी हो गयी। दोपाये ने एक हाथ से कुछ इशारा किया और कहीं से एक प्राणी झटपट निकल आया। दोनों फुसफुसाने लगे। एक बोला—"वाह, देखा कैसा फंसाया!" दूसरा गर्व से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूलकर बोला— "आखिर, मुझे समझ क्या रखा है? उड़ती चिड़िया गिरानेवालों में से हूं।" हिरनी ने उनकी बकवास सुनी तो मन ही मन मुस्करायी। सच, यह प्राणी है तो महामूर्ख पर समझता है अपने-आपको बुद्धि का खजाना। फिर हिरनी ने मन ही मन कहा—"खैर जैसा भी हो, मैं उसकी मदद करने आयी हूं, उसके दोष देखने नहीं।" थोड़ी देर के बाद हिरनी ने देखा कि धीरे-धीरे सारे दोपाये उसे घेरकर खड़े हो गये। हिरनी सबकी ओर बढ़ती, कोई उसका सिर सहला देता और कोई उसे घास खिला देता। हिरनी हर एक के पास बिना झिझक चली जाती थी। फिर से दोपाये आपस में कानाफूसी करने लगे। हिरनी ने सोचा—हां, अब सबके साथ मेरी अच्छी दोस्ती हो गयी है। अब समय आ गया है कि मैं उनको उस प्रदेश की कहानी सुनाऊं और उस प्रदेश के प्राणियों की बात कहूं, लेकिन कैसे कहूं? अचानक उसे ख्याल आया मैं गाना गा सकती हूं। मैं इन्हें गाना गाकर सुनाऊंगी। और हिरनी ने बहुत ही मधुर मृदु कंठ में गाना गाना शुरू किया। और गाने-ही-गाने में सूर्य के प्रदेश, इन्द्रधनुष के देश और अनोखे प्राणियों की बातें सुनाने लगी। सारे के सारे प्राणी एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। उनमें से एक ने कहा—"हुं! भाई, गाना लगता तो बहुत अच्छा है, मधुर गला है उसका, लेकिन पता नहीं क्या बकर-बकर कर रही है।" तो दूसरा बोला—"हां भई, आखिर हम हैं मनुष्य, सबसे ऊंचे प्राणी। और वह ठहरी हिरनी। चाहे जितनी सुन्दर क्यों न हो, चाहे जितनी अच्छी क्यों न हो, है तो हिरनी यानी जानवर। वह क्या बोलेगी हमारे सामने।"

ये लोग अपने-आपको शिकारी कहते थे, शिकार इनका पेशा था। ये जानवरों को मारते और मारकर गर्व से फूल उठते थे। शिकार ही इनका मुख्य भोजन था। हमारी हिरनी शिकारियों से घिरी थी—क्रूर, जीभें लपलपाते, खून के प्यासे शिकारियों से। लेकिन उनमें एक शिकारी का चेहरा सौम्य था। इनमें से वही सबसे अच्छा और सहृदय दीखता था। उसने कहा—"अरे तुम समझ नहीं पा रहे हिरनी गाना गाकर क्या कह रही है? जरा कान लगाकर सुनो, हिरनी कह रही है—'हे दोपाये, मैं उस सूर्य के प्रदेश से आयी हूं जहां सब कुछ सुन्दर है, सब कुछ प्रकाशमय है, जहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ मैत्री ही मैत्री है। मैं तुम्हें उस देश की राह दिखाऊंगी, चलो मेरे साथ चलो।" दूसरों ने कहा, "वाह! बनता है, इसे कैसे मालूम कि वह क्या कह रही है? जानवरों की बोली समझता है यह?" सौम्य दीखनेवाले शिकारी ने उत्तर दिया, "मैं भली-भांति समझता हूं इसकी भाषा। कभी-कभी जब मैं ऊपर देखता था तो मुझे यह हिरनी दिखायी देती थी। इसे धरती पर बुलाने की उत्कट इच्छा थी मेरे अंदर, आश्चर्य नहीं मेरी पुकार सुनकर ही धरती पर आयी हो।" "हुं", एक ने कहा, "तू तो हमेशा कहानियां बनाता रहता है। हमें तो बिलकुल ढपोर शंख समझ लिया है तूने। अच्छा, बोल वह और क्या कह रही है।" "वह कह रही है उस प्रदेश में तुमसे भी सुन्दर प्राणी हैं।" एक मोटे थुलथुले आदमी ने अपनी तोंदको बड़े अहोभाव से देखते हुए कहा, "मनुष्य से भी सुन्दर प्राणी! हं, कभी सुना भी है? गप, कोरी गप।" सौम्य व्यक्ति ने कहा, "हमें बिना जाने निर्णय न करना चाहिये। मुझे उसकी बात असंभव नहीं लगती। देखो जब धरती पर बन्दरों का राज रहा होगा तो सभी सोचते होंगे—आहा, बन्दर कितना होशियार है। कितना चपल है, कितना सुन्दर है। कहते हैं हम उसी बन्दर से विकसित हुए हैं। उसी तरह हो सकता है कि मनुष्य से भी सुन्दर कोई और जाति बाद में आनेवाली हो।"

ये बातें चल ही रही थीं कि इनमें से किसी बुद्धिमान् ने कहा—"अरे भई, हिरनी का क्या है, वह तो जंगल में मारी-मारी फिरती है। हम उसके पीछे-पीछे कहां खाक छानते फिरेंगे? और तू भाई सौम्य, तू कहता है कि हिरनी किसी और प्रदेश की बात कर रही है। वह कह रही है तुम सब सूर्य-किरणों द्वारा सूर्य के साथ जुड़े हुए हो। सूर्य के अंश हो। तुम लोग आपस में लड़-झगड़कर क्या पाते हो? तुम आपस में एक-दूसरे से नहीं अपने-आपसे ही लड़ते हो, इसलिये लड़ना छोड़ दो, सूर्य को पहचानो और सूर्य में एक-दूसरे को पहचानो तो तुम्हारे दुःख-दर्द सब खतम हो जायेंगे। यह सब तो ठीक है लेकिन देखा किसने है कि सूर्य के साथ सचमुच हमारा नाता है भी। देखा किसने है उस प्रदेश को जिसके बारे में हिरनी इतनी कहानियां सुनाती है। ना भई, मैं तो नहीं जाऊंगा वहां।" दूसरा कहने लगा—"हां भई,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू ठीक कहता है। ऐसे इधर-उधर मारे-मारे घूमते रहने से कभी कुछ हुआ है ? हिरनी का क्या है वह तो एक छलांग मारकर यह जा वह जा। हमसे कहती है मेरे गले से लिपट जाओ मैं खुद तुम्हें उठाकर ले जाऊंगी उस प्रदेश में। उसका भरोसा क्या, कहीं गिर गयी तो उसकी हड्डी-पसली एक हो जायेगी, शायद मरकर अपने प्रदेश में जा पहुंचे। उसका तो कुछ नहीं बिगड़ेगा, लेकिन हमारा क्या होगा ? हं ... हमारा घर है, द्वार है, कितने लोग हैं, कितने बच्चे हैं हमारे, कलप-कलप पर बेहाल हो जायेंगे, ना बाबा मुझे नहीं पड़ना इस झमेले में ... लेकिन हिरनी को छोड़ना भी तो मुश्किल है, ओ ... कितनी मनोहर है ! कितनी सुन्दर है ! कितने मीठे गले से गाना गाती है। भई क्या कहूं, मुझे तो इस हिरनी ने फांस लिया है बुरी तरह से, कहीं इसके पीछे पागल न हो जाऊं। मैं न तो इसे छोड़ सकता हूं और न इसका साथ दे सकता हूं। वह जो बातें कर रही है वे मुझे सनक से भरी लगती हैं। न तो मेरे पल्ले पड़ती हैं और न मेरे गले से उतरती हैं। क्या करूं ?"

एक और शिकारी बोल पड़ा, "अच्छा हम ऐसा क्यों न करें, हिरनी के साथ जाने की जगह हिरनी को यहीं रख लें, इसे जाने ही न दें।" एक और बोला, "ठीक बात है। लेकिन मेरे मन में एक और विचार आया है। आमके आम और गुठलियों के दाम। यह भी रहेगी और हमारी जेबें भी भारी हो जायेंगी। हिरनी को ले जाकर चक्रवर्ती महाराज मानसिंह के पास बेच देंगे। कैसी हीरों जैसी आंखें हैं उसकी, और कैसा सुनहरा रंग। कौन जाने, सचमुच सोने की न बनी हो। महाराज बहुत खुश होंगे इसे पाकर। मैं सोचता हूं कि एक करोड़ से कम तो क्या देंगे।" दूसरे ने विरोध करते हुए कहा, "हं ... हं, ... एक बार बेच दिया तो फिर हमें क्या मिलेगा। चलो, हम ऐसा करते हैं, जैसे सरकस में लोग जानवरों को पकड़कर चालाकियां करना, गुलाटियां खाना, कलाबाजियां करना, आग के चक्करों से कूदकर निकल जाना सिखाते हैं वैसे ही हम भी हिरनी को ये सब तमाशे सिखायेंगे। और चारों ओर तमाशा दिखाते फिरेंगे, इससे खूब पैसा आयेगा और हम धनवान् बन जायेंगे। मेरा ख्याल है कि हिरनी को भी अच्छा ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगेगा और न लगे तो हमारी बलासे। चाबुक सब कुछ अच्छा लगवा देगा। कहो क्या राय है ?"

हिरनी इन सबकी ये स्वार्थभरी ऊंटपटांग बातें सुन-सुनकर दुःखी होती और आश्चर्य से कभी इसकी ओर कभी उसकी ओर ताकती थी। अबतक उसे पता लग चुका था इसी दोपाये प्राणी का नाम मनुष्य है, और ये सब शिकारी हैं। मन-ही-मन हिरनी कहने लगी, "ओ हो, मनुष्य कितना भोला है, कितना मूर्ख है और साथ ही कितना अंध-विश्वासी। सत्य से तो वह बिदकता फिरता है। मेरे लिये इतना प्रेम दिखाता है पर मेरी बात पर भी विश्वास नहीं करता।" उसी समय सौम्य बोल पड़ा—"तुम लोग विश्वास करो या न करो मुझे हिरनी की बात पर विश्वास है। मैं उस देश में जाने के लिये तैयार हूं।" हिरनी बहुत खुश हो गयी। चमकती हुई आंखों से उसने सौम्य की ओर देखा। सौम्य हिरनी की गरदन पर प्यार से हाथ फेरता हुआ बोला—"चलो हम तुम्हारे पीछे-पीछे चलेंगे। तुम्हारे साथ पहाड़ चढ़ने पड़ें या नदियां फांदनी पड़ें, सभी में एक आनंद होगा। मुझे तो यहांतक विश्वास है कि तुम्हारे साथ रहकर गिरने में और चोट खाने में भी मजा आयेगा। बहुत हुआ तो किसी कगार से फिसल जायेंगे या नदी में जा डूबेंगे। यह भी कोई बड़ी बात न होगी।"

सौम्य के साथ-ही-साथ हिरनी का जादू और कइयों पर चल गया। न चाहते हुए भी कई उसके पीछे हो लिये। हिरनी उन सबको लेकर पहाड़ियों की ओर जाने लगी। बीच-बीच में जब शिकारी और मनुष्य थक जाते या शंकाएं करके उसे रोकने की कोशिश करते तो हिरनी अपने मधुर स्वर में गाना गाकर उनके अंदर नया उत्साह जगाती और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती। इस तरह वे सब चलते, ठिठकते, रुकते और दौड़ते पहाड़ की एक ऊंची चोटी पर जा पहुंचे।

यहांतक पहुंचते-पहुंचते कई मनुष्य रास्ते में ढेर हो चुके थे। उनका स्थान लेने के लिये बहुत-से नये लोग आ जुटे थे। भीड़ बढ़ती जाती थी, लेकिन उधर हिरनी का शरीर दुर्बल होता जा रहा था। आंखों में वही चमक थी, वाणी में वही उल्लास था, उसके गीतों में और भी मादकता आ गयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। जो एक बार सुन लेता वह उसका हो जाता था लेकिन जहां कड़ी चढ़ाई होती, जहां तेज धारा दिखायी देती, किसी तरह भी जान जोखों में होती तो अपना भार हिरनी पर लादने में, फल-फूलों की कमी होती तो उसका हिस्सा भी उदरस्थ करने में किसी को संकोच न होता था। इसे तो वे अपना अधिकार और हिरनी की भलाई मानते थे।

अब अंतिम चढ़ाई नजदीक थी। पहाड़ सरो के पेड़ से भी ज्यादा सीधा खड़ा था। पैर रखने के लिये जगह न थी। रपटने पर भीषण खाई गोद में लेने के लिये बैठी थी। हिरनी ने आगे बढ़ने के लिये इशारा किया। शिकारी एक कदम बढ़ने को तैयार न थे। इस जगह की सुविधा छोड़कर कौन संदिग्ध आनंद के लिये जान की बाजी लगाये। वह उन्हें आगे ले जाने पर कटिबद्ध थी और वे उसे रोके रखने के लिये कृत-संकल्प। प्रेम का तन्तु पीछे न हटने देता था और वर्तमान का मोह पैरों को जकड़े हुए था।

हिरनी की समझ में न आता था कि उसकी सहायता के बाबजूद इन्हें इतना डर क्यों लग रहा है। वह उन्हें आगे ले जाने के लिये, उन्हें सूर्यालोक में पहुंचाने के लिये उत्सुक थी, वे उसे नीचे खींचने के लिये लालायित। वे चौबीसों घंटे उसे घेरे रहते थे। हिरनी ने धीरे-धीरे उनकी दी हुई दूब, घास या छोटे-मोटे फूल खाना भी छोड़ दिया। सारे शिकारियों की चिंता और बढ़ गयी क्योंकि पहले चाहे कुछ रहा हो अब हिरनी सबको बहुत प्रिय थी। कोई नहीं चाहता था कि हिरनी उन्हें छोड़कर चली जाये। वे सोचते थे अब क्या होगा ? हिरनी को कुछ हो गया तो ? लेकिन कोई उसका साथ देने को भी तैयार न था। एक सौम्य ही हिरनी के पीछे-पीछे कहीं भी जाने को तैयार था। सब यही सोचते थे कि हिरनी उनकी बात मानकर सुरक्षित स्थानों की ओर चलना स्वीकार कर लेगी। लेकिन धीरे-धीरे क्या देखा उन्होंने हिरनी का शरीर दुर्बल होने लगा। उसकी चमकती हुई हीरे-सी आंखें छोटी होती गयीं, उनकी ज्योति बुझती गयी। सबके सब मनुष्य चिंतातुर हो उठे। सब उसे घेरकर और भी ज्यादा प्यार दिखाने लगे। अपनी ओर से पूरी कोशिश करने लगे कि हिरनी कुछ खाये, लेकिन सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेकार। अब चतुर-सयाने शिकारी आशा छोड़कर बैठ गये। उन्हें दुःख तो बहुत था पर वास्तविकता से आंखें कैसे मूंद लेते ? उनमें कानाफूसी होने लगी, अब यह जा तो रही है फिर इसका लाभ क्यों न उठाया जाये। छिपे-छिपे उसके मांस और चमड़े का भाव-ताव होने लगा। सौम्य यह सब देखता था और खून के घूंट पीकर रह जाता था। वह हिरनी से सटा बैठा रहता और कभी-कभी आंसू बहाया करता।

शिकारियों की आंखें हिंसा-भाव से भर उठीं। वे धीरे-धीरे हिरनी के नजदीक आते गये। सौम्य का माथा ठनका और वह उछलकर क्रुद्ध सिंह की तरह खड़ा हो गया। वह आग बरसाती हुई आंखों से चारों ओर देखकर चिल्लाया—"खबरदार, एक कदम भी आगे न रखना। मैं अकेला ही तुम सबसे लोहा लेने के लिये काफी हूं। हिरनी की ओर बढ़ने से पहले मेरे साथ ताकत आजमानी होगी।" सौम्य की ललकार सुनते ही सारे शिकारी ठिठक गये। उनकी आंखों में हिंसा की जगह भय ने ले ली। उनके पांव जमीन में गड़ गये। जो जहां था वहीं पथरा गया। हिरनी भी हिले-डुले बिना आंखें फाड़े सौम्य की ओर एकटक देखने लगी। शायद उसके चेहरे पर स्मित खेल रहा था। लेकिन उसे देखने की सुध ही किसे थी ? सौम्य की समझ में न आ रहा था कि अब क्या करे। उसका मस्तिष्क एकदम खाली था।

अचानक सौम्य की आंखें भगवान् भास्कर की ओर उठ गयीं और उसके हाथ जुड़ गये। दिव्य मधुर कण्ठ से निकलनेवाली प्रार्थना सारे वातावरण में फैल गयी। धरती और गगन का एक-एक कोना गूंजने लगा। ऐसा लगता था मानों स्वयं धरती के हृदय से निकलनेवाला स्वर आलोक को निमंत्रण दे रहा था, प्रेम का आवाहन कर रहा था। शिकारियों के तपते दिलों ने शीतल समीर के झोंके का अनुभव किया। उन्हें लगा कि उनके बंधन टूट रहे हैं और वे हल्के होते जा रहे हैं।

निःस्वार्थ प्रार्थना के उत्तर में निरभ्र आकाश से वर्षा शुरू हो गयी। हल्की-फुल्की वर्षा, मानो फूल झर रहे हों। और फूल भी कैसे ! सुनहरी ज्योति की फुहारों से बने ! विस्मित सौम्य उस स्निग्ध वर्षा में नहाने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे लगा कि वर्षा हिरनी और शिकारियों को भी भिगो रही है। आनंदमग्न होकर सौम्य ने फिर से गगन-मण्डल की ओर ताका। उसने देखा एक भव्य और शालीन हिरन नीचे की ओर झांक रहा था। उसका शरीर भी हिरनी की तरह स्वर्णिम था। उसके सींग बहुरंगी रत्नों से जगमगा रहे थे मानो किसी सम्राट् का मुकुट हो। हिरन ने एक छलांग मारी और हिरनी के सामने आ खड़ा हुआ। उसकी आंखें भी हीरों-सी चमक रही थीं। उसमें से मधुर, शीतल ज्योति निकल रही थी। वह ज्योति सभी दोपायों के हृदयों को भेदती हुई उनकी अतल गहराइयों तक जा रही थी। उसके आगे कोई परदा न टिक सकता था। कौन जाने यह विलक्षण हिरण भी सूर्य के प्रदेश से ही आया हो। देखने में इतना विशालकाय, पर भार में फूलों की सुगन्ध से भी हल्का। उसका आकर्षण भी हिरनी से कम न था लेकिन उसके साथ आंखें मिलाने का साहस न होता था किसीको। उसने हिरनी को अपने सींगों पर उठा लिया। धरती से एक आर्तनाद उठा—नहीं, नहीं जाओ मत। हमें छोड़कर न जाओ। हम सब तुम्हारे हैं। हमें अपना लो। धरती की उस गूंज ने शिकारियों के अंतर की आंखें खोल दीं। अचानक उनके हृदय में सूर्योदय हुआ और शायद पहली बार वे हिरनी के बलिदान को समझे। शिकारियों के दल ने एकस्वर हो कहना शुरू किया—हे मुक्तिदायिनि, हे अमृतवाहिनि, अपने अगाध प्रेम के कारण ही तू हमारे बीच में उतरी थी। तेरी आहुति ने हमारी आंखें खोल दी हैं। हम पूरी तरह से तेरे हैं। हिरन की पीठ पर लेटी हिरनी न मालूम कब गायब हो गयी। उसके स्थान पर एक अद्भुत देवी की आकृति खड़ी थी। सौम्य ने सुना था कि वैदिक काल में मनुष्यों को देवी-देवताओं के दर्शन हुआ करते थे। सौम्य ने उनका वर्णन तो पढ़ा था पर यह आशा न की थी कि उन्हें देख पायेगा। देवी के भी मनुष्य जैसे ही हाथ-पांव थे, हां, मनुष्य-के-से किंतु कितने भिन्न! ऐसा लग रहा था कि उनका शरीर ज्योति और आनंद की सघनता से बना है। देवी ने मुड़कर हिरन की आंखों में झांका मानों सूचना दे रही हों कि समय आ गया है। देखते-देखते हिरन भी एक ज्योतिर्मय कनकोज्ज्वल देव के रूप में बदल गया जिसकी आंखों में से प्रेम की ज्वाला निकल रही थी। दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने सौम्य और उसके साथियों की ओर दृष्टि डाली। सबने अनुभव किया कि वे किसी अथाह आनंद के सागर में खो गये हैं। किसीको अपनी सुधबुध न थी। नयी सृष्टि का संगीत शुरू हो चुका था और वातावरण में ये शब्द गुञ्जायमान हो उठे—

"हे जीवन के एकमात्र सत्य, तू हमारा जीवन है, तू ज्योतियों की ज्योति है। हे जगदुद्धारक परम प्रेम, प्रभो, हमपर कृपा कर। वर दे कि हम तेरी उपस्थिति के भान में अधिक से अधिक जाग्रत् हों।"

—अनुबेन

रोग से मुक्ति के उपाय

सभी रोगों से प्रतिरक्षा—जिसके लिये हमारा योग प्रयास करता है—केवल ऊपर के द्वारा निचले भाग की पूर्ण और स्थायी प्रदीप्ति के द्वारा ही हो सकती है जिससे रोग की मनोवैज्ञानिक जड़ें निकल जायें। इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं है।

*

रोग किसी अपूर्णता या दुर्बलता या भौतिक प्रकृति में विरोधी स्पर्शों के प्रति खुलने का चिह्न है और साथ ही यह निम्न प्राण में या भौतिक मन या किसी और जगह अंधकार और असामंजस्य से संबंध रखता है।

यह बहुत ही अच्छी बात है अगर आदमी पूरी तरह से श्रद्धा और योग-शक्ति या दिव्य शक्ति के सैलाब के कारण रोग-मुक्ति पा सके; परंतु बहुधा यह पूरी तरह संभव नहीं होता क्योंकि सारी प्रकृति खुली नहीं होती या दिव्य शक्ति को प्रत्युत्तर नहीं दे पाती। मन में श्रद्धा हो सकती है और वह उत्तर दे सकता है, परंतु निम्न प्राण और शरीर अनुकरण नहीं करते या यदि मन और प्राण तैयार हों तो शरीर उत्तर नहीं देता और दे भी तो पूरी तरह से नहीं देता क्योंकि अमुक प्रकार के रोग लानेवाली शक्तियों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्युत्तर देने की उसकी आदत होती है और प्रकृति के भौतिक भाग में आदत बहुत ही आग्रही शक्ति है। ऐसे मामलों में भौतिक उपायों को उपयोग में लाया जा सकता है—एक मुख्य उपाय के रूप में नहीं बल्कि शक्ति की क्रिया में सहायक या भौतिक आधार के रूप में; तेज और उग्र उपाय नहीं बल्कि ऐसे जो शरीर को विक्षुब्ध किये बिना लाभ पहुंचायें।

*

रही बात डॉक्टरी-चिकित्सा की तो कभी-कभी यह आवश्यक होती है। अगर व्यक्ति दिव्य-शक्ति द्वारा रोग-मुक्त हो सके, जैसा तुम प्रायः कर चुके हो, तो यह सबसे अच्छा है। लेकिन अगर किसी कारण से शरीर दिव्य-शक्ति को प्रत्युत्तर नहीं दे सकता (जैसे संदेह, अवसाद, उत्साहहीनता या रोग के विरुद्ध प्रतिक्रिया करने की अक्षमता के कारण) तब डॉक्टरी-चिकित्सा जरूरी हो जाती है। इसका यह मतलब नहीं है कि दिव्य शक्ति काम करना बंद कर देती है और सारी चीज दवाइयों पर छोड़ देती है—वह चेतना के द्वारा काम करना जारी रखेगी परंतु चिकित्सा की सहायता लेकर ताकि शरीर के अंदर के उस प्रतिरोध पर सीधी क्रिया कर सके जो अपनी सामान्य चेतना में भौतिक साधनों को ज्यादा आसानी से उत्तर देता है।

*

निश्चय ही शरीर की देख-रेख करना जरूरी है। ऐसी देख-रेख जो उसे स्वस्थ रखे, उसके आराम, निद्रा, उचित भोजन, पर्याप्त व्यायाम का ख्याल रखे। जो चीज ठीक नहीं है वह है उसके साथ बहुत तल्लीनता, चिंता, बीमारी में निराशा आदि; क्योंकि ये चीजें बीमारी या दुर्बलता की अवधि को बढ़ाने में सहायता ही करती है। हां, यकृत रोग जैसी चीजों के लिये जब जरूरी हो तो चिकित्सा जरूर करवायी जा सकती है।

लेकिन हमेशा उचित आंतरिक संतुलन, आंतरिक और बाह्य स्थिरता, श्रद्धा, शारीरिक चेतना का माताजी और उनकी शक्ति की ओर खुलना—ये रोग-मुक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सच्चे उपाय हैं, और चीजें छोटी-मोटी सहायता या उपाय हो सकती हैं।

*

सबसे बढ़कर अयोग्य शरीर के भाव को अपने अंदर न आने दो—इस प्रकार के सभी सुझाव सिद्धि की इच्छा पर सूक्ष्म आक्रमण होते हैं और विशेष रूप से शारीरिक मामलों में ये खतरनाक होते हैं। यह विचार ऐसे बहुत-से लोगों में उभर रहा है जो योग कर रहे हैं और उनका पहला कर्तव्य है इन्हें बोरिये-बिस्तर के साथ निकाल बाहर करना। आभास और तथ्य सब इनके पक्ष में हो सकते हैं परंतु योगी के लिये सफलता की पहली शर्त है, और योगी के लिये ही क्यों, जो भी कोई बड़ा या असाधारण काम करना चाहता है उसके लिये जरूरी है कि वह तथ्यों और दीखनेवाले अविश्वासों से ऊपर उठे। रोग से मुक्त होने की इच्छा करनी चाहिये—चाहे वह रोग कितना ही भयंकर, बहुमुखी या उसके प्रहार कितने ही स्थायी क्यों न प्रतीत हों और उसके सभी विरोधी सुझावों को दूर करना चाहिये।

*

अस्वास्थ्य का अनुभव पहले केवल एक सुझाव के रूप में होता है, लेकिन चूंकि तुम्हारी पार्थिव चेतना उसे स्वीकार कर लेती है इसलिये वह वास्तविक बन जाता है। यह मन में एक गलत सुझाव की तरह है—अगर मन उसे स्वीकार कर ले तो वह मेघाच्छन्न और अस्त-व्यस्त हो जाता है और उसे सामंजस्य और स्पष्टता में वापिस आने के लिये संघर्ष करना पड़ता है। शारीरिक चेतना और रोग के साथ भी यही बात है। तुम्हें उसे स्वीकार न करना चाहिये बल्कि अपने भौतिक मन के द्वारा त्याग देना चाहिये और इस तरह शारीरिक चेतना को उस सुझाव को बाहर निकालने में सहायता देनी चाहिये। और अगर जरूरी हो तो उल्टा सुझाव दो, "नहीं, मैं ठीक हो जाऊंगा, मैं ठीक हूं और ठीक ही रहूंगा।" और हर हालत में इस प्रकार के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुझाव और उसके द्वारा लायी गयी बीमारी को दूर फेंकने के लिये माताजी को बुलाओ।

*

बीमारी के बारे में तुम्हारा सिद्धांत खतरनाक है—क्योंकि रोग एक ऐसी चीज है जिसे दूर करना चाहिये, उसे स्वीकार करना या उसमें मजा न लेना चाहिये। सत्ता के अंदर कोई ऐसी चीज है जो रोग में मजा लेती है। यह भी संभव है कि बीमारी के दर्द को अन्य किसी भी दर्द की तरह एक प्रकार के सुख में बदला जा सके क्योंकि पीड़ा और सुख दोनों ही मौलिक आनंद के विकृत रूप हैं और उन्हें एक-दूसरे में बदला जा सकता है या उनको आनंद के मौलिक तत्त्व तक ऊपर उठाया जा सकता है। यह भी ठीक है कि तुम्हें रोग को निश्चलता, समानता, सहिष्णुता के साथ सह सकना चाहिये और चूंकि वह आ गया है अतः उसे पहचान भी सकना चाहिये; तो यह ऐसी चीज है जिसे अनुभव में से गुजरना होगा, लेकिन उसे स्वीकार लेना और उसमें मजा लेने का मतलब है उसे बने रहने में सहायता देना, लेकिन अब इससे काम न चलेगा क्योंकि रोग भौतिक प्रकृति का उसी तरह का विकार है जैसे काम-वासना, क्रोध, ईर्ष्या आदि प्राणिक प्रकृति के और भूल, पक्षपात, मिथ्यात्व में मजा लेना इत्यादि मानसिक प्रकृति के विकार हैं। इन सब चीजों से पिंड छुड़ाना जरूरी है और त्याग इन सब चीजों के जाने की पहली शर्त है, जब कि स्वीकृति का एकदम उल्टा असर होता है।

*

चाहे जो भी हो, रोग के अंदर यह शक्ति न होनी चाहिये कि वह साधना को रोक सके। यौगिक चेतना और उसकी क्रियाएं होनी ही चाहियें चाहे स्वास्थ्य हो या अस्वास्थ्य।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकाग्रता

२३ दिसम्बर १९५०

(माताजी 'बुलेटिन', अप्रैल १९४९ में छपे अपने लेख 'एकाग्रता और विक्षेप' को पढ़ती हैं।)

यह प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि समस्या को हल करने, कोई पाठ पढ़ने के लिये बहुत अधिक एकाग्रता और लवलीनता की—बौद्धिक लवलीनता और एकाग्रता की—आवश्यकता होती है। परंतु एकाग्रता केवल बौद्धिक वस्तु ही नहीं है, यह सत्ता की सभी क्रियाओं में, यहांतक कि शारीरिक क्रियाओं में भी, पायी जा सकती है। अपनी स्नायुओं पर तुम्हारा ऐसा संयम होना चाहिये कि तुम जो कुछ करते हो उसपर पूर्ण रूप से एकाग्र हो सको और अपनी एकाग्रता की तीव्रता के द्वारा ही बाह्य स्पर्शों के प्रति तुरंत प्रत्युत्तर प्राप्त कर लो। ऐसी एकाग्रता प्राप्त करने के लिये शक्तियों के ऊपर सचेतन प्रभुत्व प्राप्त करने की आवश्यकता होती है।

क्या तुम उन शक्तियों के प्रति सचेतन हो जिन्हें तुम ग्रहण करते और खर्च करते हो ?

मनुष्य जब कोई शक्ति खर्च कर देता है, विशेषकर जब वह उसे अत्यधिक नष्ट कर देता है तो वह उसके विषय में कम या अधिक सचेतन होता है! यहां मुख्य प्रश्न है ग्रहण और व्यय के बीच के सतत विनिमय का! समझ आने से पहले छोटे-छोटे बच्चे बहुत सारी शक्ति ग्रहण करते हैं और उसे खुले दिल, बिना सोचे-विचारे खर्च करते हैं और इस कारण बिना थके लगातार घंटों खेलते रहते हैं। परंतु धीरे-धीरे, जैसे-जैसे विचार विकसित होता है वैसे-वैसे, मनुष्य खर्च की हुई शक्ति को नापना-तौलना और उसका हिसाब लगाना आरंभ कर देता है—साधारणतया यह निरर्थक है, क्योंकि तुम्हें जबतक शक्ति ग्रहण करने की प्रक्रिया का ज्ञान नहीं हो जाता तबतक ग्रहण की हुई शक्ति को अपने अंदर निष्क्रिय रखने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगह मुक्त रूप से खर्च करते रहना ही अधिक अच्छा है।

सबसे पहले तुम्हें शक्तियों को ग्रहण करने के विषय में, अपनी सत्ता में उनके प्रवेश करने तथा खर्च हो जाने के विषय में सचेतन होना चाहिये। दूसरे, तुम्हारे अंदर एक प्रकार की उच्चतर सहजवृत्ति होनी चाहिये जो तुम्हें यह बता दे कि अत्यंत अनुकूल शक्तियां कहां से आती हैं; फिर तुम विचार के द्वारा, स्थिरता के द्वारा अथवा किसी दूसरी प्रक्रिया के द्वारा —बहुत-सी प्रक्रियाएं हैं—उन शक्तियों के साथ अपना संपर्क स्थापित करो। तुम्हें इस बात का ज्ञान होना चाहिये कि तुम किस शक्ति को चाहते हो, वह कहां से आती है और उसमें क्या है। उसके बाद ही ग्रहण की हुई शक्ति पर संयम प्राप्त होता है। नब्बे प्रतिशत लोग पर्याप्त शक्ति ग्रहण नहीं करते या बहुत अधिक ग्रहण करते हैं और जो कुछ ग्रहण करते हैं उसे हजम नहीं करते—ज्यों ही वे काफी मात्रा में ले चुकते हैं त्यों ही तुरत-फुरत अशांत-चंचल बनकर, बातचीत करके, शोरगुल मचाकर या अन्य उपायों से उसे बाहर फेंक देते हैं। तुम्हें यह जानना चाहिये कि ग्रहण की हुई शक्ति को किस प्रकार अपने अंदर बनाये रखा जाता है और किसी दूसरी चीज पर नहीं, केवल अभीप्सित क्रिया पर उसे पूर्णतः एकाग्र किया जाता है। यदि तुम यह कर सको तो तुम्हें अपनी इच्छा का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं होगी। तुम्हें बस आवश्यकता होगी गृहीत शक्तियों को एक साथ एकत्र करने तथा उन्हें सचेतन रूप में व्यवहृत करने की, जो कुछ तुम चाहते हो उसे संपन्न करने के लिये अधिक-से-अधिक तल्लीनता के साथ एकाग्र होने की।

फिर तुम जो करना चाहते हो—तुम्हारी सत्ता का उच्चतर भाग जो करना चाहता है—उसका सच्चा मूल्य आंकना आना चाहिये, क्योंकि मनुष्य जो कुछ करना चाहता है उसे करना कठिन नहीं है।

एकाग्रता क्या चीज है ?

इसका अर्थ है अपनी चेतना के बिखरे हुए सभी धागों को एक ही बिंदु पर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ही भाव या विचार पर वापस ले आना। जो लोग पूर्ण मनोयोग की स्थिति प्राप्त करने में समर्थ होते हैं वे जो कार्य हाथ में लेते हैं उसीमें सफल होते हैं; वे हमेशा तेज प्रगति करते हैं। और इस प्रकार की एकाग्रता ठीक मांसपेशी की भांति विकसित की जा सकती है; इसके लिये मनुष्य प्रशिक्षण के विभिन्न पथों, विभिन्न पद्धतियों का अनुसरण कर सकता है। उदाहरण के लिये, तुम जानते हो कि अत्यंत दयनीय दुर्बल व्यक्ति भी नियमित अभ्यास के द्वारा किसी भी अन्य व्यक्ति के समान बलशाली हो सकता है। मनुष्य का संकल्प ऐसा नहीं होना चाहिये जो मोमबत्ती की तरह झिलमिलाकर बुझ जाये।

संकल्पशक्ति को, एकाग्रता की शक्ति को अवश्य बढ़ाना चाहिये; बस, प्रश्न है पद्धति का, नियमित अभ्यास का। यदि तुम चाहो तो कर सकते हो।

परंतु संकल्प को कमजोर बनाने के लिये यह विचार नहीं उठना चाहिये कि 'भला इससे क्या लाभ' ? यह भावना कि मनुष्य एक विशिष्ट स्वभाव लेकर पैदा होता है और उस विषय में कुछ भी नहीं कर सकता, एक मूर्खतापूर्ण बात है।

(श्रीमातृवाणी खंड ४ से)

स्वर्णिम उपहार

बात कुछ समय पहले की है। मेरे एक मित्र ने अपनी तीन वर्षीया बेटी को काफी डांटा-फटकारा क्योंकि वह सुनहरे कागज को अपने किसी बक्से पर चिपका रही थी। उन दिनों उनका हाथ तंग था इसलिये इतने बढ़िया कागज को इस तरह बरबाद होते देख कर उन्हें गुस्सा आ गया था।

उनकी डांट-फटकार को भूलकर उनकी छोटी बिटिया दूसरे दिन वह चमकता-दमकता बक्सा लेकर आयी, बोली, "पापा, यह तुम्हारे लिये है।" यह सुनकर पिता अपने पिछले दिन के व्यवहार के लिये शर्मिंदा हो गये और झिझकते हुए उन्होंने बक्सा खोला। जब उसे खाली पाया तो फिर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका गुस्सा खौल उठा। वे चिल्लाये, "तुम्हें इतनी भी तमीज नहीं कि बक्सा उपहार में देते हैं तो उसके अंदर कुछ रखते हैं ?" बिटिया की आंखों में आंसू झलकने लगे और भर्राई आवाज में बोली, "ओह, पापा, बक्सा खाली नहीं है। मैंने यह बक्सा अपने बोसों से भर दिया है। सबके सब पापा के लिये हैं।"

पिता बच्ची के उत्तर से हतप्रभ हो अपने-आपको कोसने लगे। पश्चात्ताप के आंसू रोक उन्होंने बच्ची को उठाकर गले लगाया और अपने दुर्व्यवहार के लिये माफी मांगी।

वह बक्सा पिता ने अपने बिस्तर के पास रखा और जब-जब वे दुःखी या निराश होते तो उसे खोलकर अपनी बिटिया का निर्दोष, प्यार-भरा बोसा महसूस करते और फिर से उत्साह में आ जाते और दुःख, निराशा भाग खड़े होते।

सचमुच हर माता-पिता के पास अपने बच्चों के अनमोल प्यार का खजाना हमेशा होता है। उसके सामने कुबेर की समृद्धि भी कुछ नहीं है।

माताजी ने कहा है कि प्रेम एक शक्ति और एक कार्य है। अगर हमारा प्रेम-कार्य सच्चाई से किया गया हो तो उस कार्य की सफलता का कोई अंत नहीं है। ऐसा भी प्रेम होता है जिसे मनुष्य अपनी बढ़ती हुई ग्रहणशीलता और उसके साथ विकसित होते हुए ऐक्य के कारण भगवान् की ओर मोड़ सकता है। तब वह भगवान् से जो कुछ प्राप्त करता है उसे अन्य मनुष्यों पर न्योछावर कर देता है। किंतु उस निछावर के पीछे लोगों से बदले में कुछ पाने का भाव बिलकुल न रहना चाहिये। अगर तुम ऐसा कर पाओ तो प्रेम करने का यही श्रेष्ठतम और अत्यंत संतोषप्रद तरीका है।

'अवेकनिंग' से साभार

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्रह और वितरण

भौतिक जगत् में संग्रह और वितरण की वृत्तियां एक दूसरे से उल्टी मालूम होती हैं पर वास्तव में हैं एक दूसरे की पूरक। कर्ण से लेकर अब्दुर्रहीम खानखाना तक जितने भी बड़े दाता हुए हैं वे सब किसी-न-किसी संग्रह के आधार पर ही दान दे सकते थे। महाराज हर्षवर्धन अपना सब कुछ दान दे दिया करते थे परंतु अगली बार देने के लिये उन्हें फिर से संग्रह करना पड़ता था। गणपति ऋद्धिसिद्धिदायक हैं, वे हमेशा खुले हाथों दिया करते हैं, उनके वाहन मूषकराज का काम है संचय करना, संग्रह करना। भगवान् की सृष्टि में दोनों का समान महत्त्व है।

एक आदमी अपनी खुशी के लिये, अपने लोभवश बहुत कंजूसी करता है, खाने-पीने में कंजूसी, लेने-देने में कंजूसी, बस इकट्ठा करते जाना ही उसका काम होता है। कहा जाता है कि जब ऐसा आदमी मरता है तो वह सांप बनकर अपने धन की रक्षा करने के लिये आता है।

दूसरा आदमी देने में ही खुशी का अनुभव करता है लेकिन वह देने के लिये नहीं देता अपने नाम के लिये देता है। देने से उसका अहं फूलता है। वह सोचता है मैंने दिया, चार आदमी उसके देने की प्रशंसा करते हैं, अखबारों में उसके फोटो छपते हैं, उसके नाम से संस्थाएं खोली जाती हैं, मकानों पर उसके नाम के पत्थर लगते हैं, बीमारों और बदनसीबों का उसके यहां तांता लगा रहता है, वह सोचता है मैंने कितना कुछ किया, लोगों को मेरा उपकार मानना चाहिये। बस मैं मैं और मैं की रट लगी रहती है और

जबतक थे गिरह में अहमकों के पैसे
सब कहते थे आप ऐसे वैसे,

उनके प्रशंसकों की कमी नहीं रहती।

सचमुच देखा जाये तो पहले सूम और दूसरे दानी में बहुत फर्क नहीं है। पहला पैसे के पीछे पागल है दूसरा नाम और प्रशंसा के पीछे। दोनों के अपने-आपको संतुष्ट करने के तरीके अलग-अलग हैं पर हैं दोनों ही अहंकेंद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श स्थिति तो यही है कि जो कुछ किया जाये भगवान् के लिये किया जाये, संचय और वितरण दोनों भगवान् के लिये हों। भगवान् के लिये दिया गया दान दान नहीं होता, उन्हींकी चीज उन्हें ही अर्पित कर दी जाती है। उसमें अहं के लिये कोई स्थान नहीं रहता। इस तरह के दान की बातें करना तो दूर, उसके बारे में सोचना भी अहितकर होता है कि मैंने यह दिया। कहते हैं जिह्वा में अग्नि का वास है। अपने सुकृतों की बात जहां जीभ पर आयी कि सुकृत जल जाते हैं।

आलस्य तथा बीमारी से बचो

. . . कभी-कभी आलस्य हमें कुछ करने से रोकता है।

ओह! अगर तुम तामसिक हो तो बात और ही है। अगर तुम्हारी प्रकृति तामसिक है तो तुम्हें एक और ही पद्धति अपनानी होगी। तुम्हें चेतना पर जोर देना होगा, अपनी इच्छा-शक्ति लगानी होगी, अपना बल लगाना होगा, अपनी ऊर्जा को इकट्ठा करके, अपने-आपको जरा हिलाकर अपने-आपको चाबुक लगाओ और कहो : "चलो, चलो, आगे बढ़ो।" अगर आलस्य तुम्हें, मान लो, वॉलिंटिंग करने से रोकता है तो तुरंत उससे भी ज्यादा थकानेवाली कसरत शुरू कर दो और कहो : "अच्छा, तुम यह नहीं करना चाहते? ठीक है, तब तुम पंद्रह सौ मीटर दौड़ोगे!" या "आज मैं भार नहीं उठाऊंगा, मन नहीं कर रहा : अच्छा, मैं लगातार चार हजार बार रस्सी कूदूंगा।"

पढ़ाई के लिये भी यही तरीका बरतना चाहिये?

हां, ठीक यही। अगर पाठ सीखने की इच्छा नहीं हो रही तो तुम एक ऐसी किताब ले लो जो दसगुनी अधिक थकानेवाली है, एकदम नीरस और अपने-आपको उसे ध्यान देकर पढ़ने के लिये बाधित करो। इस तरह की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकें होती हैं, इतनी शुष्क, इतने नीरस ज्ञानवाली ... अगर तुम्हारी इतिहास या भूगोल की पुस्तक पढ़ने की इच्छा नहीं हो रही, जो साधारणतः काफी सरल और बहुत रोचक होती हैं, उनकी जगह उन पुस्तकों में से एक ले लो जो तुम्हें दी जाती हैं (माताजी एक अध्यापक की ओर देखती हैं)—मैं यहां कुछ कहने की हिम्मत नहीं कर रही क्योंकि तुम्हारे अध्यापक यहां हैं!—एकदम नीरस, और अपने-आपको कम-से-कम आधी पुस्तक खतम करने के लिये बाधित करो। तब सब कुछ रोचक लगेगा।

क्या आलस्य अनुभव करने के बावजूद काम जारी रखना ज्यादा अच्छा न होगा ?

यह काम पर निर्भर है। यहां हम एक और ही क्षेत्र में प्रवेश करते हैं।

अगर ऐसा काम है जो तुम सबके लिये कर रहे हो, अपने लिये निजी रूप में नहीं, तो तुम्हें जारी रखना चाहिये, चाहे कुछ क्यों न हो जाये। यह प्रारंभिक अनुशासन है। तुमने यह काम ले लिया है या तुम्हें यह सौंपा गया है और तुमने स्वीकार कर लिया है, उस अवस्था में तुम्हें करना चाहिये। सब समय, जबतक कि तुम बहुत ही बीमार न हो, बीमारी की अंतिम सीमा तक, जब तुम हिल-डुल न सको, उसे करना चाहिये। तुम भले बीमार-से क्यों न हो, तुम्हें काम करना चाहिये। निस्स्वार्थ काम हमेशा तुम्हें तुच्छ व्यक्तिगत रोगों से छुटकारा देता है। स्वभावतः, यदि तुम सचमुच बिस्तर पर गिरने के लिये बाधित हो गये हो, हिल-डुल नहीं सकते, जोर का बुखार चढ़ा है या कोई गंभीर रोग है, तो बात अलग है। अन्यथा अगर तुम्हारी तबीयत थोड़ी-सी खराब हो गयी है : "मेरी तबीयत ठीक नहीं लगती, मेरे सिर में जरा-सा दर्द है, मुझे अजीर्ण है, मुझे जुकाम हो गया है, मैं खांस रहा हूं," और ऐसी ही दूसरी चीजें—तो अपना काम करना, अपने बारे में सोचते न रहना, काम के बारे में सोचना, उसे भरसक अच्छे-से-अच्छी तरह करना, इससे तुम तुरंत अच्छे हो जाते हो।

वास्तव में बीमारी केवल एक असंतुलन है; इसलिये अगर तुम एक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतुलन स्थापित कर लो तो यह असंतुलन गायब हो जाता है। रोग सिर्फ हमेशा, हर दशा में, सत्ता का असंतुलन है— तब भी जब डॉक्टर कहते हैं कि कीटाणु हैं—विभिन्न क्रियाओं में असंतुलन, शक्तियों में असंतुलन।

इसका यह मतलब नहीं है कि कीटाणु नहीं हैं : कीटाणु हैं, और आजकल जितने ज्ञात हैं उनसे बहुत ज्यादा हैं। लेकिन तुम उनके कारण बीमार नहीं होते, क्योंकि वे तो हमेशा रहते हैं। वे हमेशा बने रहते हैं और दिन-पर-दिन बीतते जाते हैं और वे तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ते और फिर अचानक, एक दिन, उनमें से एक तुम्हें पकड़ लेता है और तुम बीमार हो जाते हो—क्यों ? सिर्फ इसलिये कि हमेशा की तरह सामान्य प्रतिरोध नहीं था, क्योंकि किसी भाग में असंतुलन था और क्रिया सामान्य नहीं थी। लेकिन अगर किसी आंतरिक शक्ति से, तुम संतुलन फिर से स्थापित कर सको तो बीमारी का अंत हो जायेगा, कोई कठिनाई न रहेगी, असंतुलन गायब हो जायेगा।

लोगों को रोग-मुक्त करने का कोई और तरीका नहीं है। आदमी तभी रोग-मुक्त होता है जब वह असंतुलन को देख सके और फिर से संतुलन स्थापित कर सके। हां, तुम्हें दो एकदम अलग श्रेणियों से काम पड़ता है . . .। कुछ लोग अपने असंतुलन को पकड़े रहते हैं—वे उसे पकड़े रहते हैं, उसके साथ चिपके रहते हैं, उसे छोड़ना नहीं चाहते, तब तुम चाहे जितना कड़ा प्रयास कर लो, चाहे तुम संतुलन ला दो, फिर भी वे अगले ही क्षण असंतुलित हो जायेंगे क्योंकि उन्हें उससे प्रेम है। वे कहते हैं : नहीं, नहीं ! मैं बीमार नहीं होना चाहता," लेकिन उनके अंदर कोई चीज किसी असंतुलन को मजबूती से पकड़े रहती है, जो उसे नहीं छोड़ना चाहती। दूसरी ओर ऐसे लोग होते हैं जो निष्कपट-भाव से संतुलन से प्यार करते हैं और जैसे ही तुम उन्हें संतुलन तक लौट आने की क्षमता दो कि संतुलन फिर से स्थापित हो जाता है और कुछ ही क्षणों में वे रोग-मुक्त हो जाते हैं। उनके अंदर फिर से व्यवस्था लाने के लिये काफी ज्ञान नहीं था, काफी शक्ति नहीं थी—असंतुलन एक अव्यवस्था ही तो है। लेकिन अगर तुम हस्तक्षेप करो, अगर तुम्हारे अंदर ज्ञान है और तुम संतुलन को पुनः स्थापित कर दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो स्वभावतः बीमारी गायब हो जायेगी, और जो लोग तुम्हें यह करने देंगे वे रोग-मुक्त हो जायेंगे। केवल वही जो यह नहीं करने देते, वे रोग-मुक्त नहीं होते, और यह तो स्पष्ट है। वे तुम्हें क्रिया नहीं करने देते, वे बीमारी से चिपके रहते हैं। मैं उनसे कहती हूं : "ओह ! रोग-मुक्त नहीं हुए ? तब डॉक्टर के पास जाओ।" और सबसे अजीब बात यह है कि उन्हें डॉक्टरों पर विश्वास होता है, हालांकि क्रिया वही रहती है ! हर एक डॉक्टर जो थोड़ा बहुत दार्शनिक भी हो, तुमसे कहेगा, "बात ऐसी ही है। हम चिकित्सक केवल एक अवसर देते हैं, लेकिन सचमुच तो स्वयं शरीर अपने-आपको अच्छा कर लेता है। जब शरीर रोग-मुक्त होना चाहता है तो रोगमुक्त हो जाता है।" हां तो, ऐसे शरीर हैं जो संतुलन को तबतक स्थापित नहीं होने देते जबतक उन्हें कोई दवाई या कोई और बहुत निश्चित चीज अपने अंदर लेने के लिये बाधित नहीं किया जाता जिससे उन्हें यह लगे कि उसकी परिचर्या भली-भांति की जा रही है। लेकिन अगर तुम ऐसे लोगों की बहुत ठीक, यथार्थ चिकित्सा करो—जिसका अनुसरण करना कभी-कभी बहुत कठिन होता है—तो उन्हें विश्वास होने लगता है कि फिर से संतुलन पा लेने से ज्यादा अच्छा कुछ नहीं है और उन्हें संतुलन वापिस मिल जाता है।

२४ जून १९५३ 'श्रीमातृवाणी', खण्ड ५ पृ० ११३-१६

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा..... ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे अंदर का मंदिर

तुम्हारी चेतना की गहराई में तुम्हारे अंदर रहनेवाले भगवान् का मंदिर, तुम्हारा चैत्य पुरुष है। यही वह केंद्र है जिसके चारों ओर तुम्हारी सत्ता के इन सब विभिन्न भागों को, इन सब परस्पर-विरोधी गतियों को जाकर एक हो जाना चाहिये। तुम एक बार चैत्य पुरुष की चेतना को और उसकी अभीप्सा को पा लो तो इन संदेहों और कठिनाइयों को नष्ट किया जा सकता है। इस काम में कम या अधिक समय तो लगेगा, परंतु अंत में तुम अवश्य सफल होगे। तुमने एक बार भगवान् की ओर मुड़कर कहा है : "मैं आपका होना चाहता हूं," और भगवान् ने "हां" कह दिया है तो समस्त जगत् तुमको उनसे अलग नहीं रख सकता। जब केंद्रीय सत्ता ने समर्पण कर दिया है तो मुख्य कठिनाई दूर हो गयी। बाह्य सत्ता तो एक जमी हुई पपड़ी की तरह है। साधारण लोगों में यह पपड़ी इतनी कठोर और मोटी होती है कि इसके कारण वे अपने अंदर के भगवान् से सचेतन नहीं हो पाते। परंतु यदि आंतर-पुरुष ने एक बार, क्षण-भर के लिये ही सही, यह कह दिया है : "मैं यहां हूं और मैं तुम्हारा हूं," तो मानों एक पुल बंध जाता है और यह बाहरी पपड़ी धीरे-धीरे पतली-से-पतली पड़ती जाती है और एक दिन आयेगा जब दोनों भाग पूर्ण रूप से जुड़ जायेंगे और आंतर तथा बाह्य दोनों एक हो जायेंगे।

—श्रीमां

———

जब प्राण अशांत होने की कोशिश करे तो अपने-आपको उससे अलग कर लो और स्वयं अत्यधिक शांत बने रहो और माताजी की शांति का आवाहन करो।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

माताजी के शब्द जो श्रीअरविन्द की समाधि पर लिखे हुए हैं :

दिसम्बर ९, १९५०

तुम्हारे प्रति जो हमारे प्रभु के भौतिक आवरण रहे हो, तुम्हारे प्रति हम असीम कृतज्ञता प्रकट करते हैं। तुमने हमारे लिये इतना कुछ किया, हमारे लिये कर्म किया, संघर्ष किये, कष्ट झेले, आशा की, इतना सहन किया, तुमने हम सबके लिये संकल्प किये, सबके लिये प्रयत्न किये, तैयारी की, हमारे लिये सब कुछ प्राप्त किया, तुम्हारे आगे हम नतमस्तक हैं और यह प्रार्थना करते हैं कि हम एक क्षण के लिये भी तुम्हारे ऋण को न भूलें।

श्रीअरविन्द की महासमाधि की ५० वीं जयन्ती भारत तथा विदेश की सभी शाखाओं तथा केन्द्रों में समुचित रूप से मनायी जायेगी।

१७ नवम्बर २००० को माताजी की २३ वीं महासमाधि की जयन्ती पर सुबह छह से साढ़े छह तक समाधि के चारों ओर ध्यान हुआ। माताजी का कमरा दर्शन के लिये सुबह साढ़े छह बजे से खोला गया। उस दिन श्रीअरविन्द का यह संदेश बांटा गया—

अगर तुम अपने मन का अनुसरण करो तो यदि माताजी तुम्हारे सामने उपस्थित हों फिर भी वह उनको पहचान न पायेगा। अपनी अंतरात्मा की बात सुनो, मन की नहीं। तुम्हारी अंतरात्मा ही सत्य को उत्तर देती है, तुम्हारा मन नहीं जो आभासों के पीछे कूदता-फांदता है। भागवत शक्ति पर भरोसा रखो और वह परम शक्ति तुम्हारे अंदर के देवतासदृश तत्त्वों को मुक्त करके, तुम्हारी समस्त सत्ता को भागवत प्रकृति की अभिव्यक्ति में गढ़ देगी।

दिन का अंत शाम को खेल के मैदान में ७.२५ बजे के ध्यान के साथ हुआ। २० नवम्बर को भी सुबह ६.०० बजे समाधि के चारों ओर ध्यान हुआ और खेल के मैदान में शाम को ७.२५ को भी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४ नवम्बर २००० सिद्धि-दिवस की ७४ वीं जयन्ती थी। यह भी चार दर्शन दिवसों में से एक है। सुबह ६.०० बजे समाधि के चारों ओर ध्यान हुआ। श्रीअरविन्द के कमरे का दर्शन सुबह ६.३० बजे से शुरू हुआ। इस उपलक्ष्य पर बांटे गये संदेश में सावित्री की कुछ पंक्तियां उद्धृत थीं।

शाम को क्रीड़ांगण में आश्रम-बैण्ड के साथ मार्च-पास्ट हुआ, उसके बाद वाद्य-वृन्द का छोटा-सा कार्यक्रम। कार्यक्रम की समाप्ति ध्यान के साथ हुई।

संस्थाओं और शाखाओं के समाचार

श्रीअरविन्द के पवित्र देहावशेष की स्थापना का वार्षिकोत्सव १ और २ अगस्त तथा १२ सितम्बर को रानाघाट (पश्चिम बंगाल), गुलबर्ग (कर्णाटक), और तिरुपति (आंध्रप्रदेश में) क्रमशः मनाया गया।

देहरादून शाखा ने महिला परिषद का अधिवेशन किया, विषय था– श्रीअरविन्द तथा श्रीमां के प्रकाश में नयी सदी में महिलाओं की प्रमुख भूमिका।

श्रीगोपाल भट्टाचार्य ने जून तथा जुलाई में यूरोप तथा भारत के भी विभिन्न स्थलों का दौरा किया और कई प्रमुख भाषण दिये।

घोषणाएं

सावित्री अध्ययन सत्र: डॉ० मंगेश नाडकर्णी २३ फरवरी से ५ मार्च २००० तक सोसायटी के बीच ऑफिस में सावित्री का अगला सत्र करेंगे। सत्र अंग्रेजी में होगा। सभी इच्छुकों का स्वागत है, सत्र निःशुल्क है।

नये साल की १६ पृष्ठों की सुन्दर सचित्र पुस्तिका प्राप्त करने के लिये कृपया शब्द, श्रीअरविन्द आश्रम, पांडिचेरी से सीधा पत्र-व्यवहार करें।

उड़ीसा, बंगाल, आन्ध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश इत्यादि स्थानों पर सोसायटी के कुछ नये केन्द्र खुले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिव्य जीवन की साधना में सहायक कुछ नये ग्रंथ

लेखक : सुखवीर आर्य, श्रीअरविन्द आश्रम, पांडिचेरी

श्रीअरविन्द की शिक्षा को सरल हिन्दी भाषा में व्याख्यायित करने का प्रयास

श्रीअरविन्द द्वारा दिग्दर्शित दिव्य जीवन मनुष्य की अवश्यम्भावी नियति है। प्रत्येक मनुष्य की अंतरात्मा में उस दिव्य जीवन को प्राप्त करने के लिये अभीप्सा उठ रही है। दिव्य जीवन का स्वरूप क्या होगा और उसे कैसे साधित किया जा सकता है, इसी का उत्तर है—

दिव्य जीवन की ओर

मूल्य : ४० रु०

प्राप्ति स्थान

श्रीअरविन्द बुक्स डिस्ट्रीब्यूशन एजेंसी, श्रीअरविन्द आश्रम, पांडिचेरी

श्रीअरविन्द और श्रीमां की संयुक्त तपस्या द्वारा पृथ्वी पर उतारी गयी नयी चेतना—'अतिमानस' हमारे जीवन को दिव्य जीवन में रूपान्तरित करने में सतत क्रियाशील है। 'अतिमानस' क्या है, तथा उसके द्वारा हमारे जीवन का रूपांतर कैसे संसिद्ध होगा, इसे समझाने का प्रयास किया गया है निम्नलिखित पुस्तकों में—

१. अतिमानस की ओर
मूल्य : ५० रु० (प्रेस में)

२. रूपान्तर की ओर
मूल्य : ५० रु० (प्रेस में)

जीवन मार्ग पर सचेतन होकर चलने के लिये आध्यात्मिक सूत्रों का संग्रह : (प्रेस में)

१. मनन सूत्र २. स्वर्णिम सूत्र ३. ज्योतिर्मय सूत्र

पाकेट बुक साइज़ में : प्रत्येक का मूल्य २० रु०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Hanuman Prasad Dharam Chand
Dinodiya Welfare Trust
CALCUTTA

J. J. Charitable Trust
7C Kiron Shankar Rai Road
CALCUTTA - 1

Kayan Foundation
9/2 Hungerford street
CALCUTTA - 17

Pannalal Kandoi Seva Kosh
132/1 M. G. Road
CALCUTTA - 7

G. N. B. Motors Ltd.
8 Camac Street, 9th Floor
CALCUTTA - 700 017

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Sri Madhopur Vikas Parishad Trust
48 Dobson Road
HOWRAH - 711101

Sharad Seva Nidhi Trust
26 Amherst Street
CALCUTTA - 700009

Seth Chiranjilal Khaitan Trust
7 Keyatala Lane
CALCUTTA - 700009

Mamraj Jayatri Trust
6A Ironside Road
CALCUTTA - 700019

Dhanuka Charity Trust
Dhanseri House, 4A Woodburn Park
CALCUTTA - 700020

M/S ODC Carrier (P) Ltd.
15 India Exchange Place
CALCUTTA - 700001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Salarpuria Public Charity Trust
7, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 072

M/s Patton Ltd.
3C, Camac Street
CALCUTTA - 700 016

Naurangrai Lohia Charitable Trust
14A Loudon Street
CALCUTTA - 700 017

Charu Enterprises
42B Shakespear Sarani, 13, Shalimar Apt.
CALCUTTA - 17

Kitply Industries Ltd.
White House, 'A' Block, 4th Floor, 119 Park Street
CALCUTTA - 700 016

Eastern Enterprises Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Manav Seva Trust
CALCUTTA

Saria Charitable Trust
(J. P. Saria)
D-9 Kirti Nagar
NEW DELHI - 110 015

Shri Gopal Kamal Kumar
196, Jamuna Lal Bajaj Street
CALCUTTA - 700 007

Adukia Industrial Concern
17, Ganesh Ch. Avenue
CALCUTTA - 700 013

Sri Keshar Deo Saraf & Sons (HUF)
35, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 012

Maikal Fibres Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको उस नये प्रकाश के प्रति खोलो जो धरती पर उदित हुआ है और तुम्हारे सामने एक ज्योतिर्मय पथ खुल जायेगा।

— श्रीमां

WITH THE BEST COMPLIMENTS OF

S. L. Deorah Group of Enterprises

ASSAM TEA WAREHOUSING CORPORATION
INDIAN TEA STORAGE AGENCY
INDIAN TRANSPORT AGENCY
AURO IMPEX PRIVATE LIMITED
AURO LABORATORIES LIMITED
AURO BUSINESS CENTRE

Calcutta Office:

'SHIVANGAN' - Flat No. 2C, 53/1/2, Hazra Road
CALCUTTA - 700 019
Phone No.: 474 - 2059, 474 - 2060
Fax No.: 476 - 2348

Bombay Office:

408 Navratan, 69 P. DeMellow Road
BOMBAY - 400 009
Phone No.: 343 - 5341, 342 - 9027
Fax No.: 342 - 5022

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

"जीवन तथा लोगों के लिये घृणा के कारण तुम्हें योग की ओर नहीं आना चाहिये।

कठिनाइयों से कतराने के लिये तुम्हें यहां नहीं आना चाहिये। रक्षा और प्रेम के माधुर्य को प्राप्त करने के लिये भी नहीं, क्योंकि अगर तुम ठीक मनोवृत्ति अपनाओ तो तुम भगवान् के प्रेम और रक्षा का आनंद हर जगह ले सकते हो।

जब तुम पूर्ण रूप से अपने-आपको भगवान् की सेवा में अर्पित करना चाहो, पूर्ण रूप से भागवत कार्य के लिये अपने-आपको दे देना चाहो, केवल अपने-आपको भगवान् पर न्योछावर करने और उनकी सेवा करने के आनंद के लिये, बदले में किसी चीज की आशा किये बिना सिवाय अर्पण और सेवा की संभावना के, तब तुम यहां आने के लिये तैयार हो और द्वार तुम्हारे लिये खुले रहेंगे।

मैं तुम्हें वही आशीर्वाद देती हूं जो मेरे सब बच्चों को दिये जाते हैं, वे चाहे जगत् के किसी भी कोने में क्यों न हों, और मैं कहती हूं: 'अपने-आपको तैयार करो, मेरी मदद हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी।'"

३० मार्च १९६०

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

शुभ मुहूर्त

श्रीअरविन्द ने सौ साल पहले भारत का ऐसा चित्र खींचा था जो आज भी काफी हदतक ज्यों का त्यों है। उस समय उन्होंने लिखा था, "सारा भारत यूरोपीय सभ्यता की शराब पीकर मदहोश हो रहा है, पश्चिम से आयी हुई निरी बौद्धिक बातों पर फिदा होकर अपनी संस्कृति को भूल रहा है। भारत के लोग भी हर चीज को केवल बुद्धि से समझने, केवल बुद्धि के अधूरे औजार से परखने के आदी हो रहे हैं। भारत नास्तिकों का देश हो गया है, सन्देहवादियों और सनकी नौजवानों का देश हो गया है।"

कुछ वर्ष पहले तक विदेश में पढ़कर आये युवक भारतीय संस्कृति, रीति-रिवाज, धर्म और आध्यात्मिकता का मजाक उड़ाते थे। इससे भी अधिक दुःख की बात यह है कि उन्होंने यूरोप के गुण तो न अपनाये बल्कि उसकी विकृतियों, स्वच्छंदता और सुरापान का बड़े उत्साह से स्वागत किया। परिणामतः भारतीय न भारतीय रहे, न यूरोपीय!

किंतु स्वाधीनता के पचास वर्षों के बाद नवजागरण की छोटी-छोटी चिंगारियां उड़ रही हैं और उसका परिणाम संसार के सामने है। यूरोपीय देश अब तक एशियाई राष्ट्रों की ओर नाक चढ़ाकर देखते हैं। उनकी राय है कि विज्ञान (साइंस) में एशियावाले कुछ न कर पायेंगे। एक बार स्विट्ज़रलैंड में सेमिनार हुआ जिसमें कुछ भारतीय, एशियाई भी थे। बात हरपीस के लिये दवाई बनाने की चली, तो एक यूरोपीयन वैज्ञानिक बोल उठा, "भारत के वैज्ञानिक इसे नहीं बना पायेंगे।" स्वाभिमानी वैज्ञानिक श्रीकृष्ण एल्ला को चोट ऐसी लगी कि उन्होंने प्रण लिया कि वे हरपीस की ऐसी दवाई बनायेंगे जिसे छोटे बच्चे तक बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी हानि के ले पायेंगे क्योंकि यूरोप में बनी हरपीस की दवाई छोटे बच्चों के लिये हानिकर होती है। श्रीकृष्ण एल्ला ने अपना प्रण निभाया और अब भारत में यूरोप से सस्ती और निरापद दवाई प्राप्त है। यह एक ऐसा उदाहरण है जहां भारतीय व्यक्ति ने यूरोप के एक विशेष गुण को अपनाया। यूरोप का विशेष चरित्र यह है कि उसने प्रकृति के हर रहस्य को जानने की कोशिश की, उसका मानस हमेशा यही प्रश्न पूछता रहता है, "यह ऐसा क्यों है ? अणु से छोटा कोई तत्त्व है ? चांद पर क्या है ?" बस, बालवत् कौतूहल ने यूरोप को बहुत ऊपर उठाया। अब भारत भी इस क्षेत्र में कदम बढ़ा रहा है और आज भारत की गिनती उठते हुए, प्रगतिशील राष्ट्रों में हो रही है। इसी चरित्र-परिवर्तन ने भारत में नयी जान डाल दी है।

तो क्या हम यूरोप के चरित्र को अपना कर आगे बढ़ेंगे ? नहीं, यूरोप की अच्छाई अपना कर हमने अपने चिर-परिचित चरित्र को और अधिक समृद्ध बना लिया है। भारतीय चरित्र के प्रमाण तो पग-पग पर मिलते हैं किंतु हम ऐसे विरल उदाहरण भी देखते चलें जो भारत की उदारता, सहनशीलता और क्षमा को उद्घाटित करते हैं।

ऐसा एक उदाहरण है प्रह्लाद सिंह का। उनका असली वतन था पाकिस्तान का पोथोहर जहां १९४७ में बंटवारे के भूकंप ने उन्हें उखाड़ कर अपने वतन से खाली हाथ भगा दिया। भारत में भटकते-भटकते वे रांची पहुंचे जहां उन्होंने खिड़की-दरवाजों के लिये कांच और प्लाईवुड बेचने का काम शुरू किया। करते-करते वे रांची के 'ओल्ड कमीश्नर कम्पाउण्ड' में कोठी बनवा कर रहने लगे और शौकिया तौर पर पन्द्रह एकड़ जमीन खरीद कर खेती-बाड़ी भी करने लगे, क्योंकि भूमि का प्यार पंजाबियों के नस-नस में दौड़ता रहता है। किंतु एक दिन ऐसा कांड हुआ कि उन्हें अपना बसा-बसाया घर और व्यापार छोड़कर जान बचाने के लिये भागना पड़ा। उनके मुख से सुनें, "१९८४ की पहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवंबर को (जब इंदिरा गांधी की हत्या हुई थी) मेरे पड़ोसी, जिनसे मेरा अच्छा मेल था, और उनके साथ अजनबियों के एक झुंड ने हमारे घर को घेर लिया। उन्होंने ताले तोड़ डाले, खिड़कियों से आग लगाने की कोशिश की और घर को आग लगते ही हम अपनी छत से कूदकर पास के मारवाड़ी मित्रों के घर पहुंच गये। वहां से मैंने सेना के अपने एक मित्र को फोन किया।"

मित्र ने उनको वहां से बचा लिया और प्रह्लाद सिंह लुधियाना की ओर रवाना हुए। उस शहर में शरणार्थियों के लिये न कोई योजना थी, न संस्था। यही लुधियाना की गरिमा है। वह किसी से भीख नहीं मांगता और आशा करता है कि हर व्यक्ति अपने ही बलबूते पर खड़ा होगा। तो लुधियाना ने एक ही सहायता दी और वह थी लंगर से बंटता खाना। १९८४ के हुल्लड़ से सताये हुए कई सिख लुधियाने में आ पहुंचे। प्रह्लाद सिंह ने अपने रांची से आये हुए पुराने परिचितों से मिलकर फिर भूमि-प्रेम को जाग्रत् किया और ग्यारह एकड़ जमीन खरीद कर उसे कोओपरेटिव फार्म बना दिया। उस फार्म को सोचिये उन्होंने क्या नाम दिया होगा ? और कौन सा नाम दिया होगा सिवा 'रांची कॉलोनी' के! यह है मनुष्य का विशाल हृदय और कृतज्ञता! प्रह्लाद सिंह ने कहा, "हमने रांची में सब कुछ गंवा दिया, फिर से अकिंचन हो गये। लोग मुझसे पूछते थे कि क्या मैं फिर से पुरानी शान-शौकत पा सकूंगा! मुझे भगवान् पर श्रद्धा थी।" चार वर्ष तक दौड़ धूप करके उन्होंने दूरदर्शन के पुर्जे बनाने शुरू किये और बिजली के वोल्टेज स्टेबिलाईज़र्स बनाये और प्रभु-कृपा से व्यापार खूब अच्छा चला।

पटना के फ्रेज़र रोड पर नामी गिरामी 'मे फेयर' होटल के मालिक थे सतिन्दर सिंह। उन्हें भी १९८४ के हुल्लड़ ने पटना से भगाया था। उन्हें भी लुधियाना जैसे प्रगतिशील शहर ने पुकारा। वहां पहुंच कर उन्होंने 'हॉट ब्रेड' नामक दुकान खोली और अब वह फैशनेबल लोगों का अड्डा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन गयी है। सतिन्दर सिंह ने बताया कि उनकी सफलता का रहस्य है गुरु ग्रंथ साहब और अकाल पुरुष पर श्रद्धा जिन्होंने उन्हें दृढ़ संकल्प-बल प्रदान किया और वे उनके बल पर परिश्रम करते रहे।

पटना शहर में ही पले यशपाल सिंह ने पंजाब को तभी देखा जब हुल्लड़ ने उन्हें अपनी जन्मभूमि से भगाया। संघर्ष करते-करते वे लकड़ी के जाने-माने व्यापारी बन गये। वे कहते हैं, "तुम अरदास (प्रार्थना विनती) की शक्ति को नहीं जानते। जब हम गुरु ग्रंथ साहब के सामने झुकते हैं और उन पर भरोसा रखते हैं तो गुरु स्वयं हमारे साथ-साथ चलते हैं। हम पहली बार शरणार्थी नहीं बने हैं। मेरे पिता पाकिस्तान गुजरांवाला से बंटवारे के समय किसी तरह भारत में आ गये और पटना में उन्होंने घर बना लिया था। पटना शहर में हम बादशाह थे। लोग हमारी बहुत इज्जत करते थे। एक दिन अचानक चीखते-चिल्लाते लोग हमारी दुकान आ पहुंचे। उन्होंने दुकान में आग लगा दी। मेरे छोटे भाई को मारने की कोशिश की, लेकिन केवल उसकी कलाई में छुरी लगी।"

इंदौर शहर में मनजीत सिंह अपने बच्चों के साथ छत पर खड़े होकर कुछ दूर पर हो रहे शोर-गुल को देख रहे थे जब अचानक सारा दल उसके घर की ओर मुड़ा। उनका परिवार, मां, पिता, बहन, पत्नी और बच्चे सब सकुशल वहां से निकल आये किंतु वे कहते हैं, "हम निर्दोष थे। हमारे ऊपर हमला क्यों किया गया ? उस घिनौने खेल में हमारा हाथ न था फिर भी हमें सजा क्यों दी गयी ?"

आज वे लुधियाना में पंद्रह बसों के मालिक हैं। उनका शानदार दफ्तर है, फिर भी उन्हें अफसोस जरूर है कि लुधियाना के पंजाबियों ने उनकी सहायता नहीं की।

सभी शरणार्थी एक ही बात दुहराते हैं कि श्रद्धा का ही संबल उन्हें मुसीबत में खड़ा रख पाया था। गुरु की उपस्थिति और आशीर्वाद के बिना वे कुछ न कर पाते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह है भारत की विरल विरासत जो किसी अन्य राष्ट्र में पायी न जायेगी। यह श्रद्धा, भक्ति भारत की सबसे मूल्यवान् निधि है।

तो अब नयी पीढ़ी यूरोप के गुण ग्रहण कर रही है और अपनी संस्कृति की आधार-शिला पर दृढ़ खड़ी हैं। अब समय आया है जब भारत राष्ट्रों का मित्र और नेता बन जायेगा।

नये वर्ष के अवसर पर हम भगवान् से यही प्रार्थना करें कि वह शुभ मुहूर्त शीघ्र आये।

—अनुवेन

दैनन्दिनी

जनवरी

१. तुम्हारे लिये जो वर्ष समाप्त हो गया है, वह प्रगति का वर्ष था, जो वर्ष शुरू हो रहा है उसमें, की हुई प्रगति को सुस्थापित, पूर्ण और समग्र बनाना है।

२. जो सत्य के पथ पर बढ़ रहा है उसको कोई भूल कष्ट नहीं पहुंचा सकती, क्योंकि वह जानता है कि यह भूल सत्य-पथ पर अग्रसर होनेवाले जीवन की प्रारंभिक चेष्टा है।

३. शरीर की बीमारी हमेशा आंतरिक सत्ता के किसी असामंजस्य, किसी अव्यवस्था का अनुवाद, उसकी बाहरी अभिव्यक्ति होती है; जबतक यह आंतरिक अव्यवस्था ठीक नहीं हो जाती, तबतक बाहरी इलाज पूर्ण और स्थायी नहीं हो सकता।

४. शारीरिक कष्ट हमेशा ऐसे पाठ के रूप में आते हैं जो हमें समता सिखलाते हैं और यह प्रकट करते हैं कि हमारे अंदर कौन-सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीज इतने पर्याप्त रूप से शुद्ध और दीप्त है जो अप्रभावित रहे। समता में ही तुम उपचार पाते हो।

एक महत्त्वपूर्ण बात—समता का अर्थ उदासीनता नहीं होता।

५. सच्ची बीमारी भय है। भय को दूर फेंक दो तो बीमारी चली जायेगी। मेरी सहायता तुम्हारे साथ है।

अपने अस्वास्थ्य से प्रेम न करो और अस्वास्थ्य तुम्हें छोड़ देगा।

६. तुम्हारी सहायता के लिये श्रीअरविन्द की अनुकम्पा हमेशा मौजूद है, लेकिन तुम्हारी ओर से भी कुछ प्रयास आवश्यक है।

७. अगर शरीर नीरोग होने का निश्चय कर ले तो वह नीरोग हो जाता है। हम जिस उत्साह के साथ मन से मिथ्यात्व का त्याग करते हैं उसी उत्साह के साथ शरीर को बीमारी को त्यागना चाहिये।

८. अगर तुम्हारा अपनी कामनाओं पर कोई अधिकार नहीं है तो शक्ति काम नहीं कर सकती।

९. हमेशा अपनी आंतरिक अभीप्सा पर जोर दो; वह तुम्हारे हृदय में गहराई और स्थिरता प्राप्त करे; हृदय के साथ-साथ उसकी अभीप्सा के विकास द्वारा मन और प्राण की बाहरी बाधाएं अपने-आप हटती जायेंगी।

१०. भोजन के लालच पर विजय : अच्छे स्वास्थ्य की प्रतिज्ञा।

११. अचंचल रहना और एकाग्र होना, ऊपर से शक्ति को अपना काम करने देना, यह किसी भी बीमारी और हर एक बीमारी को ठीक करने का सबसे निश्चित तरीका है।

१२. क्षुब्ध होने और संघर्ष करने की जगह करने लायक सबसे अच्छी चीज है, अपने शरीर को निष्कपट प्रार्थना के साथ भगवान् को अर्पित करना, "तेरी इच्छा पूरी हो।"

१३. श्रद्धा रखो। ऐसा कोई रोग नहीं है जो भागवत कृपा द्वारा ठीक न हो सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४. यह मत सोचो कि तुम हमेशा के लिये असमर्थ हो गये हो, क्योंकि परम प्रभु की कृपा अनंत है।

१५. सत्य परम सामंजस्य और परम आनंद है।
समस्त अव्यवस्था, समस्त कष्ट मिथ्या है।
अतः यह कहा जा सकता है कि बीमारियां शरीर के मिथ्यात्व हैं, और परिणामस्वरूप, चिकित्सक उस महान् और अभिजात सेना के सिपाही हैं जो जगत् में सत्य की विजय के लिये युद्ध कर रही है।

१६. यह सच है कि चिकित्सा से बढ़कर श्रद्धा रोगमुक्त करती है।

१७. तेरी जय हो प्रभु ! सब विघ्नों पर विजय पानेवाले नाथ ! तेरी जय हो ! ऐसी कृपा कर कि हमारे अंदर कोई भी चीज तेरे कार्य में बाधक न हो।

१८. जिस समय हर चीज बुरी से अधिक बुरी अवस्था की ओर जाती हुई प्रतीत होती है, ठीस उसी समय हमें अपनी महती श्रद्धा का परिचय देना चाहिये और यह जानना चाहिये कि भगवत्कृपा कभी हमारा साथ नहीं छोड़ेगी।

१९. उषा निकलने से पहले अंधकार अत्यंत घना होता है।
स्वतंत्रता आने से ठीक पहले की परतंत्रता सबसे अधिक दुःखदायी होती है। परंतु श्रद्धासंपन्न हृदय में आशा की वह सनातन ज्योति जलती रहती है जो निराशा के लिये कोई अवकाश नहीं देती।

२०. बढ़ते चलो, निरंतर बढ़ते चलो।
सुरंग के अंत में है ज्योति . . .
युद्ध के अंत में है विजय।

२१. बोलो मत, करो।
घोषणा न करो, कार्यान्वित करो।

२२. हे नाथ, तूने हमसे कहा है : हार न मानो, डटे रहो। जब सब कुछ डूबता हुआ लगता है तभी सब कुछ बचा लिया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३. कोई मानव संकल्प भागवत संकल्प के सामने नहीं टिक सकता। आओ, हम अपने-आपको विवेक के साथ, पूरी तरह से भगवान् की ओर रखें। और, अंत में विजय निश्चित है।

२४. किसी चीज के बारे में डींग न मारो। तुम्हारे कार्य ही तुम्हारे लिये बोलें।

२५. हे नाथ, तूने हमारी श्रद्धा की परीक्षा लेने और हमारी सच्चाई को अपनी कसौटी पर कसने का निश्चय किया है। वर दे कि हम इस अग्नि-परीक्षा में से अधिक विशाल और अधिक पवित्र होकर निकलें।

२६. जानना अच्छा है,
जीना और भी अच्छा है।
होना—वही पूर्णता है।

२७. प्रश्न : सत्य क्या है ?
उत्तर : जो निष्कपट रूप से सत्य की सेवा करना चाहता है, वह सत्य को जान लेगा।

२८. भय कपट से आता है। अगर तुम आरामदेह जीवन, अनुकूल परिस्थितियां इत्यादि चाहो तो तुम शर्तों और सीमाओं को लगाते हो, और तब तुम भयभीत हो सकते हो।
लेकिन इसका साधना के साथ कोई संबंध नहीं।

२९. जब व्यक्ति ने भगवान् को पाने के लिये अपने जीवन का उत्सर्ग करने का निश्चय कर लिया हो, और अगर वह निष्कपट हो, यानी अगर संकल्प निष्कपट हो और उसका निष्कपटता के साथ पालन किया जाये तो बिलकुल किसी चीज से भयभीत न होना चाहिये, क्योंकि उसके साथ जो हो रहा है या होगा वह सब उसे इस सिद्धि तक छोटे-से-छोटे मार्ग द्वारा ले जायेगा।

३०. सौभाग्यशाली हैं वे लोग जो भविष्य की ओर छलांग मारते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो भी हो, तुम जो भी करो, भय को अपने ऊपर आक्रमण न करने दो। उसके जरा से स्पर्श पर भी सक्रिय हो जाओ और सहायता के लिये पुकारो। क्योंकि भय हमारे शत्रुओं में सबसे बड़ा है।

३१. हम कह सकते हैं कि यौवन है सतत विकास और अविच्छिन्न प्रगति और है क्षमताओं का, संभावनाओं का विकास, कर्मक्षेत्र का विकास और चेतना का प्रसार, और समस्त ब्योरों की उपलब्धि की ओर प्रगति।

(प्रकीर्ण)

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

[श्रीअरविन्द की बहुमुखी प्रतिभा से भारत के अधिकतर प्रगतिशील लोग अवश्य परिचित होंगे। कई उनके कवि-रूप से, कई उनके राजनीतिक विचारों से, कई उनके नाटककार रूप से, तो कई उनके गुरु गंभीर, दार्शनिक और योग-पथ के अन्वेषक के रूप से अवश्य परिचित होंगे। फिर भी, शायद कम ही लोग जानते हों कि वे बारह वर्ष तक पूर्ण रूप से एकान्तवासी थे और उसके बाद भी केवल पांच-छह आश्रमवासियों को उनके सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त था। उन भाग्यवान् आश्रमवासियों में श्री नीरदवरण भी थे। इन व्यक्तियों को बारह वर्षों तक श्रीअरविन्द के अभूतपूर्व व्यक्तित्व का निकट से परिचय प्राप्त हुआ था। उनकी महासमाधि के बाद नीरदवरण ने "श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष" पुस्तक में, बड़ी रोचक शैली में उन वर्षों का वर्णन किया है।

उस पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद कर, हिन्दीभाषी जनता को उसका लाभ देने का लोभ हम संवरण न कर पाये, अतः इस पुस्तक को हम अग्निशिखा में क्रमशः प्रकाशित कर रहे हैं। —सं०]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रत्याशित

वह देवों के जागरण के भी पहले की वेला थी

१९३८ का नवम्बर था, दर्शन का महीना। लगभग तीन महीने की प्रतीक्षा के बाद हमें अब कुछ सप्ताह बाद प्रभु का दर्शन मिलनेवाला था। हर दर्शन के बाद हम अगले दर्शन के लिये दिन गिनने लगते थे। हर ऐसा अवसर शाश्वत और उसकी शक्ति को हमारे अधिक निकट ले आता है। अतः हमारे जीवन में ऐसा हर अवसर महत्त्वपूर्ण पड़ाव होता है। जैसे-जैसे वह शुभ दिन नजदीक आता जाता है हमारे चेहरे भी मधुर स्मिति से दमकने लगते हैं और दर्शन से ठीक पहले के दिन सभी चेहरे मधुर मुस्कान से प्रदीप्त हो उठते हैं। जब मित्र सड़क पर मिल जाते हैं तो उनमें बस एक शब्द का आदान-प्रदान होता है "कल"। अथवा सुखद प्रत्याशा के साथ मूक दृष्टि का आदान-प्रदान होता है। भोजनालय में भी यही गूंज छायी रहती है। तुम जहां कहीं जाओ, जिस किसी से मिलो, चर्चा का विषय बस एक ही होता है—गुरु के दर्शन का, उस शाश्वत क्षण का जो अमर है।

रही बात मेरी, तो वह कुछ और ही है। मैंने उनके साथ शाब्दिक बल्लम लड़ाये हैं, उनके विचारों को चुनौती दी है, उनके योग का मजाक उड़ाया है। लेकिन मैं जानता हूं कि जिस क्षण मैं उनकी शुभ उपस्थिति में जाऊंगा तो ये सब बातें भूल जाऊंगा, वे उतने ही मधुर होंगे जितने अपने पत्रों में होते हैं और अपनी परात्पर ऊंचाई से वही करुणा-भरा स्मित हम सब पर बिखेरेंगे और मेरा हृदय आनन्द और आश्चर्य से धड़का करेगा। फिर भी, मन सामान्य प्रथा के अनुसार हृदय की धुकधुकी से मुक्त न हो सकेगा।

इस प्रकार की आशा-प्रत्याशा की मनोदशा में दर्शन से पहले का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन (२३ नवम्बर) आ पहुंचा। सवेरे माताजी ने सबको आशीर्वाद दिया। वे महालक्ष्मी की करुणा और सुन्दरता का मूर्त रूप थीं। उन्होंने अपने स्मित से हमारे हृदय को प्रेम और पूजा-भाव से भर दिया। उन्होंने हमें उस स्थिति में तैयार कर दिया कि हम जाकर प्रभु के आगे खड़े हो सकें। हर दर्शन प्रभु के लिये एक अवसर होता था कि वे देख सकें कि हमने कितनी प्रगति की है और तदनुरूप हमें आगे बढ़ा सकें।

दूर-दराज देशों से लोग दर्शन के लिये आये हुए थे। उनमें से एक थीं अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति विलसन की सुपुत्री। उसने अमरीका में रहते हुए श्रीअरविन्द की 'गीता-प्रबंध' पढ़ी थी और पढ़ते ही मंत्र-मुग्ध हो गयी थी। वह इसके लेखक को देखने के लिये आतुर हो उठी और दूर देश अमरीका से यहां आयी। यह बात उसकी कल्पना के बाहर थी कि आज के इस भौतिकवादी युग में कोई ऐसी अद्‌भुत किताब लिख सकता है। वह मानों श्रीकृष्ण की आवाज सुन सकती थी—

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

गीता-प्रबंध उसके लिये बाइबिल बन गयी थी। उसने निश्चय किया कि ऐसे अद्‌भुत व्यक्ति के दर्शन वह अवश्य करेगी।

सारा दिन हंसी-खुशी में बीता। अधिकतर आश्रमवासी जल्दी सो गये ताकि दर्शन के लिये तैयार हो जायें। यह आश्रम के लिये बहुत बड़ा दिन था। सब जगह शांति और नीरवता का राज था। बस श्रीअरविन्द के कोने के कमरे में रोशनी थी। शायद वे 'सावित्री' के काम में जुटे थे क्योंकि इस समय पत्र-व्यवहार की वर्षा बंद थी। सवेरा होने को हुआ, पुराणी के कमरे में बिजली जली; उन्हें माताजी के स्नान के लिये पानी गरम करना था, क्योंकि साढ़े सात बजे दर्शन शुरू होनेवाला था। परंतु किसी को कोई शंका न थी कि इस भागवत मुहूर्त में रात की नीरवता के ऊपर कोई काली छाया मंडरा रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहरी नीरवता को भेदते हुए माताजी के कमरे की आपात्कालीन घंटी बजी। पुराणी दौड़कर माताजी के यहां पहुंच गये। उन्होंने कहा, "श्रीअरविन्द गिर गये हैं, जाकर डॉक्टर मणिलाल को बुला लाओ।" भाग्यवश वे दर्शन के लिये गुजरात से आये हुए थे। वे तुरंत आये और उन्होंने देखा कि श्रीअरविन्द अपने कमरे के फर्श पर लेटे हुए हैं। श्रीअरविन्द अपने कमरे से स्नानागार की ओर जा रहे थे और बीच में शेर की खाल के आसन से टकरा कर गिर गये। चिकित्सक ने प्रारंभिक जांच करके बताया कि उनकी दायीं जांघ की हड्डी टूट गयी है। चिकित्सक ने उनके सहायकों को बुलाने के लिये कहा। ऐसा लगता है कि 'सावित्री' की पंक्तियों को दुहराते हुए वे अपने कमरे से स्नानगृह की ओर जा रहे थे कि रास्ते में ठोकर खाकर गिर गये। शायद उस समय विरोधी शक्तियां खुश हो उठी हों कि "हमारे शत्रु गिर गये।" श्रीअरविन्द बिलकुल शांत रहे और उन्होंने उठने की कोशिश की। वह न हो सका तो वहीं फर्श पर चुपचाप यह सोचकर लेट गये कि जल्दी ही माताजी वहां आ जायेंगी। उधर माताजी को नींद में प्रबल प्रकम्पन हुआ और उन्हें लगा कि श्रीअरविन्द को कुछ हुआ है। वे तुरंत उठकर आयीं और उन्होंने श्रीअरविन्द को फर्श पर पाया। स्थिति की गंभीरता पहचानकर उन्होंने झट आपात्कालीन घण्टी बजा दी।

जब अन्य डॉक्टर आये तो उन्होंने देखा कि डॉ० मणिलाल श्रीअरविन्द के पैर की परीक्षा कर रहे हैं और माताजी श्रीअरविन्द के पास बैठी पंखा झल रही हैं। मुझे आंखों से जो दिखलायी दे रहा था उस पर विश्वास न होता था। एक ओर श्रीअरविन्द असहाय लेटे थे, दूसरी ओर माताजी के चेहरे पर गहरा दिव्य दुःख था। लेकिन थोड़ी ही देर में मैं अपने-आप में वापिस आ गया और डॉक्टर की सहायता करने लगा। मेरी चिकित्सक की दृष्टि ने देखा कि श्रीअरविन्द का सारा शरीर हट्टा-कट्टा और मजबूत है। उनके चेहरे पर मुस्कान तो थी परंतु जरा भौंचक्की-सी, उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझ में नहीं आ रहा था कि यह हो क्या रहा है। उनका सुगठित वक्ष, उनकी श्वेत, सुन्दर, इस्त्री की हुई धोती, चमकती हुए सुनहरी जंघा; उनको देखकर वैदिक हिरण्यमय पुरुष का विचार मेरे मन में कौंध उठा।

पांव की जरा-सी गति भी उन्हें कष्ट दे रही थी और उनके मुंह से 'आह' निकल रही थी, तुरंत माताजी पूछती थीं, "क्या आपको कष्ट हो रहा है ?" परंतु वे चिकित्सक के सीधे प्रश्न का उत्तर देने के सिवाय एक शब्द भी न बोल रहे थे। अंत में डॉक्टरों ने घोषित कर दिया कि उनकी जंघा की हड्डी टूट गयी है। श्रीअरविन्द ने सुन लिया पर कहा कुछ नहीं।

अब श्रीअरविन्द की सेवा के लिये एक छोटा-सा दल बनाया गया जिसमें डॉ० मणिलाल, तीन अन्य डॉक्टर, पुराणी—जिनका श्रीअरविन्द के साथ पहले से परिचय था—और चम्पकलाल, श्रीअरविन्द के पुराने सेवक थे। लेकिन अब एक और व्यक्ति की जरूरत थी। माताजी ने अपनी खिड़की में से झांका और नीचे डॉ० सत्येन्द्र दिखलायी दिये। वे अपने दन्त चिकित्सालय के दरवाजे पर खड़े किसी से बातें कर रहे थे। माताजी ने कहा, "यह अच्छा चुनाव है, मैं सत्येन्द्र को लेती हूं।"

अगला कदम था पैर पर पलस्तर लगाना। साधक दुरैस्वामी के मित्र डॉ० राव, जो कडलोर के हस्पताल के अध्यक्ष थे, उन्हें बुलाया गया। हमें आशा नहीं थी कि पांडिचेरी का हस्पताल हमें आवश्यक चीजें दे सकेगा। पुराणी स्थानीय सरकारी फारमेसी से प्लास्टर ऑफ पैरिस ले आये। अब प्राथमिक सहायता के रूप में पांव पर पलस्तर लगा दिया गया। दूसरी कठिनाई थी प्रभु को अपने बिस्तर पर पहुंचाना। यह काफी कठिन काम था, इसमें पुराणी, चम्पकलाल और सत्येन्द्र के हट्टे-कट्टे शरीर बहुत काम आये।

दो घंटे बीत गये। सारे आश्रम में समाचार फैलते देर न लगी। सैकड़ों लोग दर्शन की प्रतीक्षा में थे, उन पर मानों बिजली गिरी। सचाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानने के लिये सभी आश्रम के प्रांगण में इकट्ठे हुए, प्रभु के अतिशीघ्र स्वास्थ्य-लाभ की प्रार्थना कर भारी हृदय के साथ घर लौटे। कुमारी विलसन ने इसे नियति का खेल मानकर चुपचाप स्वीकार कर लिया। करुणामयी माताजी ने शाम को भक्तों का दुःख कुछ कम करने के लिये सबको दर्शन दिया। उन्होंने अपने एक स्मित से, एक स्पर्श की शक्ति से भक्तों के दुःख को पोंछ दिया।

अब हमारे पास कोई काम तो था नहीं, बस बैठे नजर रखते थे कि किसी काम के लिये जरूरत न पड़ जाये। मेरी समझ में न आ रहा था कि आखिर यह हो कैसे गया। मुझे याद हो आयी कि मुझे एक पत्र में श्रीअरविन्द ने लिखा था कि मैंने रोग और मृत्यु पर काफी अधिकार पा लिया है परंतु दुर्घटना फिर भी संभव है। परंतु सबसे अलग-थलग, एकान्त में रहते हुए, बाहर की सभी मुश्किलों से दूर, और आंतरिक रूप से सभी वैश्व शक्तियों के स्वामी को इतने अप्रत्याशित रूप से दुर्घटना का सामना करना पड़ा, यह बात हमारी समझ से बाहर थी। बाद में स्वयं श्रीअरविन्द ने हमें बतलाया कि यह दुर्घटना क्यों और कैसे हुई। शक्तियां बहुत ही चालाक थीं, उन्होंने ऐसा समय चुना जब माताजी आराम करने चली गयी थीं और देवता सो गये थे। उन्होंने नारकीय प्रहार करने के लिये यह समय चुना जब विरोधी शक्तियां भली-भांति जाग रही थीं। यह सचमुच अप्रत्याशित की घड़ी थी!

सवेरे के स्वच्छ प्रकाश में मैं श्रीअरविन्द को भली-भांति देख सकता था। श्रीअरविन्द बिस्तर पर निष्कम्प, सीधे लेटे हुए थे। मैंने मन ही मन कहा—"वे शायद मधुर निद्रा का आनंद ले रहे हैं क्योंकि रात भर तो सो नहीं पाये, या वे यूं ही चुपचाप लेटे तीव्र व्यथा को समता से सह रहे हैं।" बाद में उन्होंने बतलाया कि दूसरी बात ठीक थी। श्रीअरविन्द सारे समय समाधिस्थ मालूम होते थे, बीच-बीच में जब माताजी आ जाती थीं, कुछ पूछतीं या कोई पेय देती थीं तभी उनके शरीर में जीवन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्षण दिखलायी देते थे। अब मैं उन्हें बहुत नजदीक से देख सकता था। यहां वे पिछले बारह वर्षों से अकेले रहते थे। उसके बाद तो इस कमरे में बहुत परिवर्तन हो गये हैं, पहले के कमरे की अब बस मद्धिम याद बनी है। वह लकड़ी का पलंग जिस पर श्रीअरविन्द लेटे हुए थे, काफी चौड़ा था। ऊपर का हिस्सा कुछ अधिक चौड़ा था; उस पर उनका विशाल ज्योतिर्मय शरीर भव्य दीखता था और सुनहरे लहराते बाल उसकी भव्यता को और ज्योतिर्मय बना रहे थे। उनका सारा कमरा बहुत ही सादे ढंग से सजा हुआ था, महंगी चीजों में बस एक सुन्दर कालीन बिछा था। कमरे के दो छोरों पर दो छोटी डिब्बेनुमा निचली मेजें थीं। बीच में एक अर्ध-गोलाकार मेज थी जिनपर कापियां तथा कागज बिखरे पड़े थे। एक बड़ी आलमारी थी जिसके पहले तख्ते पर "आर्य" की सजिल्द फाइलें थीं, दूसरे तख्ते पर शेक्सपीयर, शैली इत्यादि के संकलन तथा श्रीअरविन्द के पास भेंट में आयी डॉ० राधाकृष्णन, जेम्स कज़िन्स आदि की पुस्तकें थीं। दो चित्र थे, एक चीनी दूसरा अमिताभ बुद्ध का जिसमें वे हाथ में कमल लिये खड़े हैं। नक्काशीदार लकड़ी की कुछ चीजें थीं और श्रीअरविन्द के पलंग के सामने माताजी के लिये एक सोफा था। पास ही माताजी का कमरा था जिसमें आराम की बस एक ही चीज थी, एक आराम-कुर्सी जिस पर श्रीअरविन्द कुछ आराम कर सकते थे।

डॉ० मणिलाल नाश्ता करके सीधे श्रीअरविन्द के पास आ जाते और उनका हाल पूछते। श्रीअरविन्द का हर उत्तर संक्षिप्त होता। समाचार पाते ही डॉ० राव आ गये और सब कुछ सुनकर उन्होंने कहा कि उनके एक मित्र डॉ० नरसिंह अय्यर हड्डी के विशेषज्ञ हैं। माताजी की स्वीकृति लेकर वे उन्हें लेने के लिये मद्रास चले गये। उनके जाते ही हम उनके लौटने की प्रतीक्षा करने लगे, घण्टे और मिनट गिनने लगे। किसी की गाड़ी की आवाज सुनायी देती और हम सब दौड़कर खिड़की से झांकते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि कहीं नरसिंह तो नहीं आ रहे। आज पांडिचेरी जो है, १९३८ में उससे बहुत भिन्न था। गाड़ियों की संख्या बहुत ही सीमित थी, वैसे हम उन गाड़ियों को बिना देखे हार्न की आवाज से पहचान लेते थे, लेकिन हमारी व्याकुल प्रत्याशा हर गाड़ी की आवाज पर हमें खिड़की तक दौड़ा लाती। डॉ० मणिलाल हमें पिता की तरह डांट देते कि चिंता न करो। उनकी आयु और अनुभव ने उन्हें कुछ समता सिखा दी थी। हमारे दिव्य लेंगी श्रीअरविन्द मानों इस मामले में कोई रस न ले रहे थे और चुपचाप लेटे हुए थे। डॉ० मणिलाल कुछ पूछते तो दो-एक शब्दों में उत्तर दे देते थे। बाकी हम लोग कमरे में छाया की तरह घूम रहे थे। बीच-बीच में माताजी देखने के लिये आ जाती थीं और मधुर स्मित के साथ पूछतीं, "क्या आपको कष्ट हो रहा है ?" बस तभी श्रीअरविन्द के मुख के भाव कुछ परिवर्तित होते। आखिर बहुत प्रतीक्षा के बाद हमें सूचना मिली कि डॉक्टर आ गये हैं। शाम हो गयी थी, उन्होंने बतलाया कि वे अपने एक मित्र निष्णात रेडियोलौजिस्ट को अपने साथ लाना चाहते थे। उसकी तलाश हुई, उसने कहा, तुम चलो मैं कुछ देर बाद आ जाऊंगा।

अब कमरा गतिशील हो उठा। पलस्तर काट कर अलग किया गया और विशेषज्ञ ने आ कर पैर की परीक्षा की। उसने कहा कि निश्चित रूप से अस्थिभंग है लेकिन वह एक्सरे की प्रतीक्षा करेगा। माताजी ने विशेषज्ञ की तरह उससे बहुत से पेचीदा प्रश्न पूछे और डॉक्टरी के बारे में माताजी के इस तकनीकी ज्ञान से चिकित्सक हक्का-बक्का रह गया। इधर श्रीअरविन्द अपने बिस्तर पर चुपचाप बैठे साक्षी-भाव से, कभी इसके तो कभी उसके चेहरे के भाव को बड़ी तीव्रता से पढ़ रहे थे, लेकिन एक शब्द भी न बोल रहे थे! माताजी ने चिकित्सक की राय उन्हें बतलायी। उन्होंने सारा मामला माताजी पर सौंप दिया। वे जो भी निश्चय लेंगी प्रभु उसे स्वीकार करेंगे। अपने प्रति श्रीअरविन्द के इस उदासीन व्यवहार ने मुझे चक्कर में डाल दिया। वे, जो मेरे रोगियों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय में मुझे हमेशा एकदम ठीक-ठीक सलाह दिया करते थे, आज अपने बारे में ऐसे विकट समय में एकदम चुपचाप बैठे हुए हैं! दर्शक की भांति विनोदपूर्ण मुद्रा में बैठे हुए, चमकती आंखों वाले, स्मितमुखी एक निष्कपट बालक सदृश दीख रहे थे और उनका सारा शरीर देवदूत-समान प्रदीप्ति से जगमगा उठा था।

लगभग ११ बजे रेडियोलौजिस्ट अपनी एक्सरे मशीन लेकर आ गये और हम सब काम में लग गये। वह बड़ा तेज-तर्रार युवक था जिसमें आत्मविश्वास भरा था। वह झट अपने काम में जुट गया—उसने एक्सरे लिये और रिपोर्ट तुरंत ले आया। इससे हमें कुछ राहत मिली। लेकिन उसका निदान हमारे लिये एक जोरदार प्रहार था। एक्सरे माताजी को दिखलाये गये जिससे पता लगा कि दाहिने घुटने से ऊपर की हड्डी टूट गयी थी और दो खण्ड आपस में जुड़ गये थे। डॉक्टर और रेडियोलौजिस्ट दोनों बहुत गंभीर हो गये। इस समय जोर डालकर ठीक करने का प्रयास करना बुद्धिमत्ता न होगा। डॉक्टरों ने कहा—"हमें इसे ऐसा ही छोड़ देना होगा और पलस्तर लगाना होगा। रोगी को कई सप्ताह तक बिस्तर पर ही रहना पड़ेगा, कुछ समय बाद विशेषज्ञ फिर देखने आयेगा और आगे का कार्यक्रम ठीक करेगा।

अन्य सभी डॉक्टरों ने छुट्टी ले ली, अकेले डॉ० मणिलाल रोगी की देखभाल करने के लिये रह गये।

एक्सरे प्लेट्स कई वर्षों तक श्रीअरविन्द के कमरे में रहीं। एक दिन माताजी ने कहा, "इन्हें यहां से हटा दो।" मैंने उन्हें अपनी चीजों के साथ रख दिया, लेकिन बाद में ढूंढ़ने पर भी वे मुझे कहीं न मिलीं!

एक बात तो मुझे कहनी ही चाहिये कि गिरने के समय से लेकर डॉक्टरों के जाने तक श्रीअरविन्द असाधारण रूप से चुपचाप रहे, मानों उन्हें तो कुछ हुआ ही नहीं था। अपनी स्थिति के बारे में कोई प्रश्न नहीं, कोई चिन्ता नहीं, कोई शिकायत नहीं, डॉक्टर के आदेश को चुपचाप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान लिया। इस अवस्था को देखकर डॉ० राव ने कहा कि श्रीअरविन्द एक आदर्श रोगी थे। इसी तरह से उन्होंने लेले के आदेश को स्वीकार किया था कि सब विचारों को अस्वीकार करो। . . .

अगले दिन डॉ० मणिलाल को माताजी का अप्रत्याशित गर्जन सहन करना पड़ा। डर के मारे हमें लगा कि हमारे अपने हृदय रुक न जायें। वह महाकाली का कोप था। माताजी को ऐसा तो मैंने कभी न देखा था। श्रीअरविन्द चुपचाप अपने बिस्तर पर लेटे थे। माताजी कमरे में आयीं और मणिलाल से पूछा, "हड्डी टूटने के बारे में तुम्हारी क्या राय है।" मणिलाल को सच्ची बात कहते संकोच हो रहा था। उन्होंने टाल-मटोल करते हुए कहा। माताजी फूट पड़ीं और गरज कर कहा—'छिपाओ मत। हमें सच्ची बात मालूम है।'' तब मैंने एक ऐसी विरल चीज देखी जिसे मैं कभी न भूल सकूंगा। श्रीअरविन्द के सामने माताजी ने फर्श पर लेटकर उन्हें साष्टांग प्रणाम किया, संभवतः वे उनसे प्रार्थना कर रही थीं। इस प्रार्थना से मैंने स्थिति की गंभीरता को जाना। इससे पहले माताजी ने गंभीरता का कोई चिह्न न दिखलाया था। श्रीअरविन्द ने गंभीरता और शांति के साथ नीरव प्रार्थना सुन ली।

अब सेवकों का एक दल बनाया गया जिसमें सबने अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार समय बांट लिया। पुराणी ने अपने लिये ऐसा समय चुना जो हम में से किसी के लिये सुविधाजनक न था—रात के बारह बजे का! काम के तौर पर हमें कुछ करना न था क्योंकि श्रीअरविन्द को हमेशा बिस्तर पर रहना पड़ता था, जरा भी हिले-डुले बिना पलंग पर लेटे रहना पड़ता था। हां, किसी का उनके पास रहना जरूरी था ताकि अगर किसी चीज की जरूरत हो तो वे बुला सकें। पूरे दल की तो कभी-कदास ही जरूरत पड़ती थी, जैसे एक ही स्थिति में बहुत देर तक लेटे रहने के बाद शरीर की अवस्था को थोड़ा बदलना पड़ता था। जो अभी तक केवल माताजी के साथी थे और जिनके एकमात्र सेवक थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चम्पकलाल उन्हें औरों को भी उस मंदिर में प्रवेश देना पड़ा। परिस्थितियों ने एकांत की परिधि को तोड़ दिया और उनके जीवन का नक्शा ही बदल गया।

श्रीअरविन्द ने स्थिति की नवीनता और इर्द-गिर्द के लोगों को पहचानना शुरू किया। धीरे-धीरे हमारा भय और संकोच भी कम होने लगा। डॉ० मणिलाल इस बारे में बहुत सहायक थे क्योंकि वे महाराजा की सेवा में रह चुके थे और महान् लोगों के साथ व्यवहार करना जानते थे। यहां भी उन्होंने अपनी विनीत डॉक्टरी क्षमता और बालसुलभ भक्तिमय उत्साह का उपयोग किया। हममें से कोई भी खाने के लिये भी वहां से दूर न जाना चाहता था हालांकि वहां करने के लिये कुछ भी न था। अनभ्यस्त स्थिति में रहने के कारण श्रीअरविन्द को पीड़ा और असुविधा तो जरूर होती होगी परंतु वे किसी को तंग न करना चाहते थे; अतः किसी को न बुलाते थे। जहांतक मुझे याद है केवल एक बार रात को बहुत टीस उठ रही थी, तब डॉक्टर को बुलाया गया था। धीरे-धीरे दिन सुहावने और गुलाबी होते गये जब प्रभु ने बोल-चाल शुरू कर दी।

माताजी ने एक पहियेदार गाड़ी बनवायी जिस पर श्रीअरविन्द का भोजन उनके पास लाया जा सकता था। वे अपने-आप खाना सजाकर मेज को उनके पास खींच लाती थीं और भोजन अपने हाथ से ही परोसती थीं। पहले दिन जब हम माताजी की गतियों को जानते न थे, भोजन की गाड़ी को चलाने के लिये दौड़ पड़े। उन्होंने मधुर मुस्कान के साथ श्रीअरविन्द से शिकायत की—"ओह ! ये लोग मेरा काम छीन लेना चाहते हैं !" लज्जित होकर हम पीछे हट गये और हमने यह पाठ सीख लिया कि बहुत अधिक उत्साह दिखाना भी अच्छा नहीं है! पहले श्रीअरविन्द तीन बार भोजन करते थे। सवेरे का नाश्ता बहुत हल्का होता था। उस समय चम्पकलाल और मैं उपस्थित रहते थे। एक दिन माताजी की इच्छा हुई कि मुझे कुछ दें। उन्होंने पूछा, "क्या तुम्हें केले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसंद हैं?" मैंने तुरंत उत्तर दिया, "मां, वे मुझे नापसन्द नहीं हैं।" माताजी और श्रीअरविन्द मुस्कुराये पर मुझे केले न मिले। माताजी के साथ यह मेरा पहला मजाक था!

सवेरे का नाश्ता जल्दी ही बंद हो गया। इतने सवेरे उन्हें भूख न लगती थी। यहां मैं चाय के बारे में छोटी-सी, पर मजेदार घटना सुनाता चलूं। यह जानी-मानी बात थी कि श्रीअरविन्द चाय के शौकीन थे और रोज एक कप चाय अवश्य पिया करते थे। डॉ० मणिलाल ने सुझाव दिया कि श्रीअरविन्द चाय के साथ-साथ 'मारमित' पेय का भी एक कप अवश्य लिया करें। लेकिन श्रीअरविन्द दोनों नहीं लेना चाहते थे। मुझे याद नहीं कि उन्होंने 'मारमित' कभी लिया हो, लेकिन चाय का एक कप रोज लेते थे। इस घटना को याद रखने का एक और कारण यह भी है कि मैं स्वयं शुरू से और अब भी चाय का शौकीन रहा हूं, या यूं कहना ज्यादा ठीक होगा कि मुझे लत-सी पड़ गयी है। लेकिन चाय पीने का श्रीअरविन्द का तरीका जरा ज्यादा निराला था, वे 'फीडिंग कप' से चाय पिया करते थे! मुझे आश्चर्य होता है कि क्या कोई इस तरह के पेय 'फीडिंग कप' से पीकर आनन्द उठा सकता है! दुर्घटना से पहले जब कभी हम श्रीअरविन्द के कोने के कमरे से चम्मच के खटकने की आवाज सुनते तो कह उठते थे, "श्रीअरविन्द चाय पी रहे हैं!" एक दिन उन्होंने अचानक घोषणा कर दी, "अब मैं चाय नहीं लिया करूंगा।" उन्होंने इतनी पुरानी आदत को क्षण भर में छोड़ दिया! इसी सिलसिले में मुझे एक और चीज की याद आती है। यह उनके सिगार पीने से संबंध रखती है। सिगार पीने की श्रीअरविन्द की पुरानी आदत थी, प्रायः हमेशा ही पाइप उनके होठों से लगा रहता था। एक बार गांधीजी का सुपुत्र उनसे मिलने आया तो उसने पूछा—"आप सिगार के व्यसनी क्यों हैं?" श्रीअरविन्द ने तुरंत उत्तर दिया, "तुम्हें न पीने का व्यसन क्यों है?" जब माताजी आश्रम की व्यवस्था अपने हाथ में ले रही थीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रमवासी सिगरेट पीने के अभ्यस्त थे। वे चाहती थीं कि आश्रमवासी सिगरेट न पिया करें। बस श्रीअरविन्द ने अपना सिगार एक ओर रख दिया। बिना किसी ननुनच के इतनी पुरानी आदत क्षण भर में समाप्त!

अब हम अपनी कहानी जारी रखें। जब सब कुछ ठीक-ठाक हो गया और हमारे सबके काम निश्चित हो गये तो शाम को 'सांध्य वार्ताएं' शुरू हुईं। श्रीअरविन्द बिस्तर पर लेटे-लेटे बड़े धीमे स्वर में बोला करते थे। पुराणी के सिवा सभी उनके पलंग से एकदम पास आकर उनकी मधुर वाणी सुना करते थे। सिर्फ पुराणी संरक्षक की भांति दूर खड़े पहरा देते रहते थे। श्रीअरविन्द बोलते समय किसी की ओर न देखते थे।

भोजन की समस्या आसानी से सुलझ गयी। अब प्रश्न आया उन्हें स्नान कराने का। हमारे सामने और कोई विकल्प न था। उन्हें बिस्तर पर ही स्पंज स्नान दिया जाता था। और डॉ० मणिलाल को यह सम्मान मिला कि दिव्य शरीर को साबुन, पाउडर आदि से साफ करें।

एक और समस्या थी। हमेशा एक ही स्थिति में रहने के कारण पेट ठीक रखना कठिन हो गया। बहुत-सी दवाओं का सुझाव दिया गया। स्वयं श्रीअरविन्द ने कहा, "मुझे दवाइयों की आदत नहीं है।" उन्होंने हमें समझाया कि बरसों से उन्होंने किसी दवाई का सेवन नहीं किया। वे अपनी सभी बीमारियों का इलाज आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा करते थे। हमने त्रिफला का सुझाव दिया और कहा कि यह तो दवाई नहीं है, इसमें तीन फलों का चूर्ण है। यह भी रद्द हो गया तो हमने पूछा, आप अपनी शक्ति क्यों नहीं लगाते ?" श्रीअरविन्द ने कहा, "ऐसी बात नहीं है कि मैं शक्ति नहीं लगा रहा, लेकिन लेटी हुई अवस्था में शरीर उस शक्ति को ग्रहण करने का अभ्यस्त नहीं है।" फिर उन्होंने मुस्कुरा कर यह वाक्य जोड़ दिया, "शरीर तामसिक अवस्था में पड़ा है, इस स्थिति में शक्ति का प्रयोग करने में मुझे बहुत आलस आ रहा है।" उनकी इस निश्छल स्वीकृति को सुनकर हम सब हंस पड़े। लेकिन कुछ ही समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह शरीर ने उस अवस्था में भी शक्ति को प्रत्युत्तर देना सीख लिया और इस विषय में फिर और कोई कष्ट उन्हें न उठाना पड़ा। निस्संदेह शरीर की हालत में कुछ उतार-चढ़ाव तो होता ही रहता था और वे कहा करते थे—"यह तो बहुत अधिक या बहुत कम सहायता करने वाली कहानी जैसी बात हो गयी।" जब हम इस बात का तात्पर्य न समझ पाये तो उन्होंने चीज खुलासा कर के बतायी। इसके पीछे एक कहानी थी—योरप युद्ध के समय की बात है, दो सैनिक घोड़े पर बैठे भागे जा रहे थे और शत्रु पीछे लगा था। उनमें से एक जरा ठिगना और मोटा-ताजा था। अचानक वह घोड़े पर से गिर पड़ा, उसे दुबारा घोड़े पर चढ़ने में बहुत कठिनाई हो रही थी और शत्रु भागे चले आ रहे थे। उसने प्रार्थना की, "हे भगवान्! मुझे जीन पर चढ़ा दे" और एक छलांग लगायी और दूसरी ओर जा गिरा। वह चिल्लाया, "हे भगवान्! तूने जरा ज्यादा ही सहायता कर दी!" तब से यह परिहास हम लोगों में आम कहावत बन गया।

एक छोटी-सी तकलीफ ने हमें परेशान कर दिया। काफी जल्दी शय्या-व्रण निकल आये। उनके ठीक होने में कुछ समय लगा। आगे से वे न आने पायें इसके लिये रबर के गद्दों का उपयोग किया गया। श्रीअरविन्द रोज इसके बारे में पूछते रहते थे। इसके बाद उन्होंने अपने शरीर के स्वास्थ्य के बारे में पूरा रस लेना शुरू कर दिया।

अभीतक जो कुछ कहा गया उससे स्पष्ट होगा कि गुरु और शिष्य के व्यक्तिगत संबंध बनते जा रहे थे; एक तरह के भय तथा दूरी का भाव दूर होता जा रहा था और इस मामले में डॉ० मणिलाल हमारे अग्रसर थे। उनकी उम्र, डाक्टरी अनुभव तथा बच्चों जैसे स्वभाव द्वारा, ऊपर से दुराग्रह तथा संकोची दीखनेवाले प्रभु का सारा संकोच पिघल गया। भगवान् के शरीर की चिकित्सा करनेवाले पर भगवान् की कृपा हमेशा रहती है। फिर भी अपने व्यक्तिगत संबंध में श्रीअरविन्द के निर्वैयक्तित्व का पुट हमेशा बना रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब मेरे लिये एक कठिन स्थिति पैदा हो गयी। डॉ० मणिलाल को जाना था। वे दर्शन के लिये कुछ दिनों की छुट्टी लेकर आये थे और यहां काफी दिन रह गये थे। अब और छुट्टी न मिल सकती थी, और न वह अनिवार्य थी क्योंकि सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था, सब कुछ योजना के अनुसार था। संकटाकीर्ण समय बीत चुका था, हमें आंखें मूंद कर चलते जाना था और जहां तक हम देख सकते थे कोई कठिनाई न थी। इसके अतिरिक्त श्रीअरविन्द की शक्ति बराबर लगी हुई थी। डॉ० मणिलाल ने हमें विश्वास दिलाया कि पलस्तर कटने पर वे फिर आ जायेंगे। लेकिन मैं आसानी से माननेवाला न था। भागवत भार को अपने कमजोर कंधों पर लेने को एकदम प्रस्तुत न था, न ही मेरे अंदर ज्ञान, बल या अनुभव ही था। किसी बड़े आदमी की उपस्थिति में चीजें ज्यादा आसान हो जाती हैं। उसके पीठ फेरते ही कठिनाइयों का झुण्ड खड़ा हो जाता है, क्योंकि विरोधी शक्तियां तुरंत नौसिखिये पर टूट पड़ती हैं। अतः मैं उनसे बच्चे की तरह चिपट गया और प्रार्थना की कि वे इस तरह मुझे मंझधार में न छोड़ दें। माताजी ने भी मेरी ओर से कहा, परिणाम-स्वरूप वे कुछ दिन और रह गये। श्रीअरविन्द सब कुछ चुपचाप देखते रहे। कुछ दिनों के बाद मुझे उत्साहित कर वे अपने परिवार तथा नौकरी के कारण वापिस चले गये। उनका परिवार उनकी बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा था और बार-बार लौट आने के लिये आग्रह कर रहा था। जो भागवत कृपा पर विश्वास करते हैं भगवान् हमेशा उसकी सहायता करते हैं और सचमुच उनके लिये घबराने का कोई कारण नहीं होता। प्रभु स्वयं अपना ख्याल रख रहे थे। बस एक बार जब मैं दोपहर को सो रहा था, मुझे बुलाया गया। श्रीअरविन्द ने मानों क्षमा चाहते हुए मुस्कुरा कर कहा, "ओह, कोई बड़ी बात नहीं है, घुटने में कुछ देर से दर्द हो रहा है। शायद शरीर की स्थिति में कुछ गड़बड़ हो गयी है।" मैंने स्थिति ठीक करने की कोशिश की, लेकिन सफलता न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिली, फिर भाग्यवश 'स्लिंग' के इधर-उधर करने से उनको राहत मिल गयी और जब उन्होंने कहा कि "हां, अब ठीक है" तब मैंने चैन की सांस ली। लेकिन उन्हें दर्द सचमुच बहुत हो रहा होगा, अगर बात जरा-सी होती तो वे मुझे कभी न बुलाते।

चीजें ठीक चल रही थीं। हमारे दिनों पर कोई काली छाया न पड़ रही थी। हम खूब खुश रहते। प्रभु के सान्निध्य में हंसते, बतियाते हमारे दिन हंसी-खुशी बीत रहे थे। हम उस दिन का बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रहे थे जब प्रभु के पैर का पलस्तर खुलेगा। लोगों ने पूछना शुरू कर दिया कि फरवरी के दर्शन की कोई संभावना है या नहीं। दर्शन की तो कोई संभावना थी ही नहीं, आश्रमवासियों के मन उदास हो गये। पैर की गंभीरता और रोगी की उम्र को ध्यान में रखते हुए हड्डी-विशेषज्ञ ने दस सप्ताह तक पलस्तर रखने की सलाह दी। उधर डॉ० राव की राय थी कि छह सप्ताह के बाद पलस्तर काट देना चाहिये, बिस्तर पर पड़े-पड़े रोगी को शय्या-व्रण से छुटकारा दिलाना मुश्किल होगा। प्रभु को इस तरह बिस्तर पर पड़े-पड़े देखने में उन्हें कष्ट होता था और विशेषज्ञ से उन्होंने बातचीत की। दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़े रहे। यद्यपि दस हफ्तों का समय बहुत होता है, लेकिन विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार हममें से कोई भी पलस्तर जल्दी उतरवा कर किसी भी तरह का कोई खतरा न मोल लेना चाहता था। डॉ० राव ने विशेषज्ञ से पूछा, "पहले पलस्तर हटा देने में क्या खतरा है। आखिर श्रीअरविन्द अद्वितीय, विलक्षण रोगी हैं, वे अच्छी तरह अपनी देखभाल करेंगे।" उनके बार-बार आग्रह करने पर अंत में माताजी ने श्रीअरविन्द पर फैसला छोड़ दिया। उन्होंने जवाब में कहा, "अगर मैं विलक्षण रोगी हूं तो मुझे अपने-आपको ठीक करने के लिये विलक्षण सावधानी भी बरतनी होगी। इस समय विरोधी शक्तियां बहुत सक्रिय हैं। अगर नींद में गलती से पैर की कोई अवांछनीय क्रिया हो गयी तो मुश्किल हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती है। चलो, दोनों चिकित्सकों का मान करते हुए हम पलस्तर दस और छह के बीच आठ हफ्ते रख दें।" डॉ० राव प्रत्यक्ष रूप से संतुष्ट हो गये। वैसे बाद में जिन जटिलताओं का सामना करना पड़ा उन्हें देखते हुए हम सबने यही सोचा कि डॉ० राव का मत ही ठीक था, लेकिन जो होना था हो चुका था।

हमारे बीच एक और अप्रत्याशित अतिथि आ गये। ये थे दक्षिण के किसी कॉलेज के प्रधानाध्यक्ष डा० सावूर। ये अभी नये-नये होम्योपैथ बने थे। मुझे पता नहीं कि इस गर्भगृह में उन्हें प्रवेश कैसे मिला। चूंकि होम्योपैथी के पास अच्छे निदान होते हैं, संभवतः इसी कारण उन्हें माताजी की स्वीकृति मिल गयी। यह सच है कि होम्योपैथी से श्रीअरविन्द को फायदा हुआ।

डॉ० मणिलाल चाहते थे कि मैं नियमित रूप से श्रीअरविन्द का हाल जतलाने के लिये उन्हें पत्र लिखूं। स्वयं माताजी ने भी इस बात पर मुहर लगा दी, लेकिन चूंकि सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था अतः मेरी ओर से भी पत्र लिखने में बहुत ढील हो जाया करती थी। संभवतः शिकायत माताजी के पास पहुंची और उन्होंने मेरी दीर्घसूत्रता की बात श्रीअरविन्द को बतलायी; परिणाम यह निकला कि मुझे नियमित पत्र डालने पड़े!

चिकित्सा-संबंधी काम के साथ-साथ मुझे कुछ बौद्धिक काम भी करना होता था। श्रीअरविन्द को रोज अखबार पढ़कर सुनाना उनमें से एक था, वे 'हिन्दू' पसंद करते थे। उनके सुनने के तरीके से मुझे बहुत मजा आता था। शायद हम सब अखबार इसी तरह पढ़ते हैं। वे मुझसे कहते—"सुर्खियां पढ़ना जरा।" जैसे-जैसे मैं पढ़ता वे बीच-बीच में टोकते, "हां, अंदर क्या लिखा है?" या "ओह! इसका कोई महत्त्व नहीं, आगे बढ़ो।" इस तरह १०, १५ मिनट के अंदर-अंदर मैं अखबार की सारी खबरें उनके सामने परोस कर रख दिया करता था। हां,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय सुनने में जरूर उनको विशेष रस था। दूसरा अखबार था 'द डेली मेल' जो उन्हें "कर्ली वी" के कार्टून के लिये प्रिय था, हालांकि बाद में वे कहते थे कि ये कार्टून अब बासी और शुष्क लगते हैं। शाम को पुराणी 'वीकली न्यू स्टेट्समैन एण्ड नेशन' तथा कभी-कभी 'मैनचेस्टर गार्जियन' पढ़कर उन्हें सुनाया करते थे। शाम का यह सिलसिला कुछ समय के बाद टूट गया। अखबारों के माध्यम से वे देश-विदेश की राजनैतिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का ब्योरा जान लेते थे। वैसे उनके लिये इन सब बातों का पता लगाना कौन-सी बड़ी बात थी जो सार्वभौम यौगिक चेतना में जीवन बिता रहे थे।

(क्रमशः)

—नीरदवरण

अतिमानव

इस नयी सृष्टि अतिमानवजाति का यह प्रादुर्भाव, अत्यधिक अनुमान और विवाद का विषय रहा है। अतिमानव कैसा होगा इस विषय में थोड़े-बहुत तर्कक रूपकों की कल्पना करने में मनुष्यों को आनंद आता है। किंतु "समान" ही "समान" को जानता है। दिव्य प्रकृति की चेतना को मूल रूप में प्राप्त करके ही व्यक्ति यह सोच सकता है कि उस दिव्य प्रकृति की अभिव्यक्ति का क्या रूप होगा। तथापि, जिन लोगों ने इस चेतना को अपने अंदर उपलब्ध कर लिया है वे सामान्यतः अतिमानव का वर्णन करने की अपेक्षा इस बात के लिये अधिक उत्सुक हैं कि स्वयं अतिमानव बन जायें।

फिर भी, यह बताना होगा कि अतिमानव निश्चित रूप में क्या नहीं होगा, ताकि मार्ग में आनेवाली कुछ भ्रांतियों से बचा जा सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरणार्थ, मैंने कहीं पढ़ा है कि अतिमानवजाति अपने मूल रूप में क्रूर तथा संवेदनहीन होगी। चूंकि अतिमानव दुःख-कष्टों से ऊपर होंगे, वे दूसरों के दुःख-कष्टों को कोई महत्त्व नहीं देंगे, वे उन्हें उनकी अपूर्णता और हीनता का लक्षण समझेंगे। निःसंदेह, जो ऐसा सोचते हैं वे अतिमानव और मानव के संबंध को उसी भाव से देखते हैं जिस भाव से एक मनुष्य अपने हीन साथी-प्राणियों, अर्थात्, पशुओं को देखता है। किंतु यह व्यवहार उच्चता का प्रमाण होना तो दूर रहा, अचेतनता और मूर्खता का एक निश्चित लक्षण है। यह बात इस तथ्य से स्पष्ट हो जाती है कि ज्यों ही मनुष्य ऊंचे स्तर पर पहुंचता है, वह पशुओं के प्रति दया अनुभव करने लगता है तथा उनकी दशा सुधारने का प्रयत्न करता है। किंतु इस बात में कि अतिमानव असंवेदनशील हो जाता है, सत्य का कुछ अंश अवश्य है, वह यह कि उस उच्चतर जाति में अहंभावयुक्त, दुर्बल और भावुक प्रकार की दया नहीं होगी जिसे मनुष्य उदारता कहते हैं। यह दया उतनी फलप्रद नहीं, जितनी हानिकारक है। इसका स्थान एक ऐसी प्रबुद्ध और सशक्त करुणा ले लेगी जिसका प्रयोजन केवल कष्टों का सच्चा इलाज करना होगा, न कि उन्हें स्थायी बनाना।

इसके अतिरिक्त, यह विचार इस बात पर प्रकाश डालता है कि पृथ्वी पर प्राणिक सत्ताओं के आधिपत्य का क्या रूप होगा। वे सत्ताएं अपनी प्रकृति में अमर हैं और अपनी क्षमताओं में मनुष्य से कहीं अधिक शक्तिशाली, किंतु वे अपनी संकल्पशक्ति में भगवान् की अटल विरोधिनी भी हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि विश्व में उनका कार्य भगवान् की प्राप्ति को तबतक टालते रहना है जबतक कि इस प्राप्ति के यंत्र, अर्थात्, मनुष्य सब बाधाओं को पार करने के लिये पर्याप्त रूप में पवित्र, सशक्त और पूर्ण नहीं हो जाते। बेचारी पीड़ित पृथ्वी को ऐसे अशुभ आधिपत्य की संभावना से सचेत कर देना शायद सर्वथा अनुपयोगी न हो।

जबतक अतिमानव स्वयं आकर मनुष्य को अपने सच्चे स्वभाव का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमाण न दे दे, प्रत्येक सद्भावनापूर्ण व्यक्ति के लिये बुद्धिमत्ता का काम यह होगा कि वह उस सबके बारे में सचेतन हो जाये जिसे वह सर्वाधिक सुन्दर, श्रेष्ठ, सत्य, पवित्र, उज्ज्वल तथा उत्कृष्ट समझता है; वह इस बात की अभीप्सा करे कि यह विचार संसार तथा अन्य व्यक्तियों के परम हित के लिये उसके अंदर चरितार्थ हो जाये।

—श्रीमां

आश्रम का उद्देश्य

मानवजाति की वर्तमान उपलब्धियों में से कोई भी, चाहे वे कितनी भी महान् क्यों न हों, हमारे लिये अनुकरण करने योग्य आदर्श नहीं बन सकतीं। मानव आदर्शों के परीक्षण-क्षेत्र के रूप में विशाल जगत् पड़ा है।

हमारा उद्देश्य बिलकुल भिन्न है और अगर अभी सफलता के अवसर बहुत कम हैं, फिर भी हमें विश्वास है कि हम भविष्य को तैयार करने के लिये काम कर रहे हैं।

मैं जानती हूं कि बाह्य दृष्टिकोण से हम जगत् की बहुत-सी वर्तमान उपलब्धियों से नीचे हैं, परंतु हमारा उद्देश्य मानव मानदण्डों के अनुसार पूर्णता नहीं है। हम किसी और चीज के लिये प्रयास कर रहे हैं जो भविष्य की है।

आश्रम की स्थापना इसीलिये की गयी है और उसका उद्देश्य भी यही है कि वह नये जगत् का पालना बने।

ऊपर की प्रेरणा, ऊपर की पथ-प्रदर्शक शक्ति और ऊपर की सर्जक-शक्ति नयी उपलब्धि के अवतरण के लिये कार्यरत है।

केवल अपनी त्रुटियों, अपनी अपूर्णताओं और अपनी असफलताओं के नाते आश्रम वर्तमान जगत् का है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानवजाति की वर्तमान उपलब्धियों में से किसी में वह शक्ति नहीं है जो आश्रम को उसकी कठिनाइयों में से बाहर निकाल सके।

आश्रम के सभी सदस्यों का पूर्ण परिवर्तन और अवतरण करते हुए 'सत्य' के 'प्रकाश' की ओर सर्वांगीण उद्घाटन ही उसे अपने-आपको चरितार्थ करने में सहायता दे सकते हैं।

निःसंदेह, यह बहुत कठिन कार्य है, लेकिन हमें इसे पूरा करने की आज्ञा मिली है और हम धरती पर केवल इसी उद्देश्य से हैं।

हम परम प्रभु की 'इच्छा' और 'सहायता' में अडिग विश्वास के साथ अंत तक चलते चलेंगे।

द्वार खुला हुआ है और उन सबके लिये हमेशा खुला रहेगा जो इस उद्देश्य के लिये अपना जीवन देने का निश्चय करें।

(१३ जून १९६४)

*

यहां कोई चीज ऐसी है जो बाहरी रंग-रूप से कहीं ज्यादा अच्छी है, हृदय और आत्मा में ऊष्मा भरे प्राणदायी सूर्य जैसी है।

यह सच्चा विवेक है और मैं तुम्हें बधाई देती हूं। जो केवल बाहरी रंग-रूपों को देखते हैं वे उनमें सूक्ष्म परंतु महत्त्वपूर्ण भेदों को नहीं पहचान पाते, जो सत्य और प्रकाशमय चेतना की उपस्थिति से आते हैं।

(११ जून १९६७)

*

यहां पर हमारा कोई धर्म नहीं है। हम धर्म के स्थान पर आध्यात्मिक जीवन को रखते हैं जो एक ही साथ अधिक सच्चा, अधिक गहरा और अधिक ऊंचा है, यानी, भगवान् के अधिक निकट है। क्योंकि भगवान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर चीज में हैं, परंतु हम उनके बारे में सचेतन नहीं हैं। यही वह विशाल प्रगति है जो मनुष्य को करनी चाहिये।

'श्रीमातृवाणी' खण्ड १३, पृ० १०५-१०६
(११ मार्च १९७३)

८ मार्च, १९५७ की वार्ता

निम्नलिखित कहानी श्रीमां ने एक 'शुक्रवार की कक्षा' में सुनायी थी। सामान्यतया तो यह बच्चों के पढ़ने के लिये ही थी।

एक बौद्ध कथा

आज भी मैं पढ़ नहीं सकती, इसलिये मैं तुम्हें एक कहानी सुनाऊंगी। यह एक बौद्ध कथा है, शायद तुम जानते होओ, यह आधुनिक है पर इसे प्रामाणिक होने का श्रेय प्राप्त है। मैंने इसे श्रीमती अलेग्ज़ांद्रा दाविद नील से सुना था, शायद तुम्हें मालूम हो वे सुविख्यात बौद्ध हैं, विशेषतः वे ल्हासा पहुंचनेवाली पहली यूरोपीय महिला थीं। उनकी यह तिब्बत-यात्रा बहुत संकटपूर्ण और रोमांचकारी थी। इस यात्रा की एक घटना स्वयं उन्होंने मुझे सुनायी थी। इस शाम मैं तुम्हें वही सुना रही हूं।

वे कुछ सहयात्रियों के साथ यात्रा कर रही थीं और वह एक काफिला-सा बन गया था। और तिब्बत जाने के लिये चूंकि हिन्द-चीन से होकर जाना अपेक्षाकृत अधिक आसान था, अतः वे उसी तरफ से जा रहे थे। हिन्द-चीन विशाल जंगलों से घिरा है और इन जंगलों में बाघ बहुतायत में पाये जाते हैं। इनमें से कुछ नर-भक्षी बन जाते हैं . . . और जब ऐसा होता है तो वे उसे "बाघजी" कहते हैं।

एक दिन काफी शाम बीते, जब वे घने जंगल के बीच में थे—किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरक्षित स्थान पर डेरा लगा सकने के लिये इस जंगल को पार करना जरूरी था—कि श्रीमती नील को ख्याल आया कि उनके ध्यान का समय हो गया है। उन दिनों वे निश्चित समयों पर ध्यान किया करती थीं, बिलकुल नियमित रूप से, बिना कभी चूके। और चूंकि उनके ध्यान का समय हो गया था, उन्होंने अपने साथियों से कहा : "यात्रा जारी रखिये, मैं यहां बैठकर ध्यान करूंगी और ध्यान समाप्त करके आप लोगों से आ मिलूंगी। इस बीच आप अगले पड़ाव तक पहुंचकर डेरा डालने की तैयारी करें।" "नहीं, नहीं, श्रीमतीजी, यह असंभव है, एकदम असंभव," एक कुली ने कहा—अवश्य ही उसने अपनी भाषा में कहा था, पर मैं बता दूं कि श्रीमती नील तिब्बतियों की तरह तिब्बती भाषा जानती थीं—"यह बिलकुल असंभव है, इस जंगल में 'बाघजी' हैं और यह उसके भोजन की तलाश में निकलने का समय है। हम आपको नहीं छोड़ सकते और आप यहां नहीं रुक सकतीं!" उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे उसकी परवाह नहीं, ध्यान सुरक्षा से ज्यादा जरूरी हैं। आप सब जायें, मैं यहां अकेली रहूंगी।"

अपनी इच्छा के बिलकुल विपरीत वे चल पड़े, क्योंकि श्रीमती नील से बहस करना असंभव था, जब वे किसी काम को करने का निश्चय कर लेती थीं तो उन्हें कोई चीज उसे करने से न रोक सकती थी। साथी चले गये और वे आराम से एक वृक्ष के नीचे बैठ गयीं और ध्यान में चली गयीं। कुछ देर बाद उन्हें किसी अप्रिय चीज की उपस्थिति का अनुभव हुआ। यह देखने के लिये कि वह क्या है उन्होंने आंखें खोलीं . . . देखा, तीन-चार कदम दूर, ठीक सामने 'बाघजी' ललचायी आंखों से देख रहा है! तो एक उत्तम बौद्ध की तरह उन्होंने कहा : "अच्छा, यदि इसी तरह मुझे निर्वाण की प्राप्ति होनी है तो ठीक है। बस, मुझे, जैसा कि उचित है, सम्यक् भाव में शरीर छोड़ने की तैयारी करनी चाहिये।" और बिना हिले, बिना जरा भी कांपे उन्होंने अपनी आंखें फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बंद कर लीं और ध्यान में, कुछ अधिक गहरे और प्रगाढ़ ध्यान में चली गयीं; संसार-माया से अपने-आपको पूरी तरह अलग करके उन्होंने अपने-आपको निर्वाण के लिये तैयार कर लिया . . .। पांच मिनट बीते, दस मिनट बीते, आधा घंटा बीत गया—कुछ नहीं हुआ। तब चूंकि ध्यान समाप्ति का समय हो गया था, उन्होंने अपनी आंखें खोलीं . . . वहां कोई बाघ न था! निश्चय ही शरीर को इतना निश्चल देखकर उसने सोचा होगा कि यह खाने योग्य नहीं है! क्योंकि लकड़बग्घे को छोड़कर अन्य जंगली पशुओं की तरह, बाघ भी मृत शरीर पर नहीं झपटता, उसे नहीं खाता। संभवत: उस निश्चलता से प्रभावित होकर वह चला गया हो (मैं यह नहीं कह सकती कि वह ध्यान की प्रगाढ़ता से प्रभावित होकर चला गया क्योंकि मेरे विचार में बाघ ध्यान के प्रति बहुत संवेदनशील नहीं होते!) उन्होंने अपने-आपको अकेला और खतरे के बाहर पाया। वे शांति से अपने मार्ग पर आगे बढ़ीं और डेरे पर पहुंचकर बोलीं : "लो, मैं यह रही।"

तो यह है मेरी कहानी। अब हम उनकी तरह ध्यान शुरू करते हैं, अपने-आपको निर्वाण के लिये तैयार करने के लिये नहीं (हंसी), बल्कि अपनी चेतना को ऊंचा उठाने के लिये।

'श्रीमातृवाणी' खण्ड ९; पृ० ५०-५२

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा. . . . . में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Hanuman Prasad Dharam Chand Dinodiya Welfare Trust
CALCUTTA

J. J. Charitable Trust
7C Kiron Shankar Rai Road
CALCUTTA - 1

Kayan Foundation
9/2 Hungerford street
CALCUTTA - 17

Pannalal Kandoi Seva Kosh
132/1 M. G. Road
CALCUTTA - 7

G. N. B. Motors Ltd.
8 Camac Street, 9th Floor
CALCUTTA - 700 017

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Sri Madhopur Vikas Parishad Trust
48 Dobson Road
HOWRAH - 711101

Sharad Seva Nidhi Trust
26 Amherst Street
CALCUTTA - 700009

Seth Chiranjilal Khaitan Trust
7 Keyatala Lane
CALCUTTA - 700009

Mamraj Jayatri Trust
6A Ironside Road
CALCUTTA - 700019

Dhanuka Charity Trust
Dhanseri House, 4A Woodburn Park
CALCUTTA - 700020

M/S ODC Carrier (P) Ltd.
15 India Exchange Place
CALCUTTA - 700001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Salarpuria Public Charity Trust
7, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 072

M/s Patton Ltd.
3C, Camac Street
CALCUTTA - 700 016

Naurangrai Lohia Charitable Trust
14A Loudon Street
CALCUTTA - 700 017

Charu Enterprises
42B Shakespear Sarani, 13, Shalimar Apt.
CALCUTTA - 17

Kitply Industries Ltd.
White House, 'A' Block, 4th Floor, 119 Park Street
CALCUTTA - 700 016

Eastern Enterprises Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Manav Seva Trust
CALCUTTA

Saria Charitable Trust
(J. P. Saria)
D-9 Kirti Nagar
NEW DELHI - 110 015

Shri Gopal Kamal Kumar
196, Jamuna Lal Bajaj Street
CALCUTTA - 700 007

Adukia Industrial Concern
17, Ganesh Ch. Avenue
CALCUTTA - 700 013

Sri Keshar Deo Saraf & Sons (HUF)
35, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 012

Maikal Fibres Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको उस नये प्रकाश के प्रति खोलो जो धरती पर उदित हुआ है और तुम्हारे सामने एक ज्योतिर्मय पथ खुल जायेगा।

— श्रीमां

WITH THE BEST COMPLIMENTS OF

S. L. Deorah Group of Enterprises

ASSAM TEA WAREHOUSING CORPORATION
INDIAN TEA STORAGE AGENCY
INDIAN TRANSPORT AGENCY
AURO IMPEX PRIVATE LIMITED
AURO LABORATORIES LIMITED
AURO BUSINESS CENTRE

Calcutta Office:

'SHIVANGAN' - Flat No. 2C, 53/1/2, Hazra Road
CALCUTTA - 700 019
Phone No.: 474 - 2059, 474 - 2060
Fax No.: 476 - 2348

Bombay Office:

408 Navratan, 69 P. DeMellow Road
BOMBAY - 400 009
Phone No.: 343 - 5341, 342 - 9027
Fax No.: 342 - 5022

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

श्रद्धा तथा अन्य चीजों को पाने का तरीका है उन्हें पाने पर आग्रह करना और उन्हें पाने तक मुरझाने, निराश या हतोत्साह होने से इंकार करना। यही वह तरीका है जिससे हर चीज तब से पायी जाती रही है जब से पृथ्वी ने अपने ऊपर विचारशील अभीप्सा करनेवाले प्राणियों को धारना शुरू किया। हमेशा अपने-आपको प्रकाश की ओर खोलो और अंधकार से अपनी पीठ मोड़ लो, हमेशा उन आवाजों को सुनने से इंकार करो जो लगातार कहती हैं, "तुम नहीं कर सकते, तुम नहीं पा सकते, तुम्हारे अंदर क्षमता नहीं है, तुम स्वप्न के हाथ में खिलौने हो।" ये शत्रु की आवाजें हैं, ये अपने कर्कश कोलाहल द्वारा आते हुए परिणामों से तुम्हें अलग कर देती हैं, और फिर बड़े विजयी भाव से परिणाम की व्यर्थता की ओर इशारा करके अपने सिद्धांत की पुष्टि करती हैं। प्रयत्न की कठिनाई तो जानी-मानी चीज है, परंतु कठिन का मतलब असंभव नहीं है। कठिन को ही हमेशा जीता गया है और कठिनाई पर विजय ही पृथ्वी के इतिहास में हर मूल्यवान् वस्तु को रचती है। आध्यात्मिक व्यवसाय में भी ऐसा ही होगा।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

ॐ का प्रभाव

१९९७ में अफ्रीका-निवासी भाई जय भारत ने श्रीअरविन्द आश्रम की निवासी अपनी परिचित महिला को श्रीअरविन्द सोसायटी केन्द्र के विशेष समारोह में भाग लेने के लिये निमंत्रित किया था। केन्द्र का समारोह बहुत सफल रहा किंतु उसके अतिरिक्त एक ऐसी घटना घटी कि 'अवेकनिंग' पत्रिका में उसका वर्णन पढ़ कर हमने सोचा कि इस विशेष घटना का वर्णन हम अपने पाठकों को भी सुनायें—

"हम लोग केनिया (अफ्रीका) में श्रीअरविन्द का एक सौ पचीसवां जन्मदिन बड़े उत्साह और उमंग से मनाने जा रहे थे। हमने आश्रम की अपनी एक परिचित बहन को इस अवसर पर आने का निमंत्रण देने के लिये उनको फोन किया। हमारी विनती सुनने पर पहले तो वे आने में आनाकानी कर रही थीं, लेकिन मैंने जोर देकर कहा कि आप यहां माताजी के काम के लिये आयेंगी, तो वे कुछ देर सोचती रहीं, फिर उन्होंने उत्तर दिया, 'अच्छा, ठीक है, मैं आऊंगी।' कुछ सप्ताह बाद जब वे आयीं तो अपने साथ श्रीमां की कृपा और शक्ति भी लेती आयीं और हमारा काम सुचारु रूप से चलने लगा।

"एक सप्ताह के अंत में हमने दो दिन की छुट्टी घोषित की। हमने अपने मेहमान को अफ्रीका के विख्यात 'मारा गेम रिज़र्व' नामक अभयारण्य दिखाने की योजना बनायी। यह बहुत लोकप्रिय और जाना-माना स्थान है और विदेशियों के आकर्षण का केन्द्र। 'मारा' में हमने कमरों को आरक्षित कर, रात को वहां डेरा डाला। दूसरे दिन सुबह पांच बजे हम 'मारा' देखने निकल पड़े। हमारी गाड़ी में छः व्यक्ति बैठ सकते हैं और उसकी छत खोल कर, लोग खड़े होकर पशु, पक्षी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर-दूर तक देख सकते हैं। उस दिन मेरी पत्नी, मेरा छोटा पुत्र और मैं मेहमान के साथ गये थे, साथ ही दो फ्रेंच प्रवासी भी थे। गाड़ी चलानेवाला केनिया का निवासी था जो बरसों से मुसाफिरों को 'मारा' स्टॉन के लिये ले जाता था। दो फरांसीसी पिछली सीटों पर विशेष कैमेरा और वीडियो का सामान लिये बैठे थे।

प्रायः साढ़े पांच बजे हम एक स्थान पर रुक गये, क्योंकि कुछ दूरी पर बड़े पेड़ों और छोटे पौधों के पीछे पांच हाथी चुपचाप खड़े थे। उन्हें नजदीक बुलाने के लिये हमने सीटियां बजाईं, शोर-गुल मचाया किंतु वे टस से मस न हुए। तभी हमारी आश्रम से आयी हुई बहन खुली गाड़ी में खड़ी हो गयीं और मधुर स्वर में बार-बार ॐ का उच्चारण करने लगीं। आश्चर्य! थोड़ी ही देर में एक-एक करके पांचों हाथी बाहर निकल आये और हमारे सामने बीस फुट की दूरी पर खड़े होकर हमारी ओर ताकने लगे। ऐसा महसूस हुआ मानों आश्रम से आये मेहमान और 'मारा' वासी हाथियों के बीच मौन वार्तालाप हो रहा हो। हमें हाथियों का इस तरह नजदीक निकल आना आश्चर्यजनक तो लगा किंतु हमने सोचा कि वह संयोग मात्र था। हम आगे बढ़े और दस मिनट के अंदर हमने दीर्घकाय जिराफों का एक दल देखा जो ऊंचे पेड़ों की पत्तियों को खाने में मशगूल था। यह शायद उनके नाश्ते का समय था। फिर से हमारी आश्रम से आयी हुई बहन खड़ी हो गयीं और ॐ का जाप उच्च स्वर से करने लगीं। और विस्मय! एक-एक कर वे कार के सामने आये और बिल्कुल निकट में खड़े एकाग्र हो उस बहन की ओर ताकने लगे! आश्चर्यचकित हमारे फरांसीसी साथियों ने इस दृश्य की फिल्म उतारनी शुरू कर दी। नाश्ते के बाद साढ़े दस के करीब, हम 'मारा' के अन्य स्थानों के लिये निकल पड़े। फरांसीसी साथियों ने हमारे मेहमान से अनुरोध किया कि जब वे अपना जादू शुरू करें तब उन्हें सावधान कर दें ताकि वे फिल्म उतारने के लिये तैयार रहें। मैंने भौंचक्के होकर बहन से पूछा, "आपका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जादू क्या है ?'' उन्होंने समझाया कि ॐ शब्द निम्न जगत् को, बीच के जगत् को और उच्चतर जगत् को जोड़ देता है इसीलिये हम सब एक सूत्र में बंधे हैं जिसमें इन पशुओं का भी समावेश है। वे सच्चे दिल से उन्हें पुकारती हैं, 'मित्र, देखो, मैं दूर से आयी हूं, भारत से आयी हूं। मैं तुम्हें प्यार से बुला रही हूं, क्या तुम आ कर, मेरा स्वागत न करोगे ?' इसी कारण हमारे पशु मित्र इतना अच्छा प्रत्युत्तर दे रहे हैं! हम भी यह सुन कर विस्मय-विमूढ़ हो गये।

"मध्याह्न को हम एक स्थान पर पहुंचे जहां पत्थर, चट्टान और ऊबड़-खाबड़ जमीन थी और इधर-उधर सूखी घास फैली हुई थी। हम अपने सौभाग्य पर विश्वास न कर पाये—वहां जंगल के राजा का परिवार मौजूद था—हां वनराज सिंह और उनका पूरा कुनबा, प्रायः पचीस; मां, बाप और शावक, सब ऊंघ रहे थे, सूर्य की ऊष्मा में आराम से लेटे थे। उन्होंने हमारी ओर ताका तक नहीं। हमने तालियां बजायीं, सीटियां मारीं ताकि उनका ध्यान हम अपनी ओर खींच पायें, किंतु सब बेकार! फिर हमारी मेहमान उठ खड़ी हुईं और उन्होंने ॐ का सस्वर जाप शुरू किया। छोटे और बड़े सब खड़े हो गये और उन्होंने दौड़ना और छलांग मारना शुरू किया, मानों वे एक छोर से दूसरे छोर तक ॐ के ताल पर खेल रहे हों और नाच रहे हों। इस दृश्य को देखकर भी विश्वास नहीं हो रहा था कि यह सच है। हमारे अफ्रीकी गाइड ने भी कहा कि उसने आज तक ऐसा दृश्य देखा न था।

"अगले दिन हम 'मारा' देखने निकल पड़े और इस बार हमने विरल दृश्य देखा—चीता, जो कम ही दीखता है। तीन चीते 'मारा' की मुख्य सड़क के किनारे लंबी तान कर लेटे हुए थे, हमारी उपस्थिति की ओर बिलकुल लापरवाह! हमारे पीछे-पीछे दो वैन आ खड़ी हुईं और फरांसीसी मुसाफिर अपने कैमेरे को लिये तैयार खड़े हो गये। आश्रम से आयी हुई बहन खड़ी होकर ॐ का उच्चारण कर चीतों को बुलाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगीं। पीछे से आयी हुई वैन के लोग हमारी मेहमान से अनुरोध करने लगे कि वे शोर न मचाएं, किंतु हमारे ड्राइवर ने उन्हें कहा, 'आप लोग देखिये तो!' ॐ का जाप सुनते-सुनते तीनों चीते खड़े हो गये, कुछ आगे बढ़कर इत्मीनान से सुनने की मुद्रा में बैठ गये। कुछ देर बाद उन्होंने हमारी ओर आगे बढ़ना शुरू किया, मैंने मेहमान से बैठ जाने का अनुरोध किया, क्योंकि मुझे डर था कि कहीं वे आक्रमण न कर बैठें! लेकिन ऐसा कुछ भी न हुआ। तीनों हमारी बहन को निहारते रहे मानों स्तोव भाषा में उनको "कारिबुनी" कह रहे हों जिसका अर्थ अफ्रीकी भाषा में है "हमारी भूमि पर आपका स्वागत है।" कितना अनोखा अनुभव! अविश्वसनीय किंतु सच्चा!

"हमारी परिचित बहन आश्रम से समाधि के पुष्प, गुलाब की कुंडियां और तुलसी पत्र लायी थीं। हमने इन पुष्पों को "मारा गेम रेंजर्स" की भूमि पर बिखेर दिया और उस जमीन और वहां के पशुओं पर माताजी और श्रीअरविन्द के आशीर्वाद बरसा दिये। 'मासेइ मारा गेम रेंजर्स' के लिये १९९७ का साल कितना अविस्मरणीय रहा होगा जब वे माताजी और श्रीअरविन्द का स्पर्श पा कर धन्य हुए थे।"

—अनुबेन

———

जब-जब तुम अपने-आपको चंचल अनुभव करो, अपने अंदर ही अंदर, कोई बाह्य आवाज किये बिना, मेरा नाम लेते हुए कहो: "शांति, शांति, ओ मेरे हृदय!" ... ऐसा लगातार करते रहो। इसका फल तुम्हारे लिये सुखकर होगा।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

फरवरी

१. साधना हमेशा कठिन होती है और हर एक की प्रकृति में विरोधी तत्त्व होते हैं और प्राण को उसकी गहरी धंसी हुई आदतों से छुड़ाना कठिन होता है।

२. कोई भी कठिनाई क्यों न हो, अगर हम सचमुच शांत रहें तो समाधान मिल जायेगा।

३. अंतरात्मा के आंतरिक बल से जीवन की आंखों में देखो और परिस्थितियों के स्वामी बन जाओ।

४. हमारी अग्निपरीक्षाएं हमारी प्रतिरोध-शक्ति से अधिक कभी नहीं होतीं।

५. कठिनाइयां सबल लोगों के लिये होती हैं और उन्हें अधिक बलवान् बनने में सहायता देती हैं।

६. तुम्हारी कठिनाई में से निकलने का एक ही मार्ग है, अपने चैत्य पुरुष को खोजो और पूरी तरह उसी की चेतना में रहो।

७. जब सब कुछ उल्टा हो रहा हो तो यह याद रखना चाहिये कि भगवान् सर्वशक्तिमान् हैं।

८. भगवान् हमारे बीच उपस्थित हैं। जब हम उन्हें हमेशा याद करते हैं तो वे हमें सब परिस्थितियों का पूर्ण शांति और समचित्तता के साथ सामना करने का बल प्रदान करते हैं। उपस्थिति के बारे में सचेतन होओ तो तुम्हारी कठिनाइयां गायब हो जायेंगी।

९. भगवान् के प्रति सतत अभीप्सा के साथ अंतर में निवास करना— हमें जीवन की ओर मुस्कान के साथ देखने और बाहरी परिस्थितियां चाहे जैसी हों, शांत रहने में समर्थ बनाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०. अंतर में निवास करो, बाहरी परिस्थितियों से विचलित न होओ।
११. तुम्हें अपने-आपको अपनी की गयी भूलों के लिये पीड़ा न देनी चाहिये, परंतु तुम्हें अपनी अभीप्सा में पूर्ण सचाई रखनी चाहिये और अंत में सब कुछ ठीक हो जायेगा।
१२. अपनी अशुद्धियों के बारे में बहुत ज्यादा सोचना सहायक नहीं होता। तुम जो शुद्धि, प्रकाश और शांति प्राप्त करना चाहते हो उन पर अपने विचार को स्थिर रखना ज्यादा अच्छा है।
१३. ये हमारी कमजोरियां ही हैं जो हमें सदा दुःखी बनाती हैं और हम मार्ग पर एक कदम आगे बढ़कर आसानी से इनसे छूट सकते हैं।
१४. अपूर्णताएं और त्रुटियां देखना ठीक है—लेकिन केवल इस शर्त पर कि वह नयी प्रगति के लिये अधिक साहस लाये, तुम्हारे निश्चय में अधिक ऊर्जा तथा विजय और भावी पूर्णता की अधिक निश्चिति लाये।
१५. अयोग्यता के ये विचार वाहियात हैं, ये प्रगति के सत्य का निषेध हैं—जो आज नहीं किया जा सकता वह फिर किसी दिन किया जायेगा—अगर अभीप्सा बनी रहे।
१६. चीजें भले वैसी न हों जैसी होनी चाहियें, चिंता उन्हें सुधारने में सहायता नहीं करती। निश्चल विश्वास बल का स्रोत है।
१७. भूतकाल के बारे में सोचते रहना बिलकुल गलत है। सच्ची वृत्ति यह है कि यह याद रखो कि भगवान् की इच्छा के बिना कुछ नहीं होता और चुपचाप उसके आगे झुक जाओ। अगर भूतकाल में तुमने भूलें की हैं तो वे सच्चे समर्पण के अभाव के कारण थीं और भूलों को सुधारने का यही एक तरीका है कि तुम सचमुच समर्पण करो।
१८. पश्चात्ताप : भूलें ठीक करने की ओर पहला कदम।
१९. अपने-आपको माफ कर देने से कोई फायदा नहीं। तुम्हारे अंदर यह संकल्प होना चाहिये कि एक बार जो भूल तुम कर चुके हो उसमें वापिस न गिरोगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०. हर रात, सोने से पहले हमें यह प्रार्थना करनी चाहिये कि जो भूलें हमने दिन में की हों वे भविष्य में दोहराई न जायें।

२१. मेरी सुरक्षा हमेशा तुम्हारे साथ है और कोई अनिष्ट नहीं घट सकता। लेकिन तुम्हें डर को झाड़कर दूर फेंक देने का निश्चय करना होगा और तब मेरी शक्ति पूरी तरह से काम कर सकेगी।

२२. अपने-आपको सन्तप्त मत करो, चिंता मत करो, सबसे बढ़कर समस्त भय को निकाल बाहर करने का प्रयास करो।

२३. भय एक खतरनाक चीज है जो किसी ऐसी चीज को महत्त्व दे सकती है जिसका कोई महत्त्व न हो।

२४. जो भगवान् का है उसे भला किसका डर हो सकता है ? क्या वह भगवान् के बताये मार्ग पर—चाहे वह उसकी सीमित तर्क-बुद्धि के लिये एकदम से अबोध्य हो--विस्तृत होती हुई अंतरात्मा और प्रदीप्त मस्तक के साथ नहीं चल सकता ?

२५. समस्त भय पर विजय पानी चाहिये और उसके स्थान पर भागवत कृपा में पूर्ण आस्था स्थापित करनी चाहिये।

२६. तुम्हें डरना नहीं चाहिये। भगवान् पर पूरा भरोसा रखो। वे प्रेम, प्रकाश और जीवन हैं।

२७. भय गुप्त स्वीकृति है। जब तुम किसी चीज से डरते हो तो इसका यह अर्थ है कि तुम उसकी संभावना को स्वीकार करते हो और इस तरह उसकी पकड़ को मजबूत बना देते हो। कहा जा सकता है कि वह अवचेतन स्वीकृति है। भय को बहुत से तरीकों से जीता जा सकता है। साहस, श्रद्धा, ज्ञान उनमें से कुछ हैं।

२८. संदेह कोई ऐसा खेल नहीं है जिसमें तुम निर्भय होकर खुल खेलो। यह एक ऐसा विष है जो बूंद-बूंद करके आत्मा को नष्ट करता है। हमें सभी संदेहों से मुक्त होने का निश्चय करना चाहिये, वे हमारी प्रगति के बुरे-से-बुरे शत्रु हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

स्वास्थ्य-लाभ

दिसम्बर तथा जनवरी आराम से बीत गये। अब हम उनके पैर की खपच्ची के निकलने की अधीरता से प्रतीक्षा कर रहे थे। डॉ० राव हर सप्ताह उन्हें आकर देखते और खपच्चियां निकालने का आग्रह करते, उधर विशेषज्ञ का मत उनसे भिन्न था। खैर, फरवरी के पहले सप्ताह पैर की स्थिति में असुखकर बदलाव आने लगे। घुटने में दर्द रहने लगा और पैर में हल्की-सी सूजन आ गयी। इस अप्रत्याशित परिवर्तन से हम सब सहम गये। जब विशेषज्ञ को इसकी जानकारी दी गयी तो उसने कहा कि अस्थिभंग में ऐसी छोटी-मोटी जटिलताएं आ ही जाती हैं और डरने की कोई बात नहीं है। लेकिन डॉ० राव यह बात मानने को कतई तैयार न थे। उनका कहना था कि इतने समय तक पैरों की निश्चलता के कारण यह सब हो रहा है और खपच्चियां जल्दी-से-जल्दी निकाल देनी चाहियें। बिचारे डॉ० राव! किसी ने उनकी अकेली आवाज पर कान न दिया क्योंकि हममें से कोई भी विशेषज्ञ की बात को काटना न चाहता था और हम उसके दोबारा पांडिचेरी आने की प्रतीक्षा करने लगे। परंतु उन दिनों पांडी से मद्रास की यात्रा आसान न थी। हमारे पास मोटरें नहीं थीं, बसें स्वप्नलोक की चीज थीं और रेल आज के जैसी धीमी। मुझे ठीक याद नहीं विशेषज्ञ कब आया और खपच्चियां निकाल दी गयीं, शायद यह फरवरी के अंत की बात थी। उनके निकलते ही सारे पांव में, जांघ से लेकर पैरों तक सूजन उठ आयी, हम सब परेशान हो गये। जंघा भयंकर, लगभग दोगुनी लगने लगी। माताजी ने मौन धारण किया और श्रीअरविन्द पहले की तरह निश्चिन्त थे। फिर विशेषज्ञ ने वही बात कही कि इसमें चिंता की बात नहीं है, यह तो होता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सूजन अपने-आप ठीक हो जायेगी। उसे संतोष था कि हड्डी ठीक तरह बैठ गयी थी। सावधानी के साथ चिकित्सा, मालिश, सेक तथा धीरे-धीरे चलने से पांव ठीक हो जायेगा। लेकिन माताजी को इतनी आसानी से संतुष्ट न किया जा सकता था। उन्होंने बहुतेरे प्रश्न किये, सूजन का कारण पूछा और उसके संभव परिणाम भी। माताजी ने ऐसे-ऐसे प्रश्न किये कि बेचारा विशेषज्ञ फिर से हक्का-बक्का रह गया। उसने किसी "महिला" से ऐसी आशा न की थी। उसने कहा कि माताजी सचमुच विचक्षण व्यक्ति हैं। हमने सारी बात श्रीअरविन्द को सुनायी, वे मुस्कुरा दिये।

हम सबके दिल इस विरोधी परिस्थिति से बैठ गये। ठीक होने में समय लगता जा रहा था। मैं विशेष रूप से बहुत परेशान और चिंतित था क्योंकि मैंने कभी ऐसी स्थिति नहीं देखी थी। डॉक्टर की हैसियत से मैं वहां अकेला था। मुझे बहुत बल और श्रद्धा की जरूरत थी। अपने डॉक्टरी काम में श्रीअरविन्द मुझे आश्वासन, सलाह और आध्यात्मिक सहायता दिया करते थे परंतु अब स्वयं भागवत चिकित्सक ही रोगी थे! अब मैं मदद के लिये किसके पास जाऊं ? मेरी इतनी हिम्मत न हुई कि उनसे कह सकूं कि कृपया मुझ जैसे अयोग्य भौतिक यंत्र का उपयोग कर स्वयं ही ठीक हो जायें। परंतु मुझे पूरा विश्वास था कि माताजी और श्रीअरविन्द की सहायता मौजूद है। मैं विशेषज्ञ की दी हुई सलाह से चलता रहा। मैंने मणिलाल को पैर की सूजन की इस नयी गड़बड़ के बारे में लिख भेजा और लिखा कि वे देखने के लिये आ जायें और साथ ही बम्बई से दो-तीन जोड़ी बैसाखियां ले आयें।

अब सीधे पांव ने भी हमारा ध्यान खींचा। बिना किसी गतिविधि के कारण वह सिकुड़ कर बहुत छोटा होता जा रहा था। उनका तलवा सूख कर चमड़े की तरह हो गया था। माताजी सफेद क्रीम लायीं और मुझसे लगाने के लिये कहा। श्रीअरविन्द बैठ गये और सीधा पांव फैला दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजी खड़ी होकर देखने लगीं कि मैं क्रीम कैसे लगाता हूं। उनके देखने के कारण मैं जरा सकपका-सा गया और मेरे हाथ ढंग से न चले। माताजी जोर से बोल उठीं—"नहीं, इस तरह नहीं।" उनकी हल्की-सी डांट ने तुरंत असर दिखाया और हाथ तुरंत रास्ते पर आ गया! यह देखकर वे मुस्कुरायीं और बोलीं—"हां, अब ठीक है!" श्रीअरविन्द हमेशा की तरह चुपचाप इस दृश्य का आनंद उठा रहे थे। तलवे की सारी खाल की पतली परत सफेद मोम की तरह उतर गयी। ओह! कितना छोटा और नाजुक लग रहा था प्रभु का पांव! उन्होंने अपनी कविता 'एक देवता का श्रम' में अपने आंतरिक युद्ध के बारे में लिखा है 'एक हजार एक खुले घाव मेरे शरीर पर हैं'। यहां उसी चीज को हम भौतिक शरीर में देख रहे थे। पर कोई शिकायत नहीं! आखिर युद्ध युद्ध है!

उनके बाल भी कुछ समस्या बन गये। इतने सप्ताह तक एक ही स्थिति में लेटे रहने से बाल उलझ कर जटा-से बन गये थे। अब उन्हें कैसे सुलझाया जाये? हमें ख्याल न आया कि स्त्रियों के इस काम को अपने हाथ में न लेकर हम माताजी को सौंप दें। वे तो बहुत प्रसन्न होतीं, लेकिन वे स्वयं कुछ न बोलीं। श्रीअरविन्द तो चुप ही रहे। शिवजी की जटाओं की तरह हो गये श्रीअरविन्द के बालों को खोलने, सुलझाने इत्यादि में हमें एक घंटा लगा! श्रीअरविन्द इस यातना को भी चुपचाप सहते रहे और काम के समाप्त होने पर पूछ बैठे, "तुम लोगों ने कुछ बाल सिर पर छोड़ दिये हैं ना?" हम बरबस हंस पड़े। यह था तो मजाक परंतु वे भौतिक सुन्दरता और लालित्य के प्रति लापरवाह बिलकुल न थे। बाद में जब माताजी ने उनकी कंघी करने का काम अपने हाथ में ले लिया, तब उनके जो भी सुनहरे लहराते बाल झड़ते वे सब चंपकलाल के खजाने को अधिक समृद्ध बनाते थे। जिस दिन श्रीअरविन्द को बालों के झड़ने के बारे में बतलाया गया उस दिन से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल झड़ने बंद हो गये और अंततक ऐसा ही रहा।

जब डॉ० मणिलाल आ गये तो मैंने राहत की सांस ली! वे शरीर के नये विकार को देखकर बहुत दुःखी हो गये, परंतु उन्हें विश्वास था कि सब कुछ ठीक हो जायेगा। उनके सामने तीन समस्याएं थीं—सूजन, रोगी को बैसाखियों के सहारे चलना सिखाना और घुटने की नमनीयता को लाना। उन्होंने तीनों ही बातों में अपनी विशेष क्षमता दिखलायी। हल्की मालिश, गरम और ठंडा दबाव चलता रहा, बाद में गरम पानी से नहाना शुरू हुआ और धीरे-धीरे पैर की सूजन कम होती गयी और कुछ महीनों के अंदर एकदम चली गयी। घुटने की नमनीयता आने में भी कई महीने लग गये। तीसरा काम यानी फिर से चलना सिखाना ज्यादा सीधा-सादा काम दीखता था, लेकिन वह निकला सबसे कठिन—उन्हें बैसाखियों पर जो चलाना था! अब जरूरत थी धीरजभरे सतत प्रयास की। लेकिन किसी भी प्रकार के भौतिक या यांत्रिक आविष्कारों के अनभ्यस्त श्रीअरविन्द के लिये बैसाखियों के सहारे चलना अनुकूल न पड़ रहा था और वैसे भी उनके कमरे में इतनी जगह न थी कि आराम से चला जा सके। पहले दिन माताजी के सामने हमने उन्हें खड़ा किया, उन्हें बैसाखियां दीं और उन्हें इस्तेमाल करने का तरीका बतलाया। वे डगमगाये फिर बोले, "हां कहना आसान है।" दो-तीन तरह की बैसाखियों के परीक्षण हुए, लेकिन उन्हें इनका व्यवहार करना आसान न लगा। इसलिये माताजी ने सलाह दी कि बैसाखी की जगह दो आदमी सहायता के लिये उनके अगल बगल रहें, जिनके सहारे वे चलें। यह विचार सबको पसंद आ गया। डॉ० मणिलाल ने पुराणी और सत्येन्द्र को चुना। ये काठ की बैसाखियों से कहीं अच्छे थे! मेरे मन को हास्य का एक और भोज मिल गया—भगवान् मानव सहायता पर निर्भर हैं! पुराणी और सत्येन्द्र की जोड़ी ठीक बैठी। कुछ दिनों के बाद माताजी ने सत्येन्द्र की जगह चंपकलाल को खड़ा कर दिया। यह बहुत अच्छी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवस्था थी और इससे चंपकलाल की अभीप्सा भी पूरी हो गयी। कुछ दिनों के बाद जब पैरों में कुछ ताकत आ गयी तो श्रीअरविन्द ने दायें हाथ में छड़ी ले ली, बायीं तरफ अबतक चंपकलाल का सहारा था। अंत में उनका भी संग छूट गया। जैसे ही लोगों ने सुना कि प्रभु छड़ी का उपयोग कर रहे हैं तो रोज नयी-नयी छड़ियां उपहार-स्वरूप आने लगीं। उनमें से एक आसाम की चाय की लकड़ी से बनी हुई भी थी! तेज दोपहर तथा रात के खाने के बाद माताजी उनके कमरे में आतीं और उपहार में आयी हुई छड़ी देतीं। वे माताजी की उपस्थिति में रोज करीब आधा घंटा चलते।

माताजी की प्रतीक्षा करते हुए हम प्रभु को घुटने के सरल व्यायाम करवाते। फिर वे बिस्तर की पटरी पर बैठकर व्यायाम करते, उनमें से एक था बिस्तर पर पैर लटका कर बैठना। "पैर लटक रहा है" यह चुटकुला बाद में हमारे बीच बहुत प्रचलित हो गया जिसका जिक्र बाद में आयेगा।

श्रीअरविन्द ने जब अकेले चलना आरंभ किया तो शुरू के दिनों में हम सबको कुछ डर-सा लगा, उसका कारण भी था, जरा सा असामान्य कदम उन्हें डिगा सकता था, असंतुलन पैदा होने से वे गिर सकते थे। वे नीचे फर्श देखकर बड़ी सावधानी से चलते थे, खासकर मुड़ते समय बहुत धीमे हो जाते थे। हर मोड़ पर हममें से एक खड़ा होता ताकि किसी तरह की कोई दुर्घटना न होने पाये। अब उनके कदमों में पहले जैसी प्रतिध्वनित करती हुई आवाज न होती थी जिसे सुनने के हम पहले अभ्यस्त थे जब वे अपने कमरे में तेज चाल से चला करते और हम नीचे हॉल में बैठे उस प्रतिध्वनि का आनंद उठाते। वे हमसे कहा करते थे कि इस तेज चाल के समय वे उच्चतम शक्ति को नीचे उतारा करते थे। जैसे-जैसे उनका चलना सामान्य होता गया हम आशा करने लगे कि एक बार फिर श्रीअरविन्द दैवी कदमों से चलना शुरू कर देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब गरमी बढ़ती जा रही थी। श्रीअरविन्द को पसीना बहुत आता था। उन दिनों आश्रम में छत के पंखे न थे। जब वे चलते तो हम दो छोटे-छोटे हाथ के पंखों से उन्हें हवा देते, लेकिन वे बंद कमरे की उमसभरी गरमी से भला क्या छुटकारा दिलाते ? यद्यपि श्रीअरविन्द को गरमी की जरा भी परवाह न थी लेकिन हमें बहुत खटकता था। अचानक एक दिन पुराणी के दिमाग में एक अनोखा विचार कौंधा। वे एक बड़ा-सा ताड़ का पंखा ले आये जिसकी किनारी पर लाल कपड़ा लगा था, ठीक उसी तरह का हाथ का पंखा जो मंदिरों में देवी-देवताओं को झलने के काम आता है। माताजी ने मुस्कुरा कर अपनी स्वीकृति दे दी। बस, उन्होंने अपनी पूरी शक्ति के साथ दरवाजे पर खड़े होकर पंखा झलना शुरू कर दिया। ऐसा लगता था कि कमरे में छोटा-मोटा तूफान आ गया है। हमें इस दृश्य में बड़ा मजा आता था। वे सचमुच इस काम को बखूबी निभाते थे। कुछ दिनों के लिये पुराणी ऊपर न आ सके, पंखा बेकार पड़ा रहा। बहुत संकोच के साथ एक दिन मैंने वह बड़ा पंखा उठा लिया, बौने के हाथ में दानवनुमा पंखा ! माताजी के मुख के भाव परिवर्तित न होते देख मैंने पंखा झलना शुरू कर दिया। मेरा काम बुरा न था, बस मन के किसी कोने में दर्प उभर आया 'अच्छा काम कर रहा हूं मैं', लेकिन दुर्भाग्य, दर्प और पतन का चोली-दामन का साथ ठहरा। एक दिन जब वे मुड़ रहे थे तो मेरी असावधानी से पंखा उनकी पीठ पर लग गया ! वे मेरी ओर देखकर मुस्कुरा उठे, माताजी ने भी अपनी भव्य मुस्कान से मुझे लज्जा के सागर से उबारा, लेकिन फिर मैंने वह काम कभी हाथ में न लिया। बाद में चंपकलाल और मूलशंकर दोनों अधिक दक्षता से यह काम करने लगे।

चलने के अंत में, वे कमरे के बीच में आकर खड़े हो जाते, उनके सीधे हाथ में छड़ी होती, वे सीधे खड़े होते थे, उनके खुले हुए चौड़े सीने पर लहराती हुई सुनहरी दाढ़ी, सुनहरे बालों की दो पतली चोटियां, सुदूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखती हुई अचंचल विशाल आंखें—हमारे हृदयों में प्रेम और पूजाभाव भर देतीं। फिर माताजी उनके हाथ से छड़ी ले लेतीं, दोनों में मधुर स्मित का विनिमय होता और माताजी चली जातीं। उसके बाद चंपकलाल आते और उनके शरीर से चूता हुआ पसीना पोंछ देते।

अब श्रीअरविन्द कुरसी पर बैठ जाते और दिव्य शरीर को स्पंज कराने की क्रिया शुरू हो जाती। यह क्रिया काफी बरसों तक चलती रही जबतक कि पास ही में एक स्नानगृह न बन गया। इस तरह स्पंज करके, कमरे के अंदर नहलाने का यह तरीका हम लोगों को पसंद न था, यह तरीका हो या वह—श्रीअरविन्द के लिये कोई फर्क न पड़ता था। ऐसा लगता था कि वे शरीर में नहीं रहते थे, या उन्होंने उसे पूरी तरह माताजी के हाथों में छोड़ दिया था।

स्पंज के साथ-ही-साथ बातचीत शुरू हो जाती। पुराणी पीछे रहते, मैं सामने, डॉ० मणिलाल एक तरफ बैठते और सत्येन्द्र दूसरी तरफ खड़े रहते। हम काम भी करते जाते और बातचीत का आनंद भी उठाते थे। कभी-कभी पीछे से पुराणी कुछ पूछ बैठते, सत्येन्द्र बात को आगे बढ़ाते, कभी मैं जवाब दे देता, इस तरह श्रीअरविन्द के चारों ओर प्रश्न चक्कर काटता रहता, वे कभी चुपचाप सुनते, कभी जवाब देते और तब तो हमारी खुशी का पारावार न रहता जब वे अचानक कोई परिहास करके हम सबको अचम्भे में डाल देते ! कभी-कभी वे कुरसी पर टेका लगाकर, सीधे हाथ की दो उंगलियां होठों पर रखकर सोचने की मुद्रा में बैठ जाते, फिर कुछ समय बाद सहज मुद्रा अपना लेते और बात का सिलसिला जारी हो जाता। एक बार हमारी बातचीत के दौरान दरवाजे पर हल्की दस्तक हुई। श्रीअरविन्द ने हमारी ओर देखा और हम आश्चर्य-चकित हो उठे कि हमारे एकांत में कौन आ गया। दूसरी बार दस्तक हुई, हममें से किसी ने दरवाजा खोला, आश्चर्य ! माताजी हमारे सामने खड़ी थीं, उनके हाथ में कागज का एक पुर्जा था, उसे बढ़ाते हुए उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, "श्रीअरविन्द के लिये है।" वह युद्ध का कोई महत्त्वपूर्ण समाचार था जिसकी सूचना अभी-अभी रेडियो से मिली थी। इस छोटी घटना से हमें पता चलता है कि श्रीअरविन्द तथा माताजी युद्ध की गतिविधि में विशेष रस ले रहे थे।

आखिरी काम था घुटने को मोड़ना। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, एक कसरत का नाम था, पैर लटकाना। दर्शन के समय मणिलाल के आने का समाचार सुनकर श्रीअरविन्द बोल उठे, "ओह, मणिलाल आ रहा है, मुझे अपना पैर लटकाना चाहिये!" या कभी जब वे बड़ौदा से समाचार पूछते तो श्रीअरविन्द का स्मितभरा उत्तर होता—"वह अभीतक लटक रहा है!" (It is still hanging!) ऐसा लगता था कि घुटना मोड़ने की कसरत से बहुत काम न हो रहा था, लेकिन चूंकि श्रीअरविन्द का आग्रह रहता अतः हम लोग भी प्रोत्साहन देते थे। डॉक्टर राव यह देखकर बहुत खुश हो गये कि श्रीअरविन्द को उन अत्याचारी खपच्चियों के बंधन से छुटकारा मिल गया। जब कभी वे श्रीअरविन्द के पैर की मालिश करने आते तो बड़ी नम्रता से पूछते—"भगवन्, क्या मैं मालिश कर सकता हूं?" और हर बार आदर्श रोगी के रूप में प्रभु की प्रशंसा करके जाते।

डॉक्टरों का दिया हुआ एक और हुकुम यह था कि शरीर को ठीक रखने के लिये श्रीअरविन्द मुक्त-हस्त व्यायाम किया करें। हर सुबह, बिना नागा वे बड़े उत्साह से व्यायाम करते—हाथों को जोर से हिलाना, मोड़ना, पैरों को उठाना और मोड़ना इत्यादि। गरमी का मौसम, बिस्तर पर कोई असुविधाजनक मुद्रा या और किसी भी तरह की कैसी भी असुविधा उन्हें व्यायाम करने से नहीं रोकती, जब मैं अपना सवेरे का काम समाप्त कर उनके कमरे में घुसता तो उन्हें इस तरह कसरत करते देखकर प्रसन्नता से खिल उठता। उनका पैर हथौड़ी की तरह उठता और गिरता रहता। शरीर की अतिमानसिक पूर्णता पाने के लिये उनकी इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठोर तपस्या को देखकर मैं भौंचक्का रह जाता। इससे भी इंकार नहीं किया जा सकता कि श्रीअरविन्द का शरीर ऐसी कठोर और शुष्क कसरतों के लिये न बना था, लेकिन प्रभु आखिर प्रभु थे!

मणिलाल के मालिश, गरम पानी इत्यादि के नुस्खे से श्रीअरविन्द को काफी आराम मिला। मांसपेशियां, स्नायुएं मजबूत होने लगीं। लेकिन इसका सारा श्रेय स्वयं रोगी को जाता है। पूर्णता ही उनकी अतिमानसिक सर्व-कुञ्जी है, किसी भी तरह की अपूर्णता उनके लिये विजातीय वस्तु थी, पैर ठीक करने के लिये भी उनके पास पूर्णता का ही नुस्खा था। पूर्णता के विषय में मैं एक छोटी-सी घटना सुनाता चलूं: एक दिन खर्राटों के बारे में बात चल पड़ी। हममें से किसी फूहड़ ने उनसे कह दिया कि सोते समय आप भी खर्राटें लेते हैं। शायद दुर्घटना के बाद, शरीर की किसी असुविधा के कारण यह आदत पड़ गयी थी जिसके बारे में सुनकर वे स्वयं अचरज में पड़ गये। और मेरे अचरज का तो तब ठिकाना न रहा जब अगले दिन से उनके खर्राटे हमेशा के लिये बंद हो गये! जब वे हमारी कविताएं संशोधित करते तब भी पूर्णता का पुट होता। अगर वे जल्दी में होते तो कविता दुबारा मंगवाते और उसे भूलरहित, एकदम शुद्ध बना देते। उनके द्वारा किसी भी क्षेत्र में उपलब्ध पूर्णता वैश्व पूर्णता बन गयी। सच है "एक अकेले व्यक्ति की पूर्णता संसार को बचा सकती है।"

डॉ० मणिलाल ने श्रीअरविन्द के पूरे शरीर की मालिश करने का सुझाव दिया, विशेष रूप से निचले अंगों की। सवेरे के समय हम तीन उनके शरीर की मालिश करते और साथ-साथ बातचीत भी चलती रहती। हमारे अधिकतर प्रश्नों का वे "सम्भवतः", "शायद" कहकर उत्तर देते। एक दिन हम पूछ बैठे, "आप सीधा हां और ना कहने की जगह "शायद" क्यों कह देते हैं?" तब उन्होंने उत्तर दिया, "क्योंकि केवल अतिमानस ही निश्चित उत्तर दे सकता है।" हम सब हंस पड़े। उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुविधा-असुविधा का ध्यान रखे बिना हम सब यूं ही बतियाते उनकी मालिश किया करते। कुछ दिनों तक हमारे हाथों यह सजा भुगत लेने के बाद एक दिन उन्होंने बड़ी नम्रता से मुझसे पूछा—"क्या मालिश सचमुच जरूरी है ? यही तो एक समय है जब मुझे कुछ आराम मिल सकता है।" मैंने अपराध स्वीकार करते हुए कहा, "हम इसे बंद कर देंगे, यह जरूरी नहीं है।" वे इसके लिये पहले भी मना कर सकते थे, लेकिन डॉक्टर की बात तो माननी चाहिये !

इन कठोर और अध्यवसायी व्यायामों की कृपा से पैर में काफी शक्ति आ गयी और शरीर पुष्ट हो गया। अब वे रोजाना अखबार खुद पढ़ने लगे थे। एक दिन मैं यह सोचकर सरसरी नजर से अखबार देख रहा था कि वे तो अभीतक तैयार नहीं हैं, तभी उन्होंने पूछा, "अबतक अखबार नहीं आया क्या ?" मैंने तुरंत उनके हाथों में पकड़ा दिया। वे बोले—"क्या तुमने खबरें हजम कर लीं ?" मैं लजा कर मुस्कुरा दिया! मनोविनोद का पुट मिला हुआ ऐसा स्वाभाविक मजाक तो उनकी विशेषता थी।

अप्रैल का महीना आ पहुंचा। लोगों को पता लग गया कि श्रीअरविन्द तेजी से स्वास्थ्य-लाभ कर रहे हैं और वे दर्शन का आग्रह करने लगे। वैसे ही दो दर्शन उन्हें नहीं मिल पाये थे और अगले दर्शन के लिये लोगों को अगस्त तक प्रतीक्षा करनी होती—यह प्रतीक्षा सचमुच कष्टदायक होती। माताजी ने भी भक्तों की ओर से विनय की, यद्यपि विनय की जरूरत न थी। क्योंकि हमें मालूम था कि जब मां का हृदय पिघल गया तो पिता का हृदय पसीजने में देर न लगेगी। इसके अलावा माताजी यह भी चाहती थीं कि श्रीअरविन्द जल्दी-से-जल्दी अपनी सामान्य दिनचर्या में लौट आयें। उनके लिये भी वे किसी अपवाद के पक्ष में न थीं ! उनकी ऊर्जस्वी प्रकृति के अनुकूल थी यह बात। दर्शन के लिये २४ अप्रैल का दिन निश्चित हुआ—क्योंकि यह माताजी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांडिचेरी में दुबारा और अंतिम बार आगमन की तिथि थी। तब से अप्रैल-दर्शन भी अन्य तीन दर्शनों के साथ जुड़ गया। बाहर के विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिये भी यह दिन बहुत अनुकूल हुआ क्योंकि यह उनकी गर्मी की छुट्टियों में पड़ रहा था। लेकिन अब दर्शन का समय बदल दिया गया। अब सवेरे की जगह दोपहर को दर्शन का समय निश्चित कर दिया गया और यह शब्द के वास्तविक अर्थ में 'दर्शन' बन गया। क्योंकि अब भक्त बस क्षण भर के लिये श्रीमां तथा श्रीअरविन्द के सामने खड़े रहकर चुपचाप आगे बढ़ जायेंगे। श्रीअरविन्द ने बस इतना ही कहा, "सात-सात घंटों का वह लंबा दर्शन समाप्त हो गया।" पहले दर्शन अनुष्ठानपूर्वक हुआ करता था। सवेरे साढ़े सात बजे से शुरू होता और दोपहर को तीन बजे तक चलता रहता, बीच में बहुत छोटा-सा मध्यान्तर होता। भक्तगण मालाएं, पुष्प इत्यादि उन्हें अर्पित करते, दो, तीन या कभी-कभी तो चार-चार बार उन्हें झुक-झुक कर प्रणाम किया करते। इधर माताजी तथा श्रीअरविन्द को घंटों अपने आसन पर बैठे ही रहना पड़ता था। भक्त तो अतिशय भक्ति दिखलाते थे, लेकिन भुगतना भगवान् को पड़ता था। रमण महर्षि ने भी इस संदर्भ में कभी कहा था कि "प्रसाद का प्लेग" उन्हें सताया करता है। अब बाहरी परिस्थितियों के दबाव के कारण वह सब एक झटके में कम हो गया और वह बाहरी भक्ति सिमट कर अचंचल आंतरिक भक्ति में रूपांतरित हो गयी। श्रीअरविन्द की इस दुर्घटना के कारण पहले के आनुष्ठानिक दर्शन इतिहास के गर्भ में चले गये।

दर्शन की पूर्व-संध्या को माताजी हमारी सहायता से श्रीअरविन्द के बाल धोया करती थीं। वह इतना विस्तृत और जटिल कार्य था कि अगर वह हमारे ऊपर छोड़ दिया जाता तो बहुत गड़बड़ हो जाती, विशेष रूप से इसका कारण यह था कि यह सारा विधान उनके शयन-कक्ष में ही किया जाता था। ठंडा और गरम पानी, चिलमचियां, साबुन, पाउडर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्यादि चीजों को कमरे में इकट्ठा किया जाता। सचमुच बाल धोने का पूरा अनुष्ठान हुआ करता था! इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि औरतें अपने बाल क्यों छंटवाना चाहती हैं। सुना था कि पहले श्रीअरविन्द रोज रात को अपने लंबे बाल धोया करते थे, पर मुझे विश्वास है कि उसमें इतना ताम-झाम न हुआ करता था। उनके ऐकांतिक जीवन के लिये यह सादगी आवश्यक थी। बाद में जब वहां स्नानागार बन गया तो बाल धोने का अनुष्ठान भी समाप्त हो गया। कितने वर्षों तक प्रभु ने यह सारा अत्याचार सहा। सारे खेल का यह भी एक भाग था!

आखिर दर्शन का दिन आ गया! सवेरे-सवेरे माताजी उनके कमरे में एक पुष्प लेकर आयीं, वह संभवतः लाल कमल था, उन्होंने प्रभु के सम्मुख घुटने टेके, कमल उनकी शय्या पर रखा और आशीर्वाद और उनका मंद स्मित पाने के लिये झुक गयीं। यह दूसरी बार था जब मैंने उन्हें श्रीअरविन्द को प्रणाम करते देखा। पहली बार स्वयं माताजी के जन्मदिन यानी २१ फरवरी को देखा था। मेरे लिये यह नयी बात थी क्योंकि मैंने कभी सोचा भी न था कि वे भारतीय ढंग से प्रणाम करेंगी। उसके बाद हर दर्शन के दिन मैं इस दृश्य का आनंद उठाने लगा। और दिनों पर माताजी उनका हाथ लेकर हल्का-सा चुम्बन लेती थीं। अब उन्होंने दर्शन के दिन का कार्यक्रम बना दिया। श्रीअरविन्द भोजन कब करेंगे और वे दर्शन के लिये कब आयेंगी इत्यादि बातों का उन्होंने निश्चय कर दिया। हमें भी इस समय तैयार रहना था और प्रभु को भी तैयार रखना था। सवेरे से ही मानों समय के पंख लग गये, माताजी बड़ी फुर्ती से कामों में लगी थीं, उन्हें कितनी ही बातों का ख्याल जो रखना पड़ता है! सब काम समाप्त कर, वे सुन्दर साड़ी में सुशोभित, भव्य ललाट पर शोभित मुकुट पहने, साक्षात् देवी-सदृश, निर्धारित समय से पहले ही श्रीअरविन्द के कमरे में आ गयीं। उन्होंने एक नजर हमपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाली, हम सब सावधान की मुद्रा में सीधे खड़े थे, दुर्घटना के बाद यह पहला दर्शन था। हमें तैयार देखकर वे प्रसन्न हो गयीं। श्रीअरविन्द ने शुभ्र, उजली, चुन्नटवाली धोती पहन रखी थी, रेशमी चादर वक्ष पर ओढ़े थे, उनके लंबे सुनहरे बाल लहरा रहे थे—यह दृश्य ऐसा भव्य दीख रहा था मानों शिव तथा शक्ति अपने भक्तों को दर्शन देने के लिये पधार रहे हों। आगे-आगे श्रीअरविन्द थे और पीछे माताजी। वे अन्य दर्शन-दिवसों की तरह साथ बैठे, माताजी उनकी दायीं तरफ विराजमान थीं—सचमुच अद्वितीय दृश्य था वह—और दर्शन-अनुष्ठान शुरू हो गया।

वैसे यह सीधा-सादा दर्शन था। एक के बाद एक पंक्तिबद्ध साधक इन युगलरूप देव-देवी के सामने पलभर के लिये रुकते और उनकी अचंचल दृष्टि और भव्य स्मित को अपने हृदय में धारण कर आह्लाद और हर्ष में डूबे आगे बढ़ जाते। अपने प्यारे प्रभु को फिर से स्वस्थ देखकर साधकों के आनंद की कल्पना की जा सकती है! घंटे भर में दर्शन पूरा हो गया और श्रीअरविन्द अपने कमरे में लौट आये। डॉ० राव बालसुलभ तरीके से बोल उठे—"भगवन्, आप दर्शन पर भव्य दीख रहे थे।" श्रीअरविन्द मुस्कुरा दिये और हम डॉक्टर को तंग करने के लिये पलट कर पूछ बैठे—"तो अन्य अवसरों पर वे भव्य नहीं दीखते?" डॉ० राव ने झेंपते हुए कहा—"नहीं, नहीं मेरे कहने का यह मतलब नहीं था।" सच पूछा जाये तो राव ने उन हजारों भक्तों की भावनाओं को प्रकट कर दिया जिन्होंने प्रभु के दर्शन किये थे। उस अचंचल ठवन में कितनी महानता, कितनी भव्यता थी! कितनी शक्ति थी, मानों वे सारे संसार को अपनी हथेली पर उठाये हुए हों! अगर कोई व्यक्ति कभी देवता के पद को पा जाये तो आज वही दृश्य यहां मूर्तिमान् था। वे वहां उपस्थित थे, लोग उनके दर्शन कर सकते थे, उनसे आशीर्वाद पा सकते थे। उनके महिमान्वित देव-स्पर्श से कितने ही अद्भुत रूप से परिवर्तित हो गये थे। "एक स्पर्श लौह नियति को परिवर्तित कर सकता है।" कइयों ने वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतर्दर्शन और वरदान प्राप्त किये जिनकी कामना वे दीर्घकाल से कर रहे थे और सभी साधकों के लिये प्रत्येक दर्शन शाश्वत की ओर ले जानेवाला मील का एक पत्थर होता है। स्वयं श्रीअरविन्द ने कहा है, "दर्शन महान् अवतरणों के अवसर होते हैं।" यह व्यर्थ नहीं था कि हिटलर ने १५ अगस्त के दिन ही ब्रिटेन के राजमहल में पदार्पण का निश्चय किया था और वहां उसे मुंह की खानी पड़ी थी और यह भी अकारण नहीं है कि भारत ने उसी अमर दिवस पर स्वाधीनता प्राप्त की।

अब जब कि श्रीअरविन्द स्वास्थ्य-लाभ कर चुके तो माताजी ने उनके लिये कुछ काम भी ढूंढ़ निकाला! संयोग से उसी अवसर पर कलकत्ते के 'आर्य पब्लिशिंग हाउस' से श्रीअरविन्द की किसी पुस्तक की मांग आयी। सबसे पहला विचार था 'दिव्य जीवन' का। यह पुस्तक बहुत पहले 'आर्य' पत्रिका में क्रमशः छपी थी और अब इसे पुस्तकाकार प्रकाशित कराने की मांग आयी। माताजी को यह विचार पसंद आ गया और उन्होंने श्रीअरविन्द से उसके छापने की अनुमति मांगी। श्रीअरविन्द उसमें एक-दो अध्याय बढ़ाना चाहते थे। अतः वे इस काम में लग गये। उनके लिखने के लिये एक नयी मेज तैयार करवायी गयी। मेज को उनके बिस्तर के साथ उनके सामने लगा दिया जाता था। उसपर तीन कलमें, दो पेंसिलें तथा कागज रखा जाता। मैं उस क्षण की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था जब मैं उन्हें काम करते देख सकूं। हमने नीरव मन के बारे में बहुत कुछ सुना था कि उसके द्वारा विचार सीधे ऊपर से उतर कर कलम की नोंक पर आ जाते हैं, मैं मन-ही-मन बहुत खुश था कि अब मैं इस चमत्कार को देख पाऊंगा। ओह! कितनी अद्भुत बात है अगर हम नीरव मन के साथ-साथ अदृश्य विचारों को एक-के-बाद-एक मन की विभिन्न श्रेणियों से उतरते हुए देख सकें! कम-से-कम श्रीअरविन्द कैसे लिखते हैं यह तो मैं अब देख ही सकूंगा। क्या वे भी हम मनुष्यों की तरह काम करेंगे—लिखेंगे, रुकेंगे, सोचेंगे, फिर लिखना शुरू करेंगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह रहे श्रीअरविन्द—अपना दायां पांव फैलाये बिस्तर पर बैठे हैं। मैं बिस्तर के पीछे खड़ा उन्हें देख रहा था। और जैसे ही उन्होंने लिखना शुरू किया धाराप्रवाह कलम चलता रहा, मानों मन में सारी चीज पहले से ही पूरी तैयार थी, बस उसे कागज पर उतारना था, या जैसा कि वे कहा करते थे कि नल खोल दिया जाता था और धारा बहने लगती थी। परम नीरवता में एकाग्र, कभी-कभी वे सामने देखते और बीच-बीच में हाथ से पसीना पोंछ लेते थे—उन्हें पसीना बहुत आता था—इस तरह वे दो घंटे लगातार लिखते रहते। कभी-कभी माताजी उनके लिये नारियल का पानी लेकर आ जातीं और कभी-कभी तो उन्हें काफी समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती क्योंकि श्रीअरविन्द लिखने में इतने व्यस्त रहते कि उन्हें माताजी की उपस्थिति का आभास तक न होता और जब अचानक होता तो वे विस्मयपूर्वक "आह" कहकर माताजी के स्नेहिल हाथों से गिलास लेकर, धीरे-धीरे पीने लगते और फिर अपने लेखन-कार्य में पूरी तरह डूब जाते! सचमुच वह बहुत मधुर दृश्य होता, माताजी चुपचाप मधुर मुस्कान के साथ उनको निहारती हुई खड़ी रहतीं और वे दीन-दुनिया से बेखबर, लिखने में लगे रहते; और फिर आनंदपूर्ण दृष्टि का विनिमय होता। लेखन समाप्त होने तक वह जगह पूरी तरह पसीने से भीग जाती जहां बैठकर वे लिखा करते—गर्मियों में तो उन्हें बहुत पसीना आता। लेकिन आश्चर्य यह कि पसीने में गंध बिलकुल नहीं होती! हम उनका शरीर पोंछकर चादरें बदल देते। लेकिन मुझे तब जोरदार धक्का लगा जब पहला अध्याय समाप्त करने के बाद उन्होंने हमें उसे फाड़कर कूड़ेदान में फेंक देने को कहा! उसे फिर से लिखने की आवश्यकता थी! मेरी बहुत इच्छा हो रही थी कि उन्हें सुरक्षित रखूं, लेकिन यह तो उनकी आज्ञा का उल्लंघन होता। चंपकलाल ने मुझे बताया कि उन्होंने कुछ फटे हुए पृष्ठ स्मारिका के रूप में अपने पास रख लिये थे। मैंने देखा कि उसमें कहीं कोई कांट-छांट नहीं थी, कितना सुन्दर लेख था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलकुल अक्षत। वैसा नहीं जैसा शिष्यों को लिखे पत्रों में हुआ करता था जिन्हें वे स्वयं भी कभी-कभी पढ़ नहीं पाते थे! ... मुझे मालूम नहीं कि क्या सभी महान् पुरुष इसी तरह प्रयास के बिना, बेदाग लिखा करते हैं ? कहते हैं कि उन्होंने 'आर्य' के सभी सातों खण्ड सीधा टंकण-यंत्र पर तैयार किये थे। काश! मैं भी कभी "वायुयान की गति"—श्रीअरविन्द इसी उक्ति का उपयोग करते थे—से लिख सकूं। हां 'सावित्री'-लेखन की कुछ और ही कहानी थी। वह "परिश्रम" से भरा कार्य था जिसमें उन्हें बदलना, तराशना, काटना-छांटना, कभी जोड़ना तो कभी दोहराना—सभी कुछ करना पड़ता था—लेकिन यह सब होता था नीरव मन के द्वारा। हां, 'ईश पाटल' (Rose of God), 'एक देवता का श्रम' (A God's Labour) इत्यादि कुछ कविताएं ऊपर से एकदम बनी-बनायी आयीं, उनमें एक शब्द भी बदलना नहीं पड़ा! उस अंधेरी, गहरी रात को पार कर श्रीअरविन्द ने दुबारा अपने क्रिया-कलाप शुरू कर दिये थे यह देखकर माताजी को बहुत प्रसन्नता हुई होगी।

स्वास्थ्य-लाभ के साथ-साथ अब श्रीअरविन्द कई घंटे कुरसी पर बैठकर अपना सारा समय आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा सर्जनात्मक कार्य में लगाने लगे। दुर्घटना ने उन्हें रोजाना के आठ-दस घंटों के पत्र-व्यवहार के भार से मुक्त करा दिया था। अब वे एक-के-बाद-एक अपने सभी महान् ग्रंथों को दोहराने का काम हाथ में ले सकते थे। उनका महान् ग्रंथ "दिव्य जीवन" सबसे पहले प्रकाश में आया। वह १९३९ के अंत की बात है—यही वर्ष है जब द्वितीय महायुद्ध शुरू हुआ था। और उधर "आर्य" १९१४ में प्रकाशित होना शुरू हुआ था, तब पहला महायुद्ध शुरू हुआ था—उसी 'आर्य' पत्रिका का मूल विषय था 'दिव्य जीवन'। क्या हम इसे मात्र संयोग कह सकते हैं ? अगले दो खण्ड भी शीघ्र, एक-के-बाद-एक प्रकाशित हो गये। उन्होंने बहुत सारे 'सॉनेट' भी लिखे थे। हम देखा करते कि उनका कलम बिना थके पृष्ठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर पृष्ठ लिखता चला जाता। हमें यह नहीं पता होता कि वे क्या लिखा करते क्योंकि 'सॉनेट' को छोड़कर अन्य सभी लेखन वे सीधे माताजी को सौंप दिया करते थे। वे उन्हें ईश्वर के वरदान के रूप में ग्रहण करतीं और सीधा पृथ्वीसिंह के पास टंकण के लिये भेज देतीं। यद्यपि पृथ्वीसिंह की आंखें बहुत ही कमजोर थीं फिर भी उनका टंकण इतना सुन्दर और साफ-सुथरा होता, वे इतनी बारीकी से काम करते कि श्रीअरविन्द उनके कार्य से अत्यधिक प्रसन्न रहते।

जबतक श्रीअरविन्द स्वयं लिखते रहे हमें यह जानने का सीधा मौका कभी नहीं मिला कि वे लेखन के किस कार्य में लगे हैं, हां कभी-कभी हमें भनक मिल जाती थी या वे स्वयं ही बता देते थे कि वे किन विषयों पर लिख रहे हैं, कितनी दूर तक पहुंचे हैं और उन्होंने लेखन में कितनी नयी सामग्री जोड़ी है। पुराणी तथा सत्येन्द्र दोनों को 'दिव्य जीवन' में बहुत रस था और विशेष रूप से पुराणी किसी-न-किसी तरह इस विषय में सूचना पा लेते थे। कभी-कभी भाग्य से, संयोग या आवश्यकता—किसी भी तरीके से हमें पता लग जाता कि श्रीअरविन्द किस कार्य में लगे हैं।

श्रीनिवास आयंगार श्रीअरविन्द की जीवनी लिख रहे थे। वे अपनी पाण्डुलिपि श्रीअरविन्द के पास संशोधन के लिये भेजने लगे। श्रीअरविन्द ने उसमें काफी सामग्री जोड़ दी, विशेष रूप से अपने राजनीतिक जीवन के बारे में, उनके इस जीवन के बारे में तो किसी को निश्चित रूप से कुछ पता ही न था। वे छोटे पैड पर लिखा करते थे, इस पैड का नाम था "ब्लॉक" जो फ्रांस में बनता था और छोटी-छोटी चिट्ठियां या नोट लिखने के काम में आता था। लेकिन चूंकि श्रीअरविन्द संशोधन के काम के लिये इन छोटे-छोटे पुर्जों का उपयोग करते थे अतः बहुत-से कागजों की जरूरत पड़ती थी। वे "ब्लॉक" से एक-एक पुर्जा फाड़ लेते थे, और बाद में कागजों का वह पुलिन्दा इतना मोटा हो गया कि उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इकट्ठा करना बहुत मुश्किल हो गया। वे स्वयं उन्हें पिन में लगाने की भरसक कोशिश करते लेकिन व्यर्थ! वे हमें सहायता के लिये भी नहीं बुलाते, अपने-आप ही जुटे रहते। हम दूर खड़े इस दृश्य का मजा उठाते और अंत में चंपकलाल अपने-आपको रोक नहीं पाते और दौड़कर उनके हाथ से झमेले का वह काम ले लेते। तबसे अपने-आप न कर, वे इसके लिये चंपकलाल पर भरोसा करने लगे। नलिनी तो श्रीअरविन्द के तौर-तरीकों को बहुत पहले से जानते थे। उन्होंने हमसे कहा कि इन छोटी-मोटी परेशानियों से हमेशा हमको श्रीअरविन्द को बचाते रहना चाहिये। लेकिन सवाल यह था कि जबतक वे स्वयं नहीं बुलायें हम उनकी मदद के लिये कैसे पहुंच जायें! हमें साहसी बनना था और बनना था "पूरी तरह से खुला हुआ"।

"दिव्य जीवन" के पहले खण्ड का प्रकाशन एक महान् घटना थी और इसे बहुत आनंद के साथ मनाया गया। सभीके मुंह पर एक ही बात थी, "दिव्य जीवन प्रकाशित हो गया, दिव्य जीवन प्रकाशित हो गया"। और सभी इसी खुशी से झूम रहे थे। दारा[१] ने इस उपलक्ष्य के आनंद में एक हल्की-फुल्की कविता रच डाली। श्रीअरविन्द को जब यह बताया गया तो उन्होंने पूछा—"कैसी कविता लिखी है?

Life Divine
Full of wine."
(दिव्य जीवन, मद से भरपूर)

पुराणी ने उत्तर दिया—"जी हां, आपने बिलकुल ठीक पकड़ा। उसकी कविता है—

Life Divine
Mother's wine

[१] एक मुसलमान साधक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The book is out
Let us shout.''
(दिव्य जीवन, मां का मद्य,
ग्रन्थ छप गया, चलो मचायें शोर)

पुस्तक को खरीदनेवालों की होड़ लग गयी। और खरीदनेवालों को बदले में मिलने लगे किताब पर श्रीअरविन्द के हस्ताक्षर! क्योंकि एक दिव्य नीति की घोषणा कर दी गयी थी—यह किसके दिमाग की उपज थी, मुझे नहीं मालूम—कि प्रत्येक खरीदनेवाले को पुस्तक पर श्रीअरविन्द के हस्ताक्षर मिलेंगे। पोथियों पर पोथियां आने लगीं और प्रत्येक के साथ नाम की पर्ची होती थी। कभी-कभी तो नाम बहुत लंबे होते थे जैसे— पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास चिन्तामणि पाटिल, और श्रीअरविन्द पूछते—"क्या मुझे इतना सब लिखना पड़ेगा?'' और फिर नामों की अजीबोगरीब लिखने की प्रणालियां! साथ-साथ तारीखें भी विचित्र तरीके से लिखी होतीं! कभी-कभी पति-पत्नी के नाम एक साथ होते! कभी विभिन्न ढंग-ढांचे का नाम देख श्रीअरविन्द पूछ बैठते—"ये कौन देवता आ धमके?'' या "ये भगवान् शिव कौन हैं?'' या कभी-कभी हम स्वयं ही व्यक्ति का परिचय दे देते। कई ऐसे भक्त थे जो पुस्तक का एक अक्षर भी नहीं समझ सकते थे, केवल आशीर्वाद पाने के लिये पुस्तक खरीद रहे थे। हमारे जैसे साधकों के लिये—जो पुस्तक खरीद नहीं सकते थे—यह लिखित आशीर्वाद के साथ जन्मदिन पर दी जाती थी। बाद में श्रीअरविन्द तथा माताजी की प्रकाशित पुस्तकें साधकों को उनके जन्मदिन पर उनकी आवश्यकता के अनुसार दी जाने लगीं। माताजी पूछतीं—"क्या तुम्हें कोई किताब चाहिये?'' या "क्या तुम्हारे पास यह किताब है?'' पता नहीं इसपर कितना पैसा खर्च होता था? और यह रिवाज अब भी थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ चला आ रहा है।

जब "दिव्य-जीवन'' का तीसरा संस्करण छपकर आया तो वह सबसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोटा था। श्रीअरविन्द बोल उठे—"कितना मोटा हाथी!" और जब पुस्तकें हस्ताक्षर के लिये थोक में आने लगीं और श्रीअरविन्द के बिस्तर के पास सोफे पर उनकी राशि लगने लगी तो हम यह सोच-सोच कर खुशी से झूम उठते कि चलो संताप से भरी हमारी इस धरती पर अंततः हमें "दिव्य जीवन" का वरदान तो मिल गया! लेकिन श्रीअरविन्द की दृष्टि के मंद पड़ने के कारण माताजी ने हस्ताक्षर देने की प्रथा एकदम से बंद करवा दी।

१९३९ में जो दूसरी महत्त्वपूर्ण घटना रूप ले रही थी वह थी यूरोप की तत्कालीन राजनीतिक अवस्था। हिटलर के गर्जन से सारा यूरोपीय वायुमण्डल इधर कई वर्षों से गूंज रहा था और युद्ध के बादल आसमान में उमड़-घुमड़ रहे थे। श्रीअरविन्द सारी स्थिति को बहुत ब्योरे में देख रहे थे। १९३८ में जब युद्ध प्रायः अनिवार्य हो उठा उस समय श्रीअरविन्द ने हमसे कहा था कि कई कारणों से उस समय युद्ध का प्रारंभ ठीक नहीं होगा। और युद्ध उस समय के लिये टल गया—जैसा कि श्रीअरविन्द चाहते थे। हम रोज अन्य देशों और विशेषकर भारत की नियति के बारे में बातें करते थे कि अगर हिटलर की पागलपन-भरी कामना पूरी हो गयी तो उससे कितने भयंकर परिणाम पैदा होंगे। चेम्बरलेन का "शान्ति का मिशन" असफल हो गया और श्रीअरविन्द की दुर्घटना के एक वर्ष के अंदर महायुद्ध शुरू हो गया। हमने सुना कि आखिर इग्लैंड ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी है। आश्रम के एक साधक पवित्र ने यह समाचार माताजी को सुनाया था और उन्होंने इसकी सूचना श्रीअरविन्द को दी। उन दिनों आश्रम में कोई रेडियो न था। युद्ध-संबंधी अन्य बातों की चर्चा हम बाद में एक अलग अध्याय में करेंगे।

श्रीअरविन्द की दुर्घटना के बाद पहले वर्ष में उपर्युक्त प्रमुख घटनाएं घटीं। अब उनका पैर बिलकुल ठीक और मजबूत हो गया था और वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना सहारे चल सकते थे। १९३९ के अंत में डॉ० मणिलाल ने श्रीअरविन्द से पूछा कि क्या इस दुर्घटना से कुछ लाभ भी हुआ तो उन्होंने जवाब दिया—"हां, विगत नवम्बर से मेरी प्रगति काफी तेज हो गयी, कुछ किताबों को पूरा करने का अवसर मिला। अब मुझे एकाग्रता के लिये अधिक समय मिलता है!

दुर्घटना के कारण माताजी का कार्यक्रम भी बहुत बदल गया था। उन्हें साधकों से व्यक्तिगत रूप से मिलना इत्यादि एकदम से बंद कर देना पड़ा था, लेकिन अब फिर से प्रणाम, मिलना इत्यादि शुरू हो गया, लेकिन बहुत भिन्न रूप में। पुरानी बातें तो फिर लौटकर अपने उसी रूप में आती नहीं! एक दिन मैंने माताजी से कहा—"अब जब श्रीअरविन्द ठीक हो गये हैं, हमें यहां से अपना बोरिया-बिस्तर गोल करना पड़ेगा!" श्रीमां यह सुनकर मुस्कुरायीं।

आया १९४० और हम वहां से गोल तो क्या हुए, इसके विपरीत हमारे पैर वहां और भी जम गये, हम श्रीअरविन्द की सेवा में जुट गये। वे अपने पुराने चिकित्सक-दल को छुट्टी न देना चाहते थे। जीवन-धारा अब अपनी सामान्य गति से बहती जा रही थी—हां कभी-कभी छोटे-मोटे परिवर्तन होते रहते थे, हम सबके कार्य निर्धारित हो चुके थे। आनेवाले वर्षों में हम उनके निकटतर आते गये और अंत में दूर हो गये। इसके बाद के अध्यायों में मैं उन १२ वर्षों का उल्लेख करूंगा जो हमने 'दिव्य पात्र' के साथ बिताये— यह सचमुच भागवत घटना थी। मैं उनके बाहरी जीवन से प्रारंभ करूंगा।

(क्रमशः)

—नीरदवरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

"पृथ्वी के इतिहास में ऐसे संक्रमण-काल आते हैं जब हजारों वर्षों से जो चीजें बनी रही हैं उन्हें उन चीजों को स्थान देने के लिये हटना पड़ेगा जो प्रकट होने के लिये तत्पर हैं ...। इस समय हम संसार के इतिहास के ऐसे ही मोड़ पर आ खड़े हुए हैं। जिस तरह प्रकृति ने पृथ्वी पर मानसिक सत्ता यानी मनुष्य की रचना की है, उसी तरह अब इस मानसिक तत्त्व में एक संकेंद्रित अतिमानसिक क्रिया चेतना और व्यक्तित्व को उतारने के लिये तीव्र प्रयास कर रही है।"

माताजी के ऊपर लिखे हुए शब्द नये वर्ष, २००१ के संदेश के रूप में लिये गये हैं। नये वर्ष के दिन शुभ नव वर्ष का यह संदेश आश्रम के द्वारा दिया गया था।

५ दिसंबर २००० को श्रीअरविन्द की महासमाधि के पचास वर्ष पूरे हुए। उस दिन लोग सवेरे श्रीअरविन्द के कमरे में गये और समाधि के आसपास उन्होंने ध्यान किया। शाम को क्रीड़ांगण में भी ध्यान हुआ। उस समय 'सावित्री' महाकाव्य से निम्नलिखित पंक्तियों के साथ श्रीअरविन्द का समाधिस्थ चित्र बांटा गया।

"उनके प्रेम ने मर्त्यों के हित स्वर्ग-मार्ग रचा है:
उन्होंने अपना जीवन और प्रकाश दिया यहां संतुलित करने
मानव अज्ञान के अंधकारमय लेखा-जोखा को।
वह हो चुकी, भयावह रहस्यमयी आहुति,
देव के आहुत शरीर से अर्पित संसार के लिये ..."

९ दिसंबर को (जिस दिन श्रीअरविन्द के शरीर को समाधिस्थ किया गया था) सवेरे समाधि के पास ध्यान हुआ और शाम को क्रीड़ांगण में।

१ दिसंबर २००० को श्रीअरविन्द अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षाकेन्द्र की जयन्ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के उपलक्ष्य में सावित्री पर आधारित एक नाटक ''A light there is that leads'' आश्रम-थियेटर में प्रस्तुत किया गया। २ दिसंबर को आश्रम के शारीरिक शिक्षण विभाग की जयंती पर शारीरिक शिक्षण का प्रदर्शन हुआ जिसका शीर्षक था "बेस्ट ऑफ दि ओल्ड''। इसमें पिछले वर्षों के प्रमुख आइटमों को पुनः दर्शाया गया था।

शाखाओं और केन्द्रों से समाचार

श्री प्रदीप नारंग ने लंदन के दो केन्द्रों में १७ और २४ नवंबर २००० को "श्रीअरविन्द का अंतर्दर्शन और ध्यान का महत्त्व'' पर भाषण दिया।

छोटा उदेपुर (गुजरात) में श्रीअरविन्द के पुण्यावशेष ४ अक्तूबर २००० को श्रीअरविन्द अभ्यास केन्द्र में श्रीमती ज्योति बहन थानकी द्वारा पधराये गये।

राजस्थान, जयपुर में श्री० एम० वी० नादकर्णी ने ७, ८, ९ अक्तूबर २००० को 'श्रीअरविन्द का अंतर्दर्शन' और 'सावित्री' पर भाषण दिया।

उत्तर प्रदेश सोसायटी की सभा १४ और १५ अक्तूबर २००० को पहले दिन श्रीअरविन्द सोसायटी की नयी दिल्ली की शाखा में और दूसरे दिन श्रीअरविन्द आश्रम की शाखा में हुई। इन सभाओं का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री शास्त्री ने किया। सभा में शिवराज पाटिल, श्री टी० एन० चतुर्वेदी, तथा श्रीअरविन्द सोसायटी के अध्यक्ष इत्यादि के भाषण हुए।

विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश) के केन्द्र ने फूलों की प्रदर्शनी लगायी। आन्ध्र-प्रदेश के मुख्य-मंत्री श्रीचन्द्रबाबू नायडू तथा कृषि-मंत्री वाडीराव प्रदर्शनी देखने आये थे। उन्हें माताजी के दिये फूलों के अर्थ बतलाये गये।

कर्णाटक की बैंगलोर शाखा ने श्री मनोज दास के तीन भाषण ३, ४, ५ नवंबर २००० को आयोजित किये, विषय था, "भारत की वेद से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकर श्रीअरविन्द तक की आध्यात्मिक साहस-कथा''। ५ नवंबर को प्रश्नोत्तर हुए। २९, ३०, ३१ दिसंबर को डॉ० एम० वी० नादकर्णी के श्रीअरविन्द, विकासक्रम तथा योग पर भाषण हुए।

ओमपुरी (गुजरात) में ६ से १२ नवंबर तक शिविर हुआ। इसमें श्री कैवल्य स्मार्त, शरद जोशी, किरीट ठक्कर, दिलावर सिंह जाडेजा, अश्विन कापड़िया और श्रीमती रंजन बहन वैद्य के भाषण हुए। त्रैमासिक ओमपुरी पत्रिका का प्रथम अंक निकाला गया। माताजी और आश्रम के अन्य कलाकारों की चित्रकला की प्रदर्शनी हुई। जो केन्द्र अपने यहां इन चित्रों की प्रदर्शनी रखना चाहें वे निम्नलिखित पते पर संपर्क कर सकते हैं। ओमपुरी शाखा, श्रीअरविन्द सोसायटी, पोस्ट बाक्स नं० २१, पी० ओ० मातर, ३८७५३० (जिला—खेड़ा) गुजरात।

गुलबर्ग (कर्णाटक) की शाखा ने श्री० ए० एस० पाटिल द्वारा चित्रित फूलों की प्रदर्शनी लगायी जिसमें माताजी के फूलों पर लिखे गये वचन भी दिये गये थे।

पांडिचेरी में नारी आयोग ने सोसायटी के बीच ऑफिस में २१, २२, २३ नवंबर को "भगवान् के साथ सर्वांगीण घनिष्ठता" विषय पर सभा की।

सोसायटी के नये केन्द्र ओंगोल (आन्ध्र प्रदेश), महबूब नगर (आन्ध्र प्रदेश) बूर्ला (उड़ीसा), मौरानीपुर (उ० प्र०) डोमबिवली पूर्व (महाराष्ट्र) और सिलचर (आसान) में खुले।

घोषणाएं

१—डॉ० एम० वी० नादकर्णी का अंग्रेजी में सावित्री अध्ययन सत्र सोसायटी के बीच ऑफिस में २३ फरवरी से ५ मार्च २००१ तक होगा।

२—शिक्षा शिविर और अध्यापकों के प्रशिक्षण की वर्कशॉप सोसायटी के बीच ऑफिस में मई के उत्तरार्ध २००१ में होगी। संपर्क करें : प्रति, को-ऑरडिनेटर, एज्युकेशन कैम्प, श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी, मार्च तथा अप्रैल २००१ के प्रमुख दिवस

२१ फरवरी—माताजी की वर्षगांठ की जयन्ती (१८७८) दर्शन-दिवस

२८ फरवरी—ओरोवील का स्थापना-दिवस (१९६८)

२९ मार्च—माताजी का पहली बार पांडिचेरी-आगमन और श्रीअरविन्द से मुलाकात (१९१४)

४ अप्रैल—श्रीअरविन्द के पांडिचेरी-आगमन की जयन्ती (१९१०)

२४ अप्रैल—माताजी के दूसरी और अंतिम बार पांडिचेरी आगमन की जयन्ती (१९२०) दर्शन-दिवस

आइये हम अपने दैनन्दिन जीवन में इस महीने माताजी की इन उक्तियों को अभ्यास में उतारें—

अगर तुम सचमुच भगवान् से प्रेम करते हो तो अचंचल और शान्त रहकर प्रमाणित करो।

किसी कामना पर विजय पाना उसे संतुष्ट करने से कहीं अधिक हर्ष लाता है।

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा..... ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५ ००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Hanuman Prasad Dharam Chand
Dinodiya Welfare Trust
CALCUTTA

J. J. Charitable Trust
7C Kiron Shankar Rai Road
CALCUTTA - 1

Kayan Foundation
9/2 Hungerford street
CALCUTTA - 17

Pannalal Kandoi Seva Kosh
132/1 M. G. Road
CALCUTTA - 7

G. N. B. Motors Ltd.
8 Camac Street, 9th Floor
CALCUTTA - 700 017

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Sri Madhopur Vikas Parishad Trust
48 Dobson Road
HOWRAH - 711101

Sharad Seva Nidhi Trust
26 Amherst Street
CALCUTTA - 700009

Seth Chiranjilal Khaitan Trust
7 Keyatala Lane
CALCUTTA - 700009

Mamraj Jayatri Trust
6A Ironside Road
CALCUTTA - 700019

Dhanuka Charity Trust
Dhanseri House, 4A Woodburn Park
CALCUTTA - 700020

M/S ODC Carrier (P) Ltd.
15 India Exchange Place
CALCUTTA - 700001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Salarpuria Public Charity Trust
7, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 072

M/s Patton Ltd.
3C, Camac Street
CALCUTTA - 700 016

Naurangrai Lohia Charitable Trust
14A Loudon Street
CALCUTTA - 700 017

Charu Enterprises
42B Shakespear Sarani, 13, Shalimar Apt.
CALCUTTA - 17

Kitply Industries Ltd.
White House, 'A' Block, 4th Floor, 119 Park Street
CALCUTTA - 700 016

Eastern Enterprises Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Manav Seva Trust
CALCUTTA

Saria Charitable Trust
(J. P. Saria)
D-9 Kirti Nagar
NEW DELHI - 110 015

Shri Gopal Kamal Kumar
196, Jamuna Lal Bajaj Street
CALCUTTA - 700 007

Adukia Industrial Concern
17, Ganesh Ch. Avenue
CALCUTTA - 700 013

Sri Keshar Deo Saraf & Sons (HUF)
35, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 012

Maikal Fibres Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको उस नये प्रकाश के प्रति खोलो जो धरती पर उदित हुआ है और तुम्हारे सामने एक ज्योतिर्मय पथ खुल जायेगा।

—श्रीमां

WITH THE BEST COMPLIMENTS OF

S. L. Deorah Group of Enterprises

ASSAM TEA WAREHOUSING CORPORATION
INDIAN TEA STORAGE AGENCY
INDIAN TRANSPORT AGENCY
AURO IMPEX PRIVATE LIMITED
AURO LABORATORIES LIMITED
AURO BUSINESS CENTRE

Calcutta Office:

'SHIVANGAN' - Flat No. 2C, 53/1/2, Hazra Road
CALCUTTA - 700 019
Phone No.: 474 - 2059, 474 - 2060
Fax No.: 476 - 2348

Bombay Office:

408 Navratan, 69 P. DeMellow Road
BOMBAY - 400 009
Phone No.: 343 - 5341, 342 - 9027
Fax No.: 342 - 5022

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदबुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

दो संदेश

तुमसे सबसे अधिक मांग की जाती है प्रकाश की ओर मुड़ने में अध्यवसाय की। प्रकाश हम जितना समझते हैं उससे भी अधिक हमारे निकट है और किसी भी क्षण उसका मुहूर्त आ सकता है।
९-९-४३

—श्रीअरविन्द

*

मेरे प्रिय बालक,

यह वर्ष तुम्हें सब परिस्थितियों में मुस्कुराने की शक्ति दे क्योंकि मुस्कान कठिनाइयों पर वैसे ही काम करती है जैसे सूर्य बादलों पर—वह उन्हें भगा देता है।
९-९-४२

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'संपादकीय' :

प्रत्याशा . . .

श्रीअरविन्द के व्यक्तित्व में ऐसे पहलू हैं जो साधारणतः एक ही व्यक्ति में नहीं पाये जाते। सात वर्ष की सुकुमार वय में उन्हें इंग्लैण्ड भेजा गया था और जिन वर्षों को चरित्र-निर्माण का महत्त्वपूर्ण अंग माना जाता है उन वर्षों में वे पूरी तरह यूरोपीय संस्कृति में सराबोर थे। पढ़ाई के बाद जब उन्होंने युवा वय में भारत की भूमि पर पांव रखे तो उनकी मातृभूमि ने अपने बिछड़े लाल को अपूर्व शांति का उपहार दिया। वह शांति ऐसी थी जिसे पाने के लिये मनुष्य बरसों प्रयास करता रहता है। जब उन्होंने भारतीय संस्कृति और साहित्य का अध्ययन शुरू किया तो वे वैसे ही सहज रूप से प्राप्त हुए जैसे हंस के लिये पानी में प्रवेश करना। हम इस कारण उनके चरित्र में यूरोप और भारतीय संस्कृतियों का ऐसा सुभग संगम पाते हैं जिसके कारण वे विरल व्यक्तित्व के धनी बन गये।

भारतीय वातावरण में वे ऐसे रच-बस गये थे कि मातृभूमि की पराधीनता उन्हें बहुत खलने लगी और उन्होंने जनता को जगाने के लिये ऐसे आग उगलते लेख लिखे कि उन दिनों के नरम दल के नेता घबड़ा गये और उनसे जरा नरम भाषा का प्रयोग करने के लिये आग्रह किया। श्रीअरविन्द ने लिखना ही छोड़ दिया। अब वे पर्दे के पीछे रहकर राजनीति में सक्रिय भाग लेने लगे। जब बंगाल-विभाजन की संभावना उठी तो उन्होंने बड़ौदा सरकार की अपनी अच्छी नौकरी छोड़कर खुल्लम-खुल्ला राजनीति में भाग लेना शुरू किया। उन्होंने कहा था कि वे पश्चिम के राजनैतिक दर्शन के सिद्धांतों और वेदांत की अमर वाणी को मिलाकर राष्ट्र का नेतृत्व कर रहे थे इसीलिये अगर वे एक ओर जनता के आंदोलन का स्वागत करते थे तो दूसरी ओर भारत को भारत माता–

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक देवी—के रूप में देखते थे। अपनी पत्नी को लिखे एक पत्र में वे कहते हैं, "मैं भारत को अपनी मां के रूप में देखता हूं, उसकी भक्ति, पूजा करता हूं इसलिये भारत की स्वाधीनता मेरे लिये सबसे महत्त्वपूर्ण काम है। क्या एक बेटा अपनी मां की छाती पर बैठे एक राक्षस को उसका रक्त पीते देख सकता है ? वह मां को राक्षस से मुक्त करके ही सांस लेगा। मैं भी भारत माता को मुक्त करके ही दम लूंगा।" यह भावना भारतीय विचार और संस्कृति की देन है। जिन वर्षों में उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया और वन्दे मातरम् पत्रिका में लिखा उन दिनों सारा भारत 'वन्दे मातरम्' के मंत्र से गूंज उठा था। युवकों में देश के लिये मर-मिटने का साहस जाग उठा था। जब उन्हें राष्ट्र-द्रोह या अंग्रेज सरकार के विरुद्ध आंदोलन का नेतृत्व करने के लिये अलीपुर जेल में एकांतवास की सजा दी गयी तो यह भीषण सजा वरदान बन गयी। इसी काल-कोठरी में उनका भगवान् वासुदेव से साक्षात्कार हुआ। इस घटना ने उनके आदर्शों में आमूल परिवर्तन ला दिया। अब वे केवल भारत-प्रेमी न रहे, मानव-प्रेमी बन गये। इस परिवर्तन को उनके बैरिस्टर श्री चित्तरंजन दास ने उनका बचाव करते हुए ओजस्वी, कवित्वमय भाषा में व्यक्त किया जो एक भविष्यवाणी न रह कर वर्तमान काल में सच प्रमाणित हुई। उन्होंने घोषणा की, "उनके (श्रीअरविन्द) शरीर छोड़ने और यहां से विदा लेने के बाद जनता उन्हें देश-प्रेम के कवि, राष्ट्रीयता के पैगम्बर और मानवजाति के प्रेमी के रूप में आदर से देखेगी, समझेगी। उनके शरीर-त्याग के बहुत समय बाद उनकी वाणी केवल भारत में ही नहीं, सुदूर देशों और सागरों के उस पार प्रतिध्वनित और पुनः ध्वनित होती रहेगी।"

अलीपुर जेल की अनुभूति के बाद श्रीअरविन्द पूरी तरह अंतर्मुख हो गये। उन्हें वेद, उपनिषद् और गीता के अध्ययन से कई गभीर अनुभूतियां हुईं जिनके कारण उन्हें अंतर्ज्ञान के द्वारा विचारों से नहीं, अनुभव के द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व के कई रहस्यों का ज्ञान प्राप्त हुआ। उन्होंने पाया कि जिस वेद वाणी ने यह अमर मंत्र दिया वही उनका आधार बनेगा। वह वाणी थी–

हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत् त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये॥

"हे मनुष्य की अंधकारमय और सीमित सत्ता को प्रकाशित, विस्तृत और उद्घाटित करनेवाले दिव्य सूर्य, सत्य के मुख को देदीप्यमान आवरण से ढककर रखा गया है। दिव्य ज्ञान को देखने वाली दृष्टि देने के लिये, सत्य का विधान स्पष्ट करने के लिये, तू उस आवरण को दूर कर।"

वह वाणी कविता नहीं थी बल्कि उन्हें उसका साक्षात्कार हुआ था। इस मंत्र के गूढ़ रहस्य को उन्होंने न केवल समझा बल्कि उस आवरण को हटाने का उपाय भी ढूंढ़ निकाला। इस मंत्र को आधार बनाकर उन्होंने अपने योग का सिद्धांत सृष्टि के आरंभ को लेकर बनाया क्योंकि उन्होंने देखा कि तभी इस मंत्र का महत्त्व और उसको मानव प्रकृति में चरितार्थ करने की आवश्यकता मनुष्य समझ सकेगा। इसीलिये उन्होंने अपने योग को विकासवाद के दृढ़ और सुसंगत सिद्धांत के आधार पर स्थापित किया है। वेद के मंत्रों और दशावतार की रचना को लेकर वे स्वयं देख चुके कि यह अत्यंत काव्यमय भाषा में और रहस्यवाद के अनुसार विश्व के अधिक सच्चे विकास-क्रम का चित्र है। आगे चलकर वे कहते हैं कि विकास-क्रम का आरंभ वनस्पति से हुआ और जैसे-जैसे उसमें अधिक चेतना प्रवेश करती गयी वैसे-वैसे विकास के अधिक विकसित रूप पृथ्वी पर प्रकट हुए। वनस्पति से बढ़ते-बढ़ते पशु और उससे भी आगे जाकर मनुष्य का विकास हुआ। मनुष्य के अंदर सबसे पहले मन का उद्भव हुआ। उनका कहना है कि अपने विभिन्न पक्षों को जैसे जीवन, प्राण और मन को सामंजस्य में लाकर मनुष्य दिव्यत्व की ओर बढ़ सकता है और तब उसका पार्थिव जीवन दिव्य जीवन में बदल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है। तब वह चरम दिव्य वास्तविकता के साथ ऐक्य साधकर उस सत्य को पायेगा जिसे अतिमानसिक सत्य कहते हैं और तब उसके विचार, भावनाएं और कार्य सब उस चरम तत्त्व के साथ एक होकर उसे अभिव्यक्त करेंगे।

श्रीअरविन्द ने अपनी चार महत्त्वपूर्ण अनुभूतियों के आधार पर अपने योग की विशिष्टता स्थापित की है। उनकी चार अनुभूतियां हैं, पहली : नीरव, देशमुक्त, सीमाहीन ब्रह्म की अनुभूति, दूसरी : वैश्व चेतना की प्राप्ति, तीसरी : यह कि चरम वास्तविकता निश्चल-स्थिर और सक्रिय, दोनों स्थितियों में रहती है। अंत में चेतना के उच्चतर स्तरों को पार करते-करते उन्हें अतिमानस चेतना के अस्तित्व और उसे नीचे पृथ्वी पर उतारने की संभावना का पता लगा। उन्होंने सारा जीवन अतिमानस को उतारने में लगाया।

अपने एक भाषण में उन्होंने कहा, "जीवन की एक शक्तिशाली संहिता है, मानव विकास-क्रम का एक सिद्धांत है। आध्यात्मिक ज्ञान की और अनुभूति की एक अतुलनीय राशि है जिसके लिये भारत को नियति ने संरक्षक, उदाहरण और प्रचारक नियत किया है और वह है सनातन धर्म, शाश्वत धर्म। हमें जीवन के आदि स्रोत की ओर लौटना चाहिये और अपने अंदर शक्ति को जगाना चाहिये। हमें अपने भूतकाल को भली-भांति जानना चाहिये और उसको आधार बनाकर भविष्य की ओर चलना चाहिये। हमारा मुख्य कर्तव्य यह है कि हम सर्वप्रथम अपने-आपको चरितार्थ करें और बाद में हर चीज को भारत के शाश्वत जीवन और प्रकृति में ढालें।"

यह है उनकी भारतवासियों से प्रत्याशा। क्या हम उसे चरितार्थ करने का साहस रखते हैं ?

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

मार्च

१. जब आदमी जल्दबाजी में नहीं होता तो बहुत अधिक तेजी से आगे बढ़ता है।
सचमुच आगे बढ़ने के लिये, मनुष्य को पूर्ण विश्वास के साथ यह अनुभव करना चाहिये कि उसके सामने शाश्वत बिछा है।

२. किसी वस्तु को चरितार्थ करने के लिये व्यक्ति को धीरज धरना होता है। जितनी विशाल और जितनी अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्धि होती है, उतना ही महान् धीरज होना चहिये।

३. शूरता है सभी परिस्थितियों में परम सत्य के लिये डटे रह सकना, विरोध में भी उसकी घोषणा करना और जब कभी आवश्यकता हो तो उसके लिये युद्ध करना।
और हमेशा अपनी ऊंची-से-ऊंची चेतना के द्वारा काम करना।

४. शूरता : १. हमेशा सबसे अधिक सुन्दर और सबसे अधिक उत्कृष्ट कार्य करना।
२. हमेशा अपनी चेतना की ऊंचाई से कार्य करना।

५. केवल वही कभी पराजित नहीं होता जो पराजित होना अस्वीकार करता है।

६. हम भगवान् के वीर सैनिक बनने की अभीप्सा करते हैं जिससे उनकी महिमा धरती पर प्रकट हो सके।

७. वीरता किसी से डरती नहीं और विरोधी के सामने डटे रहना जानती है।

८. अपने दोषों को पहचानना श्रेष्ठतम साहस है।

९. वे सब जो सचमुच बलवान् और शक्तिशाली होते हैं, सदा बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिर रहते हैं। केवल दुर्बल ही बेचैन होते हैं। सच्ची स्थिरता सदा सामर्थ्य का लक्षण है।

१०. अधिक ऐकांतिक रूप से भागवत प्रेम का सहारा लो। जब मनुष्य भागवत प्रेम पाये तो किसी भी मानव प्रेम का क्या मूल्य हो सकता है ?

११. धन की हानि कम महत्त्व रखती है, परंतु संतुलन की हानि बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण चीज है।
सारी शरारत संतुलन के अभाव से आती है। अतः हम सदा-सर्वदा सभी परिस्थितियों में अपना संतुलन बनाये रखें।

१२. उल्लासपूर्ण उत्साह : जीवन का सामना करने के लिये सबसे अच्छा तरीका।

१३. हमारे साहस और हमारी सहनशीलता को हमारी आशा के जितना ही महान् होना चाहिये और हमारी आशा की कोई सीमा नहीं।

१४. स्थिर आशा मार्ग में बहुत सहायता देती है।

१५. हमारी आशाएं कभी इतनी बड़ी नहीं होतीं कि वे अभिव्यक्त न हो सकें। हम किसी ऐसी चीज की कल्पना नहीं कर सकते जो हो न सके।

१६. हमेशा सभी परिस्थितियों में मुस्कुराना सीखो, अपने दुःखों और सुखों पर, अपनी पीड़ाओं और अपनी आशाओं पर मुस्कराना सीखो क्योंकि मुस्कान में आत्म-संयम की परम शक्ति है।

१७. यह कभी न भूलो कि नाटकीय होने की अपेक्षा, चुपचाप प्रसन्न रहकर तुम बहुत ज्यादा सहायक होते हो।

१८. प्रसन्न रहो मेरे वत्स, प्रगति का यह सबसे अधिक निश्चित मार्ग है।

१९. सुख-शांति उतनी ही संक्रामक है जितनी उदासी—सच्ची गहरी सुख-शांति का संक्रमण लोगों तक पहुंचाने से ज्यादा उपयोगी और कोई चीज नहीं होती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०. खुश रहने की कोशिश करो—तुम तुरंत दिव्य प्रकाश के निकट होगे।

२१. वस्तुतः सुखी है वह आदमी जो भगवान् से प्रेम करता है क्योंकि भगवान् हमेशा उसके साथ रहते हैं।

२२. *प्रश्न*: पिछले दिनों इतनी अधिक समस्याएं मेरे सामने रही हैं। पता नहीं, उन्हें हंसी-खुशी कैसे हल किया जाये ?
उत्तर: स्थायी और सच्चा सुख पाने का एकमात्र उपाय है भागवत कृपा पर पूर्ण और ऐकांतिक निर्भरता।

२३. हमेशा अच्छे बने रहो तो तुम हमेशा खुश रहोगे।

२४. हम हमेशा उचित वस्तु करें तो हमेशा शांत और सुखी रहेंगे।

२५. हम अपनी खुशी हमेशा भगवान् में ही खोजें।

२६. जब भगवान् सच्चा आंतरिक सुख प्रदान करते हैं तो दुनिया की किसी चीज में वह शक्ति नहीं होती जो उसे छीन सके।

२७. हमेशा याद रखो कि तुम जो सुख पाओगे वह उस सुख पर निर्भर होगा जो तुम देते हो।
तुम जो सुख पाते हो उसकी अपेक्षा तुम जो सुख देते हो वह तुम्हें ज्यादा सुखी बनाता है।

२८. अगर हम अपने सुख को अक्षुण्ण और शुद्ध रखना चाहें तो हमें उसकी ओर प्रतिकूल विचारों को आकर्षित न करने पर पूरा ध्यान देना चाहिये।
हर्ष तब आता है जब तुम उचित वृत्ति अपनाओ।

२९. तुम मानव प्रेम के द्वारा भगवान् से प्रेम करना नहीं सीख सकते, क्योंकि वह प्रेम और ही प्रकार का है। पहले अपने-आपको सच्चे निष्कपट भाव से भगवान् को देना सीखो उसके बाद प्रेम का आनंद आयेगा। अपने-आपको सचाई के साथ देने से तुम्हारी सब कठिनाइयां गायब हो जायेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३०. भगवान् के लिये सच्चा प्रेम है आत्म-दान, जो मांगरहित हो, निवेदन और समर्पण से भरपूर हो। वह कोई अधिकार नहीं जमाता, कोई शर्त नहीं रखता, कोई सौदेबाजी नहीं करता, ईर्ष्या, अहंकार या क्रोध की किसी उग्रता में रस नहीं लेता क्योंकि ये चीजें उसकी रचना में ही नहीं होतीं।

३१. तुम्हें कठिनाइयों के बीच भी स्थिर और अचंचल रहना सीखना चाहिये। सभी बाधाओं पर विजय पाने का यही तरीका है। स्थिरता और तमस् में घपला मत करो। स्थिरता है आत्म-संयत शक्ति, अचंचल और सचेतन ऊर्जा, आवेशों पर प्रभुत्व और अचेतन प्रतिक्रियाओं पर नियंत्रण। काम में स्थिरता निपुणता का मूल और पूर्णता की अनिवार्य शर्त है।

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा..... ... ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

प्रभु का सदन

इस तरह इस मकान में हम अनिश्चित काल के लिये जम गये। यह वह मकान था जिसमें श्रीअरविन्द तथा माताजी एक दशक से अधिक समय तक रह चुके थे, फिर दुर्घटना के बाद हमारा यहां प्रवेश हुआ, नहीं तो इस अरसे में उनके यहां और किसी का प्रवेश न हुआ था। इस मकान से श्रीअरविन्द कभी एक कदम भी बाहर न निकले और न ही किसी अतिथि या साधक से मुलाकात की। केवल चम्पकलाल—उनके व्यक्तिगत सेवक—को कभी-कभी उनकी झलकियां मिल जाती थीं। उन्हें श्रीअरविन्द का शरीर सोने के जैसा चमकीला लगता था। हमारा काम भी उनकी सेवा करना था—उसी तरह जैसे मन्दिर में प्रभु की पूजा होती है—हम उनके पास चिकित्सक-दल की तरह न थे, क्योंकि अब उन्हें चिकित्सा की कोई आवश्यकता न थी। हमारा काम था उनकी छोटी-मोटी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करना, या अपनी बातों और उपस्थिति से जरा उनका मनोरंजन करना। यही हमारा योग था। व्यक्तिगत रूप से गुरु की, स्वयं भगवान् की सेवा करने से बढ़कर और कौन-सा योग हो सकता है ? स्वयं रामकृष्ण ने अपने भतीजे हृदय से कहा था—"मेरी सेवा करो और तुम्हें सभी वांछित चीजें मिल जायेंगी।" उस समय हमारे हृदय में कोई विशेष कामना न थी, हम अपने हृदय के पूर्ण समर्पण-भाव से उनकी सेवा में लगे रहते थे। हमें यह सोचकर कितनी प्रसन्नता होती है कि शुरू में ही श्रीअरविन्द ने हमसे कहा था कि सेवकों के इस दल से वे बहुत ही खुश थे। सेवा करना ही हमारा जीवन था और हमारा समय बहुत ही आराम से व्यतीत हो रहा था, मानों "चांदनी में नहायी हुई हमारी नौका" आराम से बह रही थी। अब श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्थ हो गये थे और उन्हें हमारे सहारे की जरूरत न थी, लेकिन यह श्रीअरविन्द या माताजी का तरीका न था कि जिस व्यक्ति या जिस वस्तु का काम पूरा हो जाये उसे दूर कर दें। उनकी कृपा तो हमेशा हमपर बरसती रहती है।

हम उनकी सेवा कैसे करते थे, इसे जानने का सबसे अच्छा तरीका यह होगा कि श्रीअरविन्द के दैनिक जीवन का एक चित्र खींचते चलें, अब जब कि उनका जीवन एक निर्धारित रूप ले चुका था, हमारी सेवा भी उसी रूप के ताने-बाने में बुन गयी थी। लेकिन मुझे इसका भी भय है कि कहीं उनके बाहरी जीवन का खाका मात्र खींच देने से पाठकों के मन में गलतफहमी न पैदा हो जाये कि यही उनका सच्चा जीवन था, क्योंकि मनुष्य तो सामान्यतः बाहरी आभासों और अभिव्यक्तियों को देखकर ही लोगों के बारे में अपनी धारणाएं बना लेता है। अगर हम उनकी बाहरी गतिविधियों या शब्दों तक ही अपने-आपको सीमित कर लें तो उनके पीछे की विशाल चेतना हमारी आंखों से ओझल ही रहेगी। उदाहरण के लिये, जब वे मित्र के रूप में हमसे बातें किया करते थे तो क्या हम कभी यह कल्पना कर सकते थे कि स्वयं नारायण नर में स्थित नारायण से ही बातें कर रहे हैं ? जब वे डॉ० मणिलाल को देखते थे तो क्या मणिलाल को इसका जरा भी भान होता था कि "वे देवता मणिलाल के अंदर बैठे देवता को ही देख रहे थे ?" हम इस बात की भी भला कैसे कल्पना कर सकते हैं कि अपने छोटे-से कमरे में बंद, एक छोटे-से शरीर में रहते हुए वे पैरिस, टोकियो और न्यूयॉर्क देख लेते थे। वे कह सकते थे—"क्षितिज से परे मेरी आत्मा असीमित दृश्यों में विस्तृत होती रहती है।" किसी प्रसंग में मैंने एक बार उनसे कहा था, "मैं तो सीधे-सादे मात्र श्रीअरविन्द के रूप में आपको पाकर संतुष्ट हूं।" उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं। मैं तो बस इतना कहना चाहता हूं कि ये सीधे-सादे श्रीअरविन्द हैं कौन यह मैं तो जानता नहीं। हां, अगर तुम जानते हो तो इसके लिये मैं तुम्हें बधाई देता हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के बाहरी क्रिया-कलापों के आधार पर उनकी आंतरिक चेतना को पढ़ सकना—यह तो बहुत दूर की बात है। एक बार मैंने उनसे निवेदन किया कि वे ऐसे लोगों के नाम बतला दें जो ब्रह्म चेतना में रहते हैं ताकि मैं भी इस विषय में कुछ व्यावहारिक ज्ञान पा सकूं! उन्होंने जवाब दिया, "जिसके पास यह चेतना है मात्र उसके बारे में जानकर तुम्हें उसका व्यावहारिक ज्ञान कैसे मिल जायेगा भला ? यह तो ऐसी ही बात हुई कि अगर तुम यह जान लो कि आइंस्टाइन एक महान् गणितज्ञ हैं तो तुम्हें उच्च गणित का व्यावहारिक ज्ञान भी मिल गया!" श्रीअरविन्द की कृतियों को देखकर हमें यह संदेह तो नहीं रहता कि वे चेतना की किन ऊंचाइयों को छूते थे, किन गहराइयों में पैठ चुके थे और वे रात-दिन, निरंतर चेतना के किस स्तर पर रहते थे, लेकिन फिर भी ये चीजें उनके दैनिक मानव जीवन पर कैसा प्रभाव डालती थीं इसकी जिज्ञासा तो सदैव बनी रहती है। अर्जुन ने क्या यही सवाल श्रीकृष्ण से नहीं किया था? संभवतः ये कर्म अपने-आपमें उनके आंतरिक व्यक्तित्व पर कोई प्रकाश न डालें—विशेषकर उन लोगों के लिये जो सब कुछ सतही दृष्टि से देखते हैं। फिर भी जो सचमुच महान् होते हैं वे जो कुछ कहते या करते हैं उसमें महानता का स्पर्श रहता ही है। अतः मेरा यह प्रयास कि मैं श्रीअरविन्द के भौतिक जीवन का एक खाका खींचूं वह इसी दृष्टि से है कि वे अपने पार्थिव जीवन में जो विराट् पहेली रूप थे उस पहेली की इससे कुछ झांकी मिल जाये।

उनके बाहरी जीवन के बारे में बहुत-सी अजीबोगरीब बातें फैलती थीं और लोग-बाग उनपर विश्वास भी कर लेते थे क्योंकि वे एकांत में रहा करते थे। कुछ लोगों का यह विश्वास था कि न वे कभी खाते थे, न सोते थे, सारे समय बस समाधि में डूबे रहते थे। कुछ लोगों ने यह सुन रखा था कि वे निराधार हवा में स्थित रहते थे। और कुछ अर्जुन की तरह सचमुच यह जानना चाहते थे कि वे कैसे बातें करते थे, कैसे उठते-बैठते और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलते थे ? एक बार माताजी ने हमसे इन बाहरी बातों से सतर्क रहने के लिये कहा था क्योंकि ऐसी बातें लोगों को सत्य से दूर हटाकर मिथ्यात्व में उलझा देती हैं। व्यक्ति ऊपर से कैसा दीखता है वही तो सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात नहीं है। और यह हम दावे के साथ कह सकते हैं कि श्रीअरविन्द के सभी कर्म उस भागवत चेतना से प्रवाहित होते थे जिसके वे मूर्त रूप थे, उनके सभी कर्म 'युक्त कर्म' थे। लेकिन इसे दर्शाया कैसे जाये ? उनके दैनन्दिन जीवन के क्रिया-कलापों का व्यावहारिक ज्ञान पाकर ? तब तो 'यः पश्यति सः पश्यति !' जो देख सकता है वही देखता है।

अच्छा, तो हम तड़के से शुरू करें। पूर्व की खिड़की से सूर्य की रोशनी आती थी, वे उठ जाते और मणिलाल की बतायी हुई कसरतें शुरू कर देते थे। लगभग साढ़े छहतक वे बिस्तर पर बैठ जाते और माताजी की प्रतीक्षा करते; माताजी बालकनी दर्शन के लिये जाते समय श्रीअरविन्द के दर्शन करके जातीं। श्रीअरविन्द ने हमें यह निश्चित आदेश दे रखा था कि माताजी के आने से पहले उन्हें अवश्य जगा दिया जाये। दूसरी तरफ माताजी की ओर से हमें यह हिदायत मिली हुई थी कि उनकी नींद में हम विघ्न न डालें। अतः कभी-कभी हम बड़े पसोपेश में पड़ जाते। चम्पकलाल का भक्त स्वभाव व्यायाम के बाद की उनकी मीठी नींद में कभी बाधा नहीं देता, लेकिन मैं, जब अकेला होता तो हर तरह से उनको जगाने की कोशिश करता। कभी-कभी वे अपने-आप जग जाते और उन्हें पता लगता कि माताजी आकर चली गयीं ! ऐसा होने पर माताजी बालकनी दर्शन के बाद फिर श्रीअरविन्द के दर्शन के लिये आ जातीं और उनके आशीर्वाद लेकर अपना दिन उसी तरह आरंभ करतीं जिस तरह हम सब उनके आशीर्वाद पाकर अपनी-अपनी दिनचर्या शुरू करते थे। इसके बाद वे 'हिन्दू' समाचार-पत्र पढ़ते। नौ और दस के बीच माताजी उनके बाल संवारने, उनके सिर पर एक तरह का लोशन लगाने के लिये आ जातीं। प्रायः वे इस समय अपना कुछ-न-कुछ काम भी कर लिया करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं। इन्हीं दिनों एक आश्रमवासी ने माताजी की फ्रेंच पुस्तक 'प्रार्थना और ध्यान' का अंग्रेजी में अनुवाद शुरू किया था और वह चाहता था कि माताजी उसे देख लें। बाल संवारने के समय वह अनुवाद माताजी ने श्रीअरविन्द को क्रमशः पढ़कर सुनाया और दोनों ने मिलकर उसमें आवश्यक सुधार किये। कभी-कभी वे व्यक्तिगत बातें करते थे और जब माताजी की आवाज बहुत धीमी हो जाती तो हम उनका इशारा समझ लेते और चुपचाप वहां से हट जाते। बाहरी अभिव्यक्ति की जगह वे सूक्ष्म तरीकों का उपयोग करना अधिक पसंद करती थीं। आत्मा के साथ संपर्क के उनके हजारों तरीके थे—एक संकेत, एक नजर, एक मुस्कान, उड़ती हुई एक दृष्टि या केवल शांति ! माताजी के चले जाने पर श्रीअरविन्द मुंह-हाथ धोते थे। यहां एक छोटा-सा ब्योरा अपनी विशेषता के कारण उल्लेखनीय है। वे नीम टूथपेस्ट से मंजन करने के बाद कुल्ला करके, थोड़ा-सा ओरियन्टल बाम लगाकर रोज मसूढ़ों की मालिश किया करते थे।

फिर तीन-चार बजे तक वे एकदम अकेले रहते थे। उसके बाद दिन का पहला भोजन आता था। बीच-बीच में वे एक गिलास पानी पीते थे। इस रहस्यमयी शांति में डूबे वे क्या करते थे इसपर तो माताजी के सिवा और कोई प्रकाश नहीं डाल सकता। हमें बस यही बतलाया गया था कि वे किसी विशेष कार्य में लगे हैं और हम उन्हें बिलकुल अकेला छोड़ दें—हां, कोई बहुत जरूरी काम आ पड़े तो बात और थी। हमें तो बस इतना ही दिखलायी देता था कि वे चुपचाप अपने बिस्तर पर बैठे रहते थे, फिर थोड़ी देर बाद अपनी बड़ी आरामकुर्सी पर बैठ जाते थे, उनकी आंखें पूरी खुली होती थीं, जैसे किसी भी व्यक्ति की खुली हों, फर्क बस इतना होता कि वे इस तरह घंटों पर घंटे बैठे रहते थे, बस कभी-कभी बैठने की अपनी स्थिति बदलते थे। सामान्यतः उनकी आंखें सामने की दीवार पर लगी रहती थीं, परंतु वे त्राटक की भांति किसी एक ही बिन्दु पर टिकी नहीं रहती थीं। कभी-कभी बिना किसी ऊपरी कारण के उनके चेहरे पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुस्कान की धूप खिल जाती—मानों बालक नींद में मन्द-मन्द मुस्कुरा रहा हो, यह चीज हमें बहुत प्रसन्नता देती। वस्तुतः यह तो पूर्ण जागृति की अवस्था थी, क्योंकि जब कभी हम कमरे में इधर-से-उधर जाते तो उनके मुख पर मद्धिम-सी मुस्कान बिखर जाती, मानों हमारी पदचाप पहचान कर स्वीकृति जता रहे हों। कभी-कभी वे दरवाजे की तरफ भी देख लेते थे। यह तब होता था जब वे कोई ऐसी आवाज सुनते जिससे उन्हें लगता कि माताजी आ रही हैं। अर्थात् उनकी बाहरी चेतना कभी लुप्त नहीं होती थी। जब वे कुछ मांगते तो ऐसा लगता मानों उनकी आवाज कहीं दूर किसी गुफा से आ रही हो, हमने विरले ही उन्हें आंखें बंद किये अपने-आपमें डूबा हुआ पाया। अगर ऐसे समय माताजी किसी जरूरी काम से आ जातीं या पानी ले आतीं और उन्हें इस तरह तन्मय देखतीं तो उनके बिस्तर के पास खड़ी तबतक प्रतीक्षा करतीं जबतक वे आंखें नहीं खोलते। आंख खुलते ही श्रीअरविन्द 'ओह' कहते और माताजी के अधरों पर मुस्कान खिल जाती। श्रीअरविन्द ने हमसे कहा था कि उन्हें खुली आंखों से ध्यान करने की आदत थी। हम सब बिस्तर के पास अपनी-अपनी जगह पर बैठकर प्रतीक्षा करते कि जब वे बुलायें तो हम हाजिर हो जायें, इस बीच कोई फर्नीचर साफ करता तो कोई कुछ और काम करता। एक चीज के लिये वे हममें से किसीको जरूर बुलाते। वह थी खाने के कुछ समय पहले 'पेपरमिण्ट लॉजेंस' की मांग। अगर कभी खाना आने में देर हो जाती तो वे एक और लॉजेंस मांग लेते। कभी-कभी जब हमें ऐसा लगता कि हमारी बक-बक बहुत बढ़ गयी है और हम जरा अस्थिर से हो उठते तो हममें से ही कोई बुद्धिमान् कह बैठता—"क्या तुम्हें लगता है कि श्रीअरविन्द को हमारी यह तुच्छ बक-बक कोई बाधा पहुंचा सकती है ? वे तो चेतना की ऐसी ऊंचाइयों पर उड़ान भरते हैं कि वहां अगर बम-विस्फोट भी हो तो शायद उन्हें उसका भी भान न हो।" और जब वे ध्यान में न होते तो हमारी आवाजों को खूब सुनते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर वे अपने भागवत सरल भाव और सहज अधिकार के साथ क्या किया करते थे ? एक बार उन्होंने मुझे लिखा था कि जब उन्हें कोई विशेष काम करना होता है तो उन्हें एकाग्र होना पड़ता है। शायद इससे हमें रहस्य की चाबी मिल जाती है। अपने वैश्व कार्य के लिये एकाग्रता का यही समय उनके हाथ में होता था। चाहे अतिमानसिक ज्योति को उतारना हो, या नीचे अधोलोक के नरक में गहरे उतरना हो, या किसी वैश्व कारण के लिये अपनी शक्ति भेजनी हो—चाहे वह स्पेन का युद्ध हो, द्वितीय विश्वयुद्ध हो, मित्र राष्ट्रों की मदद करना हो, या फिर आश्रम की किन्हीं कठिनाइयों को सुलझाना हो; यहांतक कि आश्रम के वासियों की समस्याएं सुलझानी हों—यही होगी उनके विशेष कार्य की प्रकृति। एक दिन एकाग्रता के बाद, मुझे याद है मैंने उन्हें बिना किसी प्रसंग के यह कहते सुना, "मैं देख रहा था कि निशिकांत की कैसी हालत है।" उस समय आश्रम के एक साधक निशिकांत का स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था। मैं इस जटिल समस्या के बारे में और अटकलबाजियां नहीं लगाऊंगा, कहीं व्यंग्य के पुट से भरी उनकी वाणी न सुनायी दे जाये "ये देखो! नीरद अपनी स्वच्छन्द कल्पना के ताने-बाने फिर से बुनने लगा!" वे ये सब समस्याएं कैसे सुलझाते थे यह मेरी बुद्धि से परे की बात है!

कभी-कभी ऐसे अवसर भी आ जाते—यद्यपि आते बहुत कम थे—जब हमें उनकी अखंड एकाग्रता में बाधा देनी पड़ती। उदाहरण के लिये आश्रम-मुद्रणालय से उनकी पुस्तक के प्रूफ के बारे में कोई ऐसी अत्यावश्यक बात आ जाती जिसकी ओर उनका ध्यान खींचना पड़ता था। ऐसे समय मैं बड़ी सतर्कता के साथ उनके पलंग के पीछे उनके पास जा खड़ा होता। वे मेरी ओर मुड़े बिना निर्वैयक्तिक लहजे में पूछते—"क्या बात है?" मानों निश्चल-नीरवता के महान् सागर पर एक हल्की-सी लहर तैर गयी हो! जब कभी माताजी कमरे में प्रवेश करतीं उस व्यापक शांति का हमेशा अनुभव करतीं। मैं आश्रम प्रेस से आये प्रूफ के बारे में प्रश्न उन्हें पढ़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनाता। वहां कुछ प्रूफ पढ़नेवाले ऐसे थे जो वैयाकरण डॉ० जॉनसन के जैसा दिमाग रखते थे और श्रीअरविन्द के व्याकरण-संबंधी प्रयोगों की नमनीयता या भाषा के उनके अन्य नये प्रयोगों को सहज रूप से स्वीकार नहीं कर पाते थे। उनका ख्याल था कि या तो श्रीअरविन्द की दृष्टि से यह भूल फिसल गयी या फिर यह व्याकरण-संबंधी विद्याडम्बर था कि वे अपने-आपको श्रीअरविन्द से कुछ अधिक बुद्धिमान् समझते थे ? और अंत में श्रीअरविन्द ने कह दिया— "उन्हें मेरी अंग्रेजी में तो हेर-फेर न करने दो!" उनकी भर्त्सना भी हमेशा मधुर होती थी। जब माताजी ने यह बात सुनी तो उन्होंने कहा—"श्रीअरविन्द की अंग्रेजी को सुधारने का दुस्साहस भला वे कैसे कर सकते हैं ? श्रीअरविन्द तो भद्र पुरुष हैं, वे ऐसा कुछ न कहेंगे जिससे किसीको तकलीफ पहुंचे, लेकिन मैं भद्र नहीं हूं।" हम सब अच्छी तरह समझ गये कि माताजी का क्या आशय था। श्रीअरविन्द की भलमनसाहत के यहां दो-एक उदाहरण देता चलूं। जब श्रीअरविन्द अपने परिवार के साथ कलकत्ते में रहते थे तब उनकी छोटी बहन सरोजिनी रसोइये के दुर्व्यवहार के खिलाफ प्रायः शिकायत किया करती थीं। श्रीअरविन्द सुन लेते और फिर सब कुछ भूल जाते। अंत में सरोजिनी के धीरज का बांध टूट गया और उन्होंने श्रीअरविन्द से आग्रह किया कि वे रसोइये को कुछ कड़ा दण्ड दें। श्रीअरविन्द ने गभीर वाणी में रसोइये को बुलाया और कहा—"मैंने सुना है कि तुम्हारा व्यवहार अच्छा नहीं है। अब आगे से ऐसा मत करना!" सभी को इस परिणाम से बहुत निराशा हुई और सब समझ गये कि इससे अधिक कठोरता की आशा उनसे नहीं की जा सकती। इसी तरह एक बार माताजी किसी साधक के बारे में शिकायत लेकर उनके पास आयीं कि गुस्से में आकर उसने किसी को पीट दिया था। माताजी ने कहा—"यह तीसरी बार हुआ! हमें क्या करना चाहिये ? मैं आपकी स्वीकृति चाहती हूं प्रभो!" श्रीअरविन्द ने शांत भाव से उत्तर दिया, "उसे आखिरी चेतावनी दे देनी चाहिये।" हम सब भली-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भांति जानते थे कि यह "आखिरी चेतावनी" सचमुच आखिरी नहीं हो सकती।

शान्ति का यह लंबा काल तब भंग होता जब श्रीअरविन्द के लिये भोजन आता। यही दिन का पहला और प्रमुख भोजन होता था। फिर भी हमने उन्हें यह कहते कभी न सुना कि उन्हें भूख लग रही है। दिन का दूसरा भोजन—रात का खाना बिलकुल हल्का होता था। यहां मैं एक बात स्पष्ट करता चलूं : उनका जीवन गीता की शिक्षा के अनुसार चलता था, अर्थात् कभी किसी चीज की अति नहीं। वे यह शिक्षा देते भी थे और स्वयं इसपर अमल भी करते थे। खाने-सोने, हंसने-बोलने के तरीके को देखकर ही दो व्यक्तियों को समान घोषित कर देना तर्कसम्मत भले हो पर सत्य कभी नहीं होता। श्रीअरविन्द के संबंध में यही बात लागू होती है। उनके योग में भी उच्चतर अनुभूति के साथ-साथ जीवन की सामान्य दिनचर्या कभी टूटती न थी। लेकिन स्वभावतः हम सब यह जानने के लिये बहुत उत्सुक रहते कि वे किस तरह का खाना खा रहे हैं, क्या कोई विशेष भोजन उन्हें अधिक प्रिय है और उनका स्वाद हमारे स्वाद से कितना मिलता है ? लेकिन यह देखने के लिये हमें काफी प्रतीक्षा करनी पड़ी, क्योंकि जबतक वे पूरी तरह स्वस्थ नहीं हो जाते और स्वयं बैठकर अपने-आप भोजन का "रस" नहीं लेते, भोजन में उनकी रुचि देखने का अवसर हमें कैसे मिलता ? जैसे ही लोगों को श्रीअरविन्द के स्वस्थ होने का पता लगा कि आश्रम की विभिन्न साधिकाओं के यहां से भोजन के थाल आने लगे जैसे मंदिर में आराध्य देवता के लिये नैवेद्य आता है और फिर प्रसाद बनकर जाता है। यह कार्य माताजी करती थीं, प्रत्येक थाल से थोड़ा-सा ले लिया जाता था और बाकी प्रसाद के रूप में लौटा दिया जाता था। उनका सामान्य भोजन बनाने के लिये माताजी ने अमिया, नलिना तथा मृदु जैसी कुछ साधिकाओं को चुन लिया था जिनका बनाया भोजन श्रीअरविन्द बहुत पसंद करते थे। मृदु एक सीधी-सादी ग्रामीण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाली विधवा थी, वह दूसरी औरतों की तरह श्रीअरविन्द को अपना पिता मानती थी। उसके "बाबा" को विशेष रूप से उसकी बनायी लूची (पूरी) बहुत प्रिय थी, इस बात का मृदु को बहुत गर्व था। उसका "लूची" बनाना तो अमर कहानी बन गयी क्योंकि श्रीअरविन्द ने उसके नाम अपने एक पत्र में इसकी चर्चा की है। उसे कभी-कभी पागलपन के दौरे आते थे और उस सनक में वह आत्महत्या की धमकियां दिया करती थी, तब श्रीअरविन्द उसे यह कहकर समझाते-बुझाते—"अगर तुम आत्महत्या कर लोगी तो मेरे लिये "लूचियां" कौन बनायेगा ?" उसकी भोजन की ख्याति इतनी बढ़ी कि जिस मकान में वह रहती थी उसका नाम ही "प्रसाद" पड़ गया। श्रीअरविन्द के पास जो भोजन आता था वह स्वादिष्ट तो बहुत होता था, लेकिन कई बार बहुत मिर्च-मसालेदार होता था। और एक बार वह उनके अनुकूल न पड़ा, इसलिये एक अलग रसोईघर बनाया गया जिसे माताजी का रसोईघर कहा जाने लगा। इसमें सिर्फ माताजी और श्रीअरविन्द के लिये भोजन बनता था। माताजी की निगरानी में वहां सफाई और स्वास्थ्य-संबंधी विषयों पर विशेष ध्यान दिया जाता था। माताजी सफाई पर विशेष आग्रह करती थीं (उन्होंने अपने एक संदेश में कहा था : अतिमानसिक अभिव्यक्ति के लिये स्वच्छता पहला अनिवार्य कदम है . . .) एक बार मैंने श्रीअरविन्द से इसके बारे में पूछा था, "मुझे आश्चर्य होता है कि भला भगवान् संक्रमण, रोग के कीटाणु इत्यादि का इतना ध्यान क्यों रखते हैं, क्या वे भी इन कीटाणुओं के सामने इतना असुरक्षित अनुभव करते हैं ?" उन्होंने उत्तर दिया, "और भला तुम यह क्यों चाहते हो कि भगवान् रोग के कीटाणुओं और तरह-तरह के विषों का निष्काम भाव से सेवन करें ? बड़ी अनोखी देवपूजा है तुम्हारी !"

(क्रमशः)

—नीरदवरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्ची देन

मां, आपने कहा था : "जो कुछ तुम हो, जो कुछ तुम्हारे पास है वह सब दे दो, उससे अधिक कुछ भी तुमसे नहीं मांगा जाता पर उससे कुछ कम भी नहीं।"

हां।

"जो कुछ तुम्हारे पास है" और "जो कुछ तुम हो" इसका तात्पर्य क्या है ?

मैं तुम्हें बताती हूं कि मैंने यह किन परिस्थितियों में लिखा था, उससे तुम समझ जाओगे।

किसी व्यक्ति ने अपने पत्र में मुझे यह लिखा था कि वह बहुत दुःखी है क्योंकि उसने यह स्वप्न देखा है कि उसने अद्‌भुत क्षमताओं को सिद्धि प्राप्त करने के लिये, कार्य पूरा करने के लिये भगवान् के हाथों में सौंप दिया है; और उसने यह भी स्वप्न देखा है कि दिव्य कार्य की पूर्ति के लिये दान देने के लिये, भगवान् के चरणों में अर्पित कर देने के लिये उसके पास प्रचुर धन है। अतएव मैंने उसे उत्तर दिया है कि तुम्हें दुःखी नहीं होना चाहिये, प्रत्येक मनुष्य से वही देने को कहा जाता है जो उसके पास है, अर्थात्, उसकी समस्त संपत्ति, वह चाहे जो कुछ भी हो, और जो कुछ वह स्वयं है, अर्थात्, उसकी समस्त संभावनाएं—जिसका तात्पर्य होता है अपना सारा जीवन अर्पित कर देना तथा अपना समस्त धन-वैभव अर्पण कर देना—और जो कुछ मांगा गया है, उससे जरा भी अधिक नहीं। जो कुछ तुम हो उसे दे दो; जो कुछ तुम्हारे पास है उसे दे दो, और तुम्हारा दान पूर्ण हो जायेगा; आध्यात्मिक दृष्टिकोण से वह पूर्ण होगा। यह इस बात पर निर्भर नहीं करता कि तुम्हारे पास कितना धन है या तुम्हारी प्रकृति में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितनी संख्या में संभावनाएं विद्यमान हैं; यह निर्भर करता है तुम्हारे दान की पूर्णता पर, कहने का तात्पर्य है, तुम्हारे अर्पण की समग्रता पर।

मुझे याद है, भारत के आख्यानों का वर्णन करनेवाली एक पुस्तक में, मैंने इस प्रकार की एक कहानी पढ़ी थी। एक बहुत गरीब, बहुत बूढ़ी औरत थी जिसके पास कुछ नहीं था, जो बहुत दुखिया थी और एक छोटी-सी टूटी-फूटी झोंपड़ी में रहती थी। उसे एक दिन एक फल मिल गया। वह आम का फल था। उसने आधा फल खा लिया था और बाकी आधा दूसरे दिन के लिये रख दिया, क्योंकि वह इतना अनोखा फल था जिसे प्राप्त करने का अवसर उसे बार-बार नहीं मिलता था—वह आम था। और तब, रात हो जाने पर, किसी व्यक्ति ने उसके जर्जरित दरवाजे को खटखटाया और आतिथ्य की याचना की। वह व्यक्ति अंदर आया और बुढ़िया से कहा कि उसे रातभर के लिये आश्रय चाहिये और वह भूखा है। इसपर बुढ़िया ने उससे कहा : "बहुत अच्छा, मेरे घर में तुम्हारे तापने के लिये आग नहीं है, तुम्हारे ओढ़ने के लिये कंबल नहीं है, यह आधा आम मेरे पास बचा हुआ है, बस, इतना-सा ही मेरे पास है, यदि तुम इसे पसंद करो, इसका आधा मैंने खा लिया है।" और बाद में पता चला कि यह व्यक्ति और कोई नहीं स्वयं शिव थे और वह बुढ़िया एक आंतरिक ज्योति से भर गयी, क्योंकि उसने अपने-आपको और उसके पास जो कुछ था उसको पूर्ण रूप से अर्पित कर दिया था।

मैंने इसे पढ़ा था और यह कहानी मुझे अपूर्व लगी थी। हां, यह बहुत सारगर्भित है, यही वह चीज है। बस, यह ठीक वही चीज है।

धनाढ्य लोग, यहांतक कि वे लोग भी जो बहुत अच्छी अवस्था में हैं और जिन्हें जीवन में सब प्रकार की वस्तुएं प्राप्त हैं, भगवान् को उतना ही देते हैं जो उनके पास अपनी आवश्यकता से अधिक होता है—क्योंकि साधारणतया यही होता है लोगों का मनोभाव : मनुष्य के पास होता है अपनी आवश्यकता से थोड़ा अधिक धन, मनुष्य के पास होती हैं अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता से थोड़ी अधिक वस्तुएं, और इसलिये उदारता के साथ, वह उन्हें भगवान् को दे देता है। यह कुछ न देने से बेहतर है। परंतु मनुष्य की आवश्यकता से यह "थोड़ा अधिक" यदि लाखों रुपयों के भी समान हो तो भी यह दान आधे आम के दान से कम पूर्ण होता है। क्योंकि सच पूछा जाये तो इसका माप परिमाण या प्रकार से नहीं किया जाता : इसका माप होता है दान की सदहृदयता और उसकी परिपूर्णता से।

परंतु धनी लोग यदि साधारण जीवन में अपना धन भगवान् को देना चाहें, और भगवान् उनके सामने न हों तो फिर वे किसको दें? वे नहीं जानते कि अपना धन कहां लगाया जाये!

हां, परंतु तब यह प्रश्न ही नहीं उठता। यदि उन्हें भीतर या बाहर कहीं भी भगवान् का साक्षात्कार न प्राप्त हुआ हो तो फिर इस बात का प्रश्न ही नहीं उपस्थित होता। उनसे उस व्यक्ति को कुछ देने के लिये नहीं कहा जाता जिसे वे जानते ही नहीं।

यदि उन्होंने अपने अंदर भगवान् को देखा है, तो फिर उनके पास जो कुछ है उसका उपयोग उन्हें भगवान् द्वारा प्राप्त संकेत के अनुसार ही करना चाहिये; और जो संकेत उन्हें प्राप्त होते हैं उनका यदि वे बिलकुल सच्चाई के साथ और ठीक-ठीक अनुसरण करें तो बस उनसे इतनी ही मांग की जा सकती है। परंतु जबतक वह मुहूर्त नहीं आता तबतक किसीसे कुछ भी नहीं मांगा जा सकता।

मांगना तभी शुरू होता है जब कोई आकर कहता है : "यह रहा मैं, मैं अपने-आपको भगवान् के चरणों में निवेदित करना चाहता हूं।" तब स्थिति बिलकुल ठीक होती है, उसी क्षण से मांगा जाता है; परंतु उससे पहले नहीं। उससे पूर्व, यदि चलते-चलते तुम अपनी जेब से एक पैसा निकाल लो और वहां रख दो तो यह बहुत अच्छा है; तुमने वह कर दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसे तुमने करना उचित समझा और बात समाप्त हो गयी; किसी ने तुम से कुछ देने को बिलकुल नहीं कहा। अपने-आपको स्वीकार करने के लिये भगवान् से प्रार्थना करने और फिर, अपना सद्भाव तो प्रदर्शित करना पर अपनी जीवन-धारा में किसी भी प्रकार के परिवर्तन की तनिक भी इच्छा न रखना, इनके बीच बहुत अधिक अंतर है।

जो लोग साधारण जीवन-यापन करते हैं, हां, वे यदि सदिच्छा का भाव दिखाते हैं तो यह उनके लिये बहुत अच्छा है, यह उनके लिये भावी जीवनों की पूर्वावस्था का निर्माण करता है। परंतु जिस क्षण मनुष्य कहता है: "हां, अब मैं जानता हूं कि केवल एक ही वस्तु है जो मेरे लिये महत्त्व रखती है, वह है दिव्य जीवन, और मैं दिव्य जीवन यापन करना चाहता हूं"—बस, उसी क्षण से उससे मांगा जाता है, उससे पहले नहीं।

मां, कुछ लोग हैं जो यहां आते हैं, जिनके पास पैसा है और जो बहुत भक्त हैं, अपनी भक्ति प्रदर्शित करते हैं, पर जब पैसे का प्रश्न उपस्थित होता है, वे मोलतोल . . .। तब भला हम उनके साथ मैत्रीपूर्ण संपर्क कैसे रख सकते हैं ?

क्या ?

वे भक्त हैं, भगवान् के प्रति अपनी भक्ति दिखाते हैं . . .।

किस ढंग से ? जो कुछ संभव हो वह सब भगवान् से लेकर ?

. . . परंतु जब पैसे का प्रश्न सामने आता है, वे मोलतोल करते हैं, वे हिसाब करते हैं।

मैं कहती हूं, मैंने उत्तर दे दिया है, बात ऐसी ही है। वे भगवान् से जो कुछ लिया जा सके, सभी प्रकार के गुण, सभी क्षमताएं, साथ ही सभी सुविधाएं, सभी प्रकार के आराम, प्रत्येक चीज, और कभी-कभी तो शक्तियां आदि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि भी, लेने की भावना के साथ आते हैं। वे लेने के लिये आते हैं, देने के लिये नहीं आते। और उनका भक्ति का बाहरी दिखावा एक चोगा मात्र होता है जिसे वे लेने की, ग्रहण करने की अपनी इच्छा के ऊपर डाले रखते हैं। वह एक विशाल क्षेत्र को ढकता है : अपनी आत्मा का उद्धार करने, आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करने, शक्तियां प्राप्त करने से यह आरंभ होता है; और समाप्त होता है एक छोटे-से शांत जीवन के साथ, जो सुखपूर्ण (कम या अधिक सुखपूर्ण हो, कम-से-कम अत्यल्प सुख से युक्त हो) और चिंताओं से रहित, झंझटों से बरी हो, जीवन की उथल-पुथल से बहुत दूर हो। परंतु वे यदि देते हैं तो यह एक प्रकार का सौदा होता है; वे जानते हैं कि वह सब लेने के लिये अच्छा होगा कि थोड़ी-सी कोई चीज दे भी दी जाये, अन्यथा वे उसे नहीं पायेंगे। अतएव वे बहुत भक्तिपरायण होने का दिखावा करते हैं। परंतु यह केवल एक बाहरी रूप होता है, क्योंकि इसमें सच्चाई नहीं होती।

उनके लिये दुर्भाग्य की बात यह होती है कि उससे कोई धोखा नहीं खाता। उसे बर्दाश्त किया जा सकता है; परंतु इसका यह अर्थ नहीं कि उससे कोई धोखे में पड़ता है।

मोलतोल सर्वत्र है, सत्ता के सभी भागों में है। सर्वदा ही लेन-देन का व्यापार चलता है, उच्चतम आध्यात्मिक अनुभूतियों से लेकर क्षुद्रतम सामान्य भौतिक आवश्यकताओं तक। लाखों-करोड़ों में एक भी व्यक्ति नहीं जो मोलतोल के बिना देता हो।

और जो कहानी मैंने तुम लोगों से कही (उसके अतिरिक्त उस तरह की यहां बहुतेरी दूसरी कहानियां हैं) उसकी खूबी बस यही है कि जब बुढ़िया ने दिया, वह यह नहीं जानती थी कि वह व्यक्ति स्वयं शिव हैं। उसने तो रास्ते के एक भिखारी को दिया, भलाई करने के लिये, दान करने के आनंद के लिये दिया, इसलिये नहीं दिया कि यह एक देवता है और उसने यह आशा भी नहीं की कि बदले में उसे मुक्ति या कोई ज्ञान प्राप्त होगा।

११ जनवरी १९५६

('श्रीमातृवाणी', खण्ड ८; पृ० १६-१९)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने अंदर देखो . . .

संसार में समस्त जड़वाद और प्रत्यक्षवाद की रचना केवल इसलिये हुई है कि लोग बिलकुल नहीं चाहते कि भागवत कृपा नीचे आये। अगर वे रोगमुक्त हो जायें तो वे कहना चाहेंगे, "मैंने अपने-आपको रोग-मुक्त किया है," अगर वे कुछ प्रगति कर लें तो वे सोचना चाहते हैं, "मैंने ही यह प्रगति की है।" अगर वे किसी चीज को व्यवस्थित कर लें तो वे घोषणा करना चाहते हैं, "मैं ही व्यवस्था कर रहा हूं।" और उनमें से बहुत-से, जो इससे विपरीत करने की कोशिश करते हैं, अगर वे अपने अंदर देखें तो पायेंगे कि कितने विरल अवसरों पर सहज और निष्कपट रूप से (ऐसे नहीं कि वे कोई बात इसलिये कहें क्योंकि वे जानते हैं कि ऐसा कहना चाहिये या इस कारण ऐसा सोचते हैं कि ऐसा सोचना फैशन है–ऐसे नहीं बल्कि सहज सचाई के साथ) वे अपने पूरे हृदय से यह जानते हैं कि यह चीज उन्होंने नहीं की, भागवत शक्ति ने की है। जब वे कोई प्रगति कर लेते हैं, जब उन्होंने अपने अंदर कोई चीज बदल ली हो, जब उन्होंने कोई चीज सीखी हो, तब वह यदि सहज भाव से हो, इच्छा-शक्ति के प्रयास के बिना, सोचे बिना, अपने-आपसे यह कहने की जरूरत के बिना "हमें ऐसा सोचना चाहिये" तुम सहज रूप से जान जाते हो कि दिव्य शक्ति के बिना कुछ भी न हो पाता। अपने भीतर देखो, यह बहुत मजेदार चीज होती है, बहुत मजेदार, दिन में कितनी बार (अपने-आपसे कहे बिना भी) तुम यह सोचते हो "मैंने यह किया है", "मैं वह कर पाया हूं", "मैं इसमें सफल हुआ", "मैं इसमें असफल हुआ"। और जब तुमने अच्छा प्रयास किया हो, तुमने परिणाम भी पा लिया हो तो तुम्हें सोचने के लिये, या इससे अधिक, अपने-आपसे यह कहने के लिये एक क्षण की जरूरत होती है कि अगर भागवत शक्ति ने मेरी सहायता न की होती तो शायद मैं यह न कर पाता। सहज चीज होती है ओह! "मैं सफल हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया", यह सच नहीं है क्या ? निश्चय ही मन का एक भाग ऐसा होता है जिसे शिक्षा मिली है, जिसने सीखा है, जिसने चिंतन किया और समझा है। जो यह मानता और सचमुच यह अनुभव करता है कि वास्तव में बात ऐसी है। लेकिन यह मन का केवल एक भाग होता है और यह हमेशा सक्रिय नहीं होता। कभी-कभी इसे बुलाना होता है और इसकी राय मांगनी होती है, "हां, तो अपनाने लायक सबसे अच्छी वृत्ति कौन-सी है ?" "मुझे क्या सोचना चाहिये ?" मेरा ख्याल है कि ऐसे सब लोग जिन्होंने योगाभ्यास को अपनाया है, अगर वे सच्चे और निष्कपट हों, अगर वे क्षण भर के लिये भी सोचें तो अपने-आपसे कहते हैं, "मुझे इसका पता न था लेकिन अगर मैं सफल हुआ हूं तो शायद इसलिये कि दिव्य शक्तियां मेरे साथ थीं अन्यथा मैं सफल न हो पाता।" यह समझी हुई बात है, लेकिन एक ऐसा क्षण आता है जब आदमी को पता लगता है कि अगर वे शक्तियां न होतीं तो वह एक उंगली भी न उठा पाता। यह बाद में आता है . . . लेकिन आरंभ के लिये, अगर आदमी सोचे, अगर सरलता के साथ अपना अवलोकन ही करे तो वह कितनी ही बार अपने-आपको यह कहते हुए पकड़ता है, "यह तो मैंने किया है।" और कभी-कभी व्यक्ति अपने-आपको बधाई देता है और कहता है, "आखिर मैं कुछ कर सकता हूं, मैं योग्य हूं !" मैं और आगे चलती हूं : कितने आदमी हैं जो कुछ भी कर पाते यदि वे अपने-आपसे यह कहने के सुख से वंचित हो जाते, "यह मैंने किया है, मैंने वह प्राप्त किया है, मैंने प्रगति की है, मैंने यह खेल कितनी अच्छी तरह से खेला।" कितने लोग सचमुच कुछ कर पाते अगर उनसे यह प्रसन्नता ले ली जाती ? मैं ऐसे लोगों को जानती थी जिनका मन उनकी बाकी सत्ता से कहीं अधिक विकसित था, वे अच्छी तरह समझ गये थे, शायद जरा ज्यादा ही, वे ध्यान करने बैठते और उनकी सारी शक्ति गायब हो जाती, सारी जीवन-शक्ति एक प्रकार की शांति में भाप बनकर उड़ जाती, जो अप्रिय नहीं, बहुत स्थिर होती थी। उन्हें और कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने की जरूरत नहीं होती थी, हिलने-डुलने की जरूरत नहीं रहती थी, ऐसे लोग बस सपने देखते हैं . . . एक पेड़ के नीचे पद्मासन लगाकर बैठ जाते हैं और सब कुछ भगवान् पर छोड़ देते हैं कि वे ही उनके लिये सब कुछ करें, यहांतक कि जरूरत होने पर उन्हें खिलायें भी। शायद यह सब ठीक है लेकिन इससे पता लगता है कि यंत्र तैयार नहीं है, वह सचमुच भगवान् की सेवा में नहीं है, अहंकार की सेवा में है और यदि अहं को हटा लिया जाये तो फिर वह कुछ नहीं करता। अतः, जबतक मनुष्य अहंकार में निवास करता है, उससे काम करवाने के लिये अहंकार जरूरी है। यह तबतक जरूरी है जबतक व्यक्ति का पूरा रूपांतर न हो जाये या कम-से-कम तबतक जबतक सत्य-चेतना स्थापित न हो जाये।

मैंने यह कहा है और मैं दोहराती हूं, (माताजी अपनी पुस्तक उठा लेती हैं): "तुम जो भी करो, चाहे जिस प्रक्रिया का उपयोग करो और यदि तुमने बहुत कौशल और शक्ति भी पा ली हो, तुम्हें परिणाम भगवान् के हाथों में छोड़ देना चाहिये। तुम हमेशा प्रयास कर सकते हो लेकिन यह भगवान् के हाथ में है कि वे तुम्हें तुम्हारे प्रयास का फल दें या न दें। तुम्हारी व्यक्तिगत शक्ति वहीं रुक जाती है। अगर परिणाम आता है तो तुम्हारी शक्ति नहीं भागवत शक्ति उसे लाती है।

(प्रश्नोत्तर १९२९)

हां, तो यह विचार प्रायः सभी धर्मों में सिखाया गया है। इसीने लोगों को नास्तिक बनाया है। यह उन्हें बहुत क्रुद्ध कर देता है, यह विद्रोह का क्रोध होता है, "क्या ! मैं नहीं ?"

और यह "मैं", अगर तुम्हें पता होता कि यह कितना बड़ा है ! कैसे वह सारी जगह को घेर लेता है . . .। यही समस्त जड़वाद का आधार है।

पृथ्वी पर कठिन घड़ियां आती हैं ताकि मनुष्यों को अपने छोटे-से निजी अहंकार पर विजय पाने और सहायता और प्रकाश के लिये ऐकांतिक रूप से भगवान् की ओर मुड़ने के लिये बाधित करें।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक सत्ता कुछ चाहती है

मधुर मां, अमीर आदमी कभी संतुष्ट नहीं होता, वह अधिक धन चाहता है; विद्वान अधिक ज्ञान चाहता है। क्या इससे यह पता लगता है कि वे भगवान् की खोज में हैं ?

वह जीवन में चरम की खोज में है, यह तो स्पष्ट ही है। शायद वह समीपस्थ हो, मुझे पता नहीं।

यहां लिखा है : "निष्क्रियता और क्रियाशीलता के सभी अनुभवों, शांति और शक्ति, एकता और विभिन्नता, सभी में उनका रस लेना, यही वह सुख है जिसे जीव, संसार में अभिव्यक्त व्यष्टिगत अंतरात्मा अस्पष्ट रूप से खोज रही है।"

हां। लेकिन तुमसे धन के प्रेम, शक्ति के प्रेम या ज्ञान के प्रेम के बारे में कुछ नहीं कहा गया। तुमसे भागवत 'प्रेम' के बारे में कहा गया है; यह बिलकुल वही बात नहीं है। महत्त्वाकांक्षा या कामना, यहांतक कि अभीप्सा का रस लेने के बारे में भी कुछ नहीं कहा गया; जिसके बारे में कहा गया है वह है भागवत 'उपस्थिति' में रस लेना। यह एकदम भिन्न है; इनमें कोई समानता नहीं।

मैं स्वीकार करती हूं कि मैं भली-भांति तुम्हारे प्रश्न का मतलब नहीं समझ पायी। मेरा ख्याल है कि तुम भगवान् को वृद्धि और विकास के साथ मिला रहे हो, है न ? ज्यादा-से-ज्यादा अच्छे रूप में लें तो प्रगति के साथ। लेकिन यह एक ही बात नहीं है। शायद प्रगति वह नींव है जिसपर वर्तमान जगत् की रचना हुई थी, तुम इस तरह ले सकते हो; परंतु वह भगवान् नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम क्या कहने की कोशिश कर रहे थे ?

हर सत्ता के लिये किसी चीज की प्यास होती है।

तो क्या किसी चीज के लिये प्यास भगवान् है ? नहीं, मेरे वत्स। यह शुद्ध रूप से कामना हो सकती है। किसी चीज के लिये प्यास भगवान् कैसे हो सकती है ?

मैं भली-भांति देख सकती हूं कि तुम क्या कहना चाहते हो, लेकिन सचमुच तुम वह कहते नहीं : यानी, तुम अभीप्सा की आंतरिक ज्वाला को भगवान् कहते हो; अभीप्सा की यह आंतरिक ज्वाला जो कभी नहीं बुझती, जो हमेशा जलती रहती है, अधिकाधिक जलती है; जिसे भारत में अग्नि कहते हैं, है न, तुम प्रगति की इच्छा को, अभीप्सा की शक्ति को भगवान् कहते हो। यह सच है कि यह भगवान् का एक पक्ष है, लेकिन ये भगवान् नहीं हैं। यह केवल एक पक्ष है, यानी, सत्ता का एक दिव्य तरीका।

मधुर मां, क्या व्यष्टि में भूतकालीन विकास और वर्तमान स्वभाव मिलकर परिवर्तन लानेवाले उच्चतर स्तर के अंतिम हस्तक्षेप के बारे में निर्णय करते हैं ?

यह कैसा प्रश्न है ? मैं उसे भली-भांति नहीं समझी।

विगत विकास ? . . .

और वर्तमान स्वभाव . . .

. . . और वर्तमान स्वभाव ? ये एक ही चीज नहीं है, ये दो अलग-अलग चीजें हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी नहीं, माताजी, चूंकि यहां लिखा है : "मन का द्वार, जिससे हम उनकी (भगवान् की) परिकल्पना की ओर अग्रसर होते हैं अनिवार्य रूप से प्रत्येक व्यक्ति के विगत विकास और वर्तमान स्वभाव के अनुसार भिन्न होना चाहिये।"

हां, ये दो चीजें बिलकुल अलग हैं। यानी, पिछले जन्मों का विकास और वर्तमान स्वभाव, यानी, वर्तमान शरीर की प्रकृति, यही दोनों तुम्हारे भगवान् की ओर जाने के मार्ग का निश्चय करते हैं।

हम एक बहुत ... अति-सरल उदाहरण ले सकते हैं। अगर किसी का जन्म एक विशेष धर्म में हुआ है, तो बिलकुल स्वभावतः भगवान् की ओर जाने का पहला प्रयास उस धर्म के अंदर ही होगा; या फिर अगर पिछले जन्मों में व्यक्ति किन्हीं विशेष अनुभूतियों में से गुजरा है जिन्होंने उसके लिये कुछ अन्य प्रकार की अनुभूतियों को आवश्यक निश्चित कर दिया है, तो बिलकुल स्वाभाविक रूप में वह उस मार्ग का अनुसरण करेगा जो उन अनुभूतियों की ओर ले जाये।

चैत्य सत्ता का जीवन उत्तरोत्तर भौतिक जीवनों में हुई क्रमिक अनुभूतियों से बनता है। तो, इस बात को जरा बचकाने या रूमानी ढंग से यूं कहा जा सकता है : तुम्हारे अंदर ऐसा चैत्य है जिसने किसी-न-किसी कारण से राजाओं को प्राप्त होनेवाले सभी अनुभव पाने के लिये जन्म लिया है—उदाहरण के लिये, उच्चतम शक्ति। जब उसे अनुभव हो जाते हैं, वह जो पाना चाहता था वह मिल जाता है, तो वह अपना शरीर त्यागने से पहले यह फैसला कर सकता है कि अगले जन्म में वह एकदम मामूली और अजानी परिस्थितियों में जन्म लेगा, क्योंकि वह ऐसे अनुभव चाहता है जो साधारण परिस्थिति में हो सकते हैं, ऐसी परिस्थिति में, है न, जहां उसपर जिम्मेदारियों का, उदाहरण के लिये, राज्यों के प्रमुख-की-सी जिम्मेदारियों का भार न हो। तो बिलकुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाभाविक रूप से अगले जन्म में वह ऐसी परिस्थितियों में पैदा होगा जो उसकी आवश्यकताओं को पूरा करें। और वह इस अनुभूति के अनुसार भगवान् की ओर बढ़ेगा।

और इसपर, तुम जानते हो, वह दो भौतिक स्वभावों के, और कभी-कभी दो प्राणिक स्वभावों के मेल की उपज होता है। इसका परिणाम न्यूनाधिक रूप में इन स्वभावों का मिश्रण होता है; लेकिन यही चीज वह वृत्ति लाती है जिसे चरित्र कहते हैं। हां तो, यह चरित्र उसे किसी क्षेत्र-विशेष के, किन्हीं अनुभूतियों के श्रेणी-विशेष के योग्य बनायेगा।

तो जो पूर्व जन्मों या पूर्व जन्म में नियत और निश्चित हो चुका है, और फिर जिस वातावरण में वह पैदा हुआ है—यानी, उसका वर्तमान शरीर जिन अवस्थाओं में बना है—उसी वातावरण के अनुसार निश्चित मार्ग में, जो उसका अपना है, वह भगवान् की खोज करेगा और उनके पास जायेगा। और स्वाभाविक रूप से यह उसके पड़ोसी का या किसी भी और व्यक्ति का मार्ग बिलकुल नहीं है।

मैंने पहले कहा था कि हर व्यक्ति विश्व में एक विशेष अभिव्यक्ति है, इसलिये, उसका सच्चा मार्ग एकदम अनूठा मार्ग होना चाहिये। सादृश्य होते हैं, साम्य होते हैं, श्रेणियां, परिवार, संप्रदाय और आदर्श भी, यानी, भगवान् की ओर जाने का एक विशेष सामुदायिक मार्ग होता है। इनसे एक प्रकार का संप्रदाय बन जाता है, मूर्त रूप में नहीं बल्कि अधिक सूक्ष्म जगत् में—ये सब चीजें होती हैं—लेकिन मार्ग का व्योरा, योग का व्योरा हर व्यक्ति के अनुसार, आवश्यक रूप से, अलग-अलग होगा, और भौतिक रूप उसके वर्तमान ढांचे से प्रभावित होगा, और प्राण, मन और चैत्य पर पिछले जन्मों का असर होगा।

१६ नवम्बर, १९५५

('श्रीमातृवाणी', खण्ड ७; पृ० ३५७-६०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Statement about ownership and other particulars about Newspaper (Agnishikha) to be published in the first issue every year after the last day of February.

Form IV (see Rule 8)

1. Place of Publication	Sri Aurobindo Ashram Pondicherry - 605002
2. Periodicity of its publication	Monthly
3. Printer's Name Nationality Address	Amiyo Ranjan Ganguli Indian Sri Aurobindo Ashram Press Pondicherry - 605002
4. Publisher's Name Nationality Address	Pradeep Narang Indian Sri Aurobindo Society Pondicherry - 605002
5. Editor's Name Nationality Address	Ravindra, Anuben Indian Sri Aurobindo Ashram Pondicherry - 605002
6. Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one per cent of the total capital	Sri Aurobindo Society Pondicherry - 605002

I, Pradeep Narang hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

March 2001

(sd) Pradeep Narang
Signature of Publisher

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द डिवाइन लाइफ एजुकेशन सेन्टर, झुंझुनूं
श्रीअरविन्द दिव्य जीवन शिक्षा केन्द्र, झूंझुनूं (राजस्थान)

श्रीअरविन्द सोसायटी द्वारा स्थापित इस संस्था का मूल उद्देश्य श्रीअरविन्द व श्रीमां के मनुष्य जाति के लिये दिव्य जीवन के स्वप्न को साकार करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये यह केंद्र ऐसे श्रद्धालुओं के समूह के निर्माण की अभीप्सा रखता है जिनके जीवन का केवल यही उद्देश्य हो।

यह केंद्र पूर्ण रूप से आवासीय है जिसमें छात्र-छात्राओं की शिक्षा, आवास व भोजन पूर्णतः निःशुल्क है। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। शैक्षणिक सत्र हर वर्ष १५ अगस्त से प्रारंभ होता है तथा केवल ६ से १२ वर्ष तक की आयु के बच्चों को ही प्रवेश दिया जाता है।

यह केंद्र पूर्ण शिक्षा प्रदान करने तथा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिये समस्त साधन प्रदान करने की अभीप्सा रखता है। जो अभिभावक अपने बच्चों के लिये सरकारी प्रमाण पत्र, डिग्री व डिप्लोमा की आकांक्षा नहीं रखते अपितु उसकी सत्ता के केंद्रीय सत्य के अनुरूप उनके पूर्ण व सर्वांगीण विकास की अभीप्सा रखते हैं और अपने बच्चों को इस शिक्षण-संस्था में प्रवेश दिलाने के इच्छुक हैं, वे पूरी सूचना के लिये निम्नलिखित पते पर संपर्क करें। प्रवेश पूरे वर्ष किसी भी समय दिया जा सकता है।

जो आध्यात्मिक पिपासु इस केंद्र के कार्य में सहयोगी होना चाहते हैं तथा अपना जीवन इस कार्य में लगाकर साधनामय जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, वे लोग अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें :

श्रीअरविन्द डिवाइन लाइफ एजुकेशन सेन्टर
मीरा अम्बिका भवन, खेतान मोहल्ला
पो० झुंझुनूं—333001, राजस्थान
टेलीफोन—(01592) 35615
email:admit@sadlec.org
srimaa@vsnl.com
URL:www.sadlec.org

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Hanuman Prasad Dharam Chand
Dinodiya Welfare Trust
CALCUTTA

J. J. Charitable Trust
7C Kiron Shankar Rai Road
CALCUTTA - 1

Kayan Foundation
9/2 Hungerford street
CALCUTTA - 17

Pannalal Kandoi Seva Kosh
132/1 M. G. Road
CALCUTTA - 7

G. N. B. Motors Ltd.
8 Camac Street, 9th Floor
CALCUTTA - 700 017

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Sri Madhopur Vikas Parishad Trust
48 Dobson Road
HOWRAH - 711101

Sharad Seva Nidhi Trust
26 Amherst Street
CALCUTTA - 700009

Seth Chiranjilal Khaitan Trust
7 Keyatala Lane
CALCUTTA - 700009

Mamraj Jayatri Trust
6A Ironside Road
CALCUTTA - 700019

Dhanuka Charity Trust
Dhanseri House, 4A Woodburn Park
CALCUTTA - 700020

M/S ODC Carrier (P) Ltd.
15 India Exchange Place
CALCUTTA - 700001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Salarpuria Public Charity Trust
7, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 072

M/s Patton Ltd.
3C, Camac Street
CALCUTTA - 700 016

Naurangrai Lohia Charitable Trust
14A Loudon Street
CALCUTTA - 700 017

Charu Enterprises
42B Shakespear Sarani, 13, Shalimar Apt.
CALCUTTA - 17

Kitply Industries Ltd.
White House, 'A' Block, 4th Floor, 119 Park Street
CALCUTTA - 700 016

Eastern Enterprises Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Manav Seva Trust
CALCUTTA

Saria Charitable Trust
(J. P. Saria)
D-9 Kirti Nagar
NEW DELHI - 110 015

Shri Gopal Kamal Kumar
196, Jamuna Lal Bajaj Street
CALCUTTA - 700 007

Adukia Industrial Concern
17, Ganesh Ch. Avenue
CALCUTTA - 700 013

Sri Keshar Deo Saraf & Sons (HUF)
35, Chittaranjan Avenue
CALCUTTA - 700 012

Maikal Fibres Ltd.
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको उस नये प्रकाश के प्रति खोलो जो धरती पर उदित हुआ है और तुम्हारे सामने एक ज्योतिर्मय पथ खुल जायेगा।

— श्रीमां

WITH THE BEST COMPLIMENTS OF

S. L. Deorah Group of Enterprises

ASSAM TEA WAREHOUSING CORPORATION
INDIAN TEA STORAGE AGENCY
INDIAN TRANSPORT AGENCY
AURO IMPEX PRIVATE LIMITED
AURO LABORATORIES LIMITED
AURO BUSINESS CENTRE

Calcutta Office:

'SHIVANGAN' - Flat No. 2C, 53/1/2, Hazra Road
CALCUTTA - 700 019
Phone No.: 474 - 2059, 474 - 2060
Fax No.: 476 - 2348

Bombay Office:

408 Navratan, 69 P. DeMellow Road
BOMBAY - 400 009
Phone No.: 343 - 5341, 342 - 9027
Fax No.: 342 - 5022

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

Do not be caught by the desire to "help" others —do and speak yourself the right thing from the inner poise and leave the help to come to them from the Divine. Nobody can really help — only the Divine Grace.

—Sri Aurobindo

औरों की "सहायता" करने के विचार की पकड़ में न आओ। स्वयं अपने आंतरिक संतुलन से उचित काम करो और बोलो और सहायता भगवान् से अन्य लोगों तक आने दो। सचमुच और कोई सहायता नहीं कर सकता, केवल भागवत कृपा ही सहायता कर सकती है।

— श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

सच्चा सत्कर्म

सामान्य धारणा यह है कि केवल खाते-पीते लोग ही परदुःखभंजन होते हैं, क्योंकि उनको धन प्राप्त करने की चिंता नहीं होती। कभी-कभी आदर्शवादी भी जनता की सहायता करने का प्रयास करते हैं किंतु जैसा किसी ने कहा है कि 'वह' न केवल धनिक पर निर्भर करता है, न सद्‌गुणी के आश्रय में रहता है, न विद्वान् पर रीझता है, लेकिन जिसके पास 'वह' है वही मनुष्य सच्चे अर्थों में सुसंस्कृत होता है। फिर भले वह गरीब हो, अनपढ़ हो या खास सद्‌गुणी न भी हो।

हमारे सामने ऐसा ही उदाहरण है, वे हैं श्रीरामकृष्ण जो अनपढ़ थे किंतु उनके चरित्र-बल के सामने बड़े-बड़े झुक जाते थे। एक उदाहरण अभी याद आता है। बंगाल के किसी छोटे राजा की रानी—रानी रासमणि का एक काली मंदिर था, अब भी है। अब वह दक्षिणेश्वर कहलाता है। उन दिनों और अब भी जो लोग अपने-आपको बड़ा समझते हैं, वे अपने घर में भगवान् की मूर्ति की सेवा करने के लिये किसी गरीब ब्राह्मण को रख लेते हैं, इसी तरह रानी रासमणि ने रामकृष्ण को अपने काली मंदिर में सेवा, पूजा के लिये रख लिया था। एक दिन जब रामकृष्ण मां काली की अर्चना, पूजा कर रहे थे, उस समय रानी रासमणि भी मूर्ति के सामने थीं। आरती समाप्त हुई तो रामकृष्ण रानी के सामने कुछ फूल देने आये किंतु पास आते ही वे रानी को थप्पड़ मार कर क्रोध से बोले, "मंदिर में बैठ कर मोची के बारे में सोच रही हो ?" रानी का चेहरा फक् पड़ गया और वे उनके पैरों पर गिर कर क्षमा मांगने लगीं, क्योंकि उस समय वे सचमुच मोची के द्वारा दी गयी चप्पलों की बात सोच रही थीं। रानी के महान् चरित्र को भी हम सराह सकते हैं, क्योंकि वे चाहतीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उसी समय रामकृष्ण को निकाल बाहर करतीं, बल्कि उन्होंने तब से उन्हें अपना गुरु मान लिया।

आज ऐसे ही एक वामन रूप की कथा कहते हुए बार-बार प्रसन्नता होती है कि भारत की भूमि कितनी भी गिरी हो, उसमें अब भी रत्न इधर-उधर चमकते रहते हैं।

जिन सज्जन की बात कर रही हूं, वे रामकृष्ण के पासंग भी नहीं हैं फिर भी अपने छोटे-से दायरे में उनका महत्त्व अवश्य है। ये सज्जन अभी उपस्थित हैं। दक्षिण भारत में एक छोटे-से रेलवे स्टेशन, वटकरा में रामदासन नाम का एक चाय बेचनेवाला गरीब आदमी है। पैंतीस वर्ष पहले वह पंद्रह वर्ष का किशोर था तब भी वह चाय बेचता था। उस समय एक दिन स्टेशन से एक रेलगाड़ी जा रही थी कि रामदासन ने एक आदमी को प्लेटफॉर्म और पटरियों के बीच लहू-लुहान हालत में पाया। उसने उसे खींचकर प्लेटफॉर्म पर उठाया और एक आदमी की सहायता लेकर उसे सरकारी अस्पताल में भर्ती करा दिया। कई दिनों तक वह चाय बेचने के बीच दौड़-दौड़ कर उस अजनबी के लिये दवाइयां और भोजन खरीद कर लाता रहा। यह कार्यक्रम तभी बंद हुआ जब अजनबी स्वस्थ होकर अस्पताल से निकला।

कई वर्ष बाद राजू नाम का लड़का जब चलती ट्रेन से गिर पड़ा तो मृतप्रायः लड़के को अस्पताल ले जानेवाला रामदासन ही था, हालांकि स्टेशन पर काफी भीड़ थी किंतु परदुःखभंजन एक ही था।

फिर सरोजा जब वटकरा स्टेशन छोड़ती हुई ट्रेन से गिर पड़ी और बेहोश हो गयी तब भी रामदासन ही उसे अस्पताल ले गया और चाय बेचने का काम छोड़ कर कई दिनों तक उस अजनबी स्त्री के होश में आने की आशा में बैठा रहा। जब वह चंगी हो गयी तो उसे ट्रेन में बिठाकर फिर से चाय बेचने लगा।

एक दिन रक्त वमन करती हुई एक स्त्री जब वटकरा स्टेशन पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतर कर बेहोश हो गयी तो स्टेशन मास्टर और तमाशाई कुछ न कर पाने का अफसोस करते रहे, फिर रामदासन आया और उस स्त्री को अस्पताल ले गया। वहां के कर्मचारियों ने कहा कि थोड़ी देर और हो जाती तो वह स्त्री बच न पाती।

जब लोग रामदासन से पूछते हैं कि वह इस झमेले में क्यों पड़ता है तो उसका उत्तर सरल और सच्चा होता है। वह कहता है, "किसी न किसी को तो करना चाहिये, है न ? तो फिर मैं ही सही। मैं काफी सावधान रहता हूं। मरीजों के गहने और पैसे पुलिस के सुपुर्द करता हूं ताकि बाद में प्रश्न न उठे।"

रामदासन का एक सत्कार्य था एक लड़के को, जो अपने मां-बाप से बिछुड़ गया था, उनसे मिला देना। इस काम में उसे कई दिनों तक भटकना पड़ा, कई स्थानों को छानना पड़ा, अंत में बेटा और मां-बाप उसकी मेहनत से पुनः मिल गये।

अब इस गरीब, अनपढ़ के हृदय में कौन बैठकर ऐसे कार्य उससे करवा रहा है ?

बस, "उस" की उपस्थिति से सचेतन होने के कारण वह सत्कार्य करता है। ऐसे अनजाने, अनपहचाने कितने ही रत्न चुपचाप ऐसे काम करते रहते हैं ! उन्हें न यश की चाह है, न अखबारों की सुर्खियों की चाह, और न पुरस्कार की चाह होती है ! यह है सच्चा सत्कर्म !! है न ?

—अनुबेन

— — — —

शांति तुम्हारे ऊपर है, उसे अपने अंदर प्रवेश करने दो, शांति में तुम्हें प्रकाश मिलेगा, और प्रकाश तुम्हें ज्ञान प्राप्त करायेगा।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृ० सं० - 5 - 7

दैनन्दिनी

अप्रैल

१. भगवान् की ओर मुड़ो, तुम्हारे सभी दुःख गायब हो जायेंगे।
२. औरों की मूर्खताओं की परवाह न करो, अपनी मूर्खता को देखो।
३. तुम उसकी सहायता करो जो उसका उपयोग करना जाने।
४. उनका संग कभी न करो जो कीचड़ के मार्ग पर हैं क्योंकि तुम्हारे अपने साथी ही तुम्हें कलंक लगायेंगे।
५. जाओ और अपने-आपको तैयार करो और सबसे अच्छी तैयारी है भगवान् के काम में उपयोगी होना।
६. कोई भी कठिनाई ऐसी नहीं जो पद्धति, व्यवस्था और सावधानी से हल न की जा सके।
७. जब काम का आरंभ भगवान् की इच्छा से होता है तो वह हमेशा शुद्ध होता है।
८. तुम 'जिसे' खोजते हो 'वह' हमेशा तुम्हारे लिये तैयार है।
९. आदर्श वृत्ति है केवल भगवान् का ही होना, केवल भगवान् के लिये ही कार्य करना और सबसे बढ़कर, केवल भगवान् से ही बल, शांति और संतोष की आशा करना। भगवान् परम दयालु हैं और वह सब देते हैं जिसकी हमें लक्ष्य तक जितनी जल्दी हो सके पहुंचने के लिये जरूरत हो।
१०. हमेशा भगवान् का स्वागत करने के लिये तैयार रहो, 'वे' किसी भी क्षण तुम्हारे यहां आ सकते हैं।
और अगर कभी 'वे' तुमसे निश्चित मिलन-स्थल पर प्रतीक्षा करवाते हैं तो निश्चय ही यह कोई कारण नहीं है कि तुम स्वयं देर करो।
११. अगर तुम गंभीरता के साथ भगवान् से कहो, "मैं केवल तुझे ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता हूं,'' तो भगवान् परिस्थितियों को इस तरह संजो देंगे कि तुम सच्चे बनने के लिये बाधित होगे।

१२. उन सबके लिये कृपा और सहायता हमेशा मौजूद रहती है जो इनके लिये अभीप्सा करते हैं और जब इन्हें श्रद्धा और विश्वास के साथ ग्रहण किया जाये तो इनकी शक्ति असीम होती है।

१३. ठीक उसी समय जब सब कुछ अधिक, और अधिक खराब होता प्रतीत होता है, तब हमें श्रद्धा की परम क्रिया अपनानी चाहिये और यह जानना चाहिये कि 'भागवत कृपा' कभी हमारा साथ न छोड़ेगी।

१४. जब सब कुछ खोया हुआ प्रतीत होता है तभी सब कुछ बचाया जा सकता है। जब तुम अपनी निजी शक्तियों पर विश्वास खो बैठते हो, तब तुम्हें भागवत कृपा पर विश्वास रखना चाहिये।

१५. हमें केवल 'भागवत कृपा' पर निर्भर रहना और सभी परिस्थितियों में उसे ही बुलाना सीखना चाहिये। तब वह सतत चमत्कार करती रहेगी।

१६. उस बालक की तरह जो तर्क नहीं करता और जिसे कोई चिंता नहीं है, अपने-आपको भगवान् के हाथों में सौंप दो ताकि 'उनकी' इच्छा पूरी हो।

१७. हर चीज कितनी सुंदर, कितनी महान्, कितनी सरल और कितनी शांत बन जाती है जब हमारे विचार 'भगवान्' की ओर मुड़ जाते हैं और हम अपने-आपको 'भगवान्' को समर्पित कर देते हैं।

१८. पथ लंबा है लेकिन आत्म-समर्पण उसे छोटा कर देता है, मार्ग कठिन है पर पूरा भरोसा उसे सरल बना देता है।

१९. हम सभी परिस्थितियों में अपना अच्छे-से-अच्छा करें और परिणाम को भगवान् के निश्चय पर छोड़ दें।

२०. हमें भगवान् के आगे हमेशा बिलकुल कोरे कागज की तरह रहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये ताकि हमारे अंदर भगवान् की इच्छा बिना कठिनाई और बिना मिश्रण के लिखी जा सके।

२१. सच्ची 'अग्नि' हमेशा गभीर शांति में जलती है; यह सर्व-विजेता संकल्प की अग्नि है। पूर्ण समचित्तता में इसे अपने अंदर बढ़ने दो।

२२. डटे रहो, विजय का यह सबसे निश्चित मार्ग है। जिसे तुम पिछले वर्ष अपने अंदर नहीं पा सके उसे इस वर्ष पा लोगे।
मेरे प्रेम और आशीर्वाद के साथ।

२३. एक दिन में कोई अपने स्वभाव पर विजय नहीं पाता। लेकिन धैर्यपूर्ण और सहनशील संकल्प द्वारा 'विजय' निश्चित होती है।

२४. सचाई के साथ प्रगति के लिये प्रयास करो, और धीरज के साथ, अपने प्रयास के फल की प्रतीक्षा करना सीखो।

२५. जब आदमी जल्दबाजी में नहीं होता तो बहुत अधिक तेजी से आगे बढ़ता है। सचमुच आगे बढ़ने के लिये, मनुष्य को पूर्ण विश्वास के साथ यह अनुभव करना चाहिये कि उसके सामने शाश्वत बिछा है।

२६. अपनी भूलों को पहचानने से अधिक श्रेष्ठ कोई साहस नहीं है।

२७. जिस किसी में साहस है वह औरों को साहस दे सकता है जैसे दीये की ज्योति दूसरे दिये को जला सकती है।

२८. हमेशा सभी परिस्थितियों में मुस्कराना सीखो, अपने दुःखों और अपने सुखों पर, अपनी पीड़ाओं और अपनी आशाओं पर मुस्कराना सीखो, क्योंकि मुस्कान में आत्म-संयम की परम शक्ति है।

२९. हम अपनी खुशी केवल भगवान् में ही खोजें।

३०. जब भगवान् सच्चा आंतरिक सुख प्रदान करते हैं तो दुनिया की किसी चीज में वह शक्ति नहीं होती जो उसे छीन सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

प्रभु का सदन

(गतांक से आगे)

शुरू-शुरू में हम सभी कोशिश करते थे कि उनके भोजन के समय उपस्थित रहें और बड़े ध्यान से उस अनुष्ठान को देखते थे जिसमें माताजी भोजन परोसती थीं। खाने का समय होते ही श्रीअरविन्द के हाथ धोने के लिये पानी लाया जाता, वे सामान्यतया चम्मच से ही खाते थे, छुरी-कांटे का प्रयोग कभी-कदास ही करते थे। वे पहले अपनी अंगूठी उतार कर चम्पकलाल को थमा देते फिर हाथ धोते। बाद में चम्पकलाल अंगूठी उन्हें पहना देते। कभी-कभी जब वे अंगूठी उतारना भूल जाते तो हाथ धोने से पहले चम्पकलाल स्वयं उनका हाथ अपने हाथ में लेकर अंगूठी उतार लेते। फिर माताजी आतीं, भोजन मेज पर सजातीं और मेज श्रीअरविन्द के पास सरका देतीं, उसके बाद भोजन, मिठाई, फल के रस इत्यादि बर्तनों तथा गिलासों में सजा कर परोसतीं। इस सारे कार्यक्रम में सफाई, पवित्रता और सौन्दर्य का सुन्दर समावेश होता। उसके बाद वे एक-एक कर के चीजें उन नीरव-निश्चल देवता के अर्पण करतीं जो चुपचाप उन्हें ग्रहण कर धीरे-धीरे खाते, मानों भोजन रसना की सन्तुष्टि के लिये नहीं वरन् आत्म-समर्पण की क्रिया हो। धीरता और शांति—श्रीअरविन्द के ये विशेष गुण थे। उनके अनुसार आर्य संस्कृति का आदर्श है "धीर"। जल्दबाजी और चंचलता जैसे शब्दों का उनके शब्दकोश में कोई स्थान न था। चाहे वह खाना हो या पीना हो, चलना हो या बोलना हो—वे सभी काम धीर-गम्भीर तथा संतुलित लय के साथ किया करते थे, जिससे लगता था कि उनकी हर गति सचेतन और संकेंद्रित है। माताजी बीच-बीच में पूछ लेती थीं, जैसे—"यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंजन आपको कैसा लगा ?" या "यह कुकुरमुत्ता यहीं का है, ये विशेष बैंगन बनारस से आये हैं या यह बटर फ्रूट है।" और श्रीअरविन्द बस इतना ही कहते, "ओह, अच्छा ! बहुत बढ़िया है यह।" अपने व्यवहार और लहजे में बिलकुल अंग्रेजों की तरह संक्षिप्त प्रशंसा ! उनका मौन और उनकी संक्षिप्त प्रशंसा सुनकर कभी हम आश्चर्य में पड़कर सोचते कि कहीं वे भोजन में रस लेने की अवस्था से पार तो नहीं चले गये ! क्या भागवत चेतना में रसगुल्ला, रोटी और बैंगन का एक-सा स्वाद होता है ? इस महत्त्वपूर्ण विचार को स्पष्ट करते हुए एक बार उन्होंने अपने एक पत्र में लिखा था—"भेद तो रहता ही है, रोटी लूची की तरह स्वादिष्ट नहीं हो सकती, लेकिन योगी रोटी का रस भी उसी आनंद से ले सकता है जितना लूची का—जो एकदम अलग बात है।" उन्हें मिठाई अधिक पसंद थी, विशेषकर रसगुल्ला, संदेश और पन्तुआ। हम इसे स्पष्ट देख सकते थे। जब माताजी ने डॉक्टरी कारणों से उनके भोजन से मिठाई का एकदम से बहिष्कार कर दिया ऐसे समय एक दिन पता नहीं कैसे पन्तुआ अपनी राह बनाकर उनके भोजन में आ पहुंचा। मेज पर आ जाने के बाद माताजी उसे वापिस तो नहीं भिजवा सकती थीं। माताजी ने उनसे पूछा कि क्या वे पन्तुआ लेना चाहेंगे ? श्रीअरविन्द ने उत्तर दिया—"अगर पन्तुआ है तो कोई हर्ज नहीं।" उसके बाद हमारे बीच यह मजेदार मजाक बन गया। वैसे सचमुच वे सब प्रकार के अच्छे व्यंजनों में रस लिया करते थे—चाहे वे यूरोपियन हो या भारतीय। लेकिन जो उनको पसंद नहीं आता उसे बस छूकर परे सरका देते थे। दक्षिण भारत की चरपरी, मिर्च-मसालेदार चीजें उनके आशीर्वाद से भी वंचित रह जातीं, हां, अपवाद-स्वरूप थी एक चीज "रसम्"। जब वे पाण्डिचेरी आये थे और उन्हें रसम् दिया गया तो उन्हें वह पसंद आया। हमारी बातचीत के दौरान उन्होंने कहा था—"इसका तो स्वर्गिक स्वाद है !" वे न तो भोग से घृणा करनेवाले देवता थे और न चटोरे; किसी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीज के लिये न उन्हें आसक्ति थी, न उसके लिये अत्यधिक उत्सुकता। भोजन के अंत में वे एक गिलास संतरे का रस लिया करते थे जिसे वे धीरे-धीरे पीते थे। हर घूंट के बाद देख लेते थे कि कितना बच गया है और अंत में थोड़ा-सा प्रसाद के तौर पर छोड़ दिया करते थे। एक बार रस में कुछ खमीर-सा पैदा हो गया था, उन्होंने दो-एक घूंट के बाद माताजी के कहने पर उसे छोड़ दिया। प्रसाद को बांट लेने के लिये हमारे बीच कानाफूसी चलने लगी। श्रीअरविन्द को इसकी भनक पड़ गयी और उन्होंने हमें वह पीने से मना कर दिया। हमें अपने लोभ का संवरण करना पड़ा।

एक बात ने हमारा ध्यान खींचा कि अगर माताजी उन्हें इस तरह न परोसतीं तो उन्हें विभिन्न व्यंजनों में फर्क न पता लगता था और यह न पता चलता था कि कौन-सी चीज पहले खायें और कौन-सी बाद में। बहुत संभव है कि ऐसे अवसर पर वे आधे पेट ही उठ जाया करते हों। एक बार किसी ने बेसन में लिपटी पूरी की पूरी हरी मिर्च भेजी। जब तक हम उन्हें वह खाने से रोक पाते वह तो उसे उदरस्थ कर गये! फिर हमने सोचा कि उनके लिये एक मिर्च खाना कौन-सी बड़ी बात है, क्योंकि हमने सुना था कि एक बार वे अफीम का पूरा गोला निर्द्वन्द्व-भाव से खा गये थे! हमने यह भी देखा कि अगर किसी कारणवश भोजन के समय माताजी उपस्थित नहीं होतीं और चम्पकलाल को परोसना पड़ता तो वे जैसे-तैसे भोजन समाप्त कर देते। कहा जाता है कि एक बार मृदु का बनाया भोजन अनछुआ रह गया और वापिस चला गया तो उसने तूफान खड़ा कर दिया। श्रीअरविन्द को उसे यह कह कर शांत करना पड़ा कि चूंकि माताजी नहीं थीं इसलिये उन्हें पता न लगा कि उन्होंने क्या खाया और क्या नहीं खाया। एक और अवसर पर श्रीअरविन्द का खाना कुछ जल्दी समाप्त हो गया और मृदु की थाली बाद में आयी और अनछुई रह गयी। जैसे ही मृदु को इसका पता लगा कि उसने रो-रो कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसमान सिर पर उठा लिया, मानों सारे आश्रम को अपने आंसुओं में डुबो देगी। डॉ० मणिलाल ने यह बात श्रीअरविन्द को बतायी तो उन्होंने पूछा—"उसे इस बात का पता कैसे लगा?" मैंने माफी मांगते हुए कहा—"मैंने उसे बताया था।" उन्होंने धीरे से कहा, "ऐसी बातें कही नहीं जातीं।" फिर उन्होंने मुस्कान के साथ कहा, "लेकिन रोना-धोना तो मुझे करना चाहिये क्योंकि मैं उसके स्वादिष्ट व्यंजन से वंचित रह गया।" हम सब ठठाकर हंस पड़े।

उनके भोजन के समय बहुधा एक व्यतिक्रम होता था और वह था "लूची बनाने वाली" हमारी मृदु का आगमन। उसे न जाने कैसे इस तरह आने की विशेष अनुमति मिल गयी थी। वह एक निर्दोष मेमने की तरह चुपचाप अगरबत्ती और फूल लिये आती, दरवाजे के पास घुटने टेक कर बैठ जाती और हाथ जोड़े अपने "बाबा के आशीर्वाद" के लिये प्रतीक्षा करती रहती। हम भोजन के बीच श्रीअरविन्द का ध्यान मृदु की ओर खींचते तो वे खाना छोड़कर उसकी ओर आशीर्वाद-भरी शांत दृष्टि डालते। उसका प्रचण्ड, तूफानी स्वभाव श्रीअरविन्द के सामने एकदम से विनम्र बन जाता! जब कभी श्रीअरविन्द को सूचना दी जाती कि मृदु ने फिर से अपना उग्र रूप दिखलाया है तो उसे धमकी दी जाती कि उसे दर्शन का अवसर मिलना बंद हो जायेगा! (यहां मैं एक नाम और जोड़ दूं जो इस तरह श्रीअरविन्द की विशेष कृपा पाते थे। वे हैं चम्पकलाल के भाई बंसीधर। बंसीधर श्रीअरविन्द के नहाने के लिये निश्चित समय पर दो बाल्टियां गरम पानी की लाया करते थे। जाते समय वे दूर से श्रीअरविन्द को प्रणाम करते और श्रीअरविन्द अपने हाथ का कोई भी काम छोड़कर अपनी एक आशीर्वाद-भरी दृष्टि उन पर डालते।)

हमें यह देखकर आश्चर्य होता था कि दूध का उनके भोजन में कोई स्थान न था, और न ही माताजी के भोजन में ही वह होता था—जापानियों की तरह! वैसे दुर्घटना से पहले एक गाय थी जो "श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की गाय'' से विख्यात थी, जिसकी विशेष देखभाल की जाती थी और उसे बछड़े के साथ 'बालकनी दर्शन' के समय माताजी के आशीर्वाद के लिये लाया जाता था। जब श्रीअरविन्द भोजन करते थे तब माताजी सामान्य विषयों पर बातचीत करतीं या लोगों की बीमारी, दर्शनार्थियों या आश्रम-विषयक छोटी-मोटी समस्याओं के बारे में बतलातीं। कभी-कभी वे चिकित्सा-संबंधी या अन्य विषयों पर माताजी की सलाह लिया करते थे। अगर कभी हम माताजी के परामर्श के सामने अपनी सलाह पर जरा दबाव डालते तो श्रीअरविन्द तुरंत कह बैठते—"तुम समझते हो कि माताजी जानती नहीं हैं ?'' या "क्या तुम माताजी से ज्यादा जानते हो ?'' उसी तरह अगर श्रीअरविन्द कोई बात कह देते तो माताजी के लिये उनके शब्द अंतिम होते। कई बार साधकों ने उन्हें यह कहते सुना—"श्रीअरविन्द ने ऐसा कहा है।'' और श्रीअरविन्द माताजी की बात पर हमेशा बल दिया करते थे। एक बार कोई साधक किसी काम को विशेष रीति से करना चाहता था, माताजी प्रायः राजी हो गयी थीं, लेकिन श्रीअरविन्द को इसमें आपत्ति है यह सुनने पर माताजी ने कहा, "ओह, आपका यह मत है, तब तो मैं उसे यह करने की अनुमति नहीं दे सकती !'' दोनों के लिये एक-दूसरे का वचन वेद-वाक्य था। हममें से किसी ने एक बार यह भी कहा था कि श्रीअरविन्द का समर्पण-योग केवल दो व्यक्तियों ने उपलब्ध किया है—श्रीमां तथा श्रीअरविन्द ने। माताजी ने श्रीअरविन्द को समर्पण किया है और श्रीअरविन्द ने माताजी को।

भोजन के लगभग घण्टे भर बाद स्नान की बारी आती थी। मैं पहले 'स्पंज बाथ' का वर्णन कर चुका हूं, अब मैं साधारण स्नान, फव्वारे द्वारा स्नान के बारे में बताऊंगा। इस तरह के स्नान के प्रबंध के लिये हमें दो वर्षों से अधिक प्रतीक्षा करनी पड़ी। भोजन के बाद वे थोड़ा आराम करते, फिर बिस्तर के छोर पर बैठकर माताजी की प्रतीक्षा करते और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ ही बीच-बीच में मणिलाल की बतायी कसरतें करते। कभी-कभी अगर माताजी को आने में देर हो जाती तो हम जरा बेचैन हो उठते, लेकिन श्रीअरविन्द तो धीरज की मूर्ति बने रहते। कभी-कदास उन्हें ऊंघ आने लगती तो चम्पकलाल पीठ के पीछे तकियों का सहारा लगा देते और हम माताजी की प्रतीक्षा करते। माताजी के आते ही वे उनकी उपस्थिति में करीब आधे घण्टे तक कमरे में टहलते। यह पूछने की इच्छा हो सकती है कि श्रीअरविन्द माताजी की उपस्थिति में क्यों चला करते थे? निश्चित रूप से इसका कोई भौतिक कारण न था। मैं समझता हूं कि चूंकि श्रीअरविन्द का चलना अब तक नहीं हुआ था अतः माताजी की उपस्थिति इसलिये जरूरी थी कि विरोधी शक्तियों के आक्रमण से बचा जा सके। जिस तरह श्रीअरविन्द माताजी की रक्षा किया करते थे, माताजी भी आवश्यकता पड़ने पर उनकी रक्षा किया करती थीं: यह 'परम प्रभु' और 'शक्ति' का कार्य था। ये ऐसी गुह्य बातें हैं जो हमारी मानव समझ के परे की हैं। माताजी के जाने के बाद वे बगलवाले कमरे में चले जाते जिसे उनके स्नानागार में बदल दिया गया था, जिसमें चमकदार 'टाइल्स' लगे थे, फर्श 'मोजाइक' का था और गरम तथा ठण्डा पानी रात-दिन रहता था। तपस्या के इतने वर्षों के बाद यह सचमुच प्रचुरता और समृद्धि थी! भगवान् को भी कठिनाइयों में से गुजरना पड़ता है, यद्यपि वे उससे गुजरते हैं मुस्कान के साथ! स्नान सीधा-सादा होता, इसमें आधे घण्टे से अधिक समय नहीं लगता। यह भी मन्दिर में देवता के स्नान की तरह था, बस यहां देव सशरीर थे—बहुत ही संवेदनशील। और जो पूरी तरह से अपने-आपको सेवकों के हाथों में छोड़ देते थे और सेवक भी अपना सर्वोत्तम कार्य करते थे। स्नान कराने की इस क्रिया से हम दैविक आनंद का अनुभव करते। एक-एक करके उनके भागवत शरीर को साफ करते। जब उनका चेहरा साफ करते तो वे आंखें बंद कर लेते थे और आवश्यकतानुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने या पीछे झुक जाते। और जब हम उनकी बांहें धोते तो वे नहलानेवाले की उंगलियों पर धीरे से दबाव डालते थे। और अंत में बारी आती उनके दो लघु सुन्दर चरणों के धोने की—ये सभी क्रियाएं सुगमता से चलती रहतीं और साथ-साथ हमारी बातचीत भी चलती रहती। कुछ भक्तों के आग्रह पर हमने उनका चरणोदक लेना शुरू किया। श्रीअरविन्द को इसमें आपत्ति नहीं थी। उन्होंने हमें यह वरदान दे दिया और वे अपने चरण आगे बढ़ा देते ताकि हम उनके चरण धोकर वह जल किसी पात्र में इकट्ठा कर लें।

स्नान-समाप्ति की घोषणा होते ही वे उठकर अपने बिस्तर पर आ जाते। हम उनके शरीर पर टैलकम पाउडर का छिड़काव करते। फिर वे कुछ समय चुपचाप आराम करते।

कभी-कभी जब वे लेटे रहते तो बच्चों की तरह हम उन्हें घेर लेते और उन्हें अजन्ता की चित्रकला के वे दो बड़े खण्ड दिखलाते जो उन्हें सर अकबर हैदरी ने भेंट-स्वरूप दिये थे। अवनीन्द्रनाथ, नन्दलाल तथा अन्य आधुनिक चित्रकारों की कृतियां भी उन्हें दिखलाते। पुराणी, चम्पकलाल और सत्येन्द्र इस कार्य में बहुत रस लेते थे और श्रीअरविन्द खुलकर अपनी सम्मति दिया करते थे। चूंकि मैं चित्रकला के प्रति इतना संवेदनशील न था इसलिये इन बातों को यह सोचकर लिखता न था कि पुराणी जरूर लिख लेते होंगे।

दिव्य शरीर का जो भाग हमारे अनगढ़ हाथों में नहीं छोड़ा जाता, वह था उनका शीर्ष भाग—मस्तक। उनके केश धोने का काम माताजी स्वयं किया करती थीं। उसमें हम बस सहायक की भूमिका निभाते थे। हम यह भली-भांति समझ सकते हैं कि यह जटिल कार्य हमारे अनगढ़, खुरदुरे, अव्यावहारिक हाथों में क्यों नहीं छोड़ा जा सकता था। अगर हम यह कार्य अपने हाथों में ले लेते तो मुझे भय है कि श्रीअरविन्द हमसे पूछ बैठते—"तुम लोगों ने कुछ बाल मेरे सिर पर छोड़ दिये हैं न?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजी के दक्ष हाथ और कोमल स्पर्श से वे सुन्दर बाल धुलकर रेशम की तरह चमकदार बन जाते और बाल बाहते समय अगर कुछ बाल झड़ जाते तो वे चम्पकलाल के खजाने को अधिक समृद्ध बनाते।

हमने सुना था कि श्रीअरविन्द आधी रात के करीब बहुत गरम पानी से स्नान किया करते थे। यह क्रम सारे साल चलता था। वे उसमें बहुत कम ठण्डा पानी मिलाते थे, यहां तक कि सिर पर भी वैसा ही गरम पानी डालते थे। यह कहानी विश्वसनीय है क्योंकि अस्थिभंग के बाद हमसे कहा जाता था कि उनके पैरों पर बहुत गरम पानी डाला जाये ताकि समय-समय पर होनेवाली असह्य खुजली से उनको राहत दिलायी जा सके। वे मुस्कुरा कर कहते थे "बहुत अधिक तीव्र लेकिन प्रभावकारी तरीका है यह। लेकिन बहुत लोग इतनी गर्मी सहन नहीं कर पायेंगे।" कभी-कभी स्नान से लौटते हुए हम उन्हें कुछ बुदबुदाते हुए देखते। यह देख चम्पकलाल को प्रेरणा जागी और उन्होंने श्रीअरविन्द से कहा कि यदि वे कविता की पंक्तियां लिखवाना चाहते हों तो नीरद को लिखने में प्रसन्नता होगी। उनकी अंतःप्रेरणा ठीक थी। कुछ दिनों तक श्रीअरविन्द कविता लिखवाते रहे फिर बन्द कर दिया। संभवतः उन्होंने सोचा कि मैं दूसरा बड़ा काम हाथ में ले लूं (जो बाद में आनेवाला था) उससे पहले मुझे कुछ आराम मिल जाये।

दूसरा एक छोटा कार्य था जिसे करने की उन्होंने हमें अनुमति दे रखी थी। वह था उनके नाखून काटना। सत्येन्द्र उनके नाखून साफ किया करते थे, लेकिन हम महीने-दो-महीने में उनको काटते थे जब वे पर्याप्त रूप से बढ़ जाते और हम उन्हें संजोकर रख लेते। यह काम काफी नाजुक था। क्योंकि यदि नाखून बनानेवाले की दृष्टि बहुत अच्छी न होती और कैंची इत्यादि त्वचा पर लग जाती तो उनका पैर यकायक जोरों से हिल जाता—यद्यपि ऐसा होता बहुत कम था। और जब कभी नाखून का छोटा टुकड़ा छिटक कर कालीन पर गिर जाता तो उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढूंढ़ मचती और स्वयं श्रीअरविन्द इसमें यह कह कर योगदान देते– "क्या तुम्हें मिल गया ?" उनके बालों की तरह ये नाखून भी हमारे चम्पकलाल के खजाने को समृद्ध करते और उनकी सम्पत्ति बन जाते थे।

(क्रमशः)

—नीरदवरण

जीवन का लक्ष्य

"उन दिनों की बस एक धुंधली-सी याद है। हमारे घर पर साधु-संतों का तांता-सा लगा रहता था। कभी कोई उपदेश देता, कभी कोई कथा सुनाता। पिताजी बहुत पढ़े-लिखे तो न थे पर उन्हें विश्वास था कि साधुओं की सेवा से लक्ष्मी आती हैं। इसलिये घर कभी साधुओं से खाली न रहता था।

एक दिन कोई पिताजी को सुना रहा था, "भगवान् अमीर को धन-दौलत देते हैं और गरीब के हाथों में अपने-आपको सौंप देते हैं। सब कुछ इस पर निर्भर है कि गरीब किसे अधिक मूल्य देता है, रुपये-पैसे को या भगवान् को।"

बात पूरी तरह समझ में तो नहीं आयी पर कहीं अंदर जाकर पैठ गयी और मैं सपने लेने लगा कि मेरे भाग में लक्ष्मी नहीं स्वयं भगवान् आयेंगे। मैं सोचने लगा लक्ष्मी तो पिताजी के पास है ही, मैं भगवान् को देखने का जतन करूं।

मेरे पिताजी अच्छे खाते-पीते व्यापारी थे। हमारे गांव में उनसे ज्यादा पैसेवाला और कोई न था इसलिये उनका मान भी था लेकिन पढ़ाई-लिखाई में वे जरा ऐसे-ऐसे ही थे। उन्होंने अपने-आप मुझे बालबोध की दो पोथियां पढ़ा दीं और अद्धा, पौना, सवाया से लेकर चालीस तक वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहाड़े याद करा दिये। उनकी दृष्टि में इतनी पढ़ाई बहुत काफी थी।

लेकिन मुझे पढ़ाई का चस्का लग गया। मैं आगे पढ़ना चाहता था और यह बात उन्हें पसंद न थी। वे कहते थे, "पढ़े फारसी बेचे तेल। बेटा, फारसी पढ़कर कम-से-कम तेल तो बेच सकते थे लेकिन आज की पढ़ाई तो बिलकुल निकम्मा बना देती है। तुम चिट्ठी-पत्री लिख-पढ़ लेते हो, हिसाब कर लेते हो, और आगे पढ़कर क्या होगा ?"

मैं आगे पढ़ने के लिये हठ करता था। मैंने उनसे उस उपदेश की बात कही। मैंने कहा, "मुझे पैसा नहीं कमाना, मैं तो भगवान् को पाना चाहता हूं। पढ़-लिख कर भगवान् को पाने की कोशिश करूंगा।"

पिताजी हो-हो कर के हंस पड़े। उन्होंने उसी समय मेरी मां को बुलाया और बोले, "देखती हो, तुम्हारा बेटा धन-दौलत को ठुकरा कर भगवान् को पाना चाहता है। ध्रुव बनेगा ध्रुव। मैं कहता था इसे ज्यादा कथा-उपदेश के लिये मत ले जाया करो। कच्ची बुद्धि है। कहीं पोथी की बातों को जीवन में लाने की कोशिश न करे, पर तुमने मेरी बात न सुनी। अब लो, चखो मजा।"

मां का चेहरा गंभीर हो गया। उन्होंने पिताजी को कुछ जवाब देना मुनासिब न समझा। मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए मुझे अपने साथ ले गयीं। अकेले में ले जा कर मुझसे बोलीं : "बेटा, हमारी सात पीढ़ियों में कोई नहीं पढ़ा। तू पढ़-लिख कर ज्ञानी बना तो सबको तार देगा।"

अब क्या था। मां का प्रोत्साहन पाकर मैं शेर हो गया। पिताजी से हठ करने लगा : "मुझे स्कूल में भरती करवा दो।" पिताजी पहले तो ना-ना करते रहे फिर एक दिन जरा नाराज होकर बोले : "मैंने एक बार कह दिया, मैं तुझे स्कूल में भरती नहीं कराऊंगा। ऐसा ही शौक है तो अकेला चला जा और हो जा भरती।"

बस, अंधा क्या चाहे ? दो आंखें। मेरी मुंहमांगी मुराद पूरी हो गयी। स्कूल के एक मास्टरजी हमारे पड़ोस में रहते थे। मैं दौड़ा-दौड़ा उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां जा पहुंचा और उनसे कहा : "मुझे अपने स्कूल में भरती करवा लीजिये।" वे राजी हो गये। मां ने चुपके-चुपके गणेश पूजा करवायी, पट्टी पुजवायी और मेरा मुंह मीठा करके मुझे स्कूल भेज दिया।

स्कूल मुझे बहुत पसंद आया। मास्टर जी खूब रस लेकर पढ़ाते थे। कोई चीज समझ में न आये तो दो बार, तीन बार समझाने के लिये तैयार रहते थे। बच्चों के साथ भी मैं बड़ी जल्दी घुल-मिल गया। पढ़ाई हो या खेल-कूद, मैं हर चीज में चमकने की कोशिश करने लगा। पिताजी इस सबसे खुश तो न थे पर मां का पूरा साथ था इसलिये विरोध भी न करते थे।

मैं जी-जान से पढ़ता था। कोई भी विषय हो, हर एक में पहला आ जाता था। मुझे स्कूल की ओर से छात्रवृत्ति मिलने लग गयी। अब पिताजी का विरोध कुछ कम हुआ। उन्हें लगा कि पढ़ना आखिर इतना बेकार नहीं है।

मैं अपने जीवन के आदर्श को भूला न था यद्यपि यह भी बताता चलूं कि भगवान् से मिलने का अर्थ मैं अब भी न समझ पाया था। अब भगवान् को पाने के साथ-ही-साथ एक और लक्ष्य भी बना, पढ़-लिख कर ऊंची-से-ऊंची उपाधियां लूं।

एक बार मां को लेकर बनारस गया। उनके स्नान, ध्यान वगैरह के बाद उनके साथ विश्वविद्यालय देखने गया और उनसे कहा : "मैं यहां पढ़ना चाहता हूं।" वहां की हवा ने उन पर भी जादू किया। मैंने कहा, "लेकिन यहां खाली छात्रवृत्ति से काम न चलेगा।" मां बोली : "कोई बात नहीं, तेरे पिताजी तो हठ के पक्के हैं पर मैं तेरी सहायता करूंगी।"

मैंने उनके चरण छू लिये।

अब मैं हिन्दू विश्वविद्यालय का विद्यार्थी बन गया। मालवीय जी महाराज ने एक दिन मुझे अपने घर बुलाया। मेरी पढ़ाई के बारे में वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले ही सुन चुके थे। उन्होंने खाने-पीने की व्यवस्था के बारे में पूछा। घर का हाल-चाल पूछते रहे और फिर विश्वविद्यालय की ओर से मुझे छात्रवृत्ति दिलवा दी। चलते समय मैं उन्हें प्रणाम करने लगा तो बोले : "केवल पढ़ना-लिखना काफी नहीं है। मेरी एक बात की गांठ बांध लो।" यह कहते हुए उन्होंने मुझे एक कागज पकड़ाया जिस पर उनके सुन्दर अक्षरों में लिखा था :

दूध पियो कसरत करो जपो हरि का नाम
ये तीनों जो करोगे पूरण होंगे काम।

मालवीय जी ने मानों मेरे पहले लक्ष्य की आग को फिर से भड़का दिया। केवल पढ़ना काफी नहीं है, हरि को भी पाना होगा।

उन्हीं दिनों उस समय के रसायन के सबसे बड़े भारतीय आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय की एक घटना पढ़ी। कहीं पर उनका स्वागत-समारोह हो रहा था। अभिनन्दन पत्र में उनके नाम के साथ बहुत सारी उपाधियां लगायी गयी थीं।

आचार्यवर बोलने के लिये खड़े हुए। उन्होंने कहा : "मेरे बहुत सारे प्रिय विद्यार्थियों ने मुझे निमंत्रण दिया था। मैं उसे टाल न सका लेकिन मुझे मालूम न था कि वे मेरी हत्या करना चाहते हैं।"

उनके पुराने विद्यार्थी अब बड़े-बड़े अफसर थे। आचार्य के वाक्य सुन सब-के-सब चौंक पड़े। कोई उनका मुंह ताकने लगा, किसी ने सिर नीचा कर लिया। आचार्यवर आगे बोले : "तुम लोगों ने आज के अभिनन्दन-पत्र में मेरे नाम के साथ वे उपाधियां लगायी हैं जो मैंने बीस, पच्चीस, तीस वर्ष पहले ली थीं। तुम्हारी दृष्टि में आज भी मेरा मूल्य आंकने के लिये उन्हीं की जरूरत है। मैं उनसे आगे नहीं बढ़ा! प्रगति न करना ही तो मृत्यु है।"

मैंने जाना कि परीक्षाएं पास करने का, उपाधियां प्राप्त करने का अपने-आप में मूल्य नहीं। आगे बढ़ने का रास्ता खुले तभी पढ़ने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ अर्थ है। मैंने सोचा विश्वविद्यालय के साथ-ही-साथ शिक्षा समाप्त नहीं हो जाती। यह तो जीवन की नयी कक्षा में भरती होने के लिये प्रवेश-पत्र है।

अब मैं ईश्वर की खोज करना, उन्हें पाना चाहता था। अध्ययन के बाद मैंने अध्यापन कार्य अपनाया। सचमुच मुझे ऐसा लगता था कि स्वयं भगवान् ही मुझे इस क्षेत्र में लाये हैं और इसी मार्ग से मुझे उनकी प्राप्ति होगी।

अभी तक मैं अपनी ही प्रगति की सोचा करता था, अब मैं विद्यार्थियों के विकास की बात सोचने लगा। केवल पढ़ा देने से मुझे संतोष न होता था। मैं हर एक के अंदर यह जिज्ञासा जगाता था कि मैं कौन हूं, मैं दुनिया में किसलिये आया हूं, मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है?

इन प्रश्नों का कोई बंधा हुआ उत्तर नहीं है। हर एक को अपने अंदर पैठ कर खोजना होगा और खोजकर उसके अनुसार अपने जीवन को ढालना होगा।

अपने विद्यार्थियों की सहायता करते हुए मुझे लगता है कि मैं उनके अंदर स्थित भगवान् की सेवा कर रहा हूं। उनसे मुझे जो प्रेम मिलता है उसे मैं भगवान् की देन मानता हूं।

मेरा परिवार बढ़ता जाता है। सभी विद्यार्थियों के साथ एक प्रकार की घनिष्ठता का अनुभव होता है। उनके अंदर अपने इष्ट के दर्शन होते हैं। मुझे आशा ही नहीं, विश्वास है कि एक दिन केवल इनमें ही नहीं, मनुष्य मात्र में ही नहीं, सारी सृष्टि में उन्हीं के दर्शन कर सकूंगा।"

कहानी का अपना ही वातावरण बन गया था। सब चुपचाप बैठे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम-विकास तथा वैदिक युग

जब विवेकानन्द ने कहा था : "वह तात्त्विक ऐक्य जो अपनी पूर्ण स्थिति को पा लेगा," तो वे उसके बारे में अस्पष्ट रूप से सोच रहे थे या . . .

जहांतक मुझे मालूम है, विवेकानन्द भौतिक सिद्धि की बहुत परवाह न करते थे। बल्कि वे तो उस श्रेणी के लोगों में से थे जो जीवन से छुटकारा चाहते हैं, अपने-आपको इस रोग से मुक्त करना चाहते हैं।

लेकिन अपने जीवन के अंत में उन्हें दुःख था कि वे सफल नहीं हुए।

एक बार मैंने कुछ पढ़ा था, अब मुझे पता नहीं कहां, क्योंकि यह फ्रांस की बात है, वह किसी पुस्तक में अनूदित था, शायद वह कोई थियोसोफी की पुस्तक रही हो जिनमें भारतीय चीजों का अनुवाद होता है। वहां मैंने विवेकानन्द के बारे में लिखी गयी एक घटना पढ़ी थी। जिसमें लिखा था कि विवेकानन्द के किसी शिष्य ने उनसे कहा था : "ओह, सूर्यास्त कितना सुन्दर है !" इससे उन्हें बहुत जोर का धक्का लगा और उन्होंने उसे डांट दिया। शिष्य की बात ने उन्हें कुछ जोर का धक्का दिया था। मुझे याद है मैंने यह बात फ्रांस में पढ़ी थी और यह मुझे चुभ गयी थी। यह मुझे अभीतक याद है क्योंकि यह मुझे . . . मुझे उनका उत्तर निन्दात्मक लगा ! उन्होंने कहा : "क्या ! यह सुन्दर है ? अगर तुम प्रकृति के सौंदर्य की सराहना करोगे तो तुम कभी भगवान् को न पा सकोगे।" प्रसंगवश, मुझे पता नहीं कि यह बात सच्ची है या सुननेवाले ने गढ़ ली थी, मुझे इस बारे में कुछ भी नहीं मालूम। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ इतना ही कहती हूं कि मैंने यह बात पढ़ी थी और इसका मेरे ऊपर इतना असर हुआ कि कई बार जब मैं सूर्यास्त या सूर्योदय या प्रकाश के मोहक प्रभाव को देखती हूं तो अब भी इसे याद कर लेती हूं और अपने-आपसे कहती हूं : "अरे ! ऐसी पृथकता ... कैसी अजीब बात है कि अगर कोई प्रकृति की सराहना करे तो आध्यात्मिक जीवन नहीं बिता सकता !"

तो अगर यह बात सच्ची है कि वे ऐसे थे, तो निश्चय ही वे हमारे कार्यक्रम के दूसरे छोर पर थे। मैं जो कह रही हूं मुझे पता नहीं कि यह सच है या नहीं, लेकिन फिर भी, बात मैंने सुना दी। और मैंने उनके बारे में जो कुछ पढ़ा है वह ऐसा ही था : कि उन्हें भौतिक अभिव्यक्तियों के लिये बहुत तिरस्कार था, कि वे अधिक-से-अधिक उन्हें आत्म-विकास और मुक्ति के साधन के रूप में स्वीकार कर सकते थे—इससे बढ़कर नहीं।

माताजी, आपने कहा कि वैदिक युग एक वचन की तरह था। वचन किसे दिया गया था ?

धरती को और मनुष्यों को।

वे अपनी अनुभूति का एक मौखिक दस्तावेज छोड़ गये। उसे संचारित किया गया—यही वचन था।

उन्होंने प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग किया। कुछ लोगों का कहना है कि यह इसलिये था कि वे चाहते थे कि इसकी दीक्षा दी जाये और इसे केवल दीक्षित लोग ही समझ पायें। लेकिन यह एकदम सहज-स्वाभाविक अभिव्यक्ति भी हो सकती थी जिसमें चीजों को छिपाने का कोई यथार्थ उद्देश्य न था, लेकिन उसे ऐसे लोग न समझ सकते थे जिन्हें वह अनुभूति न हुई हो। क्योंकि बिलकुल स्पष्ट रूप से यह ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीज है जो मानसिक नहीं है, जो सहज रूप से आयी थी—मानों वह हृदय से और अभीप्सा से फूट पड़ी हो—जो किसी अनुभूति या ज्ञान की पूर्णतया सहज अभिव्यक्ति थी, और स्वभावतः एक काव्यात्मक अभिव्यंजना, जिसकी अपनी लय थी, अपना सौंदर्य था, और वह उन्हीं लोगों की पहुंच में हो सकती थी जिन्हें समान अनुभूतियां हुई हों। इस तरह वह अपने-आप ही पर्दे में आ गयी, उस पर एक और पर्दा डालने की जरूरत न थी। यह संभव से भी अधिक लगता है कि ऐसा ही हुआ होगा।

जब तुम्हें कोई सच्ची अनुभूति होती है जो विशेष प्रयास द्वारा अनुभूति की रचना करने और उसे पा लेने के लिये प्राथमिक विचार का परिणाम न हो, जब वह प्रत्यक्ष सहज अनुभूति हो, एक ऐसी अनुभूति जो अभीप्सा की तीव्रता से आती है, तो वह सहज रूप से शब्दों का रूप धारण कर लेती है। जब वह पर्याप्त रूप से संपूर्ण और समग्र हो, तो वह ऐसे शब्दों का रूप लेती है ... जिन्हें पहले से सोचा नहीं जाता, जो सहज होते हैं, चेतना से सहज रूप से प्रकट होते हैं। हां, तो यह संभव से भी अधिक है कि वेद इस तरह प्रकट हुए होंगे। लेकिन उनका ठीक अर्थ वही समझ सकते हैं जिन्हें चेतना की वही स्थिति प्राप्त हो, जिन्हें वही अनुभूति हुई हो।

ऐसे वाक्य हैं जो बिलकुल ही तुच्छ और मामूली मालूम होते हैं, लगता है कि उनमें चीजें लगभग बचकाने ढंग से कही गयी हैं, जिन्हें लिखा गया या सुना गया और यूं ही लिख लिया गया। हां तो, अगर उन्हें सामान्य चेतना से पढ़ा जाये, तो वे कभी-कभी एकदम तुच्छ मालूम होते हैं। लेकिन अगर किसी को अनुभूति प्राप्त हो, तो उसे उनमें उपलब्धि की शक्ति और अभिव्यक्ति का सत्य दिखायी देते हैं जो उसे स्वयं अनुभूति की चाबी देते हैं।

लेकिन यह स्पष्ट मालूम होता है कि, वर्तमान युग में, प्राचीन काल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के ऋषियों के समान आधुनिक व्यक्ति की . . . सहज वैदिक अभिव्यक्ति भी अपने रूप में बहुत भिन्न होगी। क्योंकि पार्थिव विकास और मानव विकास अभिव्यक्ति की परिस्थितियों को बदल देते हैं। उन दिनों का कहने का तरीका और आज का कहने का तरीका एक नहीं हो सकता; और फिर भी हो सकता है कि वह अनुभूति किसी ऐसी चीज की अनुभूति हो जिसके बारे में सोचा नहीं जा सकता लेकिन जो अनुभूति की जीवित जाग्रत् अभिव्यक्ति के रूप में आती है।

माताजी, क्या वैदिक ऋषि ऐसे लोग थे जो विकसित होकर उस स्थिति तक पहुंचे थे या वे विशेष अभिव्यक्तियां थे ?

तुम्हारा मतलब क्या है ? क्या वे विकसनशील सताएं थीं या निवर्तनशील[१]।

वे संभवतः . . . नहीं . . . वे निश्चय ही निवर्तित सत्ताएं थीं। लेकिन उनका शरीर विकास का परिणाम था।

लेकिन यह एकदम निश्चित है कि वे निवर्तनशील सत्ताएं थीं, यानी, ऐसी सत्ताएं जो उच्चतर लोकों से उतरी थीं और जिन्होंने इन शरीरों का उपयोग किया, जिन्होंने इन शरीरों के साथ तादात्म्य स्थापित किया।

यही बात है जो मैंने उस दिन कही थी कि जिन चीजों ने पार्थिव विकास की धारा को और मानव विकास को बदल दिया है वे हैं ऐसे शरीर जो इस हद तक पूर्ण हो चुके हों कि उच्चतर लोकों की उन सत्ताओं के यंत्र का काम दे सकें जो उनका उपयोग करने के लिये उनमें अवतरित हुई हों और यह स्पष्ट मालूम होता है कि ऋषि ऐसे लोगों में से थे—अगर सब नहीं तो कम-से-कम उनके अग्रणी, जो उनमें

[१] नीचे से ऊपर उठनेवाली सत्ताएं विकसनशील और ऊपर से नीचे उतरनेवाली सत्ताएं निवर्तनशील कहलाती हैं। —अनु०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीर्षस्थ थे। लेकिन बहुत संभव है कि उन्होंने अपना एक दल बना लिया हो जिसकी अपनी उपलब्धियां हों, जो अपने पास-पड़ोस से बिलकुल आजाद हों। इसके अतिरिक्त, अगर जो कहा जाता है वह ठीक है, तो वे बिलकुल अलग-थलग रहते थे।

(मौन)

बस फिर ? ... और कुछ नहीं ? नहीं ?

माताजी, क्या क्रम-विकास जारी रहेगा या निवर्तन इसका स्थान ले लेगा ? यानी ...

हां, मैं समझ गयी ...। लेकिन मैं तुम्हारे प्रश्न के अभिप्राय को नहीं समझ पायी—क्या पार्थिव विकास की प्रक्रिया क्रम-विकास के द्वारा चलती रहेगी या ...

... जी, या उसका स्थान निवर्तन ले लेगा ?

हां... लेकिन तुम एक बात भूल जाते हो। श्रीअरविन्द ने कहा है कि धरती पर प्रकट होनेवाली हर नयी जाति निवर्तन का परिणाम थी। तो हमेशा इन दोनों का मेल रहा है। दोहरा काम रहा है : एक काम जो नीचे से ऊपर की ओर जाता है, और एक उत्तर जो ऊपर से नीचे की ओर आता है।

माताजी, क्या क्रम-विकास अन्तर्लीन भगवान् का अपने-आपको अभिव्यक्त करना नहीं है ? तब फिर यह जरूरी क्यों है ?

क्रम-विकास या निवर्तन ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम-विकास। यानी, उहादरण के लिये, पहले पाशविक मन का विकास हुआ। तो कहा गया कि मन पहले ही . . .

तत्त्वतः . . .

तत्त्वतः, छिपा हुआ था।

तत्त्वतः, हां। और उसे जो तैयार करता है वह यह है : इसे सब प्रकार के नाम दिये गये हैं, समझे : दिव्य स्फुलिंग, 'उपस्थिति', आदि, जिसे जड़-पदार्थ के अंधकार में प्रविष्ट किया जाता है ताकि वह विकास शुरू करे। लेकिन एक और चीज भी है : सत्ता का, सचेतन सत्ताओं का, व्यक्तित्वों का, विकास द्वारा रचित रूपों में अवतरण और तादात्म्य—और इस तरह उच्चतर लोकों की सत्ताओं और दिव्य 'उपस्थिति' द्वारा विकसित रूपों में ऐक्य स्थापित होता है। और अन्तस्थ देव और नीचे उतरनेवाली इस सत्ता में तादात्म्य स्थापित होता है। उदाहरण के लिये, है न, जब चैत्य सत्ता उच्चतर श्रेणी के व्यक्तित्व के साथ, किसी दिव्य अंश के साथ, किसी चैत्य के साथ तादात्म्य प्राप्त करने के लिये आनेवाली विभूति के साथ ऐक्य स्थापित करती है—तो बस यही, उसमें यही चीज होती है। लेकिन यह न तो यह है, न वह। एक सत्ता इस प्रकार का काम करती है, जैसा कि मैं कहती हूं, एक सत्ता अंदर से बाहर की ओर विकास का काम करती है; और दूसरी कोई ऐसी चीज है जो ऊपर से आकर पहली के द्वारा निर्मित चीज पर कब्जा कर लेती है।

साधारणतः ये वैयक्तिक घटनाएं होती हैं। ये तादात्म्य वैयक्तिक घटनाएं हैं। साधारणतः। मैं यह नहीं कहती कि इसके लिये सामुदायिक घटना होना असंभव है; लेकिन फिर भी, साधारणतः यह वैयक्तिक घटनाएं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर भी, अनुभूति होना काफी है और तब तुम समझ लेते हो। बात बिलकुल स्पष्ट हो जाती है।

इसलिये, बोलना नहीं चाहिये, कार्य करना चाहिये।

तो यह बात है। बस ?

शुभ रात्रि, मेरे बच्चो।

२ नवंबर, १९५५

'श्रीमातृवाणी', खण्ड ७
पृ० ३४३-३४८

कक्षाओं से लाभ उठाओ

कभी-कभी हम एकाग्र होने की कोशिश करते हैं पर हो नहीं पाते।

अगर सचमुच तुम एकाग्र नहीं हो पाते, तो तुम्हें अपना समय अपने अंदर इसका कारण खोजने में लगाना चाहिये। तब यदि अध्यापक तुमसे कोई प्रश्न पूछे तो तुम्हें कह देना चाहिये : "खेद है, मैं सुन नहीं रहा था!"

तुम सीखना नहीं चाहते ?

हां।

तब यह कैसे हो सकता है ?

परंतु कुछ कक्षाओं में मैं समझ नहीं पाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब कुछ कक्षाओं में तुम सीखना नहीं चाहते। तुम साधारण तौर पर कह सकते हो : "हां, हां, मैं सीखना चाहता हूं," लेकिन अगर कोई सचमुच सीखना चाहे तो एक भी कक्षा ऐसी नहीं होती जहां तुम कुछ न सीख सको। निश्चय ही, चाहे कोई भी कक्षा क्यों न हो, वहां कोई-न-कोई चीज ऐसी जरूर होती है जिसे तुम नहीं जानते, तुम हमेशा सीख सकते हो। तुम चलते-फिरते विश्वकोश नहीं हो! अगर तुम एक ही पुस्तक को दोबारा पढ़ो (मेरा ख्याल है कि कुछ कक्षाओं में यह होता है), और तुम कहो : "ओह! मैं इस पुस्तक में से गुजर चुका हूं। यह उबानेवाली है," तो यह केवल इसलिये होता है क्योंकि तुम सीखना नहीं चाहते; क्योंकि सचमुच अगर तुम उसी पुस्तक को दोबारा पढ़ रहे हो तो इसका अर्थ है कि पहली बार तुमने उसे ध्यान से नहीं पढ़ा। और तुमने जो चीज भली-भांति नहीं पढ़ी उसे विशेष ध्यान से पढ़ना चाहिये। व्याकरण की पुस्तक भी। मैं यह नहीं कहती कि व्याकरण की पुस्तकें बहुत उत्तेजक होती हैं, लेकिन अगर तुम सीखना चाहो तो व्याकरण की पुस्तक भी मजेदार हो जाती है—व्याकरण के अधिक-से-अधिक दुर्बोध नियम भी! तुम कल्पना नहीं कर सकते कि जब तुम सचमुच सीखना चाहते हो, जब तुम समझना चाहते हो कि ऐसा क्यों है, सिर्फ यूं ही रट लेने, मुखस्थ कर लेने की जगह अगर तुम समझना चाहो : ये शब्द क्या हैं जो यहां रखे गये हैं, किस विचार के लिये, किस सच्चे ज्ञान के लिये ये रखे गये हैं? ये क्या कहना चाहते हैं?—यह सब जानना चाहो तो चीज कितनी अधिक रुचिकर हो जाती है। . . . हर एक नियम, चाहे कोई-सा क्यों न हो, स्वयं अपने अंदर स्थित किसी चीज के लिये मनुष्य के मन का सूत्र होता है। किसी भी नियम को ले लो। वह यही बतलाता है कि कुछ मस्तिष्कों ने अपनी दृष्टि में अधिक-से-अधिक स्पष्ट, अधिक-से-अधिक घन या संक्षिप्त रूप में कोई ऐसी चीज कहने की कोशिश की है जिसका अपना अस्तित्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। अगर तुम शब्दों के पीछे जाकर इस चीज को ढूंढ़ने की कोशिश करो—जो चीज अपने-आपमें अस्तित्व रखती है, जो शब्दों के पीछे विद्यमान है—तो चीज कितनी मजेदार हो जाती है। उससे फुरहरी आने लगती है! रोमांच हो उठता है! यह एक जंगल में से गुजरते हुए एक नये देश की खोज करने की तरह है, उत्तरी ध्रुव जाकर छानबीन करने जैसा है। अगर तुम व्याकरण के नियमों के साथ ऐसा ही कर सको तो मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं, फिर तुम्हें कोई चीज न उबा सकेगी।

सीखने की जगह समझो।

मैं स्वीकार करती हूं कि इसके लिये बहुत अधिक एकाग्रता की जरूरत है। यह ऐसी एकाग्रता की मांग करती है जो मन के आवरण को भेद कर, उसमें छेद करके उस पार निकल सके। और तब यह मेहनत सार्थक होती है ...। तुम्हें किसी ठंडी, कठोर, सख्त, बिना लोच की चीज पर धक्का दिया जाता है। तुम एकाग्र होते हो, एकाग्र होते हो, एकाग्र होते हो, जबतक कि ... अचानक तुम दूसरी ओर निकल जाते हो और तुम प्रकाश में जा निकलते हो और तब समझते हो: "आहा! यह तो अद्‌भुत है! अब मैं समझा।" एक नन्हीं-सी चीज तुम्हें बहुत हर्ष देती है।

तो देखो, विद्यालय में न उकताना संभव है।

विद्यालय में अमुक पाठ्यक्रम एक वर्ष में समाप्त करना ही होता है। कभी-कभी जरा तेजी करनी पड़ती है, एक प्रश्न को भली-भांति समझे बिना ही अगले अध्याय पर जाना होता है।

मेरे बच्चे, इस बात में मैं तुम्हारे साथ पूरी तरह सहमत हूं। यह बिलकुल ठीक नहीं है। हम इस सबको बदलने की कोशिश करेंगे: मेरी समझ में नहीं आता कि हमें एक पुस्तक एक ही वर्ष में क्यों समाप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनी चाहिये। यह बिलकुल मनमानी है। तुम्हें कोई अध्याय तबतक नहीं छोड़ना चाहिये जबतक वह पूरी तरह समझ में न आ जाये। उसके बाद ही दूसरा अध्याय लेना चाहिये, और इसी तरह। अगर कोई अध्याय पूरा हो गया, तो हो गया और नहीं हुआ, तो नहीं हुआ।

सच तो यह है कि अध्यापक को अपना पाठ पाठ्य-पुस्तक के आधार पर कराने की जगह अपने-आप पाठ तैयार करने का कष्ट उठाना चाहिये। उसे काफी जानना चाहिये और दिन-प्रतिदिन पाठ तैयार करने का कष्ट उठाना चाहिये और तब वह किसी विषय का पाठ तभी बंद करेगा जब—मैं यह नहीं कहती कि हर एक समझ लेगा, क्योंकि यह तो असंभव है—कम-से-कम जिन्हें वह कक्षा में रस लेनेवाले समझता है, वे समझ लेंगे। तब नया विषय लिया जाता है। और अगर यह चलता रहे और कोई विशेष विषय एक साल की जगह दो साल ले ले या कोई और विषय दो साल की जगह डेढ़ में ही पूरा हो जाये तो इसमें कोई हर्ज नहीं; क्योंकि यह उसकी अपनी रचना है, उसका अपना लिखा हुआ पाठ है जिसे वह कक्षा की आवश्यकता के अनुसार लिखता है। पढ़ाने के बारे में मेरी यही धारणा है। अब, इसकी अपनी कठिनाइयां हैं। लेकिन काम करने का सच्चा तरीका यही है। क्योंकि एक किताब लेकर उसी का अनुसरण करने से और विशेषकर ऐसी किताब जो विद्यार्थियों के लिये जरा भी अनुकूल न हो . . . मैं नहीं कहती कि एक विशेष पाठ्यक्रम सबके लिये अनुकूल हो सकता है, सबको संतुष्ट करना असंभव है। लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं जो प्रयास करना चाहते हैं; तुम्हें इनका ख्याल करना चाहिये। जो आलसी, निद्रालु और अकर्मण्य हैं उन्हें तो अपने आलस्य, निद्रालुता और अकर्मण्यता में ही छोड़ दो। अगर वे सारे जीवन सोते रहना चाहते हैं तो सोने दो, जबतक कि कोई चीज उन्हें काफी झकझोर कर जगा न दे। लेकिन श्रेणी में वह भाग ध्यान देने योग्य है जो सीखना चाहता है, जो लोग सचमुच सीखना चाहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कक्षा उन्हीं के लिये ली जानी चाहिये। तुम देखते नहीं हो कि शिक्षा की वर्तमान पद्धति एक प्रकार से समतल बनाना है। हर एक को उसी स्तर पर होना चाहिये। तो जिन लोगों के सिर ज्यादा ऊंचे हैं उनके सिर काट दिये जाते हैं और जिनके बहुत छोटे हैं उन्हें नीचे से धक्का दिया जाता है। लेकिन इससे कोई लाभ नहीं। तुम्हें उन्हीं की परवाह करनी चाहिये जो ऊपर आते हैं, दूसरे जितना ले सकते हैं, ले लेंगे। और वास्तव में मैं इस बात की कोई जरूरत नहीं समझती कि हर एक को एक ही चीज का ज्ञान हो—क्योंकि यह सामान्य बात नहीं है। लेकिन जो जानना चाहते हैं और जान सकते हैं, जिन्हें काम करना चाहिये, उन्हें काम करने के पूरे, सब संभव साधन दिये जाने चाहियें, उन्हें हमेशा ऊपर उठाना चाहिये और नया भोजन देना चाहिये। वे भूखे हैं और उन्हें खिलाना चाहिये . . . आह ! अगर मेरे पास समय होता तो मैं एक कक्षा लेती। इसमें मुझे बहुत रस आयेगा—यह दिखाने में कि यह कैसे किया जाना चाहिये। लेकिन हम एक ही समय में हर जगह नहीं हो सकते।

यह लो, मेरे बच्चो, काफी देर हो गयी है। शुभ रात्रि !

१० जून, १९५३

'श्रीमातृवाणी', खण्ड ५
पृ० ९८-१०१

जब-जब तुम अपने-आपको चंचल अनुभव करो, अपने अंदर ही अंदर, कोई बाह्य आवाज किये बिना, मेरा नाम लेते हुए कहो : "शांति, शांति, ओ मेरे हृदय !" . . . ऐसा लगातार करते रहो। इसका फल तुम्हारे लिये सुखकर होगा।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजी और श्रीअरविन्द के साथ एक शिष्य का पत्र-व्यवहार

आज रात मुझे लग रहा है कि मेरी नियति अटल रूप से आपकी नियति के साथ जुड़ी है। इस बढ़ती हुई निश्चिति के लिये मैं कृतज्ञ हूं।

माताजी: यह बिलकुल सच है।

यद्यपि मैं स्वयं अपने स्वभाव और उसकी ऊंची-से-ऊंची आवश्यकताओं को नहीं समझता लेकिन मुझे लगता है कि आप मुझे मेरी अपेक्षा ज्यादा अच्छी तरह जानती हैं और मेरा जीवन और मेरी अभीप्सा आपके हाथों में सुरक्षित है।

माताजी: हां, मेरी इच्छा है कि तुम्हें तुम्हारी उच्चतम अभीप्सा की उपलब्धि तक ले जाऊं।

और यद्यपि मैं नहीं जानता कि सच्चा प्रेम क्या है फिर भी मैं आपसे अपने अनगढ़ तरीके से प्रेम करता हूं। क्या मैं अपने प्रेम को, वह जैसा भी हो, आपके अर्पण कर सकता हूं?

माताजी: तुम्हारे प्रेम का स्वागत है, उसके उत्तर में हमारा प्रेम और आशीर्वाद।

९ सितंबर १९३७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस दिन के लिये मेरे अंदर कितनी उत्कण्ठा है जब मैं सचमुच यह अनुभव कर सकूं और कह सकूं कि जीवन में मेरी एकमात्र इच्छा, मेरा एकमात्र सुख यही है कि मैं आपसे प्रेम कर सकूं और आपकी सेवा कर सकूं। बाकी सब कलह, संघर्ष और आत्मा के लिये कष्टकर है लेकिन आपके साथ प्रेम कर सकना, आपकी सेवा करना और कोई कामना न करना सचमुच सुखकर होगा, भगवान् करें ऐसा हो। क्या ऐसा होगा ?

माताजी: मैं कोई कारण नहीं देखती कि ऐसा क्यों न हो।
मेरा प्रेम और आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ हैं।

३० सितंबर १९३७

प्यारी माताजी,

मुझे कल रात जो छोटी-सी अनुभूति हुई थी, मैं उसका जिक्र करना चाहता हूं। जब मैं सोने की कोशिश कर रहा था और जब मेरा बाहरी मन अपने ही सामान्य छोटे-छोटे विचारों में चक्कर लगा रहा था, मुझे उसके पीछे से, हृदय-क्षेत्र से एक छोटी-सी मधुमय धारा प्रवाहित होती हुई लगी, उसके शिखर पर लगातार कृष्ण का नाम दोहराया जा रहा था। और इसके दौरान मुझे ऐसा लगा मानों कोई प्रतिरोध टूट रहा था और उसके स्थान पर आंशिक मुक्ति और आनंद का अनुभव हो रहा था। मैंने सचेतन रूप से नाम जपने की कोशिश की और सत्ता के अधिक बड़े भाग में अधिक आनंद का अनुभव किया।

मैं यह इसलिये बतला रहा हूं ताकि मैं आपसे जान सकूं कि क्या यह सच्ची अनुभूति है, क्या मैं इसे स्वीकार करके इस पर आगे बढ़ सकता हूं या उसका त्याग कर दूं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे कुछ धुंधला-सा ख्याल है कि नाम के साथ श्रीअरविन्द की प्रतिमा जुड़ी थी।

माताजी : स्पष्ट है कि यह सच्ची और बहुत अच्छी अनुभूति है और इसमें आगे बढ़ना चाहिये।

हमारा प्रेम और आशीर्वाद।

६ नवंबर १९३७

माताजी : तुम अपनी बहन को बतला सकते हो कि मैं सभी कष्टों और कठिनाइयों से बाहर निकलने का एक ही रास्ता जानती हूं और वह है भगवान् के प्रति पूर्ण आत्म-दान और पूर्ण उत्सर्ग।

हमारा प्रेम और आशीर्वाद तुम्हारे साथ हैं।

१३ नवंबर १९३७

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा..... .... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५ ००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

२१ फरवरी माताजी के जन्मदिवस पर दर्शन के उपलक्ष्य में दर्शनार्थियों ने माताजी तथा श्रीअरविन्द के कमरे के दर्शन किये। सवेरे छह से साढ़े छह तक आश्रम में ध्यान हुआ और शाम को मार्च-पास्ट तथा वाद्यवृन्द के छोटे-से कार्यक्रम के बाद क्रीड़ांगण में सामूहिक ध्यान हुआ। दर्शन के अवसर पर माताजी के चित्र के साथ जो फोल्डर बंटा उस पर श्रीअरविन्द के ये वचन अंकित थे—

"दिव्य तथा अनंत जननी के प्रति आत्म-उत्सर्ग चाहे जितना कठिन क्यों न हो, वही हमारे लिये एकमात्र प्रभावकारी उपाय तथा हमारी चिरस्थायी सुरक्षा है।"

श्रीअरविन्द के पवित्र अवशेष १६ दिसम्बर २००० को मध्य-प्रदेश के मुख्य-मंत्री श्री दिग्विजय सिंह द्वारा भोपाल की सोसायटी शाखा में पधराये गये। संस्थापना की पूर्व-संध्या को वहां सार्वजनिक कार्यक्रम में श्री दिग्विजय सिंह, प्रदीप नारंग, विजय के० पोद्दार, उमेश त्रिवेदी तथा अन्य लोगों के भाषण हुए।

नैरोबी (केनया) के केन्द्र ने १२ दिसंबर २००० को श्रीअरविन्द के प्रकाश में "मृत्यु" विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया।

बिजनौर (उ० प्र०) में श्रीअरविन्द सोसायटी की राज्य समिति तथा वर्धमान कॉलेज ने एक सेमिनार का आयोजन किया। विषय था "भावी शिक्षा"। इसमें करीब ३०० अध्यापकों, विद्यार्थियों तथा अन्य लोगों ने भाग लिया।

गोदावरिखानी (आं० प्र०) केन्द्र ने २३ दिसंबर २००० को श्रीअरविन्द के प्रकाश में "बच्चों का कैसे पालन-पोषण किया जाये" विषय पर बैठक की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांडिचेरी में सोसायटी के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय एकता के लिये अखिल भारतीय युवा कैम्प का आयोजन २१ से २९ दिसंबर २००० तक हुआ।

डेहरी ऑन सोन (बिहार) में श्रीअरविन्द व्याख्यान माला के अंतर्गत डॉ० डी० पी० खेतान का चौथा भाषण हुआ। विषय था "दिव्य शरीर में दिव्य जीवन"। केन्द्र ने २२ से ३० दिसंबर तक वार्षिक शिविर भी चलाया।

एलुरु (आं० प्र०) शाखा ने ११, १२ नवंबर को फूलों की प्रदर्शनी लगायी जिसमें १६० विभिन्न फूलों के माताजी द्वारा बताये गये आध्यात्मिक अर्थ दिये गये थे।

११ तथा १२ नवंबर को नागपुर में सोसायटी ने महाराष्ट्र के सभी केंद्रों और शाखाओं की वार्षिक बैठक का आयोजन किया। सहारनपुर के डॉ० सुरेश चन्द्र त्यागी ने उद्घाटन-समारोह सम्पन्न किया, वे चेतना के विकास पर बोले। श्री लालभाई मेहता के तत्त्वावधान में यह बैठक हुई।

तिरुपति में आंध्र-प्रदेश युवा संघ सम्मेलन छह तथा सात जनवरी २००१ को हुआ। इसमें युवकों तथा बच्चों ने भाग लिया, भाषण इत्यादि हुए, साथ ही माताजी द्वारा दिये आध्यात्मिक अर्थों के साथ फूलों की प्रदर्शनी भी लगी।

चिलकल्लु (आं० प्र०), दुर्ग (म० प्र०), करुर (तमिलनाडु), नौकुचैतल (उ० प्र०) तथा वाडी (महाराष्ट्र) में सोसायटी के नये केन्द्र खुले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द डिवाइन लाइफ एजुकेशन सेन्टर, झुंझुनूं
श्रीअरविन्द दिव्य जीवन शिक्षा केन्द्र, झुंझुनूं (राजस्थान)

श्रीअरविन्द सोसायटी द्वारा स्थापित इस संस्था का मूल उद्देश्य श्रीअरविन्द व श्रीमां के मनुष्य जाति के लिये दिव्य जीवन के स्वप्न को साकार करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये यह केंद्र ऐसे श्रद्धालुओं के समूह के निर्माण की अभीप्सा रखता है जिनके जीवन का केवल यही उद्देश्य हो।

यह केंद्र पूर्ण रूप से आवासीय है जिसमें छात्र-छात्राओं की शिक्षा, आवास व भोजन पूर्णतः निःशुल्क है। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। शैक्षणिक सत्र हर वर्ष १५ अगस्त से प्रारंभ होता है तथा केवल ६ से १२ वर्ष तक की आयु के बच्चों को ही प्रवेश दिया जाता है।

यह केंद्र पूर्ण शिक्षा प्रदान करने तथा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिये समस्त साधन प्रदान करने की अभीप्सा रखता है। जो अभिभावक अपने बच्चों के लिये सरकारी प्रमाण पत्र, डिग्री व डिप्लोमा की आकांक्षा नहीं रखते अपितु उसकी सत्ता के केंद्रीय सत्य के अनुरूप उनके पूर्ण व सर्वांगीण विकास की अभीप्सा रखते हैं और अपने बच्चों को इस शिक्षण-संस्था में प्रवेश दिलाने के इच्छुक हैं, वे पूरी सूचना के लिये निम्नलिखित पते पर संपर्क करें। प्रवेश पूरे वर्ष किसी भी समय दिया जा सकता है।

जो आध्यात्मिक पिपासु इस केंद्र के कार्य में सहयोगी होना चाहते हैं तथा अपना जीवन इस कार्य में लगाकर साधनामय जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, वे लोग अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें :

श्रीअरविन्द डिवाइन लाइफ एजुकेशन सेन्टर
मीरा अम्बिका भवन, खेतान मोहल्ला
पो० झुंझुनूं—333001, राजस्थान
टेलीफोन—(01592) 35615
email:admit@sadlec.org
srimaa@vsnl.com
URL:www.sadlec.org

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको उस नये प्रकाश के प्रति खोलो जो धरती पर उदित हुआ है और तुम्हारे सामने एक ज्योतिर्मय पथ खुल जायेगा।

— श्रीमां

WITH THE BEST COMPLIMENTS OF

S. L. Deorah Group of Enterprises

ASSAM TEA WAREHOUSING CORPORATION
INDIAN TEA STORAGE AGENCY
INDIAN TRANSPORT AGENCY
AURO IMPEX PRIVATE LIMITED
AURO LABORATORIES LIMITED
AURO BUSINESS CENTRE

Calcutta Office:

'SHIVANGAN' - Flat No. 2C, 53/1/2, Hazra Road
CALCUTTA - 700 019
Phone No.: 474 - 2059, 474 - 2060
Fax No.: 476 - 2348

Bombay Office:

408 Navratan, 69 P. DeMellow Road
BOMBAY - 400 009
Phone No.: 343 - 5341, 342 - 9027
Fax No.: 342 - 5022

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

अपनी कठिनाइयों को भूल जाओ। भगवान् का कार्य करने के लिये अधिक-से-अधिक पूर्ण यंत्र बनने की बात सोचो और भगवान् तुम्हारी सारी कठिनाइयों को जीत लेंगे और तुम्हारा रूपांतर कर देंगे।

प्रेम और आशीर्वाद के साथ

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

गुजरात की अस्मिता

हमारा राष्ट्र सचमुच एक सुंदर फुलकारी-सा है जहां चटक रंग भी हैं, गहरे और हल्के रंग की छटा भी दिखायी देती है। इतना वैविध्य और किसी राष्ट्र में पाया न जायेगा। भारत का एक-एक प्रदेश अपने रंग-रूप, वेशभूषा और भाषा, खान-पान इत्यादि में विविधता लिये है। हर एक की अस्मिता अनोखी है और वह सामने तभी आती है जब कोई संकट उसे घेर लेता है।

पिछले दो वर्षों में भारत ने दो जबरदस्त राष्ट्रीय संकटों का सामना किया है। एक था ओड़िसा का भयंकर तूफान और वर्षा का प्रलयंकारी नर्तन। उस छोटे किंतु विनाशकारी प्रलय ने कितने गांव निगल लिये, कितने असहाय स्त्री, पुरुष और बच्चों को निगल लिया। ऐसे समय ओड़िया जाति का विशेष गुण सामने आया। उनकी अटल श्रद्धा ने तूफान में फंसे कितने लोगों को बचाया। उन्होंने सरकार से आशा नहीं की थी क्योंकि वे जानते थे कि सरकार आखिर सीमित काम कर सकेगी। वे बस अपने जगन्नाथ को या माताजी को पुकारते रहे और उसी ने तूफान के बीच भी उन्हें सुरक्षित रखा। उनकी सरलता देखो! एक परिवार भागते समय अपनी गाय को लिवा न पाया; बड़े विश्वास के साथ उन्होंने गाय को पूजा के कमरे में बांध दिया और भगवान् से प्रार्थना की कि वे ही उसे बचा पायेंगे। हुआ भी वैसा ही! जब थोड़ी शांति छायी तो वे घर लौट आये। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उन्होंने गाय को सुरक्षित पाया। तो ऐसी श्रद्धा, ऐसी सरलता ओड़िसा की विशेषताओं में हैं। उनका दूसरा गुण है शौर्य, कभी हार न मानने की जिद।

दूसरा राष्ट्रीय संकट है गुजरात का भूकंप से ध्वंस। वहां की जनता में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यमान जनार्दन ने उनमें ऐसी शक्ति फूंकी कि लोगों ने सरकार की प्रतीक्षा नहीं की। वे कष्टों को झेलते हुए अपने-आप खड़े हो गये और दूसरों की सहायता के लिये दौड़ पड़े। अंजार के निवासी श्री जगदीश ठक्कर का घर भूकंप में भी स्थिर खड़ा रहा लेकिन उनके अड़ोस-पड़ोस के घर गुड़िया के खिलौने की तरह बेतहाशा गिरने लगे। अपने पड़ोसियों की दुर्दशा देखकर ठक्कर ने उन सर्वहारा लोगों के लिये भोजन की व्यवस्था करने की ठानी। घर में वर्षभर का भरा हुआ अनाज निकाल कर उन्होंने अपने घर में सामूहिक रसोई की व्यवस्था की। खबर पाते ही दूर दराज के लोग आने लगे। उनकी संख्या दस हजार तक पहुंच गयी। इतनी बड़ी संख्या के लोगों को भोजन देना एक आदमी के बूते के बाहर की बात है किंतु सद्भावना भी छूत-सी है, कई छोटे-मोटे दल आ जुटे और उनका काम चलता रहा। अंजार के होटेल खंडहर बन चुके थे, फिर भी होटेलवालों के दिल मानवता से भरे हुए थे, वे वहां आनेवालों को भूखा जाने न देते।

अहमदाबाद की अजरबीबी वहां के अस्पताल में काम करती थी। जब भूकंप ने सारे शहर को झिंझोड़ दिया तो घर में बैठने की जगह वह सीधी अस्पताल पहुंच गयी और छोटे-से बूथ में बैठकर लोगों के टेलीफोन लेती रही, समाचार भेजती रही। यह शायद उसका काम था किंतु जब घायल और मृत शरीर आने लगे तो इतने अधिक आने लगे कि उठानेवाले की संख्या कम पड़ रही थी, झट अजरबीबी सहायता करने दौड़ पड़ी। आंचल से आंखों को ढापे वह रोती जाती और बोलती जाती, "अल्लाह, अल्लाह, कैसा पागल करनेवाला हादसा था ! मैंने ऐसा तहलका कभू न देखा, कभू नहीं। वैन चीखती हुई रुकती, नौकर दौड़कर लोगों को निकाल लाते और दौड़ते हुए वॉर्ड में ले जाते। अगर लोग मरे हुए लाये जाते तब नौकर और मैं उठाकर दौड़ पड़ते और उन्हें मृत-घर में रख आते। कैसे-कैसे कुचले हुए शरीर ! दबे, बेढंगे शरीर !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम सब भूख-प्यास भूलकर दिन-रात इसी काम में लगे रहे। जब घर जाती तब भी खाने की इच्छा न होती, नींद की झपकियां ही ले पाती।" असंख्य स्त्री, पुरुषों के रोने चीखने की आवाज उसके कानों में गूंजती रहती। अजरबीबी के चेहरे पर हल्की मुस्कान दौड़ जाती, कहती, "अस्पताल के लोगों की मदद करने हिन्दू भाई भी आये, मुसलमान भाई भी आये, दोनों ने हाथ में हाथ मिलाकर काम किया। रक्त देते समय यह नहीं सोचा कौन हिन्दू है, कौन मुसलमान! और भी कितनी जाति के लोग आये, सिख, पारसी; सब अपनी जाति भूल गये थे। ये जाति के झगड़े स्वार्थी लोग ही कराते हैं।"

यह सब होते हुए भी मानव चरित्र अजेय रहता है। गुजरात के एक छोटे-से गांव में खुले आकाश तले एक मां दो तीन बरतनों में खाना पका रही थी और उसकी आठ वर्षीया बिटिया एक छोटे मेमने के साथ मस्ती से खेल रही थी। अहमदाबाद के लोगों ने भूकंप से घबराये हुए बच्चों के लिये एक शरण-स्थान विश्वविद्यालय के कोने में बना दिया। अब सुनो उन बच्चों की चुलबुली बातें! दस वर्षीया भूमि बड़े कागज पर चित्रकारी करने में मस्त है। उसे याद ही नहीं आता कि उसका घर तहस-नहस हो चुका है। कोई घर की बात पूछे तो कहती है, "मुझे घर नहीं जाना है। यहां कितना अच्छा लगता है!" इस शरण-स्थान पर प्रायः हजारों बच्चे खुशी-खुशी काम करते हैं। छोटी मीता कहती है "मेरे कितने नये मित्र हैं यहां! वैसे भी मेरा घर तो टूट ही गया है।" बच्चे चित्रकारी करते हैं, गाना गाते हैं, एक दूसरे को कहानी सुनाते हैं। उन्हें पता ही नहीं लगता कब दिन ढल गया। कई अध्यापक दो-दो घण्टे आकर उन्हें पढ़ाते भी हैं।

यह तो हुई बच्चों की यशोगाथा किंतु घरद्वारवाले जब सर्वहारा बन जाते हैं तब उनके लिये ऐसा प्रसन्नचित्त रहना कठिन हो जाता है। कभी-कभी उनकी स्थिति हृदयविदारक होती है। नीरज अपने मामा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूटे-फूटे मकान से कुछ सामान निकाल लाने के लिये मांडवी नामक गांव से एक छोटी-सी हाथगाड़ी लाया था। वह उस तरफ जा ही रहा था कि सामने से मलबे के पीछे से एक व्यक्ति बाहर आया। उसके दोनों हाथों पर सूजन थी और कंधे पर फटे कपड़ों में कुछ लपेटे हुए वह चला आया। बड़ी शांति से उसने नीरज से पूछा, "क्या एक घण्टे के लिये मुझे हाथगाड़ी मिल सकती है ?" अचकचा कर नीरज ने गाड़ी दी क्योंकि उसके मामा गाड़ी की प्रतीक्षा में खड़े थे। उस व्यक्ति ने दो छोटे-छोटे गट्ठर उस पर रखे, फिर उसकी ओर मुड़कर बोला, "मेरे हाथ टूट गये हैं। क्या आप उसे चलायेंगे ?" नीरज ने सोचा शायद इनका कोई सामान ले जाना होगा किंतु वह व्यक्ति जब श्मशान की ओर मुड़ा तो नीरज स्तब्ध रह गया। वहां पहुंचकर उसने कपड़े हटाये तो दबे हुए दो शरीर थे, एक चार साल की बच्ची का, दूसरा दो साल की बच्ची का। उस पुरुष ने दोनों पर पानी छिड़का। नीरज को धन्यवाद देते हुए बोला, "मुझे यही संतोष है कि मैंने अपनी बेटियों का संस्कार अपने हाथों से किया है।" नीरज स्तब्ध होकर उस पुरुष को जाते हुए देखता रहा।

उसी तरह के संयमी हैं महेश गढ़वी। वे कहते हैं, "जब मैंने अपने घर को आंखों के सामने भरभरा कर गिरते देखा तो आंसू आने लगे किंतु मैंने उन्हें रोक लिया। मैंने देखा कि मेरे चारों ओर मकान गिरते जा रहे हैं। हम सब एक दूसरे से पूछ रहे थे क्या हो गया। मुझे एक बात की खुशी थी कि मेरा परिवार सुरक्षित था। कुछ देर बाद वे बोले, "अब सब गूंगे हो गये हैं। कोई आंसू नहीं बहाता।"

इनसे बढ़कर हैं लोडेई के निवासी। यह छोटा-सा गांव भुज के भूकंप केन्द्र के नजदीक है। कई दिनों के बाद सरकार पहुंच पायी थी किंतु तबतक गांववाले अपने बलबूते पर सामान्य जीवन जीने लगे थे। गीता बहन ने अपने घर में रसोई बनानी शुरू कर दी। सारे गांव में एक भी घर भूकंप से अछूता न था किंतु कई घरों में अनाज वगैरह सुरक्षित थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब गीता बहन के घर आ गये और भोजन की समस्या दूसरे दिन से हल हो गयी। जब उन्हें पूछा गया कि क्या वे किसी और स्थान पर घर बनायेंगे तो उन्होंने कहा, "यह हमारी जन्मभूमि है, इसे छोड़कर हम कहीं न जायेंगे। उन्होंने अपने नष्ट-भ्रष्ट मकानों से जो कुछ बचा कर ला सकते हैं लाना शुरू कर दिया है ताकि उन चीजों का नये मकानों में उपयोग कर पायें।

(क्रमशः)

—अनुबेन

— — — —

बच्चों के सोने और आराम करने का समय

. . . हर हालत में बच्चे को, चाहे वह जो कुछ भी करता हो, सोने के लिये काफी समय मिलना चाहिये। यह समय उम्र के अनुसार अलग-अलग हो सकता है। पालने के बच्चे को जगने की अपेक्षा सोना अधिक चाहिये। पर जैसे-जैसे बच्चा बढ़ता जायेगा, वैसे-वैसे सोने का समय कम होता जायेगा। परंतु युवावस्था आने तक, यह समय ८ घंटे से कम नहीं होना चाहिये और फिर सोने का स्थान खूब शांत और हवादार होना चाहिये। स्नायुओं को आराम पहुंचाने के लिये आधी रात से पहले का समय सबसे उत्तम है। फिर जगने के समय भी प्रत्येक आदमी के लिये, जो अपनी स्नायुओं में समतोलता बनाये रखना चाहता है, विश्राम करना अत्यंत आवश्यक है। मांसपेशियों और स्नायुओं को विश्राम देने की विधि जानना एक कला है और बिलकुल छोटी अवस्था में ही बच्चे को इसकी शिक्षा देनी चाहिये।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

मई

१. युवा होने का अर्थ है भविष्य में जीना।
युवा होने का अर्थ है हमें जो कुछ होना चाहिये वह बनने के लिये, हम जो कुछ हैं उसे छोड़ने के लिये हमेशा तैयार रहना।
युवा होने का अर्थ है कभी यह न स्वीकार करना कि कोई चीज सुधारी नहीं जा सकती।

२. केवल वही वर्ष जो व्यर्थ में बिताये जाते हैं तुम्हें बूढ़ा बनाते हैं। जिस वर्ष में कोई प्रगति नहीं की गयी, चेतना में कोई वृद्धि नहीं हुई, पूर्णता की ओर कोई अगला कदम नहीं उठाया गया वह वर्ष व्यर्थ में बिताया गया।

३. अपने जीवन को अपने-आपसे कुछ उच्चतर और विशालतर वस्तु को चरितार्थ करने पर एकाग्र करो तो तुम्हें बीतते हुए वर्षों का भार कभी न लगेगा।

४. सुखी और सार्थक जीवन के लिये आवश्यक तत्त्व हैं निष्कपटता, विनय, अध्यवसाय और प्रगति के लिये कभी न बुझनेवाली प्यास।

५. शाश्वत यौवन का रहस्य है हर क्षण नये जीवन में पुनरुज्जीवित होना।

६. जैसे ही तुम्हें लगे कि तुम्हें जो कुछ करना था वह कर चुके, जैसे ही तुम अनुभव करो कि तुम्हें जो कुछ जानना था वह जान चुके, जैसे ही तुम बैठकर अपने परिश्रम का फल भोगना चाहो और यह सोचो कि तुम जीवन में काफी कुछ कर चुके तो तुम एकदम बूढ़े हो जाते हो और तुम्हारा क्षय शुरू हो जाता है।

७. जब तुम्हें यह विश्वास हो कि जो जानना बाकी है उसकी तुलना में तुम जो जानते हो वह कुछ भी नहीं है, जब तुम्हें लगे कि तुमने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो कुछ किया है वह जो कुछ करना बाकी है उसका केवल आरंभ-बिंदु है, जब तुम भविष्य को प्राप्त करने योग्य अनंत संभावनाओं से भरे चमकते हुए सूर्य के रूप में देखो तब तुम युवा हो। १५.

८. बूढ़े न होने का सबसे अच्छा तरीका है प्रगति को अपने जीवन का लक्ष्य बनाना। १६.

९. आदमी को हमेशा केवल बौद्धिक ढंग से ही नहीं, मनोवैज्ञानिक ढंग से भी सीखते रहना चाहिये, उसे चरित्र की दृष्टि से प्रगति करनी चाहिये, अपने अंदर गुण उपजाने और दोष ठीक करने चाहियें; हर चीज को अपने अज्ञान और अक्षमता को दूर करने का अवसर बनाना चाहिये; तब जीवन जीने का कष्ट उठाने योग्य बन जाता है। १७. १८. १९.

१०. सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण शर्त है विश्वास, एक बालक का-सा विश्वास और यह सरल भाव की जरूरी चीज आ जायेगी, इसके बारे में कोई प्रश्न ही नहीं। जब बच्चे को किसी चीज की जरूरत होती है तो उसे विश्वास होता है कि वह आ जायेगी। इस प्रकार का सरल विश्वास या निर्भरता सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण शर्त है। २०.

११. भय से छुटकारा पाने का एक उपाय है, और वह है : भागवत कृपा पर विश्वास रखना और सभी परिस्थितियों में रक्षा के लिये उसी पर निर्भर होना। २१.

१२. भय हीन-भाव से पैदा होता है।

१३. हमेशा यह प्रयास करो कि तुम जो कुछ सोचो, जो कुछ बोलो, जो कुछ करो वह सब सत्ता के सत्य की अधिकाधिक अभिव्यक्ति हो। जब तुम सचेतन रूप से उसमें निवास करोगे तो फिर तुम्हें अपने जीवन के किसी भी क्षेत्र में किसी चीज का भय न रहेगा, क्योंकि तुम उस वैश्व 'सत्य' के साथ एक होगे जो संसार पर शासन करता है। २२. २३.

१४. तुम सत्य को तभी जान सकते हो जब तुम भगवान् के बारे में सचेतन हो। २४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५. हमारा हर रोज और हर समय का प्रयास यही हो कि हम 'तुझे' ज्यादा अच्छी तरह जान सकें और 'तेरी' सेवा ज्यादा अच्छी तरह कर सकें।

१६. मधुर मां, वर दे कि इस क्षण और सदा ही हम तेरे सरल बालक बने रहें, और हमेशा तुझे अधिकाधिक प्यार करते चलें।

१७. विश्वास रखो कि तुम जब कभी मुझे बुलाते हो तो मैं सुनती हूं और मेरी सहायता और मेरी शक्ति सीधी तुम्हारी ओर जाती हैं।

१८. हमेशा अपने 'आदर्श' के प्रति निष्ठावान् और अपनी क्रिया में सच्चे और निष्कपट रहो।

१९. सच्ची बुद्धिमत्ता है किसी भी स्रोत से आनेवाले ज्ञान को सीखने के लिये तैयार रहना।

२०. हम फूल से, पशु से, एक बच्चे से चीजें सीख सकते हैं बशर्ते कि हम हमेशा, अधिक जानने के लिये उत्सुक हों क्योंकि संसार में केवल एक ही 'शिक्षक' हैं—परम प्रभु, और वे हर चीज में अभिव्यक्त होते हैं।

२१. अच्छा काम करने के लिये अच्छी रुचि होनी चाहिये।
रुचि अध्ययन और सुरुचिपूर्ण लोगों की सहायता से शिक्षित की जा सकती है।
सीखने के लिये, पहले तुम्हें यह अनुभव होना चाहिये कि तुम नहीं जानते।

२२. 'शाश्वत चेतना' के आगे सचाई और निष्कपटता की एक बूंद का मूल्य दिखावे और आडंबर के समुद्र से बढ़कर है।

२३. हमेशा अपनी पूर्णतम और सत्यतम पूर्णता को चरितार्थ करने की अभीप्सा में रहो।

२४. आरंभ के लिये स्वयं अपने ऊपर लगाये गये नियंत्रण में ईमानदार, सच्चे, सीधे-सादे, उदात्त और पवित्र होने की चेष्टा करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैं हमेशा सहायता करने और राह दिखाने के लिये तुम्हारे साथ रहूंगी।

२५. जब तुम्हें लगे कि तुम कुछ नहीं जानते हो, तुम सीखने के लिये तैयार होते हो।

२६. अनुशासन के बिना आदमी जीवन में कुछ नहीं कर सकता और समस्त योग उसके बिना असंभव है।

२७. एकाग्रता के बिना कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता।

२८. आलस्य दुर्बलता या रस के अभाव से आता है। पहली चीज का उपचार करने के लिये—तुम्हें मजबूत होना चाहिये।
—दूसरी चीज को ठीक करने के लिये—कुछ रुचिकर काम करना चाहिये।

२९. प्रगति करने के लिये तुम्हें अध्यवसाय के साथ काम करना चाहिये।
विलाप करने से कोई लाभ नहीं होता।
तुम्हारे अंदर संकल्प होना चाहिये, आवश्यक प्रयास करो।

३०. यह स्पष्ट है कि कर्म की महानता उसके क्षेत्र पर निर्भर नहीं होती और उसकी पूर्णता परिस्थितियों या बाहरी अवस्थाओं पर नहीं बल्कि वह जिस उत्सर्ग के साथ किया जाता है उसकी सचाई पर निर्भर है।

३१. तुम उस प्रेम से खुश नहीं होते जो कोई और तुम्हारे लिये अनुभव करता है। तुम्हें औरों के लिये जो प्रेम अनुभव होता है वह तुम्हें सुखी बनाता है। क्योंकि जो प्रेम तुम औरों को देते हो वह तुम्हें भगवान् से प्राप्त होता है और भगवान् हमेशा, अविरत प्रेम करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

प्रभु का सदन

(गतांक से आगे)

श्रीअरविन्द के स्नान के घण्टे भर बाद माताजी अपने सामान्य कार्यों के लिये उनके कमरे में आ जातीं। तब हम कमरे से बाहर चले जाते और आश्चर्य करते कि वे किन विषयों पर बातें कर रहे होंगे। संभवतः आश्रम के बारे में, दुनिया की समस्याओं के बारे में या ऐसे विषयों पर चर्चा करते होंगे जिन्हें माताजी उन्हें बताना जरूरी समझती थीं। एक बार मैं श्रीअरविन्द के सामने ध्यान में डूबा बैठा था कि माताजी अंदर आ गयीं। शायद कुछ समय तक उन्होंने प्रतीक्षा की, उसके बाद श्रीअरविन्द ने कहा—"नीरद, माताजी आ गयी हैं।" मैंने आंखें खोलकर देखा कि वे भव्य मुस्कान के साथ मेरे सामने खड़ी प्रतीक्षा कर रही थीं। शर्माता हुआ मैं वहां से निकल भागा! १५ मिनट से एक घण्टे के बीच उनका वार्तालाप चलता रहता और जब माताजी दरवाजा खोलकर बाहर निकलतीं तो हमें बाहर प्रतीक्षारत पातीं। एक मधुर मुस्कान से हमारा स्वागत कर वे वापिस अपने काम पर चली जातीं और हम दुबारा 'दिव्य उपस्थिति' में प्रविष्ट हो जाते।

१९४५ में श्रीअरविन्द की दृष्टि पर कुछ असर होने लगा और माताजी ने सुझाव दिया कि मैं उनके लिखने-पढ़ने का काम संभाल लूं और यह अंत तक चलता रहा। शाम को हम 'सावित्री' महाकाव्य की पुरानी पंक्तियों में संशोधन करते थे, मैं उन्हें चिट्ठियां, कविताएं, साधकों या बाहरी लोगों के साहित्यिक निबन्ध तथा अन्यान्य चीजें पढ़कर सुनाया करता था। समय के साथ-साथ इस तरह का पढ़ना इतना बढ़ गया कि उन्होंने कहा कि मेरा समय तो इन्हीं चीजों में जा रहा है और मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना काम अधूरा ही पड़ा हुआ है। यह बात उन्होंने कही भर, लेकिन यह काम तो इसी तरह लगातार तबतक चलता रहा जब १९४९ में इस प्रकार का सारा पत्र-व्यवहार एकदम से अचानक बंद कर उन्होंने 'सावित्री' का कार्य अपने हाथों में ले लिया। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या उन्होंने शरीर छोड़ने का निश्चय कर लिया था कि 'सावित्री' को पूरा करने के लिये इतनी जल्दी कर रहे थे। केवल दिलीप और अमल किरण के साथ पत्र-व्यवहार इसमें अपवाद-स्वरूप था।

जिस समय का हिसाब अभीतक नहीं हो पाया है वह है रात का समय। कई वर्षों तक, विशेष रूप से अंतिम वर्षों में वह सबसे रुचिकर रहा। क्रमशः श्रीअरविन्द के भोजन, उनके चलने और उनके नींद का कार्य बहुत जटिल बन गया क्योंकि उनकी ये गतिविधियां माताजी के कार्य के अनुसार चला करती थीं। मैं पहले भी कह चुका हूं कि उनके जीवन की तरह हमारे दैनन्दिन जीवन में भी निरन्तर बदलाव आता रहता था। दोपहर का भोजन ग्यारह बजे से खिसक कर तीन बजे हो गया। हम माताजी की घड़ी के अनुसार अपना समय बदलते रहते थे। पहले से ही आश्रम की व्यवस्था के कार्य के साथ-साथ उनके पास और हजारों काम थे, अब श्रीअरविन्द की जिम्मेदारी का काम भी आ गया था। उनका समय इधर-उधर होता रहता तो इसमें आश्चर्य की बात नहीं है। हमारी मानव गणना के हिसाब से माताजी की गतिविधियां बहुत सूक्ष्म, दुर्ग्राह्य और तेज होती थीं! क्या हम इसकी कल्पना कर सकते हैं कि वे रात के ग्यारह बजे सामूहिक ध्यान करवाती थीं, कभी-कभी तो ध्यान रात के एक बजे भी होता था! और कितने ही कार्य थे माताजी के कन्धों पर! परिणाम-स्वरूप श्रीअरविन्द का रात का खाना कभी-कभी रात के ग्यारह बजे होता! उसके बाद वे नीचे सामूहिक ध्यान के लिये जातीं। लेकिन अगर बाकी कार्य करने के बाद उन्हें नीचे जाने में देर हो जाती तो ध्यान के बाद भोजन के लिये आतीं। बाद में सामूहिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान के बाद नियमित रूप से साधक माताजी को प्रणाम भी करने लगे, जिसमें तीन सौ से अधिक व्यक्ति एक-एक कर के प्रणाम करते थे! उसके बाद माताजी श्रीअरविन्द के कमरे में आतीं और वे उनके सामने चलते। सामान्यतः यह कार्य ग्यारह बजे होता था, लेकिन कभी-कभी रात के एक भी बज जाते! यह सब करने के उपरान्त एक-आध घण्टे के बाद वे श्रीअरविन्द के कमरे में आंख धोनेवाली नीली दवा लेकर आतीं जिसे हम "नीला पानी" कहते थे, फिर वे एक सुगन्धित क्रीम से श्रीअरविन्द के शरीर के ऊपरी भाग पर हल्के हाथों से थोड़ी देर मालिश करतीं। यह उनके दिन की श्रीअरविन्द के प्रति अन्तिम भौतिक सेवा होती थी। हम स्वभावतः तब तक जगे रहते थे, बरामदे में उनकी धीमी पदचाप की बाट जोहते रहते, क्योंकि हमें कभी यह न पता चलता कि वे किस समय आयेंगी। हां, जब कभी संभव होता बीच-बीच में हम बिल्लियों की तरह झपकी ले लिया करते थे, लेकिन वह होती थी "सचेतन झपकी"! पुराणी—जिनका कार्य सवेरे ढाई बजे शुरू होता था—हमें कभी-कभी जगा हुआ पाते थे! मुझे विश्वास है कि श्रीअरविन्द की दीप्त उपस्थिति ही हमारी समस्त ऊर्जा का स्रोत थी और वही हमें इतना चुस्त-दुरुस्त रखती थी हालांकि हम कई-कई दिनों तक बहुत कम सोया करते थे। मैंने कालिदास की किसी कृति में पढ़ा है कि शिवजी जब गहरी समाधि में चले जाते थे तो उनके शरीर से तपः शक्ति की अजस्र धारा प्रवाहित होती थी जो उनके दोनों अनुचरों को निरन्तर शक्ति प्रदान किया करती थी ताकि वे वैश्व प्रकृति पर निगरानी रख सकें। माताजी के कमरे से चले जाने के बाद भी श्रीअरविन्द जागते रहते थे। जब उन्हें यह सूचना मिल जाती कि माताजी आराम करने चली गयीं तभी उनके कमरे की बत्ती बुझायी जाती थी। प्रायः रात के दो बजे यह होता था। रोशनी बुझाने का काम मेरा था। बत्ती का बटन उनके पायताने के ऊपर था। बटन पर हाथ रखकर मैं उनकी ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निहारता, वे बदले में मुझे अपनी निर्वैयक्तिक मधुर मुस्कान से सराबोर कर देते और मैं रोशनी बुझा दिया करता था। एक मद्धिम दीप रात भर के लिये जलता छोड़ दिया जाता था। फिर हम भी सोने चले जाते, हम उसी कमरे में सोते थे। एक बार मैंने रात में भयंकर दुःस्वप्न देखा और नींद में चिल्लाने लगा। श्रीअरविन्द ने मुझे पुकारा, "नीरद! नीरद!" और मैं जाग गया। कई बार पुराणी कहा करते थे कि जब वे आते थे तो मेरे खर्राटे सुना करते थे। चम्पकलाल उनकी बात में संशोधन करके कहते थे—"नहीं, नहीं, तुम्हारे कमरे में आने से बहुत पहले से ही यह खर्राटे भरने लगता है।" "शायद पुराणी के आगमन की प्रत्याशा में यह कार्य पहले से ही शुरू हो जाता है।" श्रीअरविन्द यह टिप्पणी जोड़ देते।

मच्छरों की बहुतायत के बावजूद श्रीअरविन्द को मच्छरदानी लगाने का अभ्यास न था। इसके स्थान पर चीन से आयी मच्छर भगानेवाली घुमावदार बत्ती उनके बिस्तर के पास जलाकर रखी जाती जिससे सफेद धुएं की पतली लकीर-सी निकल कर सारे कमरे में फैल जाती, जिससे सूखे पत्तों और पुआल के जलने जैसी गंध निकलती थी। कहा जाता था कि इस तेज गंध से मच्छरों की सेना को भगाया जा सकता है, चीन का आविष्कार था यह! वैसे यह असरदार तो काफी होती थी, लेकिन वह धुएंदार पंक्ति अभेद्य पंक्ति नहीं होती थी, और कभी-कभी रात के अंधेरे में धूर्त मच्छर श्रीअरविन्द की कोमल त्वचा में अपनी सूंड गड़ाकर उन्हें काट लेते और उनके उज्ज्वल शरीर पर लाल चकत्ते-से उभर आते। वे चकत्ते तकलीफदेह न बन जायें इसके लिये उनके शरीर पर दवाई लगानी पड़ती थी। मच्छरों के प्रजनन-काल में तो उनकी फौज इतनी बड़ी हो जाती कि माताजी "गैस बम" नामक एक गोलाकार चीज खोलकर श्रीअरविन्द के कमरे में छोड़ देतीं जिससे सारे कमरे में तेज गंधवाला सफेद धुआं-सा भर जाता था और जल्दी ही गायब भी हो जाता, साथ में मच्छरों का भी सफाया कर देता था। यह कार्य माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात को सोने जाने से पहले करके जाती थीं। बाद में जब कमरे में बिजली के पंखे लग गये तो इन अनगढ़ उपायों के उपयोग से छुट्टी मिल गयी। दिन में जब मच्छर या मक्खी उड़ते, उनके आस-पास भिनभिनाते या उनके पैरों पर बैठने की कोशिश करते तो हम हाथों के बीच पकड़कर उनका सफाया करने की कोशिश करते। कभी-कभी वे हमसे पूछते "मिला क्या ?" और जब हम "जी हां" कहते तो वे एक स्वीकृतिसूचक मुस्कान देकर हमें निहाल कर देते।

एक दूसरे प्रकार के कीड़ों के उत्पात से भी हमें निबटना पड़ा। सारे आश्रम में—भोजनालय, बेकरी, घरों में—सभी जगह अचानक काली, भूरी और धूसर रंग की मक्खियों का जत्था उमड़ आया और वे सभी चीजों पर बैठने, उन्हें चाटने, दूषित और बरबाद करने लगीं। अगर भोजन पर न बैठ पातीं तो आदमी के शरीर पर ही बैठ जातीं। श्रीअरविन्द और उनका कमरा भी इनसे अछूता न था। मक्खियों, रजत-मीन, तिलचट्टों इत्यादि को वहां बर्दाश्त नहीं किया जाता था। सब जानते हैं कि इन सब में मक्खियां ही सबसे खतरनाक शत्रु होती हैं। यह सच है कि वे अपने दूसरे भाई-बहनों यानी मच्छरों की तरह काटती नहीं लेकिन सब प्रकार की बीमारियों को फैलाती रहती हैं। काटने की बजाय वे भौतिक मन के समान चिपकनेवाली होती हैं, अतः इनके विरुद्ध एक धर्मयुद्ध छिड़ गया। 'मक्खियां भगानेवाले' पत्ते हर घर में बांधकर लटका दिये गये। दूसरा प्रभावकारी उपाय था कि लगातार चलते रहनेवाले पहियों का एक ऐसा बक्सा बनाया गया जिसमें मक्खियों के झुंड फंसने लगे। इससे मक्खियों की रानी घबरा कर भाग खड़ी हुई। इन सबके पीछे सूक्ष्म शक्तियों का मनोरंजक खेल होता है। कहते हैं कि जीव-जन्तुओं के पीछे सूक्ष्म शक्तियों का नियंत्रण होता है। मक्खियों की संचालिका माताजी के पास आयी और उसने दया की भीख मांगी। लेकिन श्रीअरविन्द के कमरे पर आक्रमण करनेवाले मक्खी-समुदाय पर हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंदर कोई दया-माया न थी। मक्खियां भगानेवाले हमारे पंखों का उपयोग यथापूर्व जारी रहा। हम जानते हैं कि श्रीअरविन्द सभी परिस्थितियों में अहिंसा के पुजारी न थे। और हम यह बिलकुल न चाहते थे कि मक्खियों की सेना उनके आस-पास मंडराये और नाचे, खासकर उनके शरीर के चारों ओर, वह तो बच्चों जैसा कोमल और संवेदनशील था। हम तालियां पीट-पीट कर मक्खियों को भगाते, मानों पटाखे छोड़े जा रहे हों, लेकिन श्रीअरविन्द की सघन शांति में इन सब आवाजों से कोई दरार न पड़ती। एक बार एक भौंरा आकर श्रीअरविन्द के शरीर के आस-पास उड़ने-भनभनाने लगा, वे तो शांति से चारपाई पर बैठे हुए थे, हमें उनके बचाव के लिये दौड़ना पड़ा!

मैंने पहले कहा है कि श्रीअरविन्द अपने शरीर के ऊपरी भाग को ढकते नहीं थे। उनकी यह आदत भी—और कई आदतों की भांति—एकदम से भारतीय थी, हालांकि उनका लालन-पोषण तो इंग्लैंड में विदेशी तौर-तरीकों के बीच हुआ था। उदाहरण के लिये एक भारतीय आदत यह भी थी कि वे अपने कमरे में चप्पलें नहीं पहनते थे। वे सारे घर में नंगे पैर घूमा करते थे। जब उन्हें किसी ने चप्पलें उपहार-स्वरूप दीं तो उन्होंने कहा, "मैं तो चप्पलों का उपयोग नहीं करता, इन्हें नलिनी को दे दो, उसे जूते बहुत पसन्द हैं।" कड़ी ठण्ड में भी हमने उन्हें केवल चादर ओढ़ते देखा है। लेकिन यह देखकर मुझे हमेशा हैरानी होती थी कि चादर ओढ़ने के बाद भी वे अपने चरण हमेशा चादर के बाहर रखा करते थे। यह मुझे बड़ा अजीब लगता क्योंकि शरीर के दूसरे भागों की अपेक्षा पैरों में सबसे ज्यादा ठण्ड लगती है। क्या इसका यह अर्थ लगाया जाये कि प्रभु के चरण हमेशा—रात के समय भी—प्रभुभक्तों के लिये हमेशा उपलब्ध रहें, वहीं तो वे अपना आश्रय-स्थल पाते हैं। यह मानना कल्पना न होगी कि रात के समय कई सत्ताएं अपने सूक्ष्म शरीर में उनके चरणों में अपना प्रणाम निवेदन करने आया करती होंगी। मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कल्पना करना कोरी कहानी नहीं है क्योंकि माताजी ने हमसे कहा है कि सूक्ष्म-भौतिक जगत् में श्रीअरविन्द ने एक आवास बनाया है और हममें से कई रात को अपने सूक्ष्म शरीर में उनसे वहां मिलने जाया करते हैं। उन्होंने हमसे यह भी कहा कि सोते समय कभी-कभी हम स्वयं माताजी से भी मिलने जाया करते हैं या वे हमसे मिलने आती हैं। कई बार सवेरे वे हमसे पूछा करतीं—"तुम्हें इसका कुछ पता है ?" चूंकि यह सब सत्य है अतः निश्चित रूप से विभिन्न सत्ताएं श्रीअरविन्द को प्रणाम करने अपने सूक्ष्म शरीर में आती होंगी। लेकिन कोई अगर यह पूछे कि "केवल चरण ही क्यों ?" तो मेरा तो यही जवाब होगा कि "यह भारतीय पद्धति है"।

यह सवाल भी बहुधा लोग पूछा करते थे कि क्या श्रीअरविन्द रात को सोते थे ? ऊपर से तो यही लगता था कि वे पर्याप्त और अच्छी तरह सोते थे। माताजी और श्रीअरविन्द स्वास्थ्य के सामान्य नियमों का पालन करने पर हमेशा जोर दिया करते थे। हमें अच्छी तरह खाना और सोना चाहिये। अतः चूंकि जिस तरह खाने की आवश्यकता होती है उसी तरह सोने की भी आवश्यकता होती है—यह नियम तो हम सभी पर लागू होता है। लेकिन हमारे और उनके सोने में जमीन आसमान का फर्क है। हमारी नींद अचेतन में गहरी डुबकी लगाना है, जहां हम सब कुछ भूल जाते हैं, जब कि योगी की निद्रा सचेतन होती है। वे नींद में भी जागते रहते हैं। एक ऐसी अवस्था भी होती है जिसमें भौतिक शरीर तो सोया हुआ दीखता है जब कि सूक्ष्म शरीर अन्य सोते हुए लोगों के पास जाया करता है। माताजी कहा करती थीं कि वे अधिकांश सूक्ष्म कार्य इसी तरह रातों को किया करती थीं। श्रीअरविन्द ने मुझे लिखा था, "पहले के दिनों में जब माताजी ध्यान में तथा आश्रम के लोगों के पास सूक्ष्म रूप में जाकर काम किया करती थीं तो वे प्रत्येक के साथ क्या घट रहा था इसका समाचार मुझे दिया करती थीं . . . प्रायः उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटनाओं की खबर वे पहले ही मुझे दे देती थीं जिनके बारे में बाद में मुझे समाचार मिलते थे।"

श्रीअरविन्द के बाहरी जीवन की यह रूपरेखा है—अन्तिम बारह वर्ष हम सब इसी तरह उनके जीवन के साथ जुड़े रहे। सामान्यतः यही कार्यक्रम अंत तक चला, हां, परिस्थितियों के कारण कभी छोटे-मोटे परिवर्तन अवश्य होते रहे। उनके आंतरिक जीवन के बारे में मैंने कुछ नहीं कहा है क्योंकि मेरे पास उस विशाल रहस्यमय क्षेत्र को देखने की दृष्टि नहीं थी; न ही अर्जुन की तरह मेरे भाग्य में भगवान् का विश्वरूप देखना बदा था, फिर भी कभी-कभी उनके देवरूप की झांकी तो मिली ही। श्रीअरविन्द ने बार-बार अपने पत्रों में मुझे लिखा है कि मेरा भौतिक आवरण बहुत सघन है। फिर भी जो आनंद, जो शांति, प्रकाश और ऊर्जा हमें सतत उनसे मिलती रहीं, हम सबको पोषित करती रहीं वह उनकी दिव्य नीरव उपस्थिति से बहकर आती थीं। लोग कहा करते थे कि हम किसी दूसरे लोक के प्राणी लगते हैं। दुर्भाग्य से वर्ष गुजरने के साथ-साथ आनंद और प्रकाश का वह भाव गंभीरता में बदलने लगा। हमको उस समय इसके कारण का तो पता न था, लेकिन एक काली-सी छाया हमें घेरने लगी थी। इसके अतिरिक्त हमारी मानव प्रकृति की कालिमा—मैं विशेष रूप से अपनी बात कह रहा हूं—अपना भयानक चेहरा दिखाने लगी, "मर्त्यता शाश्वत के अमर स्पर्श को सह नहीं पाती"। श्रीअरविन्द तो सचमुच सम ब्रह्म की तरह निश्चल रहते थे। हमारी कमजोरियों और दोषों के बारे में तो वे पहले से ही जानते थे और जब उन्होंने हमारी सेवा स्वीकार की तो वे इन सब चीजों के लिये तैयार थे, फिर भी उन्होंने हमारे प्रति कभी अनख न दिखायी। इसके विपरीत, उन्होंने सबको माफ कर दिया। यद्यपि स्वभाव से वे निर्वैयक्तिक थे, बातें करते समय न तो किसी की ओर कभी देखते थे, न ही किसी काम के लिये हममें से किसी का नाम लेकर बहुधा पुकारा ही करते थे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर भी उनकी 'उपस्थिति' में हम सब एक अनिर्वचनीय माधुर्य की धारा में रहा करते थे। और जब दर्शन के दिन या अपने जन्मदिन पर हम उन्हें प्रणाम करने जाते तो पितृवत् वात्सल्य-भाव, या मित्र के सौहार्द और प्रेम के भाव बरसा-बरसा कर वे और दिनों की कमी पूरी कर दिया करते थे। वे हमारा माथा सहलाते, हमारे हाथों को अपने मुलायम, कोमल हाथों में हल्के से दबाकर अपने मधुर व्यक्तित्व की कोमलता के साथ हमें एकटक निहारते। सत्येन्द्र ने मुझसे कहा था कि जब वे अपने जन्मदिन पर श्रीअरविन्द के हाथ पर इत्र लगाते तो वे अपना दूसरा हाथ भी आगे बढ़ा दिया करते थे। उनका सतत नीरव प्रेम तथा करुणा हमारे हृदयों की गहराइयों में हमेशा प्रज्ज्वलित रहती है।

(क्रमशः)

—नीरदवरण

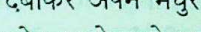

माताजी कभी भी तुमसे दूर नहीं रहतीं। यदि तुम अपने-आपको खुला रखोगे, तो तुम सदैव उन्हें अपने साथ पाओगे।

*

माताजी की शांति एवं आनंद के प्रति खुले रहो—इसके अंदर रहकर ही तुम उनके अंदर निवास कर सकोगे।

*

खुलने के लिये तुम्हें शांत और प्रफुल्ल रहना होगा और वही करना होगा जो माताजी तुमसे चाहती हैं। तब यह कार्य सरल हो जायेगा।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित मूल्य

दतिया ने इससे बुरा समय पहले कभी नहीं देखा था। लगातार दो वर्षों से फसलें खराब हो रही थीं। अन्नाभाव के कारण प्रजा में त्राहि-त्राहि मची हुई थी। महाराजा विक्रमशाह अपना राजकोष और अन्न-भंडार खाली कर चुके थे। अब उनके पास न पैसा था न अन्न का दाना। इस वर्ष वर्षा अच्छी हुई और फसल खूब लहलहा रही थी। प्रजा में आशा की तरंग उमड़ रही थी; ठीक इसी समय पिंडारी सरदार पीलू खां ने बीस हजार घुड़सवारों के साथ दतिया पर आक्रमण कर दिया।

जनता में हाहाकार मच गया। सारी फसल घोड़ों और खच्चरों के उदर में चली गयी। दतिया को तहस-नहस करने की धमकी के साथ राजा से बीस लाख की मांग की गयी। राजशासन किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो गया। विनती-पारी की कोई सुनवाई न हुई। राजा और जनता का 'हाहा' खाना सर्वथा विफल हो गया। पिंडारी सरदार ने पांच दिन की मुहलत दी जिसके बीत जाने पर दतिया की जनता और राजमहल को नेस्तनाबूद करने की धमकी।

"दादा, कहो, क्या हुआ। मसला हल होने की कोई सूरत नजर आयी ?"

"नहीं, और हां।"

"इस विचित्र बात का अर्थ ?"

"इसका अर्थ भी विचित्र है, महाराज ?"

"सो कैसे, दादा ?"

"पिंडारी तो पिंडारी है महाराज ! वह तो निरा बर्बर है। वहां न तो हृदय की पहुंच है न बुद्धि की। वह तो सर्वनाश पर तुला है।"

" 'नहीं' तो समझ में आ गयी, फिर 'हां' कैसी दादा ?'

"सुनिये महाराज, क्षत्रिय के लिये केवल वीरता की ही नहीं, दक्षता की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी आवश्यकता होती है; 'शौर्य्यस्तेजो धृतिर्दाक्ष्यम्'।"

"सो तो ठीक है, वह तो भगवान् का वाक्य है, पर उपाय क्या है ?"

बात हो ही रही थी कि उसी समय बुन्देलखंडी ठाठ का एक सरदार वहां आ पहुंचा, दूर से ही झुक कर उसने मुजरा किया और ठिठक कर रह गया। मूंगिया रंग का कुरता, गुलाबी रंग की धोती, ऊपर से मूंगिया पिछौरे की फेंट, सर पर मूंगिया साफा। तनी हुई मूंछें और कानों पर चढ़ी हुई काली दाढ़ी। कमर में परतला से लटकती तलवार, पीठ पर ढाल और हाथ में भाला। उमर लगभग चालीस साल, औसत कद, चौड़ा सीना, गठा हुआ शरीर। चेहरे पर कुछ कहने की उतावली।

ऊपर सिर उठाकर, मुजरा लेते हुए महाराज ने पूछा—"कहो बलवान ! क्या बात है ?"

हाथ जोड़कर आगत सरदार ने कहा, "महाराज, पिंडारी का भतीजा 'कादर खां' लगभग पांच हजार सवारों को लेकर किले के पश्चिम के बगीचे में आ डटा है। उसका इरादा खतरनाक जान पड़ता है।"

"सो तो है ही। तुम्हारी सेना कितनी है और उसका क्या हाल है ?"

"सेना में सिपाही तो केवल दो हजार ही हैं, पर अपने महाराज और दतिया के लिये वे सब के सब मौत के साथ होली खेलने को उतावले हो रहे हैं। आज्ञा भर की देर है, मालिक !"

"हथियार-पड़यार ठीक रखो, भगवान् गौरीशंकर आप सबको बल और साहस दें। अपनी ओर से कोई उपद्रव न होने पावे। सभी सिपाहियों को हमारी 'जय गौरीशंकर' कहना।"

आज्ञा सुनकर ठाकुर तनकर खड़ा हो गया। इशारा पाकर मीठी मुस्कान के साथ मुजरा किया और नीचे उतर चला।

महाराज ने गंभीर मुद्रा में एक क्षण सोचा और सरदार को वापस बुलाकर आज्ञा दी कि पंडित रामशरणजी को बुला भेजो। मुस्कुराते हुए दादा दलपतराय ने कहा, "तो महाराज ने निश्चय कर लिया ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"निश्चय तो हो गया, पंडितजी के आने की देर है। दादा, पंडित रामशरण एक अनुभवी ज्योतिषी हैं और उनको दुर्गा का इष्ट है, उनकी बात कभी गलत होते नहीं देखी।"

कुछ देर दोनों मौन रहे। दलपतराय घोषी ठाकुर थे। उमर साठ साल से ऊपर लगभग पैंसठ वर्ष, शरीर बहुत ही सुगठित, छाती चौड़ी, भुजदंड मानों लोहे के। मूंछ उमड़ी हुई, दाढ़ी एक तरफ कान पर टंगी, दूसरी ओर लटकती हुई। कमर में दो तलवारें, पीठ पर गेंडे की ढाल, लोहे की भारी-सी सांग बगल में रक्खी। माथे की गहरी रेखाएं, आरक्त नेत्र और पैनी नाक उनके आत्मविश्वास, दृढ़-निश्चय तथा सूक्ष्म बुद्धि की परिचायक थीं। वे स्वभाव से गंभीर और दूरदर्शी थे। अनेक भयंकर युद्धों के वे एक सफल साहसी योद्धा थे। महाराजा विक्रम का उनपर अटल विश्वास और भरोसा था।

मौन भंग करते हुए उन्होंने दृढ़ स्वर के साथ महाराजा से कहा, "पंडितजी को मैं भलीभांति जानता हूं। इसमें संदेह नहीं कि उनकी विचार की हुई बात कभी गलत नहीं निकलती। वे जो भी कहें पर मैं कहता हूं—जीत महाराज की ही होगी। हमारे दो हजार जवान पिंडारी के बीस हजार घुड़सवारों को मुरका सकते हैं। भगवान् गौरीशंकर हमारे साथ हैं। मुझे आज्ञा दीजिये, मैं चलूं, सेना को शीघ्र तैयार किया जाये और उसे छापामारी की बात जता दूं।"

दादा दलपत उठने को ही थे कि सामने से पंडित रामशरणजी दिखायी पड़े। पंडितजी के मुंह से 'महाराज साहब! सावधान!' सुनकर महाराज खड़े हो गये। पाय लागन कहकर महाराज ने आदरपूर्वक पंडितजी को एक सुन्दर आसन पर बैठाया। दलपत ने भी खड़े होकर और हाथ जोड़कर पंडितजी का अभिवादन किया। आसन ग्रहण करके पंडितजी ने महाराज से निवेदन किया, "आज्ञा हो, क्या काम है?"

"पंडितराज, आज दतिया पर कैसा समय आ पड़ा—यह तो आपको विदित ही होगा। अब युद्ध अनिवार्य है। कृपा करके विचार करें और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवती से पूछकर बतावें, इस युद्ध का परिणाम क्या होगा ? हमारी विजय होगी ?"

वयोवृद्ध पंडित ने पत्रा खोला, कुछ देर गणित किया और फिर आंख मूंदकर ध्यानस्थ हो गये। दरबार में प्रतीक्षा का सन्नाटा छा गया। भीतर-भीतर महाराज भी श्री गौरीशंकर का स्मरण करने लगे। दादा बार-बार अपनी चिर-सहचरी सांग को सहलाने लगे।

पंडितजी ने नेत्र खोले और गंभीर मुद्रा में सोचने लगे। सभी की टकटकी पंडितजी की ओर जा लगी। पूर्ण शांति के साथ महाराज ने पंडितजी की तरफ जिज्ञासु नेत्रों से ताका।

पंडितजी ने महाराज से गम्भीरता के भाव से कहा—"महाराज ! विजय तो आपके हाथ है, पर . . . ।"

विनम्रतापूर्वक महाराज ने पूछा, "पंडितजी 'पर' के आगे भी कहिये।"

"महाराज ! विजय के साथ कुछ अनिष्ट भी है।"

"पंडितराज, निस्संकोच कहिये अनिष्ट कैसा ?"

पंडितजी ने विचलित होते हुए रुक-रुक कर कहा, "विजय-श्री तो आपके हाथ रहेगी पर आप . . . न रहेंगे।"

"यानी मैं युद्ध में काम आ जाऊंगा ?"

"हां, महाराज, यही तो मैं अनिष्ट कहता था।"

"पंडितराज !" राजा ने गर्व के साथ कहा, "यह तो अनिष्ट बिलकुल नहीं। क्षत्रिय के लिये इससे अधिक इष्ट और क्या हो सकता है ? दतिया को विजय मिले, मेरे कुल का गौरव रहे और बुन्देलखण्ड का नाम हो—यही तो मेरे जीवन का उचित मूल्य होगा। जीवन की इससे अधिक सफलता और सार्थकता क्या हो सकती है ?" पंडितजी को अच्छी दक्षिणा के साथ विदा किया गया।

"दादा, ठाकुर बलवान सिंह को बुलाया जाये और युद्ध की तैयारी की जाये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महाराज, आज तीसरा दिन है, अभी हमारे लिये दो दिन का मौका है। हमें अब युक्ति से काम लेने की जरूरत है। खुले मैदान का युद्ध काम का न होगा। आज्ञा हो तो मैं कल सुबह पिंडारी सरदार से फिर भेंट करूं।" महाराजा साहब को लेकर दलपतराय महल के भीतर एकांत में चले गये।

दूसरे दिन पिंडारी सरदार पीलू खां के नाम महाराज के हाथ का खरीता लेकर दादा दलपत पीलू खां से मिलने उसके शिविर में पहुंचे।

अदब के साथ सलाम करते हुए दलपतराय ने खरीता पीलू खां के हाथ में दे दिया। खोलकर पीलू खां खरीता पढ़ने लगा; खरीते में लिखा था–

बखिदमत सरदार पीलू खां बहादुर, खरीते के साथ मैं अपने वयोवृद्ध सरदार दलपतराय को आपकी खिदमत में भेज रहा हूं। दस्त वस्ता आप से मेरी गुजारिश है कि मैं आपसे रूबरू इल्तजा करना चाहता हूं, मुमकिन है मेरे बयान को सुनकर दतिया के हाल पर आप रहम फरमा सकें। बाकी हाल मेरे सरदार जबानी अर्ज करेंगे।

आपका दोस्त,
विक्रमशाह बुन्देला

"कहिये सरदार, आप जबानी क्या अर्ज करना चाहते हैं ?"

"सरदार साहब, दतिया की हालत के बारे में तो मैंने पहले ही दिन आपसे गुजारिश कर दी थी। अब सिर्फ इतना ही अर्ज करना चाहता हूं कि महाराजा साहब आपके सामने हाजिर होकर अपनी और प्रजा की हालत जाहिर करना चाहते हैं। उनका ख्याल है कि रूबरू बात होने से शायद मसला तय हो सके।" भीतर-भीतर खुश होते हुए, कुटिल मुस्कान के साथ पिंडारी सरदार ने महाराज के प्रस्ताव को मंजूर कर लिया और कहा कि 'कल' पांचवां और आखिरी दिन है, इसलिये कल दोपहर से पहले आपके महाराज मेरे पास आ जायें, मगर शर्त यह है कि साथ में फौज-फांटा लेकर न आवें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सरदार साहब, जरूरी पेशादार व थोड़े-से साथी सरदारों के सिवाय और कोई नहीं होगा, सिर्फ बीस जवान होंगे और इजाजत हो तो मैं भी हाजिर हूंगा।"

"मंजूर है।"

दूसरे दिन राजसी ठाठ के साथ बीस जवानों को लेकर महाराज निकल पड़े। महाराज की बगल में, मुश्की घोड़े पर दलपतराय भी हो लिये। बीसों साथी बहुत ही खरे और युद्ध-कला-विशारद अनुभवी सरदार थे। शिविर में पहुंच कर साईसों ने घोड़े थामे और अपने बीस साथियों के साथ राजा और दलपत पिंडारी सरदार के सामने जा पहुंचे।

पिंडारी ने राजा विक्रमशाह को कोई भी सम्मान न दिखलाया। पलंग पर पालथी मारे बैठे हुए पीलू खां ने घमंड के साथ राजा से कहा, "कहिये, आप क्या कहना चाहते हैं ?" राजा विक्रमशाह ने बहुत ही नम्रता के साथ भावपूर्ण शब्दों में दतिया की खराब हालत बयान की और कहा कि हमारे पास जो कुछ भी जेवर और थोड़ा-सा पैसा है वह आप ले लें और ईश्वर के नाम पर हमारी गरीब रियाया पर रहम करें। हम अपने कोष की चाबी भी आपके हवाले कर देंगे।

दतिया का इलाका मालदार इलाका था। पीलू खां को राजा के दुश्मनों ने खबर दी थी कि राजा के पास बहुत काफी दौलत है। उसने महाराज की बात पर कोई गौर नहीं किया और कहा कि हम बीस लाख से एक पैसा भी कम में न मानेंगे। इस पर महाराज ने वापस जाना चाहा। कड़क कर पीलू खां ने कहा कि महाराज, आप गिरफ्तार हो चुके। अब आप यहां से एक कदम भी नहीं हट सकते। राजा ने मुड़कर दलपत की तरफ देखा। दलपत ने कहा कि अब सोचने का समय नहीं। फौरन राजा ने तलवार खींचकर पीलू खां पर कसकर एक वार कर दिया। एक ही वार में वारे-न्यारे हो गये। पीलू खां पलंग पर ही ढेर हो गया। कूद कर सभी योद्धा घोड़ों पर सवार हो गये और थोड़े-से सिपाहियों को जो खेमे के बाहर लगे थे काटकर हवा के वेग से भाग निकले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादिर को मालूम हो चुका था कि दतिया के राजा पीलू खां से मिलने गये हैं। उसे यह भी मालूम था कि राजा को शिविर में गिरफ्तार कर लिया जायेगा। इसलिये वह थोड़े-से सवारों के साथ अपने शिविर के बाहर तैयार खड़ा था। घोड़ों की टापों से उठी हुई धूल के गुब्बारों को देखकर वह समझ गया कि मामला उल्टा हो गया। साथी सवारों को लेकर उसने रास्ते में राजा को आ घेरा और पीछे से महाराज के ऊपर तलवार का वार कर दिया। तलवार कनपटी और कंधे को चीरती हुई निकल गयी। कादर घोड़ा फेंकता हुआ चाचा के शिविर की तरफ झपट गया। शिविर में सरदार के मारे जाने पर गड़बड़ी मची थी। कादिर के पीछे दलपत ने अपना घोड़ा डाल दिया। घोड़ा हवा से बातें करता हुआ पूरे वेग से कादिर के घोड़े के पास जा पहुंचा। सिंहगर्जना के साथ दलपतराय ने कादिर को ललकारा और अपने लोहे की सांग को उछाल कर भागते हुए ही कादिर पर बड़े जोर के साथ मारा। पीठ को फोड़कर सांग छाती से निकल गयी। कादिर ढेर होकर जमीन पर तड़फड़ाने लगा। फौरन घोड़े से कूदकर दलपत ने लात के दबाव से सांग बाहर खींच ली और कादिर का सिर धड़ से जुदा कर दिया।

साथ ही बलवानसिंह ने छिपे हुए दो हजार छापामारों को ललकारा और भागते हुए पिंडारियों पर हमला कर दिया। पिंडारी बिना मालिक के भाग खड़े हुए और हजारों मौत के घाट उतार दिये गये। उनका सारा सामान जहां का तहां पड़ा रह गया।

इधर महाराज विक्रमशाह घोड़े पर सिमट गये, खून के फव्वारे छूट रहे थे। सरदारों ने आकर महाराज के शरीर को घोड़े से सम्हाल कर उतार लिया। टूटे हुए शब्दों में महाराज ने कहा कि मुझे किले के तीसरे चौक में गौरीशंकर के चरणों में डाल दो।

गौरीशंकर के मंदिर के सामने महाराजा को लिटा दिया गया। "भगवान् गौरीशंकर की जय हो। दतिया उनकी कृपा से बच गयी।" कहते-कहते महाराज के प्राण-पखेरू उड़ गये।

—अजित सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ऋषिवर बोले' :

विजय के साझेदार

नसीम ने कहा—ऋषिवर हम लोग ईरान से आये हैं। पहली बार घर से बाहर निकले हैं और वहां से आये सीधे हिन्दुस्तान। आप तो जानते ही हैं कि ईरान और हिन्दुस्तान में बहुत पुरानी दोस्ती है। आपका हितोपदेश और पंचतंत्र हमारे देश में अनवारे सुहेली नाम से प्रचलित है, नल-दमयन्ती की कहानी तो मानों ईरान की अपनी चीज है। उपनिषद् भी हमारी भाषा में काफी मान पाते हैं। हम हमेशा यही सोचा करते थे कि हमारा देश गढ़े में जा गिरा है परंतु हिन्दुस्तान तो अवश्य हिमालय की ऊंचाइयों पर बैठा होगा। लेकिन यहां आकर तो बड़ी निराशा हो रही है। हमने यहां के बारे में जो कुछ पढ़ा-सुना था ख्वाब था, जो कुछ भी देखा, जो सुना अफसाना था।

मैं अपने साथियों के साथ बस में बैठकर यहां आ रहा था। रास्ते में किसी जवां-मर्द ने एक निहायत कमसिन औरत के गले से सोने की जंजीर निकालने की कोशिश की। सब भारतीय सूरमा बैठे तमाशा देखते रहे। वे चाहते तो उचक्के की चटनी बना सकते थे पर किसी ने उंगली तक न उठायी। मेरा एक अरबी साथी उसपर झपट पड़ा और वह यह जा वह जा।

इसी तरह हम मथुरा गये थे, वहां अंधे बच्चों के लिये एक स्कूल चलता है। उसके संचालक ने बतलाया कि कुछ विदेशी लोगों ने उसकी सहायता के लिये एक अच्छी रकम भेजी लेकिन यहां के सरकारी तंत्र को घूस दिये बिना उसे पाना असंभव हो गया।

इस तरह की घटनाएं स्वयं आपके देशवालों ने मुझे हर नुक्कड़ पर सुनायीं, सुनकर मन खट्टा हो गया। यह जानकर संतोष नहीं हुआ कि मेरे देशवासी भी यहां आकर बदतमीजी में यहांवालों से आगे बढ़ने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोशिश करते हैं। हमारे कई पड़ोसी देशों में जरा सी चोरी पर हाथ काट दिया जाता है, किसी औरत की आबरू लेने पर संगेसार किया जाता है लेकिन परिणाम के बारे में कुछ न कहना ही ज्यादा अच्छा है।

आखिर यह सब क्या है और क्यों हो रहा है ? इसका इलाज क्या है ?

नसीम बहुत ज्यादा उत्तेजित था और एक सांस में यह सब कह गया। उसके साथी दम साधे बैठे थे। उन्हें भय था कि हिन्दुस्तानी समाज में यह क्या बक रहा है।

ऋषिवर बड़े चाव से सब कुछ सुनते रहे और उसकी मशीन बंद होने पर बोले—नसीम तुम जवान हो, तुम्हारी भावनाएं और तुम्हारा उत्साह देखकर खुशी होती है। तुम हिन्दुस्तानियों के विरोध में बोल रहे हो, हिन्दुस्तान के विरोध में नहीं। तुम जो कुछ कह रहे हो अपनेपन से प्रेरित होकर, दुःख-द्रवित होकर कह रहे हो। मैं तुम्हारी भावनाओं की कद्र करता हूं।

देखो, सारी मनुष्य जाति एक है। हमारे और तुम्हारे भी पुरखे कह गये हैं 'यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे'। हमारा यह छोटा-सा शरीर सारे जगत् का एक छोटा-सा नक्शा है। यहां जो कुछ होता है उसका असर सारी दुनिया पर होता है और जो कुछ दुनिया में हो रहा है उसका फल यहां दिखलायी देता है।

तुम जानते ही हो कि भौतिक रूप से भी तुम दुनिया से अलग नहीं हो सकते। तुम जाकर कोहे काफ पर बैठो या आसाम के जंगलों में आसन जमाओ, दुनिया तुम्हारा पीछा न छोड़ेगी। रेडियो, टेलीविजन आदि इस बात का प्रमाण देते हैं।

ये मशीनें दूसरी मशीनों द्वारा प्रसारित चीजों को पकड़ती हैं। आदमी का मन इनसे भी ज्यादा सूक्ष्म मशीन है। वह दूसरे मनों की भेजी हुई लहरों को पकड़ लेता है। सारे जगत् की चेतना एक सागर की तरह है और हम सब उसमें उठनेवाली छोटी-छोटी लहरियां हैं। जब तक सागर नमक से भरा है, हर लहरी नमकीन होगी और अगर एक लहर में मिठास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ जाये तो समझ लो कि सारा सागर मीठा हो गया है। शुभ-अशुभ, अच्छा-बुरा, सब कुछ इस सागर में घुला हुआ है और अगर हम यह सोचें कि हम एक दो लहरों को मीठा बना लेंगे, उन्हें शुद्ध रूप से शुभ या अशुभ रूप दे सकेंगे तो यह हमारा गलत ख्याल होगा। हम देखते हैं कि राम के भक्तों में भी और पांडवों में भी काफी त्रुटियां हैं जब कि रावण और दुर्योधन के लोगों में भी अनेक सद्‌गुण थे। जबतक सारा सागर ही मीठा नहीं हो जाता तबतक यह तो हो सकता है कि किन्हीं भागों में नमक ज्यादा हो किन्हीं में कम पर यह नहीं हो सकता कि सागर के किसी हिस्से में नमक हो ही नहीं।

शायद तुम सोच रहे हो कि हमने पूछा कुछ और उत्तर कुछ और मिल रहा है। नहीं, ऐसी बात नहीं है। मैं उसी चीज पर आ रहा हूं। हर देश की अपनी-अपनी अंतरात्मा है, अपनी-अपनी चेतना है और फिर मानव जाति की एक सामूहिक चेतना है। जैसे मनुष्य की अंतरात्मा भगवान् के साथ जुड़ी रहती है उसी तरह देश की अंतरात्मा भी भगवान् के साथ सीधा संबंध रखती है, अगर अंतरात्मा जाग्रत हो तो न मनुष्य को और न देश को कोई दुःख-दर्द हो सकता है।

बीच में ही शकील बोल उठा—ऋषिवर, आपकी बात ठीक समझ में नहीं आयी जरा ज्यादा स्पष्ट कर सकेंगे ?

ऋषिवर ने उत्तर दिया—यह चीज मुझे बहुत पसंद है। जहां कोई बात समझ में न आये तुरंत टोक दो, मैं समझा दूंगा। तुम चुपचाप बैठे रहोगे तो मुझे भ्रम हो जायेगा कि तुम समझ गये और तुम कुछ भी न समझे होंगे, दोनों का समय नष्ट होगा।

देखो, साधारणतः मनुष्य की अंतरात्मा कहीं पीछे छिपी रहती है जैसे राजा कहीं पीछे बंद हो और उसके अफसर अपनी मनमानी चलाते रहें। उसी तरह भगवान् के साथ नाता जोड़नेवाली अंतरात्मा छिपी रहती हैं और उसकी जगह अहंकार नामक दारोगा अपनी चलाता है। इच्छाएं, वासनाएं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कामनाएं, आवेग सब उसीके द्वारा पोषण पाते हैं और तुमसे अपनी इच्छा पूरी करवाते हैं। तुम उनके हाथ में खिलौना बन जाते हो।

अंतरात्मा एक आग है, तुम्हारी सारी गंदगी उसके अंदर जलकर भस्म हो सकती है। यही बात देशों पर लागू होती है। उनमें भी आत्मा है और वह भी एक बहुत बड़े अहंकार के नीचे छिपी हुई है। अहंकार ही सारी गंदगी की जड़ है, सभी निम्न वृत्तियां उसीके सहारे आती और हम पर कब्जा करती हैं। तुम देखोगे कि जब एक देश में अच्छी या बुरी कोई लहर आती है तो वह सभी देशों में चक्कर लगा लेती है। जब एक जगह कला-कौशल का विस्तार होता है तो उसका प्रभाव सब पर पड़ता है।

अगर एक व्यक्ति भी किसी एक दिशा में प्रगति करे तो उसका असर सब पर होता है। और जब तक एक के अंदर भी गंदगी बाकी है तब तक कोई भी पूरी तरह शुद्ध नहीं हो सकता।

आजकल मनुष्य के अंदर सफाई की प्रक्रिया बहुत जोर से चल रही है और परिणाम-स्वरूप सारी गंदगी ऊपर उछल-उछल कर आ रही है। वह नहीं जाना चाहती, डटी रहना चाहती है और युद्ध करती है। हम अगर पूरी तरह भगवान् के साथ हों तो हमारे ऊपर उसका असर नहीं हो सकता, लेकिन मनुष्य छिद्रों से भरा है और ये सब चीजें उन छिद्रों में से होकर अंदर घुस आती हैं। देश में, जाति में, व्यक्ति में तुम जितनी अस्तव्यस्तता देखते हो वह इसी के कारण है। इन ऊपरी चीजों को देखकर निराश न होओ। ये जाने के लिये ही उमड़ रही हैं। तुम अपने अंदर मजबूत बनो, अपने अंदर सच्चे बनो और भगवान् की ज्योति जगाने की कोशिश करो। इसका असर सब पर होगा। काम बहुत बड़ा है, इसके लिये प्रयास भी बहुत बड़ा करना होगा, लेकिन इसमें विजय अवश्यंभावी है। हम भगवान् के साथ मिलकर रहने की कोशिश करें तो उनकी विजय में साझेदार होंगे।

अब इसी विषय में किसी को कुछ और पूछना हो तो पूछ ले नहीं तो आज के लिये समाप्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरु का महत्त्व

माताजी, यहां कहा गया है : "पहले सत्यों का ज्ञान है, सिद्धांत . . ." पहले शास्त्र को जानना चाहिये; लेकिन यहां कहा गया है कि शास्त्र को जानने के लिये : "पूर्ण योग का सर्वोच्च शास्त्र है वह शाश्वत वेद जो हृदय में निहित है . . .।" तो शास्त्र को जानने के लिये पहले योग की एक लंबी प्रणाली की जरूरत है। (हंसी)

हां। सामान्य नियम के अनुसार, ऐसा ही है। इसे रातोंरात नहीं सीखा जा सकता, नहीं, मेरा ख्याल है कि इस बात को कोई नहीं मानता! श्रीअरविन्द ने ही . . . पता नहीं, आज हमने अभीतक तो नहीं पढ़ा . . . उन्होंने एक भेद किया है; वे कहते हैं . . . नहीं, जरा आगे चलकर वे कहते हैं—हम इसे अगली बार पढ़ेंगे—वे गुरु के बारे में कहते हैं . . . नहीं . . . "जीवित गुरु का अधिक शक्तिशाली वचन," यह बाद में आता है।

यानी, अगर पुस्तकों का अध्ययन करके तैयारी करनी हो, तो इस तैयारी में अधिक समय लग जाता है। लेकिन अगर ऐसा हो कि तुम सीधी शिक्षा पा सको, और वह भी सभी परिस्थितियों में, तो चीज बहुत ज्यादा तेजी से चलती है। जब तुम्हें रास्ता दिखानेवाला कोई न हो, और तुम्हें किताबों की मदद से अपना रास्ता खोजना हो, जब तुमसे इतना कहनेवाला भी कोई न हो; "वह नहीं, यह पुस्तक पढ़ो," जब तुम्हें अपने-आप ही हर चीज का पता लगाना हो, तो समय लगता है। बहुत वर्ष लग जाते हैं।

देखो, इसमें फर्क पड़ता है—लोग इसे नहीं जानते—अगर तुम किसी ऐसे से पूछ सको जिसने उस चीज को चरितार्थ किया है, यानी, जिसने सब अनुभूतियां प्राप्त कर ली हैं और छोर तक पहुंच गया है और उसे वस्तु का ज्ञान प्राप्त है, तो ऐसे व्यक्ति से पूछने से बहुत फर्क पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तुम उससे पूछ सकते हो : "क्या यह अच्छा है ? क्या यह उपयोगी है, क्या यह हानिकर है ?" तो एक मिनट में तुम्हें उत्तर मिल जाता है : "हां, नहीं, यह करो, यह पढ़ो, वह मत करो।" और यह इतना सुविधाजनक है।

लेकिन जब तुम बिलकुल अकेले हो—सामान्यत: बहुत अनुकूल परिवेश में न हो, या बहरहाल जहां लोग विरोधी भले न हों, पर इस बारे में कुछ भी न समझते हों, और न इस बारे में सोचते हों—तो तुम्हें अपने-आप हर चीज का पता लगाना पड़ता है; ऐसा कोई नहीं है जो तुमसे कहे : "हां, तुम यह पुस्तक पढ़ो, यह ज्यादा अच्छी है, यह उससे ज्यादा सच्ची है।" तुम्हें बहुत सारी चीजें पढ़नी पड़ती हैं, अपने विचारों में उनकी तुलना करनी होती है, अपने ऊपर उनके प्रभाव की तुलना करनी होती है, यह देखना होता है कि वे किस हदतक तुम्हारी मदद करती हैं या नहीं करतीं।

स्वभावत:, जिनकी नियति में होता है उन्हें आंतरिक 'पथ-प्रदर्शक' रास्ता दिखाते हैं। उन्हें जो पुस्तक पढ़नी चाहिये वही उनके हाथ लग जाती है या कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाता है जो उन्हें उपयोगी निर्देश दे सकता है; लेकिन यह . . .। कुछ समय के बाद उन्हें पता चलता है कि एक चेतना काम कर रही थी; उन्हें भली-भांति पता न था वह क्या थी और कहां से आयी थी, या किसने उनके जीवन की व्यवस्था की, किसने उनके जीवन की परिस्थितियों की व्यवस्था की—और किसने पग-पग पर ठीक यह चीज पाने में मदद की जो उन्हें आगे ले जायेगी। लेकिन यह . . . यह बहुधा होनेवाली चीज नहीं है; बल्कि, यह विरल है। इन लोगों की नियति में होता है।

अन्यथा यह कठिन है; इसमें समय लगता है, बहुत समय लगता है। फिर भी यह बिलकुल ही आरंभ है, है न; यह उन सत्यों को पाना है जिनपर तुम्हारा योग आधारित होगा। यह योग नहीं है; ये सामान्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्धांत हैं जिन पर तुम्हारे योग की इमारत खड़ी की जायेगी।

स्पष्ट है कि जिन्हें विशेष रुचि हो वे कुछ पा सकते हैं। यह कहने की जरूरत नहीं कि जो हिन्दुस्तान में है, उनके लिये यह बहुत सरल है, बहुत ही सरल; यहां जीवित परंपरा है, जो भी योग करना चाहे उसे हमेशा कोई-न-कोई सूचना देनेवाला मिल जायेगा। और अधिक-से-अधिक अज्ञानी और अनपढ़ लोगों को भी एक धुंधला-सा ख्याल है कि क्या करना चाहिये या उन्हें किस चीज से मदद मिल सकती है।

लेकिन अगर तुम उठाकर पश्चिम में रोप दिये जाओ, तो, तुम्हें पता चलेगा कि यह कितना कठिन है। वहां सारी दुनिया ही इस तरह व्यवस्थित है कि वह इसके "पक्ष में नहीं है", वह केवल इसके बारे में तटस्थ ही नहीं, बल्कि पूरी तरह विरोधी है, वह जान-बूझकर इस 'सद्वस्तु' को जानने से इंकार करती है, क्योंकि यह कष्टकर है; तो अगर वहां तुम्हारे अंदर यह चीज जागे, जब यह आवश्यकता प्रकट हो, तो सचमुच तुम्हें पता नहीं चलता कि बाहर निकलने का रास्ता किधर है।

अब हालत जरा अच्छी है। लेकिन पचास वर्ष पहले हालत बहुत अच्छी न थी—पचास-साठ वर्ष पहले यह चीज कठिन थी। अब लोगों ने कुछ प्रगति कर ली है; अब वहां, सभी जगह ज्यादा प्रकाश है।

तो बस ?

१९ अक्तूबर, १९५५

'श्रीमातृवाणी', खण्ड ७
पृ० ३२८-३३०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजी और श्रीअरविन्द के साथ एक शिष्य का पत्र-व्यवहार

प्यारी माताजी, मैं अपना जीवन, अपना प्रेम और अपना संकल्प आपको अर्पण करता हूं, मैं आपसे प्रेम करने, आपका मान करने और आपकी आज्ञा मानने का वचन देता हूं। आप मुझे अपनाये रहें।

माताजी: तुम मेरे प्रेम और स्नेह के बारे में निश्चित रहो। मेरी सहायता और शक्ति तुम्हें कभी न छोड़ेंगी।

१८ नवंबर १९३७

माताजी,

क्या श्रीदुर्गा श्रीमहालक्ष्मी का ही नाम और रूप हैं? मैं इस नाम के प्रति इसलिये आकर्षण अनुभव करता हूं कि अभी हाल में एक रात, जब मैं अपने सबसे खराब मूड में था, मैंने यह नाम सुना—"दुर्गा, जय दुर्गा, जय दुर्गा"—यह नाम मेरे सिर में बार-बार दोहराया जा रहा था और उसके बाद मैंने कुछ मौन का अनुभव किया और मैंने अपनी गहरी उदासी से छुटकारा पा लिया। मैं कृष्ण नाम के प्रति भी आकर्षित हुआ करता हूं और कभी-कभी अर्धनिद्रित अवस्था में इन नामों—"दुर्गा-महाकाली-कृष्ण" को जोड़ देता हूं। यथार्थ में श्रीदुर्गा-महाकाली कौन हैं और उनका श्रीकृष्ण के साथ क्या संबंध है? क्या दुर्गा-महाकाली का नाम दुर्गा ही है? क्या मुझे इन नामों को जपने की आपकी अनुमति प्राप्त है, अगर है तो किस रूप में?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द : अमुक हद तक दुर्गा महेश्वरी और महाकाली की विशेषताओं का संयोजन है—महालक्ष्मी के साथ इसका अधिक संबंध नहीं है। कृष्ण और महाकाली के संयोजन की इस योग में बहुत शक्ति है और अगर ये नाम तुम्हारी चेतना में एक साथ उठते हैं, तो यह अच्छा चिह्न है।

एक रात, नवंबर दर्शन से पहले मैंने एक विशाल प्रकाश देखा जिसका रंग पीला-सफेद-सा था। यह शीतल और शांतिप्रद प्रकाश नीचे उतर रहा था और आकर मेरे सिर के ऊपर ठहर गया। उसने मेरे सिर का स्पर्श किया फिर पीछे हट गया। क्या यह मन की चेतना है या यह कोई आध्यात्मिक चेतना है? अनुभूति दोबारा नहीं हुई।

श्रीअरविन्द : यह पीले रंग की छटा पर निर्भर है, अगर वह सुनहरा सफेद है तो वह मन के ऊपर से आता है और संयोजन महेश्वरी-महाकाली की शक्ति की ओर संकेत करता है। उच्चतर मां का रंग हल्का नीला है।

१२ मार्च १९३८

श्रीमाताजी,

प्रणाम। पांच साल हुए, यहां आने से दो साल पहले, मुझे रात को अंतर्दर्शन हुआ। आकाश में बहुत ऊपर मैंने घुटनों तक, गहरे नीले रंग के चरण देखे। जहांतक मुझे याद है वे बस नूपुर से अलंकृत थे। तलवे लाल कमल के रंग के थे। मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि ये माताजी के चरण-कमल हैं, क्योंकि मुझे वैसा ही अनुभव हुआ और तुरंत मैंने उनके दाहिनी तरफ से एक ऐसे छींट के कपड़े को उतरते देखा जैसी छींट का भारत में मां की पूजा के लिये उपयोग होता है। यह मां कौन हो सकती हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द : यहां माताजी के रूप के ब्योरों का एक व्यापक प्रतीक है, लेकिन स्पष्ट रूप से यह पहले संपर्क में, पहली अवस्था में वह-की-वही अनुभूति है।

उसी रात या उससे अगली रात मुझे एक और अंतर्दर्शन हुआ। मैंने अपने सामने एकदम से सफेद सोपान की पहली कुछ सीढ़ियां देखीं; फिर दाहिनी ओर मुड़कर ऊपर असंख्य सीढ़ियां चलती चली गयीं जबतक कि उनका ऊपरी हिस्सा ऊपर आकाश में खो नहीं गया। यूरोपियन शैली का एकदम से सफेद गाउन पहने एक श्वेत आकार शीघ्रता से सीढ़ियों से उतरा, सोपान के घुमाव पर खड़े होकर उसने अपनी दोनों बांहें मेरी ओर फैला दीं। यह कौन थीं मां ?

श्रीअरविन्द : यहां और अगले में भी स्पष्ट रूप से माताजी हैं। सोपान बहुत सामान्य प्रतीक है जिसे बहुतों ने देखा है, इसका अर्थ हुआ आरोहण की स्वीकृति और संकल्प।

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा..... .... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द डिवाइन लाइफ एजुकेशन सेन्टर, झुंझुनूं
श्रीअरविन्द दिव्य जीवन शिक्षा केन्द्र, झुंझुनूं (राजस्थान)

श्रीअरविन्द सोसायटी द्वारा स्थापित इस संस्था का मूल उद्देश्य श्रीअरविन्द व श्रीमां के मनुष्य जाति के लिये दिव्य जीवन के स्वप्न को साकार करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये यह केंद्र ऐसे श्रद्धालुओं के समूह के निर्माण की अभीप्सा रखता है जिनके जीवन का केवल यही उद्देश्य हो।

यह केंद्र पूर्ण रूप से आवासीय है जिसमें छात्र-छात्राओं की शिक्षा, आवास व भोजन पूर्णतः निःशुल्क है। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। शैक्षणिक सत्र हर वर्ष १५ अगस्त से प्रारंभ होता है तथा केवल ६ से १२ वर्ष तक की आयु के बच्चों को ही प्रवेश दिया जाता है।

यह केंद्र पूर्ण शिक्षा प्रदान करने तथा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिये समस्त साधन प्रदान करने की अभीप्सा रखता है। जो अभिभावक अपने बच्चों के लिये सरकारी प्रमाण पत्र, डिग्री व डिप्लोमा की आकांक्षा नहीं रखते अपितु उसकी सत्ता के केंद्रीय सत्य के अनुरूप उनके पूर्ण व सर्वांगीण विकास की अभीप्सा रखते हैं और अपने बच्चों को इस शिक्षण-संस्था में प्रवेश दिलाने के इच्छुक हैं, वे पूरी सूचना के लिये निम्नलिखित पते पर संपर्क करें। प्रवेश पूरे वर्ष किसी भी समय दिया जा सकता है।

जो आध्यात्मिक पिपासु इस केंद्र के कार्य में सहयोगी होना चाहते हैं तथा अपना जीवन इस कार्य में लगाकर साधनामय जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, वे लोग अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें :

श्रीअरविन्द डिवाइन लाइफ एजुकेशन सेन्टर
मीरा अम्बिका भवन, खेतान मोहल्ला
पो० झुंझुनूं—333001, राजस्थान
टेलीफोन—(01592) 35615
email:admit@sadlec.org
srimaa@vsnl.com
URL:www.sadlec.org

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको उस नये प्रकाश के प्रति खोलो जो धरती पर उदित हुआ है और तुम्हारे सामने एक ज्योतिर्मय पथ खुल जायेगा।

— श्रीमां

WITH THE BEST COMPLIMENTS OF

S. L. Deorah Group of Enterprises

ASSAM TEA WAREHOUSING CORPORATION
INDIAN TEA STORAGE AGENCY
INDIAN TRANSPORT AGENCY
AURO IMPEX PRIVATE LIMITED
AURO LABORATORIES LIMITED
AURO BUSINESS CENTRE

Calcutta Office:

'SHIVANGAN' - Flat No. 2C, 53/1/2, Hazra Road
CALCUTTA - 700 019
Phone No.: 474 - 2059, 474 - 2060
Fax No.: 476 - 2348

Bombay Office:

408 Navratan, 69 P. DeMellow Road
BOMBAY - 400 009
Phone No.: 343 - 5341, 342 - 9027
Fax No.: 342 - 5022

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदबुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

"हम उन 'देव मुहूर्तों' में से एक में हैं, जब पुराने आधार डगमगा जाते हैं और बड़ी अव्यवस्था रहती है; लेकिन जो लोग आगे छलांग मारना चाहते हैं उनके लिये यह एक अद्भुत अवसर है, प्रगति की संभावना असाधारण है।

क्या तुम उन लोगों में से एक नहीं होओगे जो उसका लाभ उठाते हैं ?

तुम्हारा शरीर इस महान् परिवर्तन के लिये शारीरिक शिक्षा द्वारा तैयार हो।

सबको मेरे आशीर्वाद।

(९-४-१९७१) —श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

गुजरात की अस्मिता (२)

(गतांक से आगे)

भूकंप ने विनाश किया है तो कुछ शुभ भी किया। देवेन्द्र सिंह को पागलखाने में रखा गया था क्योंकि वह पागल था। उसका शारीरिक बल भीमसेन के समान था। भोजन के समय किसी पागल ने उसके साथ खाना बांटने से इंकार किया तो उसने उसका सिर फोड़ दिया। २६ जनवरी को भूकंप हुआ तो पता नहीं उसे क्या हुआ, भागने की जगह उसने दूसरे कैदियों को बचाया और उसके बाद उसका जीवन ही बदल गया। अब वह शांत है। पागलखाने के अफसरों ने उसे छोड़ दिया है।

नागोर नामक गांव मुख्य सड़क से थोड़ी दूरी पर है। इस छोटे गांव में केवल बाईस व्यक्ति मरे हैं किंतु सारे मकान मिट्टी में मिल गये हैं। गांववालों ने स्वयं अपनी मदद की और दूसरे दिन से अपने खेतों में पहुंच गये। औरतें सड़क पर खाना पकाती हैं, पुरुष काम की खोज में दूर निकल जाते हैं। उनसे पूछा गया, "क्या राहत स्वीकारोगे ?" एक बुजुर्ग ने कहा, "हां, बहुत गरीब लोग लेने गये हैं। हम तो कठोर जीवन के आदी हैं, कभी सहायता मांगी नहीं, अब भी नहीं मांगेंगे।"

गुजरातियों के नये रूप को देखकर जो विदेशी सहायता करने आये थे, वे भी दंग रह गये; वे कह रहे थे, "जाति-पांति-धर्म सब कुछ भूलकर गुजराती कैसे एकजुट होकर एक दूसरे की मदद करते हैं ! भोजन और सबकी सुरक्षा का भार हर एक ने उठा लिया है। उनका दृढ़ साहस और स्वाभिमान हमें चौंका देता है। ऐसे समय सहायता को नकार कर अपने पैरों पर खड़े ये लोग अद्‌भुत हैं ! गुजरात की जमीन में व्यावहारिकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और आदर्शवाद एक दूसरे के साथी हैं। इस भयंकर भूकंप से आम जनता अपने बलबूते पर उठकर एक नये, अधिक व्यवस्थित शहर को खड़ा करेगी, इसमें शक नहीं।'' गुजरातियों के जटिल चरित्र का एक और उदाहरण ! जहां वे एक ओर इतने दृढ़ संकल्प हैं, दूसरी ओर उनमें बच्चों-सी सरलता दीखती है। कहीं प्रार्थना के समय एक व्यक्ति ने कहा कि भूकंप इसलिये हुआ क्योंकि तुम भगवान् को भूल गये। सारे समय शैतान के खिलौने को देखते रहे, इसलिये भगवान् ने तुम्हें थोड़ा कोप दिखाया। अब भी चेतो, सारे टी० वी० फेंक दो। और सचमुच कितने लोगों ने अपने टी० वी० सेट जमीन पर पटककर नष्ट कर दिये और उन्हें सड़क पर फेंक दिया। तो एक ओर कितने भोले और एक ओर दृढ़, साहसी, कर्मठ लोग, जो कभी भजन-कीर्तन इतनी श्रद्धा से नहीं करते थे जैसे आज करते हैं।

एक लेखक इस विपत्ति को भी एक अवसर के रूप में देखते हैं। वे लिखते हैं, "इन सारी दुर्घटनाओं में भी भगवान् उपस्थित हैं। वे कहते हैं, प्रेम का उपहार केवल कुछ लोगों की देखभाल करना नहीं है, यह तो एकता की ओर पुकार है, सबकी ओर कोमलता के व्यवहार की मांग है। यह इस दुर्घटना के विभिन्न पक्षों पर गंभीरता से सोचना है। ऐसे समय संसार अधिक दयालु और कोमल बन उठता है। मुसीबतों और कष्टों में डूबने की जगह नाजुक मानव जीवन के प्रति कोमलता की जरूरत है। हम मानव परिवार का अंग बन जाते हैं। क्या यह ऐसा अवसर नहीं है जब हम भूखों को भोजन, प्यासे को पानी, नग्न को वस्त्र और बेघर को घर तथा दुःखी को सांत्वना दें ? सच्चे मन से अजनबी को बहन या भाई बनाएं ? इस तरह भूकंप के बीच भगवान् से मिलकर हम उनसे सच्चा संबंध स्थापित करते हैं और एक दूसरे के साथ सच्चा संबंध बनता है। यही हमारी मानव भविष्य की आशा का आधार है कि भगवान् अवश्य विजयी होंगे। लेकिन भगवान् तभी कार्य करेंगे जब हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दूसरे से जुड़े रहें।" दूसरे लेखक लिखते हैं, "गुजरात की दुःखद घटना सारे संसार में फैल गयी और कई देशों के लोग भुज की ओर जाने लगे। फ्लोरिडा का वासी शाह पूछ रहा है 'क्या भेजूं, कितने वस्त्र, कितने पैसे ?' पाकिस्तान जो कभी भारत की चिंता नहीं करता उसने भी सद्भावना से अपने हवाई जहाज द्वारा बहुत सामान भेजा। अहमदाबाद का हवाई अड्डा विदेशी मेहमानों से खचाखच भर गया था जो भूकंप से पीड़ित लोगों की सहायता के लिये दौड़े आये थे।

भारत सरकार की प्रतिक्रिया भी दो प्रदेशों के प्रति भिन्न थी। भूकंप के बाद घण्टों में मुख्य मंत्री ने घोषणा कर दी कि यह भूकंप अकल्पनीय राष्ट्रीय संकट है और उन्होंने सहायता भेज दी, जब कि ओड़िसा के छोटे-से प्रलय के समय एक महीने तक यही चर्चा होती रही कि जो धन सरकार देगी वह उसे ऋण के रूप में देगी या अनुदान के रूप में !

उन दिनों जो भी अहमदाबाद गया वहां के लोगों की सद्भावना से बेहद प्रभावित हुआ। वहां रातोंरात रात्रि-आश्रय और जनता के रसोई घर खड़े हो गये थे। विद्यार्थी अपनी परीक्षाएं छोड़कर लोगों की सहायता कर रहे थे। थैलों में चावल भरकर गृहणियां भुज भेज रही थीं। सरकारी अफसर दिन-रात सहायता करने में व्यस्त थे। इस तरह जनता मानों गांधीजी का अनुसरण करते हुए आत्मनिर्भर होकर इस प्रचण्ड दुर्घटना का सामना कर रही थी। भूकंप के दस दिन के बाद अहमदाबाद प्रायः स्वाभाविक जीवन में लौट आया। लोग अपने घरों में प्रवेश करने से पहले पूजा, हवन कर रहे थे। एक स्त्री ने कहा, "हम मां प्रकृति की पूजा कर उनसे प्रार्थना कर रहे हैं कि वे हमारी रक्षा करें।"

गुजरात के वास्तुविदों ने मिलकर बांस के ऐसे घर बनाये जो जल्द से जल्द तैयार हो जायें। ये मकान पांच हजार रुपये देकर लोग खरीद सकते थे और वे दो वर्ष के लिये बड़े आरामदेह और सुरक्षित रहेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाखों लोगों के लिये ये घर आशीर्वाद बन गये।

तो यह है गुजरात की अस्मिता ! हर हादसे के ऊपर उठने का अदम्य साहस ! मुश्किलों से हार न मानने का दृढ़ निश्चय ! हम चाहें तो इस शक्ति को हमेशा बनाये रख सकते हैं और तब हमारी प्रगति आकाश को भी लांघ सकती है।

—अनुबेन

दैनन्दिनी

जून

१. वर दे कि हर रोज की उषा हमारे लिये एक नये और अधिक अच्छे जीवन की उषा हो।

२. भगवान् के लिये स्नेह : एक मधुर, विश्वासपूर्ण कोमलता जो अपनें-आपको अविरत रूप से भगवान् के अर्पण करती है।
भगवान् को उग्रता के द्वारा नहीं लिया जा सकता। केवल प्रेम और सामंजस्य द्वारा ही तुम भगवान् तक पहुंच सकते हो।

३. जैसे-जैसे हम प्रगति करते और अपने-आपको अहंकार से शुद्ध कर लेते हैं, वैसे-वैसे भगवान् के साथ हमारी मैत्री अधिकाधिक स्पष्ट और सचेतन हो जाती है।
चेतना, समता और प्रेम के विकास के साथ भगवान् की समीपता हमेशा बढ़ेगी।

४. हमेशा अपनी पूर्णतम और सत्यतम पूर्णता को चरितार्थ करने की अभीप्सा में रहो।
और आरंभ के लिये स्वयं अपने ऊपर लगाये गये नियंत्रण में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईमानदार, सच्चे, सीधे-सादे, उदात्त और पवित्र होने की चेष्टा करो। मैं हमेशा सहायता करने और राह दिखाने के लिये तुम्हारे साथ रहूंगी।

५. जब तुम्हारा भागवत प्रेम के साथ संपर्क हो जाये तो तुम हर चीज में, हर परिस्थिति में इस प्रेम को देखते हो।
भागवत प्रेम और ज्ञान को हमेशा हमारे विचारों और क्रियाओं पर शासन करना चाहिये।

६. सारी शरारत संतुलन के अभाव से आती है।
अतः हम सर्वदा, सभी परिस्थितियों में अपना संतुलन बनाये रखें।
धन की हानि कम महत्त्व रखती है परंतु संतुलन की हानि बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण चीज है।

७. शूरता है सभी परिस्थितियों में परम सत्य के लिये डटे रह सकना, विरोध में भी उसकी घोषणा करना और जब कभी आवश्यकता हो तो उसके लिये युद्ध करना।
और हमेशा अपनी ऊंची-से-ऊंची चेतना के द्वारा काम करना।

८. प्रश्न—मानसिक जड़ता से कैसे पिंड छुड़ाया जाये ?
उत्तर—इसका इलाज मन को जगाने का प्रयास नहीं है। उसे अचल, नीरव अवस्था में ऊपर की ओर अंतर्भासिक ज्योति के क्षेत्र की ओर स्थिर, शांत अभीप्सा में मोड़ो और नीरवता में प्रतीक्षा करो ताकि ज्योति नीचे उतरे और तुम्हारे मस्तिष्क में बाढ़ ला दे। इससे मस्तिष्क थोड़ा-थोड़ा करके इस प्रभाव की ओर खुलेगा और अंतर्भास को ग्रहण और प्रकट करने योग्य बनेगा।

९. बच्चा अपने विकास के बारे में चिंता नहीं करता, वह बस बढ़ता जाता है।
बच्चे के सरल विश्वास में बड़ी शक्ति होती है।

१०. सफलता को लक्ष्य न बनाओ, हमारा लक्ष्य है पूर्णता। याद रखो

११.

१२.

१३.

१४.

१५.

१६.

१७.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम नये जगत् की देहली पर हो, उसके जन्म में भाग ले रहे हो और उसके सृजन में सहायक हो। रूपांतर से अधिक महत्त्वपूर्ण कुछ भी नहीं है। इससे अधिक मूल्यवान् कोई हित नहीं है।

११. सत्य ही तुम्हारा स्वामी और पथ-प्रदर्शक हो।
हम अपनी सत्ता और अपने क्रिया-कलाप में सत्य और उसकी विजय के लिये अभीप्सा करते हैं।
सत्य के लिये अभीप्सा ही हमारे प्रयासों की गति और ऊर्जा हो।
हे सत्य! हम तेरा पथ-प्रदर्शन चाहते हैं। धरती पर तेरा ही राज्य आये।

१२. जब कोई सत्य में निवास करता है तो वह सभी विरोधों के ऊपर होता है।

१३. हमारे साहस और हमारी सहनशीलता को हमारी आशा के जितना महान् होना चाहिये और हमारी आशा की कोई सीमा नहीं।
हमारी आशाएं कभी इतनी बड़ी नहीं होतीं कि वे अभिव्यक्त न हो सकें।
हम किसी ऐसी चीज की कल्पना नहीं कर सकते जो हो न सके।

१४. प्रसन्न हो मेरे वत्स, प्रगति का यह सबसे अधिक निश्चित मार्ग है।

१५. हमेशा अच्छे बने रहो तो तुम हमेशा खुश रहोगे।
हम हमेशा उचित वस्तु करें तो हमेशा शांत और सुखी रहेंगे।
हम अपनी खुशी केवल भगवान् में ही खोजें।

१६. निश्चय ही हमें शांति और सामंजस्य की चाह करनी चाहिये और उसके लिये यथासंभव अधिक-से-अधिक काम करना चाहिये—लेकिन उसके लिये उत्तम कार्य-क्षेत्र हमेशा हमारे अंदर होता है।
एक गहरी और सत्य चेतना है जिसमें सभी प्रेम तथा सामंजस्य के साथ मिल सकते हैं।

१७. भगवान् से प्रेम करने और धरती पर उनकी सेवा करने का सबसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा तरीका है अथक, स्पष्टदर्शी और व्यापक शुभ-चिंता जो सभी व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं से मुक्त हो।

मेरा मतलब है विचारों और वाणी में सच्ची, निष्कपट और सहज शुभ-चिंता, क्रिया में वह दिखावटी शुभ-चिंता नहीं जिसके साथ कृपालुता दिखानेवाली श्रेष्ठता का भयंकर भाव होता है जो मुख्य रूप से मानव दर्प के लिये मंच का काम देता है।

१८. स्वाधीनता बाहरी परिस्थितियों से नहीं, आंतरिक मुक्ति से आती है। अपनी अंतरात्मा को खोजो, उसके साथ एक हो, उसे अपने जीवन पर शासन करने दो तो तुम स्वाधीन हो जाओगे।

१९. सद्भावना रखनेवाले हर व्यक्ति में सत्य के लिये प्रयास होना चाहिये।

हमारे जीवन को सत्य के लिये "प्रेम" और "प्रकाश" की प्यास द्वारा शासित होना चाहिये।

अगर व्यक्ति भगवान् के समीप रहना चाहता है तो उसके जीवन पर पूर्ण सत्य का शासन होना चाहिये।

२०. सत्य का प्रकाश जगत् के ऊपर मंडरा रहा है ताकि उसमें व्याप्त होकर भविष्य को गढ़े।

सत्य को अपनी शक्ति मानो, सत्य को अपना आश्रय मानो। सत्य हमारे अंदर है, हमें केवल उसके बारे में अवगत होना है।

२१. सत्य मिथ्यात्व से कहीं अधिक बलवान् है। एक अमर शक्ति जगत् का शासन करती है। उसके निश्चय हमेशा सफल होते हैं। उसके साथ हो जाओ तो तुम अंतिम विजय के बारे में निश्चित रहोगे। जब मनुष्य मिथ्यात्व से ऊब जायेंगे, जिसमें वे निवास करते हैं, तब संसार सत्य के राज्य के लिये तैयार होगा।

२२. सत्य मन से ऊपर है, नीरवता में ही मनुष्य उसके साथ नाता जोड़ सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् से प्रार्थना करना और अपने-आपको पूरी तरह, पूरी सच्चाई के साथ उनके अर्पण कर देना आवश्यक प्राथमिक शर्तें हैं।
जो सचाई के साथ सत्य की सेवा करना चाहता है वह सत्य को जान जायेगा।

२३. बाह्य अनुशासन की दृष्टि से यह अनिवार्य है कि जब तुम्हारी कोई राय हो और तुम उसे प्रकट करो तो याद रखो कि यह केवल एक राय, देखने और अनुभव करने का एक तरीका है तथा अन्य लोगों की राय और उनके देखने और अनुभव करने के तरीके भी तुम्हारे तरीकों के जितने ही न्यायसंगत हैं और उनका विरोध करने की जगह तुम्हें उन सबको जोड़कर एक अधिक सत्य और व्यापक समन्वय पाने की कोशिश करनी चाहिये।

२४. सभी रायों में कुछ सत्य होता है और कुछ असत्य। वस्तुतः क्रोध किये बिना औरों की राय सुनना एक बड़ी और उपयोगी चीज है।

२५. ईमानदारी सबसे अच्छी सुरक्षा है।
सच्चे और ईमानदार बनो तो तुम्हारा मन चैन से रहेगा।
हमेशा सच बोलना आभिजात्य का सबसे ऊंचा पद है।

२६. सबसे अधिक आवश्यक बात है ज्योति की ओर मुड़ने का निरन्तर प्रयास करते रहना। हम जितना समझते हैं उसकी अपेक्षा ज्योति हमसे अधिक नजदीक है और कभी भी उसका समय आ सकता है। एकमात्र वही जीवन जीने योग्य है जो भगवान् के साथ एकात्मता के लिये निवेदित हो।

२७. जो भी हो, भागवत शक्ति पीछे निरन्तर कार्य कर रही है और एक दिन, जब कोई शायद ही आशा करता हो, बाधाएं भंग हो जाती हैं, बादल विलीन हो जाते हैं और फिर से प्रकाश और धूप छा जाती है। ऐसे समयों में सबसे अच्छी बात, यदि कोई कर सके तो, यह है कि उद्विग्न न हुआ जाये, हतोत्साह न हुआ जाये, बल्कि चुपचाप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अड़े रहा जाये और श्रद्धा के साथ उसके आने की प्रतीक्षा की जाये : मैंने देखा है कि यही चीज इन अग्निपरीक्षाओं को हल्का बना देती है। (श्रीअरविन्द)

२८. अपने धार्मिक चिंतन और अनुभव में से निकाल फेंको समस्त नीचता, संकीर्णता और स्थूलदर्शिता। विशालतम क्षितिजों से भी अधिक विशाल बनो, उच्चतम कांचनजंगा से भी अधिक उच्च, गभीरतम समुद्र से भी अधिक गभीर बनो।

तथाकथित मानवीय बुद्धिमत्ता की समस्त जटिलताओं से ऊपर भागवत कृपा की ज्योतिर्मयी सरलता विद्यमान है और वह कार्य करने के लिये तैयार है—यदि हम उसे करने दें।

वह समय आ गया है जब हमें एक चुनाव—मौलिक और सुनिश्चित चुनाव करना होगा।

हे प्रभु ! हमें ऐसी शक्ति दे कि हम मिथ्यात्व का त्याग करके तेरे सत्य में ऊपर उठ सकें, विशुद्ध और तेरी विजय के उपयुक्त पात्र बनकर उठ सकें।

२९. हे प्रभु ! समस्त मानवजाति तुझसे प्रार्थना करती है कि तू उसे बार-बार समान मूर्खताओं में जा गिरने से बचा।

ऐसी कृपा कर कि जो भूलें पहचानी जा चुकी हैं वे फिर से नये सिरे से दुहरायी न जायें।

अंत में वर दे कि मनुष्यजाति के कर्म उन आदर्शों को ठीक-ठीक और सच्चे तौर पर प्रकट करें जिनकी उसने घोषणा की है।

३०. अचंचल रहना और एकाग्र होना, ऊपर से शक्ति को अपना काम करने देना, यह किसी भी बीमारी और हर एक बीमारी को ठीक करने का सबसे निश्चित तरीका है। अविचल श्रद्धा और मजबूत संकल्प के साथ अगर इसे समय पर और पर्याप्त समय के लिये किया जाये तो ऐसी कोई भी बीमारी नहीं जो इसका प्रतिरोध कर सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान् कर्म

वास्तविक कठिनाई हमारे परिवेश में नहीं, हमेशा हमारे अंदर होती है। मनुष्य को अजेय बनाने के लिये तीन चीजें जरूरी हैं, इच्छा, अनासक्ति और श्रद्धा। हमारे अंदर अपना उद्धार करने की इच्छा तो हो सकती है पर पर्याप्त श्रद्धा की कमी हो सकती है। हमें अपने चरम उद्धार पर श्रद्धा हो सकती है, पर आवश्यक साधनों के उपयोग के लिये इच्छा की कमी हो सकती है; और अगर इच्छा और श्रद्धा भी हों तो हम उनका उपयोग अपने काम के फल के प्रति उग्र आसक्ति के साथ घृणा के आवेशों, अंधी उत्तेजना या जल्दबाजी में बल लगाकर कर सकते हैं जिससे बुरी प्रतिक्रियाएं आ सकती हैं। इसी कारण इतने महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये यह जरूरी है कि अभूतपूर्व बाधाओं को जीतने के लिये हम शरीर और मन से अधिक ऊंची शक्ति का आश्रय लें। साधना की इसीलिये आवश्यकता है।

भगवान् हमारे अंदर हैं, वे सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ शक्ति हैं। हम और वे एक ही प्रकृति के हैं और अगर हम उनके साथ संपर्क स्थापित करें और अपने-आपको उनके हाथों में सौंप दें तो वे हमारे अंदर अपनी शक्ति उड़ेलेंगे और हम अनुभव करेंगे कि हमारे अंदर भी देवत्व का, सर्वशक्तिमत्ता का, सर्वव्यापकता का और सर्वज्ञता का अपना भाग है। मार्ग लंबा है, परंतु आत्म-समर्पण उसे छोटा बना देता है, रास्ता कठिन है परंतु पूर्ण विश्वास उसे सरल बना देता है।

इच्छा सर्वशक्तिमान् है परंतु होनी चाहिये वह भागवत इच्छा, निःस्वार्थ, शांत और परिणामों के बारे में निश्चिन्त। ईसा ने कहा था, "अगर तुम्हारे अंदर राई जितनी श्रद्धा भी हो तो तुम इस पहाड़ से कहोगे आओ और वह तुम्हारे पास आ जायेगा।" यहां श्रद्धा शब्द का अर्थ पूर्ण श्रद्धा के साथ संकल्प से था। श्रद्धा तर्क नहीं करती, वह जानती है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि उसका दृष्टि पर अधिकार होता है। वह जानती है कि भगवान् क्या चाहते हैं और वह जानती है कि भगवान् जो चाहते हैं वह होकर रहेगा। श्रद्धा—वह अंधी नहीं होती बल्कि आध्यात्मिक दृष्टि का उपयोग करती हुई सर्वज्ञ बन सकती है।

इच्छा सर्वव्यापक भी है। वह जिनके संपर्क में आती है उसके अंदर अपने-आपको निक्षिप्त कर सकती है और उन्हें सामयिक या स्थायी रूप से अपनी शक्ति, अपने विचार और अपने उत्साह का एक भाग दे सकती है। निःस्वार्थ और आश्वस्त इच्छा के प्रयोग से एक अकेले आदमी का विचार एक राष्ट्र का विचार बन सकता है। एकमात्र शूर की इच्छा करोड़ों भीरुओं के हृदयों में साहस फूंक सकती है।

हमें यही साधना चरितार्थ करनी है। हमारे उद्धार की यही शर्त है। हम अपूर्ण इच्छा का अपूर्ण श्रद्धा और अपूर्ण निःस्वार्थता के साथ उपयोग करते आये हैं। लेकिन हमारे आगे जो कार्य है वह पहाड़ को हिलाने से कम कठिन नहीं है।

जो शक्ति यह कर सकती है वह उपस्थित है लेकिन वह हमारे अंदर एक गुप्त कक्ष में छिपी है और उसकी चाबी भगवान् के हाथ में है। चलो, हम उन्हें खोजें और उसकी मांग करें।

—श्रीअरविन्द

— — — —

न, यह परीक्षा नहीं है। कठिनाइयां इसलिये आती हैं क्योंकि मन, प्राण और शरीर अथवा सत्ता का कोई भाग इन्हें लानेवाली क्रियाओं के प्रति खुला है।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

(गतांक से आगे)

दिव्य मां

"यह वे ही हैं"

"सारी शक्ति का रहस्य हैं ये दो जो हैं एक,
ये दो जो एक हैं, ये ही सब चीजों में हैं बल और सचाई।"

इस अध्याय को लिखने का मेरा लक्ष्य माताजी के जीवन के बारे में लिखना नहीं है, क्योंकि उनका जीवन भी श्रीअरविन्द के जीवन की भांति सतह पर नहीं रहा। उन दोनों का बाह्य जीवन बहुत छोटे-से पैमाने में उसकी झलक मात्र है जो वे अपनी अन्तर्ज्ञानातीत विशालता में हैं। मैं अपने-आपको उस झलक के एक छोटे-से अंश तक सीमित रखूंगा, वहीं जहां तक उनका श्रीअरविन्द के साथ संबंध रहा है और प्रसंगवशात् हमारे साथ भी रहा है। मैं अपने निरीक्षण के आधार पर ही लिखूंगा। मेरे इन निरीक्षणों से जो अनुमान निकलेंगे वे छिट-पुट, संभवतः गलत भी हो सकते हैं क्योंकि जब हम किसी ऐसी सत्ता की बात करते हैं जो अतिमानसिक है तो गलती कर बैठते हैं, फिर भी मैंने निष्पक्ष और सही-सही लिखने की कोशिश की है।

मैंने पिछले अध्यायों में श्रीअरविन्द के साथ माताजी के संबंध का विस्तार से उल्लेख किया है और उनके बाह्य जीवन में माताजी की भूमिका के बारे में लिखा है। उनके संबंध के बारे में शुरू के दिनों में हम काफी अनुमान लगाया करते थे। वह क्या पुरुष और प्रकृति-सा है, गुरु और शिष्य-सा या शिव और शक्ति-सा है ? मैं आरंभ से ही इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबंध को देखने और समझने के लिये उत्सुक था। मेरा निष्कर्ष यही था कि वह संबंध शिव और शक्ति का था। माताजी ने कहा है, "उनके बिना मेरा अस्तित्व नहीं, मेरे बिना वे अनभिव्यक्त रहते हैं।" एकमेव के द्वयात्मक व्यक्तित्व का पृथ्वी के रंगमंच पर अमर नाटक देखने का हमें अद्वितीय अवसर दिया गया था जो मनुष्य के आध्यात्मिक इतिहास में विरल है। मैं बहुत अच्छी तरह समझ सकता हूं कि माताजी के बिना श्रीअरविन्द की आश्चर्यजनक अनुभूतियों ने भौतिक स्तर पर ऐसा ठोस आकार न पाया होता। सच बात तो यह है कि वे माताजी के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कहा था कि माताजी की सहायता से उन्होंने दस वर्ष की साधना एक वर्ष में की थी। आश्रम का निर्माण ही इस अकाट्य सत्य का प्रमाण है: "वे संकल्प करते हैं, मैं उसे कार्यान्वित करती हूं।" श्रीअरविन्द के महाप्रयाण के बाद कई लोगों ने यह शंका प्रकट की थी कि आश्रम का विध्वंस हो जायेगा या कम-से-कम कुछ पतन अवश्य होगा। उनकी शंका के विपरीत, अतिमानसिक सत्य का आविर्भाव श्रीअरविन्द के महाप्रयाण के बाद हुआ और उसके बाद आश्रम का आशातीत विस्तार हुआ।

श्रीअरविन्द ने मुझे लिखा था, "... परिवर्तन के लिये माताजी का दबाव हमेशा बहुत आग्रहपूर्ण होता है—तब भी जब वे उस दबाव का शक्ति के रूप में उपयोग नहीं करतीं—उनके अंदर विद्यमान दिव्य ऊर्जा की सहजात प्रकृति के कारण ऐसा होता है।" यही उन सबकी निश्चित, प्रभावशाली राय है जिन्होंने माताजी के साथ दूर या समीप रहकर काम किया है। श्रीअरविन्द के वातावरण में हमें प्रकृति की विशाल और विस्तृत स्वतंत्रता की अनुभूति होती है, जब कि माताजी के संपर्क ने हमेशा हमें चीजों की ठोस वास्तविकता का परिचय दिया। जब वे श्रीअरविन्द के कमरे में प्रवेश करतीं तो 'आत्मा' के शांत, निष्क्रिय वातावरण में शक्तिशाली स्पंदनों का प्रवेश हो जाता और हमें सतर्क हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना पड़ता। हमारी शिथिलता उड़ जाती। अगर गपशप हो रही हो तो वह एकदम बंद हो जाती; अखबार अनपढ़ा रह जाता। अगर कोई दीवार से सटकर बैठा हो तो वह सीधा तनकर बैठ जाता। एक शब्द में कहें तो हम सब धनुष की खिंची हुई प्रत्यंचा के समान हो जाते। यह परिवर्तन डर के कारण नहीं, बल्कि उनकी प्रत्याशा तक उठने का प्रयास था। श्रीअरविन्द तक शाम की बातचीत के समय, माताजी को आते हुए देखते तो दबी हुई आवाज में कहते, "माताजी आ रही हैं।" और बातचीत बंद कर देते। माताजी हमें मुस्कुरा कर प्रोत्साहन देतीं, "जारी रखो, जारी रखो!" ऐसी आश्चर्यजनक ऊर्जा थी उनकी—'चित् तपस्'। इसका यह अर्थ नहीं है कि वे कठोर अध्यापिका थीं।

हालांकि हम सभी जानते थे कि माताजी ने आश्रम का उत्तरदायित्व ग्रहण कर लिया है और उन्हीं के हाथ निर्देशन दे रहे हैं फिर भी इस बात का सत्य और अभिप्राय मेरे दिमाग में तभी स्पष्ट हुआ जब हम उनसे दुर्घटना के बाद आमने-सामने मिले और उनके अनेकविध क्रिया-कलापों का हमने नजदीक से निरीक्षण किया। तब मैंने देखा कि उनकी बुद्धिमत्ता, ऊर्जा और उनका प्रभाव भौतिक स्तर पर किस सीमा तक काम करते थे। मेरे लिये सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि श्रीअरविन्द की दैनिक भौतिक आवश्यकताओं की व्यवस्था वे कितनी पूर्णता और सावधानी से किया करती थीं। श्रीअरविन्द को कभी कोई चीज मांगनी नहीं पड़ती, किसी चीज को ढूंढ़ना न पड़ता, हर वस्तु उचित समय पर अपने स्थान पर आ जाती। माताजी की हजारों व्यस्तताएं थीं, फिर भी वे श्रीअरविन्द की आवश्यकताओं की ओर ध्यान देने के लिये वैसे ही समय निकालती थीं जैसे श्रीअरविन्द उनकी आवश्यकताओं के लिये समय निकालते थे। दोनों की चेतनाएं एक थीं इसीलिये जब श्रीअरविन्द की दुर्घटना हुई तब माताजी ने स्वप्न में तुरंत उसका स्पंदन अनुभव किया था। श्रीअरविन्द को जिन चीजों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता पड़ती वे पर्याप्त मात्रा में उनके लिये रखी जातीं, जैसे– उनके लेखन का सामान, उनके स्नान की चीजें, मच्छर भगानेवाली धूप अथवा क्रीम इत्यादि सब तैयार रहते। कई घड़ियां विभिन्न स्थानों पर रखी रहतीं, क्योंकि श्रीअरविन्द को समय देखने की आदत थी।[१] उनके आधी रात के स्नान के लिये गरम पानी एक विशेष साधक तैयार करता, उनकी धोती को कोई और व्यक्ति रोज धोकर इस्त्री कर देता, एक तीसरा साधक उनका बिस्तर तैयार करता और उनका भोजन विशेष व्यक्तियों का एक दल पकाता था। माताजी श्रीअरविन्द को केवल खाना ही न परोसती थीं बल्कि कौन-सा व्यंजन तैयार करना है, उसे किस तरह पकाना है, खेतों में कौन-सी तरकारियां लगानी हैं, किन फलों को खरीदना है—इन सब बातों की वे व्यक्तिगत रूप से देखभाल किया करती थीं। श्रीअरविन्द की सेवा करना, उन्हें प्रसन्न रखना, यही उनके लिये सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण था क्योंकि वे माताजी के प्रभु थे। वे श्रीअरविन्द को उसी नाम से संबोधित करती थीं। पेशावर से सूखे मेवे मंगाये जाते, मौसम के अनुसार विभिन्न स्थानों से पके मौसमी फल मंगाये जाते। जब युद्ध के समय अच्छी तरकारियां पांडिचेरी में नहीं मिलती थीं, तब उन्होंने बैंगलोर से तरकारियां मंगवायीं और उन्हें ताजा रखने के लिये एक 'कोल्ड स्टोरेज' बनवाया; साथ ही उन्होंने रेफ्रीजरेटर खरीदा जिसमें अन्य खाद्य वस्तुएं रखी जाती थीं। अगर मैं इस विषय में कहूं तो इन सभी ब्योरों से यही मालूम होता है कि माताजी आदर्श गृह का अर्थ-शास्त्र जानती थीं। एक बार श्रीअरविन्द 'सावित्री' की पंक्तियां किसी अन्य कापी में फिर से लिखना चाहते थे, तो मैं तुरंत बाजार गया और दो कापियां खरीद कर उनको अर्पित कीं। जब माताजी को पता

[१] एक बार अचानक सब घड़ियां एक साथ बंद हो गयीं। इस विचित्र संयोग से श्रीअरविन्द को बड़ा कुतूहल हुआ; उन्होंने कहा भर, "अरे, सारी घड़ियां बंद हो गयीं !" कि सब एक साथ चलने लगीं ! यह किसी शैतान बेताल की करतूत होगी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चला तो उन्होंने कहा, "क्यों ? उनके उपयोग के लिये मैंने बहुत-सी कापियां रखी हैं।" खैर, उस स्थान के लिये नवागंतुक होने के कारण मुझे पता न था। इसके अलावा मैंने सोचा था कि मुझे श्रीअरविन्द को कुछ अर्पित करने का अवसर मिला है।

माताजी की व्यवस्था सुचारु रूप से इसलिये चलती थी क्योंकि वे अन्तर्भासात्मक रूप से योग्य व्यक्ति को चुनती थीं। उदाहरण के लिये प्रारंभ से ही चंपकलाल को श्रीअरविन्द की व्यक्तिगत सेवा के लिये चुना गया था, और उनसे अच्छा और किसी का चुनाव न होता। श्रीअरविन्द के स्वास्थ्य के लिये वे चिंता करती रहती थीं, यह मैंने पहले भी कहा है। वे बार-बार उनके कमरे में आतीं। हम जानते हैं कि श्रीअरविन्द पहले अपने थोड़े-से साथियों के साथ कितनी किफायत से रहते थे। इस कारण उनका शरीर नाजुक न सही, किंतु दुबला बहुत था। उसकी तुलना में माताजी काफी सम्पन्नता ले आयीं और बार-बार व्यक्तिगत रूप से उनकी सेवा करतीं। वे स्वयं उनके लिये सूप तैयार करतीं। हमने देखा है कि वे श्रीअरविन्द की रुचि का ख्याल रखते हुए कैसे उनकी थाली में विभिन्न व्यंजन सजातीं, कभी-कभी श्रीअरविन्द के स्वाद के अनुसार व्यंजनों का मिश्रण कर उन्हें परोसतीं। हमने सुना था कि श्रीअरविन्द ने सिगार पीना माताजी के अनुरोध पर छोड़ दिया था ताकि उनके साथी—जिन्होंने सिगार पीना शुरू किया था—उनके उदाहरण का अनुसरण कर पीना छोड़ दें।

माताजी उनके कमरे के सही वातावरण पर भी ध्यान देती थीं। मैं एक उदाहरण देता हूं : श्रीअरविन्द के पढ़ने के लिये बहुत-से अखबार आते थे, वे केवल 'हिन्दू' पढ़ते और 'डेली मेल' में छपे कॉमिक 'कर्ली वी' को पढ़ते। चूंकि हमारे पास समय बहुत रहता, हम सारी पत्रिकाओं की छानबीन करते रहते, खास कर इस आशय से कि कोई ऐसा समाचार मिल जाये जिससे हम श्रीअरविन्द के साथ बातचीत करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय उसकी चर्चा कर पायें। 'द इन्डियन एक्सप्रेस' युद्ध के काफ़ी समाचार छापता था। जब कभी माताजी कमरे में आतीं तो उनकी पहली दृष्टि हमारे कोने पर पड़ती और प्रायः सवेरे वे अखबार के ढ़ेर पर हमें मानों उत्सव मनाते देखतीं। हठात् हमने आश्चर्य से देखा कि 'हिन्दू' और 'अमृत बाजार पत्रिका' को छोड़कर सारे अखबार आने बंद हो गये। श्रीअरविन्द रोज की न्याई 'डेली मेल' को ढूंढ़ने लगे। हमें उनसे कहना पड़ा कि माताजी ने अखबार बंद कर दिये हैं क्योंकि वे कमरे के वातावरण को बिगाड़ रहे थे। माताजी को पता न था कि श्रीअरविन्द को 'मेल' में रुचि थी। वे केवल मुस्कुराये। यह छोटी-सी घटना सभी बातों पर माताजी की सदा-जाग्रत बुद्धि का संकेत है, फिर वह घटना चाहे मामूली हो या आध्यात्मिक। इतना ही नहीं, उनके हर निर्णय के प्रति श्रीअरविन्द की मौन स्वीकृति का संकेत भी है। 'लाइब्रेरी' नामक कमरे में सार्वजनिक पठन के लिये बहुत सारे अखबार रखे जाते थे, उस कमरे को माताजी ने नाम दिया था "मिथ्यात्व", फिर भी उन्होंने साधकों को उन्हें पढ़ने की छूट दे रखी थी।

माताजी कई यांत्रिक आविष्कारों, जैसे रेडियो, ग्रामोफोन, छत पर लगे पंखे इत्यादि को सहानुभूति की नजर से नहीं देखती थीं। रेडियो का प्रवेश श्रीअरविन्द के कमरे में तभी हुआ जब युद्ध ने पूरा रक्त-रंजित रूप ले लिया। उनके शयन कक्ष में पंखा न था हालांकि यहां भयंकर गरमी पड़ती थी। उनकी बैठक में एक 'टेबल फैन' था। केवल दुर्घटना के बाद श्रीअरविन्द के बिस्तर के पास एक 'टेबल फैन' रखा गया था जो खास राहत नहीं दे पाता था क्योंकि कमरा पूर्व, पश्चिम और दक्षिण दिशा से बंद था, जिस कारण कमरे में दमघोंटू उमस रहती थी। जब वे चलते तो हम लोग हाथ का पंखा झलते-झलते उनके साथ चलते। जब कमरे के शहतीरों को बदल कर नये मजबूत शहतीरों को लगा कर पूरी मरम्मत की गयी तब उनके कमरे में छत का पंखा लगाया गया। माताजी को उससे पहले यही शंका थी कि पुरानी छत पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंखा एक खतरा बन जायेगा। इस घटना से पता चलता है कि माताजी दुर्घटना की हर संभावना के प्रति कितनी सजग थीं, फिर चाहे वह आंतरिक हो या बाह्य। वे बहुत अच्छी तरह जानती थीं कि उन दोनों को अत्यंत हानिकर क्षति पहुंचाने के लिये गुह्य शक्तियां कितनी कपटी और सूक्ष्म हैं। किसने कल्पना की थी कि एक असावधान क्षण में अपने ही कमरे में श्रीअरविन्द की इतनी गंभीर दुर्घटना हो सकती है ? श्रीअरविन्द ने दृढ़तापूर्वक कहा था कि सच्चे अर्थ में उन दोनों का जीवन एक रणक्षेत्र था और विरोधी शक्तियों के विरुद्ध माताजी और वे स्वयं सतत युद्धरत हैं। "यद्यपि यह युद्ध बंद कमरे में लड़ा जा रहा था फिर भी इसकी यथार्थता और गंभीरता में कोई फर्क नहीं पड़ता था।" माताजी ने एक बार कहा था कि उन दोनों की बीमारियों का इलाज करना साधकों की बीमारी ठीक करने से अधिक मुश्किल है क्योंकि उनके ऊपर वे बीमारियां विरोधी शक्तियों का केन्द्रित-आक्रमण होती थीं। मैं साथ-साथ यह भी कहता चलूं कि माताजी न केवल श्रीअरविन्द के ऊपर आनेवाले सभी संभव बाह्य आक्रमण और दुर्घटना के प्रति सजग थीं बल्कि साधकों के कुशल-क्षेम के बारे में भी उतनी ही सचेतन थीं। शहर में फैली एक महामारी के अवसर पर साधकों को यह चेतावनी दे दी गयी थी कि वे बाहर के खाने को हाथ न लगाएं। हमारे यहां की सभी तरकारियां तथा फल कीटाणुनाशक द्रव्य में धोने के बाद ही पकाये तथा खाये जाते हैं। इसके साथ ही आश्रम में बीमारियों के न फैल पाने के कई उपाय किये जाते हैं। मैंने सुना था कि आश्रम में गणपतराम नामक आहार-गृह खोलने के पीछे भी यही कारण था। माताजी यह कभी नहीं चाहती थीं कि उनके बच्चे बाहर का खाना खाकर बीमार पड़ें। उन्होंने गणपतराम नामक साधक को अपने पास बुलाकर कहा कि वे बहुत साफ-सुथरे तौर पर आहार देनेवाले एक आहार-गृह को आश्रम के बच्चों के लिये चलायें जहां सभी चीजें स्वास्थ्य के नियमों का ध्यान रखते हुए तैयार की जायें।

(क्रमशः)

—नीरदवरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचाई-निष्कपटता

अपने-आपको भागवत प्रभावों और प्रेरणाओं के सिवाय किसी और की ओर न खोलना—इस अर्थ में सचाई का उपयोग किया जाता है।

*

इस योग में हम सचाई पर इतना अधिक बल देते हैं और इसका अर्थ है समस्त सत्ता को एकमात्र सत्य, एकमेव भगवान् की ओर सचेतन रूप से खुला रखना।

*

पूरी तरह सच्चे होने का अर्थ है केवल भागवत सत्य की कामना करना। अपने-आपको अधिकाधिक दिव्य जननी के अर्पित करना, इस एकमात्र अभीप्सा के सिवा सभी निजी मांगों और कामनाओं को त्याग देना, जीवन की हर क्रिया को भगवान् के अर्पित करना और अहंकार को बीच में लाये बिना, दिये हुए काम के रूप में करना। यही दिव्य जीवन का आधार है।

तुम एकदम पूरी तरह सच्चे नहीं बन सकते लेकिन अगर सारे समय अभीप्सा करो और सच्चे हृदय से निष्कपट इच्छा के साथ दिव्य शक्ति की सहायता को हमेशा पुकारा करो तो तुम इस चेतना में अधिकाधिक विकसित होगे।

मानव प्रकृति के लिये पूरी तरह से निष्कपट, सीधा और खुला रहना सरल उपलब्धि नहीं है। केवल आध्यात्मिक उद्यम से ही तुम उसे चरितार्थ कर सकते हो—और इसे करने के लिये कठोर रूप से अंतर्दर्शी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्म-दर्शन, और आत्म-निरीक्षण की ऐसी कठिन परीक्षा की जरूरत होती है जिसमें बहुत-से साधक और योगी भी सक्षम नहीं होते। एकमात्र प्रबुद्ध भागवत कृपा ही साधक को स्वयं के प्रति खोलती और उसके अंदर की त्रुटि को बदल देती है ताकि वह उस उद्यम को कर सके। और वह भी केवल तभी जब वह स्वयं स्वीकार करे और अपने-आपको पूरी तरह भागवत कार्य-संचालन पर छोड़ दे।

*

वस्तुओं से पिंड छुड़ाने की एकमात्र शर्त है सत्ता के सभी भागों में निरपेक्ष प्रमुख निष्कपटता, और इसका अर्थ है सत्य के लिये पूर्णतया दृढ़ाग्रह, सत्य के सिवाय और किसी के लिये नहीं। तब निष्ठुर आत्म-आलोचना के लिये बहुत तत्परता और प्रकाश के लिये जागरूक उद्घाटन होगा, मिथ्यात्व के आने पर एक तरह की बेचैनी होगी जो अंत में समस्त सत्ता को पवित्र कर देगी।

*

हृदय के पवित्रीकरण के लिये सबसे महत्त्वपूर्ण चीज है पूर्ण निष्कपटता। अपने-आपसे कोई दिखावा नहीं। भगवान् से, या स्वयं से या गुरु से कोई दुराव नहीं, अपनी गतिविधियों पर सीधी दृष्टि डालना, उन्हें ऋजु बनाने के लिये सीधी इच्छाशक्ति का प्रयोग करना। अगर इसमें समय लगे तो इसमें ऐसी कोई बात नहीं। तुम्हें भगवान् को ढूंढ़ने को अपने समस्त जीवन का कार्य बनाने के लिये प्रस्तुत रहना चाहिये। हृदय को पवित्र करने का अर्थ अंततः काफी बड़ी उपलब्धि है और इसमें हताशा और निरुत्साह इत्यादि का कोई अर्थ नहीं, क्योंकि तुम अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंदर उन चीजों को देखोगे जिन्हें बदलने की जरूरत है। अगर तुम सच्ची इच्छा और सच्ची वृत्ति बनाये रखो तो अंदर से सहज प्रेरणाएं और संकेत विकसित होंगे जो स्पष्ट, यथार्थ और निर्भ्रात होंगे, उनका अनुसरण करने का बल भी विकसित होगा : और तब तुम अपने-आपसे संतुष्ट हो उससे पहले ही भगवान् तुमसे संतुष्ट हो जायेंगे और उस पर्दे को हटाना शुरू कर देंगे जिससे वे स्वयं की और अपने जिज्ञासुओं की उस महानतम वस्तु की असामयिक और संकटपूर्ण पकड़ से रक्षा करते हैं जिसके लिये मानवता अभीप्सा कर सकती है।

निष्कपट हृदय संसार की समस्त असाधारण शक्तियों से श्रेष्ठ है।

—श्रीअरविन्द

योग करने का निश्चय करना

तुम्हारे अंदर बहुत सद्भावना हो सकती है, है न, जीवन दिव्य उपलब्धि की ओर अभिमुख हो सकता है, किसी भी हालत में, न्यूनाधिक रूप से भागवत कार्य के प्रति ऊपरी समर्पण हो सकता है, फिर भी हो सकता है कि तुम योग न कर रहे हो।

श्रीअरविन्द का योग करने का अर्थ है अपने-आपको पूर्णतया रूपांतरित करने की चाह करना, उसका अर्थ है जीवन में बस, एक ही लक्ष्य का होना, ऐसा कि फिर और किसी चीज का अस्तित्व ही न हो, केवल उसी का अस्तित्व हो। तो तुम स्पष्ट रूप से अपने अंदर यह अनुभव कर सकते हो कि तुम योग करना चाहते हो या नहीं; लेकिन अगर तुम नहीं चाहते, तो भी सद्भावना का जीवन, सेवा का जीवन, सहानुभूति का जीवन बिता सकते हो; तुम 'कार्य' को ज्यादा आसानी से सिद्ध करने के लिये मेहनत कर सकते हो—यह सब—और भी बहुत-सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीजें कर सकते हो। लेकिन इसमें और योग करने में बहुत अंतर है।

और योग करने के लिये, तुम्हें उसे सचेतन रूप से चाहना चाहिये, सबसे पहले तुम्हें यह जानना चाहिये कि वह क्या है। तुम्हें जानना चाहिये कि वह क्या है, उसके लिये दृढ़ निश्चय करना चाहिये; लेकिन एक बार दृढ़ निश्चय कर लो, तो फिर तुम्हें पीछे हटना न चाहिये। इसलिये तुम्हें पूर्ण ज्ञान के साथ उसे अपनाना चाहिये। तुम जब कहो : "मैं योग करना चाहता हूं" तो तुम्हें पता होना चाहिये कि तुम किस चीज के लिये संकल्प कर रहे हो; और इसी कारण मुझे ख्याल नहीं कि मैंने कभी इस दृष्टि से तुम्हारे ऊपर जोर डाला हो . . .।

लेकिन जिस दिन तुम चुनाव कर लो—जब तुमने वह अपनी पूरी सचाई के साथ किया हो और अपने अंदर एक मौलिक संकल्प का अनुभव किया हो—तब बात अलग है। अनुसरण करने के लिये तब एक बिलकुल सीधा पथ और एक रोशनी होती है, और उससे तुम्हें भटकना नहीं चाहिये। जानते हो, वह किसी को धोखा नहीं देता; योग कोई मजाक नहीं है। जब तुम चुनाव करो, तो तुम्हें मालूम होना चाहिये कि तुम क्या कर रहे हो। लेकिन एक बार चुन लो तो तुम्हें उसपर डटे रहना चाहिये। तब तुम्हें आगा-पीछा करने का कोई अधिकार नहीं रहता। तुम्हें बिलकुल सीधे जाना चाहिये। लो! . . .

इस योग को, रूपांतरण के इस योग को, जो सभी चीजों में सबसे अधिक दुःसाध्य है, केवल तभी करो जब तुम यह अनुभव करो कि तुम यहां इसीलिये आये हो (यहां से मेरा मतलब है पृथ्वी पर) और इसके सिवाय तुम्हारा कोई काम नहीं है, कि तुम्हारे अस्तित्व का यही एकमात्र कारण है—चाहे इसके लिये तुम्हें बहुत अधिक परिश्रम करना पड़े, कष्ट उठाने पड़ें, संघर्ष करने पड़ें, उसका कोई महत्त्व नहीं—"मैं यही चाहता हूं, और कुछ नहीं"—तब और बात है। वरना मैं कहूंगी : "खुश रहो और नेक बनो, केवल इसी की मैं तुमसे मांग करती हूं। नेक होने का अर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझदार होने से है, यह जानना कि जिन अवस्थाओं में तुम पले हो वे असाधारण हैं, और साधारण जीवन से अधिक ऊंचा, अधिक श्रेष्ठ, अधिक सच्चा जीवन जीने की कोशिश करो, ताकि इसके द्वारा इस चेतना का, इस प्रकाश का और इसकी नेकी का कुछ हिस्सा धरती पर अभिव्यक्त हो सके। यह बहुत अच्छा होगा।'' लो।

लेकिन एक बार योग-मार्ग पर कदम रख लिया, तो तुम्हारे अंदर इस्पात का संकल्प होना चाहिये, और किसी भी कीमत पर, तुम्हें सीधे लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिये।

—श्रीमां

'सूर्यालोकित पथ' से

'ऋषिवर बोले' :

आत्म-बलिदान

ऋषिवर ने कहा, सबसे बड़ी आवश्यकता है बलिदान की। बिना बलिदान के कोई बड़ा काम नहीं हो सकता। चाहे देश की बात हो या ज्ञान-विज्ञान की, किसी भी क्षेत्र में कुछ बड़ा काम करना हो तो उसके लिये बलिदान जरूरी है।

चौबे से न रहा गया। बीच में ही बुदबुदाने लगा, ऋषिवर बलिदान का नाम तो बहुत सुना है पर यह बला है क्या, यह हमें आजतक किसी ने नहीं बताया। इतिहास में पढ़ा है कि लोग जानवरों की बलि दिया करते थे और भगवान् बुद्ध ने इसका विरोध किया। कई बार घर में लोगों को बातें करते हुए सुना है कि बस्तर में एक लड़के की बलि दे दी गयी। लेकिन यह चीज क्या है ? इसे कैसे किया जाता है। प्रश्न तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई लड़कों के मन में उठ रहा था पर इस तरह की बातें करने का साहस एक चौबे में ही है।

ऋषिवर जरा हंसे और बोले, अच्छा प्रश्न किया तुमने। लो सुनो। साधारण भाषा में कहें तो बलिदान का मतलब है किसी बड़े लक्ष्य के लिये अपनी सुख-सुविधा को, अपनी अधिक से अधिक प्रिय चीज को भी छोड़ देना, यहांतक कि उसके लिये अपनी जान तक न्योछावर कर देना। बेचारे गूंगे जानवरों की बलि चढ़ाना तो इसका एक बहुत ही भद्दा रूप है। अपनी बलि चढ़ाना आत्मबलिदान कहाता है। किसी ऊंचे उद्देश्य के लिये—जैसे डूबते को बचाने के लिये, जलते हुए मकान में से कमजोरों को निकालने के लिये कूद पड़ना, किसी बहन की आबरू बचाने के लिये मर-मिटना आदि आत्मबलिदान के कुछ रूप हैं। लेकिन आदर्श के लिये मर मिटने की अपेक्षा जीना ज्यादा कठिन है। उसके लिये ज्यादा साहस, शक्ति, श्रद्धा और धीरज की जरूरत होती है।

ऋषिवर जरा रुके ही थे कि चौबे ने एक और प्रश्न दाग दिया, यह कैसे ? यह तो समझ में नहीं आया। जीने से मरना सरल हो यह तो जरा अटपटी-सी बात लगती है।

ऋषिवर ने कहा, मैं भी इसी बात पर आ रहा था। तुम्हें कभी-न-कभी तो कोई बीमारी आयी ही होगी। मान लो तुम्हें खांसी हो गयी और चिकित्सक ने कह दिया कि कच्चे आमों को हाथ न लगाना; तुम्हारे पास कुछ कच्चे आम हैं। अब तुम बताओ तुम्हारे लिये कौन-सी चीज ज्यादा मुश्किल होगी, कच्चे आम कमल को दे देना या आमों के सामने रहते हुए उन्हें न खाना।

सभी ने एक स्वर में कहा, एक बार दे डालना ज्यादा आसान है। जबतक आम सामने रखे रहेंगे तबतक मुंह में पानी आता रहेगा और अपने-आप से लड़ते रहना पड़ेगा।

ऋषिवर बोले, बस इसी तरह समझ लो। तुमने कोई जोरदार भाषण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुना, तुम जोश से भर गये, तुमने किसी को मुसीबत में देखा और तुम करुणा से भर गये और तुमने झपटकर कुछ ऐसा काम कर डाला जिससे तुम्हारी जान जोखों में पड़ सकती थी। यह बहादुरी है, परंतु मेरी दृष्टि में यह उतने ऊंचे दर्जे की नहीं है। जब तुम्हारे सामने ललचानेवाली चीजें बनी ही रहती हों, तुम जिस रास्ते पर चलना चाहते हो उसपर हमेशा कांटें आते रहते हों, कदम-कदम पर जोर का विरोध होता रहता हो तब भी तुम विरोध की परवाह किये बिना, लालचों को ठुकरा कर, कांटों से घायल होते हुए आगे बढ़ते जाओ—यह ज्यादा बड़ी बहादुरी है हालांकि पहले में तुम्हें यश मिलेगा दूसरे में यश का उल्टा ही तुम्हारे भाग आ सकता है। लेकिन जीवन में दोनों प्रकार के बलिदानों की जरूरत होती है। दोनों ही हमारे जीवन को सुंदर और जीने लायक बनाते हैं। एक किसी बंधन को काटने के लिये, बाधा को तोड़ने के लिये जरूरी हो सकता है, दूसरा उसके परिणामों को स्थायी बनाने के लिये। इसी चीज को अब एक और प्रकार की परिस्थिति में देखो। देश की स्वाधीनता खतरे में हो तो हमें ऐसे सिपाहियों की जरूरत होती है जो हथेली पर सिर रखकर युद्ध में जायें। उनके बलिदान से ही देश स्वाधीनता की रक्षा कर पाता है और दूसरी ओर उस स्वाधीनता को स्थायी करने के लिये ऐसे बहुत-से लोगों की जरूरत पड़ती है जो देश को अपने पैरों पर खड़ा होने में सहायता दें, जो अपने-आपको खाद बनाकर देश के पौधे को मजबूत बनायें।

इसके लिये यह जरूरी है कि प्रजा देश की महानता का ख्याल रखे। देश के बच्चे-बच्चे को देश के साथ प्रेम हो और वह उसके लिये किसी भी क्षण प्राणतक न्योछावर कर सकता हो। हमारे अंदर अभीतक देश-प्रेम बहुत ही छिछला है। हमें अपने कुनबे से, अपने परिवार से जितना लगाव होता है उतना लगाव देश से नहीं होता। हममें से हर एक को देश की प्रतिष्ठा का ख्याल रहना चाहिये, हमें यह ख्याल रहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये कि हमारा देश संसार भर में अपनी संस्कृति के कारण एक विशेष स्थान बनाये रख सके। हमारे मन, प्राण और शरीर की सारी शक्ति मां को अंदर और बाहर दोनों तरह से सुंदर, भव्य और शक्तिशाली बनाने में लगे। यह चीज जहां देश को उठाती है वहां व्यक्ति को भी पूर्ण मनुष्य बनने में सहायता देती है। जो भी चीज देश के शरीर या उसकी आत्मा को हानि पहुंचा सके उसे पूरी तरह दबा देना चाहिये फिर चाहे वह राजनीतिक अत्याचार हो या सामाजिक ढांचे का बोझ। हममें से हर एक के अंदर यह महत्त्वाकांक्षा होनी चाहिये कि हमारा देश किसी न किसी दिशा में, किसी न किसी मात्रा में—'कल से बेहतर आज हो, और आज से बेहतर हो कल।' इसके लिये जो भी कष्ट सहने पड़ें उनका स्वागत करना चाहिये।

कमल बोला, ऋषिवर! यह सब तो बड़ा कठिन काम है। मनुष्य का जीवन तीन दिन का तो होता है। उसमें आदमी कितने कष्ट झेले?

ऋषिवर ने उत्तर दिया, दुःख तो मनुष्य के भाग्य में लिखा ही है तुम चाहो या न चाहो, दुःख तो तुम्हें भोगना ही पड़ेगा। बुद्धिमानी इसी में है कि हम सुख-दुःख की चिंता में न पड़ें और जो काम करना है उसे करते जायें। एक गंभीर, समझदार और दृष्टिवाले आदमी के लिये सुख-दुःख में कोई विशेष भेद नहीं होता। मां की सेवा में होनेवाले कष्टों का तो हमें स्वागत करना चाहिये। ये कष्ट सहकर हम भारत मां की सेवा कर सकते हैं और मानवजाति का भला कर सकते हैं। क्या यह कम संतोष की बात है? हमारे अंदर ऊंची भावना की कमी हो तभी हम किसी बड़े लक्ष्य के लिये कष्ट सहने में, अपनी बलि चढ़ाने में सकुचाते हैं। यह आत्मा का दिवालियापन है, पाप है।

जिनके हृदय में सचाई है, जिन्हें देश और मानवजाति की भलाई की परवाह है, जिन्हें सारी सृष्टि के साथ अपनापन लगता है, जो भारत मां को और मानवजाति को ऊपर उठते हुए देखना चाहते हैं वे हमेशा अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख-सुविधा की, अपने उज्ज्वल भविष्य की बलि चढ़ाने के लिये तैयार रहते हैं। अपनी बलि देकर आदमी ऊंचा उठता है, बलि से ही देश ऊंचे उठते हैं और बलिदान से ही मानवजाति उठ सकती है। बलिदान की भावना हो तो रास्ते में आनेवाली सब कठिनाइयां दूर हो सकती हैं।

चलो, आज के लिये इतना बस है।

माताजी और श्रीअरविन्द के साथ एक शिष्य का पत्र-व्यवहार

भगवान्!

१९३५ में मैंने एक मंत्र मांगा था और आपने सुझाव दिया था कि मैं आपके और माताजी के नाम का कोई भी संयोजन करके उसे मंत्र बना लूं। उस तरह मैंने आपकी अनुमति से यह संयोजन प्रस्तुत किया "ओम् श्रीमीरा श्रीअरविन्दाय नमः" और आपने स्वीकृति दे दी। मैंने इस संयोजन का कुछ समय तक उपयोग किया है लेकिन अब मेरी इच्छा हो रही है कि आप लोगों के नाम के संयोजन के साथ-साथ उनमें कोई अभीप्सा या प्रार्थना भी जुड़ी हो ताकि वह समय के साथ एक सतत अभीप्सा या प्रार्थना बन सके, या कम-से-कम इसलिये कि उसमें कुछ एकाग्रता की आवश्यकता होगी और वह कोई यांत्रिक चीज न बन जाये। इसके अलावा मैं अनुभव करता हूं कि अगर आप कृपया मेरे लिये एक संयोजन बना दें तो उस पर मुझे अधिक श्रद्धा होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द : मैंने तुम्हारे लिये एक संक्षिप्त-सी प्रार्थना लिख दी है जिसमें नाम मंत्र का रूप लेते हैं। मैं आशा करता हूं कि यह तुम्हें अपनी कठिनाई पार करने में और आंतरिक आधार पाने में सहायता देगा :

ॐ श्रीअरविन्द मीरा

मेरे मन, मेरे हृदय, मेरे जीवन और प्राण को अपने प्रकाश, अपने प्रेम, अपनी शक्ति की ओर खोलो। मैं सभी चीजों में भगवान् को देख पाऊं।

१६ जुलाई, १९३८

मैं मंत्र और प्रार्थना के लिये बहुत कृतज्ञ हूं। विशेष रूप से प्रार्थना की अंतिम पंक्ति "सभी चीजों में मैं भगवान् को देख पाऊं"—ने मुझे बहुत खुश कर दिया है क्योंकि वह मेरी अपनी गभीरतम अभीप्सा को व्यक्त करता है, जिसके लिये मैं पिछले कई वर्षों से बहुत आग्रही रहा हूं। क्या मुझे नामों और प्रार्थना को मिलाकर एक मंत्र मानना चाहिये ?

श्रीअरविन्द : हां।

हे मां, अपने इस गरीब बालक पर हमेशा कृपा बनाये रखो, हमेशा उसके साथ रहो। आपके बालक की यही प्रार्थना है।

माताजी : मेरे प्यारे बालक को प्रेम और आशीर्वाद, उसके साथ मैं हमेशा बनी रहूंगी।

१८ जुलाई, १९३८

'क' ने मुझे बताया है कि आपके पास शिकायतें आयी हैं कि मैं लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचाता हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

माताजी : मैं जानती हूं कि केवल कमजोर ही शिकायत करते हैं, मजबूत कभी शिकायत नहीं करते क्योंकि उन्हें ठेस नहीं लग सकती। इसलिये मैं कभी शिकायतों को बहुत महत्त्व नहीं देती।

मेरे प्यारे बालक को प्रेम और आशीर्वाद।

(अपनी दैनन्दिनी में साधक ने एक रेखा-चित्र बनाया जिसमें एक पांव कमल को छूने के लिये आगे बढ़ रहा है और लिखा :) कृपया किताब को इस भद्दे से निवेदन से बिगाड़ने के लिये क्षमा कीजिये।

माताजी : क्षमा करने की कोई बात नहीं है। सब कुछ निवेदन की भावना में है . . .।

मेरे प्यारे बालक को प्रेम और आशीर्वाद।

१४ अक्तूबर, १९३८

क्या चैत्य ज्वाला का वैदिक अग्नि से कोई संबंध है ? दोनों में लगभग एक-से गुण हैं।

माताजी : हां, ये एक ही चीज के दो नाम हैं।

मेरे प्यारे बालक को प्रेम और आशीर्वाद।

२० अक्तूबर, १९३८

मां, मुझे अपने सत्य के निवास की ओर ले चलो। मैं उत्तरोत्तर समर्पण और बढ़ते हुए भक्ति-भाव का संकल्प अर्पण करता हूं।

माताजी : मार्ग खुला है, मेरे प्यारे बालक, और मैं खुली भुजाओं से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारा स्वागत करने, तुम्हें प्रेम से भर लेने के लिये प्रतीक्षा कर रही हूं—मेरे प्रेम और आशीर्वाद सहित।

२२ अक्तूबर, १९३८

मेरे जीवन के जीवन, मैं भी तुम्हारे पास आना चाहता हूं क्योंकि मैं सिर्फ तुम्हारी भुजाओं में ही शांति, सुख और आनंद और अपने जीवन और अपनी सत्ता की सार्थकता का सच्चा सत्य पा सकूंगा। फिर भी हे मेरी उज्ज्वल ज्योति, मेरे लिये रास्ता साफ नहीं है। मैं तुम्हारी चकरा देनेवाली चढ़ाइयों तक कैसे पहुंच पाऊंगा ? जब कि मर्त्य प्रकृति की भारी जंजीरें मेरे पैरों को खींच रही हैं।

माताजी : अपने-आपको मुझे दे दो ताकि मैं तुम्हें अपनी भुजाओं में उठा कर ले जा सकूं। तब चढ़ाई आसान हो जायेगी।

मेरे प्यारे बालक को प्रेम और आशीर्वाद।

२५ अक्तूबर, १९३८

इस उत्कृष्ट प्रेम भरे कार्य के लिये मैं तुम्हारा ऋण कैसे चुका सकूंगा मां ? तुमने कैसे जान लिया कि मेरे मन की अन्तर्मन कामना यही थी। तुम बहुत, बहुत आराध्य और अपने इस छोटे बालक के प्रति बहुत, बहुत सदय हो। यह तुमसे प्रेम करता है और सुखी है।

माताजी : मेरे बहुत प्यारे बालक, मेरे प्रेम में निवास करो, उसे अनुभव करो, उससे भरे रहो और सुखी रहो—इससे बढ़कर कोई चीज मुझे खुश नहीं कर सकती।

बहुत प्रेम के साथ।

२८ अक्तूबर, १९३८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं आपका बालक हूं और बालक ही हूं। इस काम का इससे अधिक मेरे लिये कोई मूल्य नहीं है कि इसके द्वारा मैं आपकी इच्छा पूरी कर सकता हूं, कि इसके द्वारा मैं आपका ज्यादा अच्छा और ज्यादा सच्चा बालक बन सकता हूं, हे मेरी प्यारी मां।

माताजी : हां, तुम मेरे बालक हो और यह सच है कि सभी बातों में यह बात सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है . . .। प्रिय बालक, मैं सदा तुम्हारे साथ हूं और मेरे प्रेम और आशीर्वाद तुम्हें कभी नहीं छोड़ते।

३१ अक्तूबर १९३८

पिछले जन्मदिन पर विदाई के समय आपने कहा था, "श्रद्धा बनाये रखो", मैं अभीतक आश्चर्य कर रहा हूं माताजी कि आपका मतलब क्या था। मैं किस श्रद्धा के लिये अभीप्सा करूं ?

माताजी : भगवान् की कृपा पर और उसमें तुम्हें रूपांतरित करने की शक्ति पर श्रद्धा।

मेरे प्यारे बालक को प्रेम और आशीर्वाद।

४ नवंबर, १९३८

प्यारी, प्यारी, प्यारी मां, आप दिन पर दिन अधिकाधिक प्यारी और आराध्य होती जा रही हैं। आप किस दैवी रहस्य द्वारा हमारे ऊपर यह मधुर जादू डालती हैं ?

माताजी : एकमात्र रहस्य, एकमात्र जादू है मेरा प्रेम—मेरा प्रेम जो मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालकों पर फैला हुआ है और उनकी सहायता करने और उनकी रक्षा करने के लिये उन पर भागवत कृपा को उतार लाता है।

६ नवंबर, १९३८

प्यारी मां, पिछले कुछ दिनों से आप मुझे हर रोज प्रेम और आशीर्वाद भेजती हैं। ऐसे भाग्यशाली क्षण विरले ही होते हैं जब मैं यह अनुभव करूं कि हम हमेशा आप के प्रेम से घिरे रहते हैं, रही बात सच्चे प्रत्युत्तर की तो मुझे ऐसा लगता है कि मेरा हृदय पत्थर का बना है अन्यथा वह ऐसे प्रेम के आगे खुलने से इंकार क्यों करता ?

माताजी : प्रेम की निरंतर क्रिया का प्रतिरोध कोई चीज नहीं कर सकती। वह सभी प्रतिरोधों को पिघला देता और सभी कठिनाइयों पर विजय पाता है ...

मेरे प्यारे बालक को प्रेम और आशीर्वाद।

९ नवंबर, १९३८

श्रीमां, श्रीमां, श्रीमां, मेरी समस्त सत्ता को अपने प्रेम के प्रति खोलिये। मेरी सत्ता को समस्त विषयासक्ति से शुद्ध कीजिये और मुझे अपनी बांहों में ले लीजिये। अन्यथा मैं निश्चय ही खो जाऊंगा।

माताजी : तुम्हें सामान्य प्राणिक प्रकृति में से ऊपर उठाने के लिये मेरा प्रेम और मेरी सहायता और मेरे आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ हैं।

१५ नवंबर, १९३८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

घोषणाएं

श्रीअरविन्द सोसायटी का वार्षिक अधिवेशन पाण्डिचेरी के 'बीच ऑफिस' में १२, १३ तथा १४ अगस्त को होगा।

श्रीअरविन्द की १२९वीं वर्षगांठ तथा भारत की स्वाधीनता की ५१वीं जयन्ती आश्रम में तथा आश्रम तथा सोसायटी के देश-विदेश के केन्द्रों में १५ अगस्त को समुचित रूप से मनायी जायेगी।

सावित्री अध्ययन सत्र

१७ से २६ अगस्त तक सोसायटी के 'बीच ऑफिस' में डॉ० मंगेश नाडकर्णी के अंग्रेजी में 'सावित्री'-विषयक भाषण होंगे।

आश्रम के महत्त्वपूर्ण दिवस

२९ मार्च १९१४ को श्रीमां पहली बार पाण्डिचेरी में श्रीअरविन्द से मिलीं। अगले दिन उन्होंने अपनी डायरी "प्रार्थना और ध्यान" में लिखा—"इसका कोई महत्त्व नहीं है कि हजारों सत्ताएं गहनतम अज्ञान में धंसी हुई हैं, जिन्हें हमने कल देखा था वे तो पृथ्वी पर हैं; उनकी उपस्थिति यह प्रमाणित करने के लिये काफी है कि एक दिन आयेगा जब अंधकार प्रकाश में रूपांतरित हो जायेगा और वस्तुतः पृथ्वी पर तेरा शासन प्रतिष्ठित हो जायेगा।"

इस दिवस की जयन्ती पर आश्रम के क्रीड़ांगण में सामूहिक ध्यान हुआ।

४ अप्रैल १९१० को श्रीअरविन्द पाण्डिचेरी आये थे। बाद में उन्होंने लिखा था, "कर्मयोगी के दफ्तर में बैठे हुए मुझे अचानक ऊपर से यह आदेश मिला, वह बहुत जानी-पहचानी आवाज थी। बस तीन शब्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्चारित हुए—चन्दननगर चले जाओ (Go to Chandannagar) ... बाद में उसी तरह के आदेश के अनुसार मैं चन्दननगर छोड़कर १९१० की ४ अप्रैल को पाण्डिचेरी आ पहुंचा।"

इस दिवस की जयन्ती पर आश्रम के क्रीड़ांगण में सामूहिक ध्यान हुआ।

२४ अप्रैल १९२० को माताजी जापान से पाण्डिचेरी लौटीं। उन्होंने १९३७ में लिखा था, "... पाण्डिचेरी में मेरा लौटना विरोधी शक्तियों पर विजय पाने का निश्चित चिह्न था।" श्रीअरविन्द ने भी १९३५ में लिखा था, "साधना तथा कर्म माताजी के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे।"

१९३९ से यह दिवस चार दर्शन-दिवसों में सम्मिलित हो गया। इस वर्ष भी सवेरे आश्रम में ध्यान हुआ, श्रीअरविन्द के कमरे के दर्शन हुए, क्रीड़ांगण में 'मार्च पास्ट' हुआ। इस अवसर पर बंटे फोल्डर पर आशीर्वाद देती हुई श्रीमां का चित्र है और साथ में यह संदेश है—"प्रभु के नाम पर और प्रभु की शक्ति, कृपा और उनके प्रेम के साथ मैं तुम्हें आशीर्वाद देती हूं।"

आज से ५० वर्ष पहले २४ अप्रैल १९५१ को माताजी ने 'श्रीअरविन्द मेमोरियल कन्वेंशन' के समय निम्नलिखित संदेश दिया था जहां यह निश्चय लिया गया कि आश्रम में 'अन्तर्राष्ट्रीय विश्व-विद्यालय-केन्द्र' की स्थापना होगी (बाद में इसका नाम बदल कर 'श्रीअरविन्द अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा-केन्द्र' कर दिया गया) :

"श्रीअरविन्द हमारे बीच उपस्थित हैं और अपनी सर्जनशील प्रतिभा की पूरी शक्ति के साथ वे इस विश्व-विद्यालय-केन्द्र की स्थापना की अध्यक्षता कर रहे हैं जिसे वे वर्षों से ऐसे उत्तम स्थानों में से एक मानते हैं जहां भावी मानवता को तैयार किया जा सकता है ताकि वह उस अतिमानसिक ज्योति को प्राप्त कर सके जो आज के प्रतिभासम्पन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तियों को उस नयी जाति में रूपांतरित कर देगी जो धरती पर नये प्रकाश, नयी शक्ति तथा नये जीवन को अभिव्यक्त करेगी।

उनके नाम पर आज मैं यहां इस सभा का इस उद्देश्य के साथ उद्घाटन करती हूं कि यह विद्यालय उनके इस चिरपोषित आदर्श को चरितार्थ करे।''

इस वर्ष 'कन्वेंशन' की अर्ध-शताब्दी के सुअवसर पर आश्रम में शाम को विशेष 'मार्च पास्ट' हुआ।

केन्द्रों के समाचार

दुर्गापुर (प० बंगाल) में श्रीअरविन्द के पवित्र अवशेष ४ अप्रैल २००१ को श्री गोपाल भट्टाचार्य द्वारा पधराये गये। श्री गोपाल ने बांकुरा केन्द्र का भी दौरा किया। करीब २५० सदस्यों ने इसमें भाग लिया। नैरोबी (केनीया) में १८ फरवरी २००१ को एक 'वर्कशॉप'का आयोजन किया गया। विषय था "बीमारी—उसके कारण और उपचार"। इसमें ३६ लोगों ने भाग लिया। २५ फरवरी को हठयोग तथा आयुर्वेद पर शिविर भी लगाया गया। २१ फरवरी को माताजी की वर्षगांठ पूरे जोर-शोर के साथ मनायी गयी। नैरोबी के मुख्य अखबार ने भी उस दिन माताजी के बारे में विशेष परिशिष्ट निकाला।

अनन्तपुर (आन्ध्र-प्रदेश) में सोसायटी की प्रादेशिक शाखा की सभा १० तथा ११ फरवरी को हुई। इसकी अध्यक्षता अनन्तपुर के श्री कृष्णदेवार्य विश्व-विद्यालय की उपकुलपति श्रीमती सरस्वती राव ने की। इसमें १०० से अधिक लोगों ने भाग लिया। प्रो० किट्टू रेड्डी, श्री प्रदीप नारंग, श्री वेंकटरमैय्या, श्री पी० एल० एन रेड्डी इत्यादि के भाषण भी हुए।

बैंगलोर (कर्णाटक) की जे० पी० नगर की सोसायटी शाखा ने पहली से सात जनवरी तक डॉ० नाडकर्णी के भाषणों की व्यवस्था की। वे सवेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के योग तथा शाम को 'सावित्री' पर बोले। २८ फरवरी को यहां पर बननेवाली अतिथिशाला की नींव का पत्थर श्री ईसार ने रखा।

गुलबर्गा (कर्णाटक) शाखा ने २१ से २४ फरवरी तक श्रीमती प्रेमा नन्दकुमार के भाषणों का आयोजन किया और २५ फरवरी को रायचर में उनका भाषण हुआ।

श्री गोपाल भट्टाचार्य ने आसाम के सिलचर प्रदेश में ६ मार्च को सोसायटी के नये केन्द्र का उद्घाटन किया। बाद में उन्होंने आसाम के विभिन्न स्थानों का दौरा भी किया।

सोसायटी के नये केन्द्र पुद्दुकोटाई (तमिलनाडु), भोवाली (उत्तरांचल), होशंगाबाद (मध्यप्रदेश) तथा जम्मू तावी (जम्मू तथा कश्मीर) में खुले।

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा..... ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५ ००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ नवीन प्रकाशन

अभीप्सा, त्याग, समर्पण शब्द मात्र नहीं, आन्तरिक सत्ता की स्थितियाँ हैं। इनमें से प्रत्येक को उसकी पूर्णता में सिद्ध करना, अपनी सत्ता में सर्वांगीण बनाना अर्थात् सत्ता के हर अंग की चेतना को उस स्तर पर उठाना, प्रदीप की लौ का रूप प्रदान करना श्रीअरविन्द के अतिमानसिक योग में अनिवार्य चरण है। इसी विषय को सर्वसाधारण के लिये बोधगम्य बनाने का प्रयास है "दिव्य जीवन की ओर"। पृ० १६०, मूल्य : ४०रु०।

हर विचारशील व्यक्ति के सामने आज एक प्रश्न है। "अतिमानस क्या है ?" श्रीअरविन्द के द्वारा बार-बार घोषणा करने पर भी इसके अस्तित्व में, इसके पृथ्वी पर अवतरित होने में विश्वास करना मानव बुद्धि के लिये कठिन पड़ रहा है। इसे सरल, बोधगम्य बनाने का प्रयास है "अतिमानस की ओर"। पृ० १६०, मूल्य : ५० रु०।

मनुष्य की संपूर्ण सत्ता का, उसके निम्नतम भाग शरीर का भी आत्मा की दिव्यता में रूपान्तर संभव है। रूपान्तरित शरीर एक ओर, प्राकृतिक शक्तियों से सब प्रकार स्वतंत्र तथा दूसरी ओर, जरा, व्याधि, मृत्यु से पूर्णतः मुक्त होगा—अतिमानस के द्वारा आत्मा की दिव्यता में रूपान्तरित ज्योतिर्मय शरीर होगा। रूपान्तर के विषय में हमारी धारणा सुस्पष्ट हो, इसी का प्रयास है, "रूपान्तर की ओर"। पृ० १६०, मूल्य : ५० रु०।

प्राप्ति स्थान

श्रीअरविन्द बुक्स डिस्ट्रीब्यूशन एजेंसी
श्रीअरविन्द आश्रम, पांडिचेरी -२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

भारत का विशिष्ट भाव और अभीप्सा है आध्यात्मिक आदर्श। लेकिन काल की प्रगति और मानवजाति की आवश्यकता की मांग है उस आदर्श को एक नया रूप और नया दिग्विन्यास देना। पुराने रूप और तौर-तरीके काल-पुरुष के उद्देश्य के लिये पर्याप्त नहीं हैं। भारत अपने-आपको उन कदमों के लिये, जो उसे आगे चलकर उठाने हैं, उन रेखाओं पर परिपूर्ण नहीं कर सकता जो बहुत संकीर्ण हैं। न ही हमारी आध्यात्मिकता किसी ऐसे जगत् की है जो बूढ़ा, घिसा-पिटा है और भगवान् की समस्त महान् सृष्टि के बारे में यह भाव लिये है कि वह भ्रम, दैन्यपूर्ण अनुपयोगिता से भरी है। हमारा आदर्श वह आध्यात्मिकता नहीं है जो जीवन से हाथ खींच लेती है बल्कि वह है आत्मा की शक्ति से जीवन पर विजय पाना। वह संसार को भगवान् की अभिव्यक्ति द्वारा स्वीकार करने का प्रयास है, साथ ही अभीतक जो कुछ प्राप्ति हुई है उससे अभिव्यक्ति के अधिक प्रयास द्वारा मानवजाति को रूपांतरित करने की कोशिश भी है, उसमें भगवान् और मनुष्य के बीच का परदा हट जायेगा और हम जिस दिव्य मानवता के योग्य हैं उसका जन्म होगा और हमारा जीवन आत्मा के सत्य, प्रकाश और उसकी शक्ति में फिर से गढ़ा जायेगा। उसका उद्देश्य है हमारे सारे कर्म को हमारे कर्मों के स्वामी के प्रति न्योछावर करना, मनुष्य के अंदर महत्तर आत्मा की अभिव्यक्ति और समस्त जीवन को योग के रूप में अभिव्यक्त करना।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

अद्‌भुत उदाहरण

आजकल कई प्रदेशों में पानी के लिये लोग तरसते हैं किंतु कुछ वर्ष पानी का इतना अपव्यय हुआ था कि अब लोगों को सरकारी सहायता की याचना करनी पड़ रही है। गुजरात में इस वर्ष के भूकंप के बाद पानी के लिये हाहाकार मच रहा है। लेकिन कहा जाता है न "हिम्मते मर्दां तो मददे खुदा," इस उक्ति से साहस बटोर कर सौराष्ट्र के छोटे-से गांव ने पानी की समस्या का हल करने के लिये कमर कस ली। आज सौराष्ट्र की वीरान अवस्था देखकर लोग कहते हैं कि जल्दी यह स्थान रेगिस्तान बन जायेगा। इसी सौराष्ट्र के नगण्य गांव राजसमठिया ने ही वामन की तरह अपने विराट् कदम बढ़ा कर डराते हुए अकाल को भूमिगत कर दिया। आश्चर्य की बात यह है कि इस गांव में वर्षा की मात्रा कम होती है। कुछ वर्ष पूर्व इस गांव को विशेष उपाधि दी गयी थी। क्या होगी उपाधि ? यही, निराधार गांव ! और इस निराधार गांव में पिछले वर्ष वर्षा केवल चार इंच की हुई। गांव की कार्यकारिणी समिति ने वर्षा के पानी को पूरी तरह रोक कर पानी-संग्रह योजना बनायी। इस समिति में गांव की हर जाति का सदस्य था। पंचायत के सरपंच श्री हरदेवसिंह जाड़ेजा, अंग्रेजी साहित्य का विषय लेकर बी. ए. पास कर गांव में आ बसे थे। अब के पढ़े-लिखों का दिमाग खूब चलता है न ? उन्होंने अपनी योजना, जिसे वे "गोकुल ग्राम-योजना" कहते हैं, उसके लिये सरकार की "इन्डियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइज़ेशन" से सहायता मांगी और उन्होंने पूरी योजना के लिये नक्शा बना दिया। अब काम किया गांव की समिति ने। गांव के सरपंच श्री हरदेवसिंह ने बताया, "नक्शे के अनुसार हमने जगह-जगह टंकियां बनवायीं, बीच में नहरें बांधीं और बांध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनवाये। अब इनके गांव में पैंतालीस बांध हैं, तेरह कुएं हैं। नहरों से पानी को कुओं में इकट्ठा करने की व्यवस्था है। इस योजना के कारण कुओं में पानी तीन गुना ज्यादा इकट्ठा हो जाता है।'' गांववालों का कहना है कि यह पानी जुलाई तक काम आयेगा। गांव की स्त्रियों को पानी खोजने जाना नहीं पड़ता। जिन घरों में नल लगे हैं उनमें पंचायत ने व्यवस्था की है कि पानी आता रहे। यह गांव उदार है और उदार भी उस चीज के लिये जिसे उसने बड़े श्रम से पाया है, वह है पानी! आसपास के गांव से स्त्रियां पानी भरने आती हैं और उन्हें कभी मना नहीं किया जाता है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी एक कविता में लिखा था "जदि तोर डाक शुने केओ ना आशे, तौबे एकला चलो रे'' वे कहते हैं "अगर तेरी पुकार सुनकर कोई न भी आये, फिर भी तू अकेला ही चलता जा''। और इस गांव ने अकेले ही साहस बटोर कर अपनी सुविधाएं जुटा लीं। रेगिस्तान बनते सौराष्ट्र में इस गांव की सफलता ने सरकार की आंखें खोल दीं। जहां अन्यत्र चारों ओर ऊसर खेत दिख रहे हैं, वहां राजसमठिया में लहलहाती हरियाली है। गांववालों ने मूंगफली, तरकारियां और कपास लगाया है। एक किसान कह रहा था, "पानी कम बरसा है इसलिये हमें थोड़ा नुकसान तो हुआ फिर भी हमारी कमाई में केवल तीस प्रतिशत की कमी है।'' श्री जाड़ेजा का कहना है कि इन सब कठिनाइयों के बावजूद गांव ने एक करोड़ रुपये मूंगफली, कपास बेचकर कमाये हैं।

गुजरात सरकार ने राजसमठिया को आदर्श गांव घोषित किया है और गांव की पंचायत को सर्वश्रेष्ठ पंचायत होने के नाते २५000/ का पुरस्कार दिया।

तो, राजसमठिया ने न केवल अपनी समस्याओं का हल ढूंढ़ निकाला बल्कि असंख्य गांवों के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

हम राजसमठिया को बधाई दें और आशा करें कि वहां के लोग भविष्य में भी ऐसे साहस का उदाहरण रखते रहें। —अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

जुलाई

१. प्रगति के लिये हर एक चीज का उपयोग किया जाता है; हर चीज उपयोगी हो सकती है अगर हम यह जानें कि उसका उपयोग कैसे किया जाये।

महत्त्वपूर्ण चीज यह है कि हम जिस आदर्श को चरितार्थ करना चाहते हैं उसे कभी आंखों से ओझल न होने दें और इस लक्ष्य को नजर रखते हुए सभी परिस्थितियों का उपयोग करें।

और अंत में, चीजों के पक्ष या विपक्ष में मनमाना फैसला न करना हमेशा अच्छा होता है, और साक्षी की निष्पक्षता के साथ घटनाओं को खिलते देखना और उस 'भागवत प्रज्ञा' पर निर्भर रहना ज्यादा अच्छा रहता है जो सबसे अच्छे के लिये निर्णय करेगी और जो आवश्यक होगा वह करेगी।

२. वर दे कि भागवत प्रेम हमारे हृदय में परम स्वामी बन कर निवास करे और भागवत ज्ञान हमारे विचारों को कभी न छोड़े।

३. श्रीअरविन्द की सहायता निरंतर रहती है : हमें उसे ग्रहण करना सीखना चाहिये।

४. भगवान् को सभी मनुष्यों के साथ एक समान प्रेम है, लेकिन अधिकतर लोगों की चेतना का धुंधलापन उन्हें इस दिव्य प्रेम को देखने से रोकता है।

५. मैं किसी स्वामी, किसी मालिक, किसी कानून, किसी सामाजिक प्रथा का हुकुम नहीं मानती, सिर्फ भगवान् का हुकम मानती हूं।

६. सिर्फ वही जो प्रेम करता है, प्रेम को पहचान सकता है। जो अपने-आपको सच्चे निष्कपट प्रेम के साथ देने में असमर्थ हों, वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी कहीं भी प्रेम को न पहचान पायेंगे और प्रेम जितना ही दिव्य होगा, यानी जितना निःस्वार्थ होगा वे उसे उतना ही कम पहचान सकेंगे।

७. हमने कल जिन्हें देखा था वे तो धरती पर हैं; उनकी उपस्थिति इस बात को सिद्ध करने के लिये काफी है कि वह दिन आयेगा जब अंधकार प्रकाश में बदल जायेगा, और तेरा राज्य धरती पर स्थापित होगा।

८. शोक मत करो। मानव प्रेम अस्थायी है। केवल भागवत प्रेम कभी धोखा नहीं देता।

९. वर दे कि हम इस अद्भुत 'उपस्थिति' के योग्य बन सकें, कि अब से हम में हर चीज इस एक संकल्प पर केंद्रित हो कि हम अधिकाधिक पूर्णता के साथ तेरे उच्च "कार्य" की सिद्धि के लिये समर्पित हों।

१०. निश्चय ही व्यक्ति को प्रेम करने का अधिकार है और सच्चा प्रेम अपने अन्दर अपना आनंद लिये होता है, लेकिन दुर्भाग्यवश मनुष्य अहंकारी होते हैं और तुरंत अपने प्रेम के साथ बदले में प्रेम पाने की कामना को मिला देते हैं, यह कामना आध्यात्मिक सत्य के विपरीत और आवेशों और दुःखों का कारण होती है।

११. हमें प्रतीतियों से चकरा नहीं जाना चाहिये। श्रीअरविन्द ने हमें छोड़ा नहीं। श्रीअरविन्द यहां हैं, हमेशा की तरह सजीव और विद्यमान और यह हमारे जिम्मे है कि उनके काम को उसके लिये आवश्यक पूरी सच्चाई, उत्सुकता और एकाग्रता के साथ चरितार्थ करें।

१२. अपने-आपको भगवान् के आकार में विस्तृत करने और विश्व के जितना विशाल प्रेम पाने के स्थान पर, व्यक्ति भगवान् के आकार को घटाकर स्वयं अपने आकार का बना लेना चाहता है और 'उनके' प्रेम को केवल अपने लिये चाहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३. भगवान् के बिना हम सीमित, अक्षम और असहाय सत्ताएं हैं; यदि हम अपने-आपको पूरी तरह भगवान् के अर्पित कर सकें तो उनके साथ सब कुछ संभव है और हमारी प्रगति असीम होगी।

१४. स्नेह और 'प्रेम' के लिये प्यास मनुष्य की आवश्यकता है, लेकिन वह केवल तभी बुझ सकती है जब वह 'भगवान्' की ओर मुड़े। जबतक वह मनुष्यों में संतोष पाना चाहती है तबतक हमेशा निराश या घायल होती रहेगी।

१५. जब श्रीअरविन्द ने अपना शरीर त्यागा तो उन्होंने कहा था कि वे हमें छोड़ न देंगे। और सचमुच इन वर्षों के दौरान, वे हमेशा हमारे साथ रहे हैं और जो उनके प्रभाव के प्रति ग्रहणशील और खुले हुए हैं उन्हें रास्ता दिखाते और उनकी सहायता करते रहे हैं।

१६. प्रेम की ऐसी प्यास होती है जिसे कोई भी मानवीय संबंध नहीं बुझा सकता। केवल 'भगवत प्रेम' ही उसे संतुष्ट कर सकता है।

१७. पृथ्वी के आरंभ से, जब कहीं और जहां कहीं 'चेतना' की एक किरण को अभिव्यक्त करने की संभावना थी, मैं वहां मौजूद थी।

१८. आत्मदान के बिना प्रेम होता ही नहीं, लेकिन मानव प्रेम में आत्मदान बहुत विरल होता है, वह स्वार्थी और मांगों से भरा रहता है।

१९. मेरे शब्दों को शिक्षा के रूप में न लो। वे हमेशा क्रिया में शक्ति होते हैं जिन्हें निश्चित उद्देश्य के लिये कहा गया है। उन्हें जब उस उद्देश्य से अलग किया जाये तो वे अपनी सच्ची शक्ति खो बैठते हैं।

२०. एक बार तुम भागवत प्रेम को पा लो तो बाकी सब प्रेम, जो छद्मवेशों के सिवा कुछ नहीं हैं, अपनी विकृतियों को छोड़कर शुद्ध हो जाते हैं, और तब तुम हर व्यक्ति में, हर चीज में केवल भगवान् से ही प्रेम करते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१. मेरे आशीर्वाद तुम्हारे साथ तुम्हारी चेतना को विस्तृत और पवित्र बनाने के लिये हैं ताकि हमेशा तुम्हारे अंदर शांति बनी रहे।

२२. सच्चे प्रेम को आदान-प्रदान की कोई जरूरत नहीं होती, कोई आदान-प्रदान हो ही नहीं सकता क्योंकि 'प्रेम' केवल एक ही है, एकमात्र 'प्रेम', जिसका प्रेम करने के सिवाय कोई लक्ष्य ही नहीं है।

२३. वे सभी आत्माएं जो अभीप्सा करती हैं मेरी सीधी देख-रेख में हैं।

२४. प्रत्येक व्यक्ति, जब वह भगवान् की ओर मुड़ता है तो इसी की मांग करता है कि उन्हें ठीक वही करना चाहिये जिसकी वह मांग करे, जब कि भगवान् हर एक के लिये वही करते हैं जो उसके लिये सभी दृष्टिकोणों से उत्तम हो।

२५. यह विश्वास रखो कि मैं हमेशा तुम्हें रास्ता दिखाने के लिये, तुम्हारे काम में और तुम्हारी साधना में सहायता करने के लिये तुम लोगों के बीच हमेशा उपस्थित रहती हूं।

२६. मनुष्य की कामना जब संतुष्ट नहीं होती तो वह अपने अज्ञान और अंधेपन में भगवान् के विरुद्ध विद्रोह करता है और उनसे कहता है, "तुम मुझसे प्रेम नहीं करते"।

२७. तुम जिन कठिनाइयों को आज नहीं पार कर सकते उन्हें कल या बाद में पार किया जायेगा।

२८. तुम अपने भगवान् के बारे में कहते हो, "मैंने, उनसे प्यार किया है फिर भी वे मेरे साथ नहीं रहते!" लेकिन तुमने उनसे किस प्रकार का प्रेम किया है? तत्त्वतः प्रेम एक ही है, ठीक उसी तरह जैसे चेतना एक है परंतु अभिव्यक्ति में वह प्रेम हर वैयक्तिक स्वभाव के द्वारा रंगा जाता है और भिन्न हो जाता है।

२९. मेरे साथ संबंध में बालक की तरह सीधे, सरल और सहज बनने की कोशिश करो—यह तुम्हें बहुत-सी मुश्किलों से बचायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३०. तुम अगर अशुद्ध और अहंकारपूर्ण हो तो तुम्हारे अंदर प्रेम भी अशुद्ध और अहंकारपूर्ण, कट्टर, सीमित, संकरा, महत्त्वाकांक्षी, अधिकार जमानेवाला, उग्र, ईर्ष्यालु, गंवारू, पाशविक और क्रूर होता है। क्या इस प्रकार का प्रेम भगवान् को भेंट किया जा सकता है?

३१. जब सच्चा और पवित्र प्रेम हो, (भगवान् का प्रेम और भगवान् के लिये प्रेम) तो जो भी हो उसका उपयोग ऐक्य को बढ़ाने और उसे पूर्ण करने के साधनस्वरूप होता है। यह चिन्ता, पश्चात्ताप और अवसाद के लिये कोई जगह नहीं छोड़ता, इसके विपरीत चेतना को विजय की निश्चिति से भर देता है।

— — — —

बच्चों से सेवा कराने की बुरी आदत

. . . बहुतेरे माता-पिता ऐसे होते हैं जो अपने बच्चों को निरन्तर कार्य करते रहने के लिये बाधित करते हैं। जब बच्चा चुपचाप बैठता है तब वे समझते हैं कि वह बीमार हो गया है। यहांतक कि, ऐसे माता-पिता भी हैं जिन्हें अपने बच्चों से घरेलू काम कराने की बुरी आदत होती है, और इस तरह वे बच्चों के आराम करने का समय ले लेते हैं। एक बढ़ते हुए स्नायुमंडल के लिये इससे अधिक बुरी चीज और नहीं होती। अत्यंत लगातार होनेवाले प्रयास का दबाव अथवा उसके ऊपर लादे हुए, स्वेच्छापूर्वक पसंद नहीं किये गये कार्य का भार सहने में वह असमर्थ होता है। समस्त प्रचलित भावनाओं और धारणाओं के विरुद्ध मेरा तो मत यह है कि बच्चों से सेवा की मांग करना उचित नहीं है, यह समझना अनुचित है कि माता-पिता की सेवा करना बच्चे का कर्तव्य है।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

दिव्य मां

(गतांक से आगे)

जिस तरह श्रीअरविन्द के आराम के लिये माताजी सब आवश्यकताओं का हमेशा ध्यान रखती थीं उसी तरह श्रीअरविन्द भी अपनी ओर से माताजी के कुशल-क्षेम के बारे में उतने ही सावधान थे। उनकी सभी बाह्य गतिविधियों पर श्रीअरविन्द पूरी निगरानी रखते थे और अंधकार की शक्तियों से उनको बचाने के लिये रक्षा-कवच के एक प्रभा-मण्डल से उन्हें घेरे रखते थे। उन्होंने कहा कि उनकी दुर्घटना इसलिये हुई क्योंकि वे माताजी की रक्षा करने में व्यस्त थे और अपने बारे में बेखबर हो गये थे। उनका यह मानना था कि विरोधी शक्तियां उनपर आक्रमण करने का साहस न कर पायेंगी। उन्होंने कहा "यह मेरी भूल थी"। माताजी स्वयं किसी भी खतरे में जा सकती थीं, किसी भी साहस-कार्य में बेझिझक प्रवेश कर पाती थीं क्योंकि उन्हें श्रीअरविन्द की महान् शक्ति और संरक्षण पर पूरी श्रद्धा थी और वे उनपर पूरी तरह निर्भर थीं। माताजी के संपर्क में जो भी व्यक्ति आया वह जानता है कि माताजी की ऊर्जामयी प्रकृति सभी तरह की मुसीबतों, बाधाओं और खतरों को तुच्छ मानती थी। जब कोई विशेष कार्य करना होता तो वे अपने विषय में बिलकुल चिंता न करती थीं। एक बार उनके स्वास्थ्य में लंबी तकलीफ आ खड़ी हुई, जिसके कारण उनके पांव सूज जाते थे। मैंने देखा कि जब कभी माताजी श्रीअरविन्द के कमरे में आतीं या वहां से निंकलतीं तो श्रीअरविन्द की दृष्टि उनके पांव पर टिकी रहती। ऐसा तबतक होता रहा जबतक उनके पांव अपनी स्वाभाविक स्थिति में न आ गये और यह कुछ वर्षों तक चला। केवल अपने स्वास्थ्य के विषय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ही नहीं, वे अपने सभी क्रिया-कलापों और कार्यक्रमों के बारे में श्रीअरविन्द को हमेशा सूचना देती थीं, जैसे ध्यान के लिये जाते समय, वहां से लौटकर, कार में बाहर जाते समय और लौटने के बाद, किसी मिलनेवाले से मिलने जातीं तो पहले माताजी श्रीअरविन्द से मिलकर जातीं। श्रीअरविन्द भी चम्पकलाल से पूछते रहते कि क्या माताजी ने भोजन कर लिया है, क्या वे सोने के लिये चली गयीं ? जैसा कि मैंने बतलाया, वे तबतक जागते रहते जबतक माताजी के निवृत्त होने की खबर न पाते। अगर संयोग से माताजी को कार के सफर से लौटने में देर होती तो वे बार-बार पूछते रहते। चूंकि माताजी का सारा दिन विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से इतना खचाखच भरा रहता था कि बहुधा भोजन के लिये भी बहुत विलम्ब हो जाया करता था। कभी-कभी माताजी यह बात उन्हें बतातीं किंतु वे उनकी गतिविधियों में कभी हस्तक्षेप न करते, कभी आवश्यक लगता तो धीरे से कुछ परिवर्तन का सुझाव दे देते। माताजी या साधकों पर नियम लादना, किसी भी प्रकार का दबाव डालना उनके स्वभाव के विपरीत था। माताजी के लिये भी वैसा ही था। श्रीअरविन्द नहीं चाहते थे कि हम किसी भी प्रकार माताजी को किसी काम से रोकें। उनकी सुविधा के लिये वे अपनी चलने की कसरत में समय की कटौती करते या भोजन शीघ्र ही समाप्त कर देते।

एक समय ऐसा भी था जब माताजी सतत समाधि की अवस्था में रहती थीं। वह कठोर परीक्षा का समय था। वे श्रीअरविन्द के कमरे में उनींदी चाल से प्रवेश करतीं और दायें-बायें झूमती हुई सी चलती हुई वापस चली जातीं। हम भय और आश्चर्य से उनके नाजुक संतुलन को देखते रहते। श्रीअरविन्द उनको तबतक पूरे ध्यान से देखते रहते जबतक वे आंखों से ओझल न हो जातीं, किंतु हमें बहुत आश्चर्य होता था कि वे अपना अस्थिर संतुलन कैसे रख पाती थीं। कभी-कभी श्रीअरविन्द के बालों को संवारते-संवारते उनका हाथ रुक जाता, कंघी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधर में रह जाती। भोजन परोसते समय भी चमचा यूं ही अटका रह जाता या चाकू स्थिर हो जाता, तब श्रीअरविन्द को नकली खांसी या अन्य आवाज करके उन्हें समाधि से बाहर निकालना पड़ता। पन्द्रह मिनट का काम इस तरह दुगुने समय में होता, उसके बाद माताजी जल्दी-जल्दी हाथ चलातीं ताकि समय की कमी पूरी हो सके। इस तरह की समाधि रात के सामूहिक ध्यान के समय—जब वे नीचे जातीं—बहुत बार हुआ करती थी और उनके ऊपर आने तक बनी रहती थी। ऐसी ही स्थिति में वे श्रीअरविन्द के कमरे में चिट्ठियों, रिपोर्टों, बही-खातों की राशि लिये आतीं और श्रीअरविन्द के चलने के समय उन्हें पढ़कर सुनातीं, उनसे हस्ताक्षर करवातीं या उत्तर लिखतीं। लेकिन कई बार उनके ये पवित्र अभिप्राय क्रियान्वित न हो पाते क्योंकि जैसे ही वे काम शुरू करतीं कि समाधि उनपर हावी हो जाती। श्रीअरविन्द और दिनों से अधिक चक्कर लगाकर कुरसी पर बैठ जाते और माताजी की ओर निहारते रहते जो खुली पुस्तक के सामने हाथ में कलम लिये किसी अन्य जगत् में होतीं जिसकी सीमा से उन्हें बाहर निकालना कठिन होता। श्रीअरविन्द स्नेहिल स्मित से उन्हें देखते रहते और उन्हें पृथ्वी पर उतारने के लिये हर तरह की युक्तियों का प्रयोग करते। हम पास खड़े रहते, इस आनंदमय दृश्य को देखनेवाले भाग्यशाली दर्शक! जब अंत में माताजी जग उठतीं, तो श्रीअरविन्द मुस्कुरा कर कहते, "हम बहुत प्रगति न कर पाये!" फिर वे दृढ़ निश्चय कर झटके में सारा काम समाप्त कर देतीं या फिर अगर समाधि अति गहरी होती तो अपने कमरे में चली जातीं। एक बार श्रीअरविन्द ने देखा कि वे किसी पुस्तक पर अपने बन्द कलम से कुछ लिख रही थीं। श्रीअरविन्द उनकी ओर देखते रहे। अचानक माताजी को अपनी भूल का पता लगा और श्रीअरविन्द के मुख पर एक शालीन मृदु मुस्कान फूट पड़ी। ध्यान के समय भी माताजी की अवस्था असाधारण बनी रहती। उस समय कोई प्रणाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने आता तो वह उनकी ध्यान-मुद्रा के सामने पंद्रह से तीस मिनट तक खड़ा रहता। दूसरे के नत मस्तक पर उनका हाथ काफी लंबे समय तक रहता, सब कुछ अनिश्चित रहता। एक बार ऐसी विरल परिस्थिति भी आयी जब श्रीअरविन्द ने माताजी के कार्य में हस्तक्षेप किया। सामूहिक ध्यान के लिये जाने से पहले माताजी श्रीअरविन्द के कमरे से निकल कर थोड़ा विश्राम करने के लिये अपने कमरे में गयीं, शायद नीचे जाने के लिये थोड़ा समय बाकी था। लेकिन जब वे बैठ गयीं तो देश और काल लुप्त हो गये, वे गहरी समाधि में चली गयीं। इधर नीचे भीड़ प्रायः रात के एक बजे तक उनकी प्रतीक्षा में बैठी रही। श्रीअरविन्द को जब यह सूचना दी गयी तो उन्होंने कहा कि सब लोग आज के लिये घर चले जायें। समाधि से जगने पर जब माताजी ध्यान के लिये नीचे जाने की तैयारी करने लगीं तो उन्हें सारी बात बतलायी गयी।

ध्यान के बाद माताजी श्रीअरविन्द की सेवा का अंतिम कार्य करती थीं। उस समय भी अगर समाधि का दौर उनपर हावी हो जाता तो कभी-कभी हम प्रायः सुबह तक उनकी प्रतीक्षा में बैठे रहते। पुराणी, जो श्रीअरविन्द की सेवा के लिये रात के दो बजे उठ जाया करते थे, हमें तबतक जगा हुआ देखकर हमारी अनियमित दिनचर्या का मजा लेते!!

उसके बाद माताजी अपने कमरे में जाकर अपना "फूलों का काम" उसी समाधि की स्थिति में शुरू करतीं। हम जानते थे कि उन्हें फूल बहुत प्रिय थे विशेष कर गुलाब। स्वयं गुलाबों के कारण भी और उनकी शक्ति को प्रसारित करने की गुलाबों की क्षमता के लिये भी। आश्रम के बगीचों से कई सौ गुलाब रोज उन्हें अर्पित किये जाते थे। वे उन्हें थालियों में फैलातीं, उन्हें आकार, रंग इत्यादि के अनुसार चुनतीं, उन्हें अच्छी तरह कतरतीं और अलग-अलग गुलदानों में सजातीं। इस काम में एक साधिका उनकी सहायता करती। यह काम प्रायः सवेरे तक चलता रहता, फिर वे एक-दो झपकी लेने के लिये विश्राम करने जातीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे ही समय एक बार औषधालय के काम के बारे में मेरी उनसे लंबी बातचीत हुई। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि ऐसी समाधि की स्थिति में भी उनके हाथ सधे हुए ढंग से चलते रहे, कैंची का उपयोग करना, फूलों का कतरना, सब चलता रहा और साथ-साथ वे मेरी समस्याओं का हल भी देती रहीं। इस घटना के बहुत समय बाद मुझे इसका उत्तर मिला और वह भी हमें लज्जित करते हुए। घटना इस प्रकार घटी—वे श्रीअरविन्द के बाल बनाने आयी थीं और जैसा उन दिनों होता था समाधि उनपर हावी हो गयी। उनकी आंखें अधमुंदी थीं, शरीर डोल रहा था किंतु हाथ अपना काम किये जा रहे थे। हम दो जो उस समय कमरे में नियुक्त थे यह मानकर निःशब्द मजाक करने और खेल खेलने लगे कि हमारी निर्दोष शरारत को वे देख न पायेंगी। किंतु कमरे से जाते समय उन्होंने हमसे कहा, "मैं सब देख सकती हूं। मेरे सिर के पीछे भी आंखें हैं।" हमारी घबराहट का अनुमान आप लगा सकते हैं! हमने सुना था कि तेओं नामक गुह्यवादी के अनुसार माताजी सबसे महान् गुह्यवादी थीं। हमें इस उक्ति के कई छोटे-मोटे व्यक्तिगत प्रमाण मिल चुके थे, फिर भी इस तरह समाधि की अवस्था में बाल संवारते समय इस छोटी घटना ने हमें हक्का-बक्का कर दिया। ऐसा लगता है कि जब उनकी बाह्य इन्द्रियां चुपचाप या निष्क्रिय रहतीं फिर भी उनकी आंतरिक इन्द्रियां कार्यरत रहती थीं। एक बार उन्होंने कहा था कि वे वातावरण के प्रति अत्यंत संवेदनशील हैं। वे तुरंत किसी स्थान का या व्यक्तियों के स्पंदनों का अनुभव कर लेती हैं।

पिछले अध्यायों में मैंने माताजी की व्यवस्था-शक्ति, उनकी दूरदर्शिता और श्रीअरविन्द की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के प्रति उनके व्यावहारिक ज्ञान का थोड़ा और परिचय दिया है। अब मैं आश्रम के बृहद् संदर्भ में उनकी कार्य-शैली का वर्णन करूंगा जिसे मैं श्रीअरविन्द की उपस्थिति में जान पाया। जब वे किसी परियोजना को शुरू करने का निर्णय लेतीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो पूरी तरह एकाग्र होकर उसमें लग जातीं और तबतक उसमें एकाग्रचित्त रहतीं जबतक कि वह काम पूरा न हो जाता या जबतक उसका आधार मजबूत न हो जाता। इसी तरह वे एक ही दिन में कई परियोजनाओं में संलग्न रहतीं। वे एक ही साथ एकलक्ष्यी और साथ-साथ बहुमुखी होकर भी रह सकती थीं। मेरा ख्याल है कि सभी महान् कार्यकर्ताओं की यही कार्य-शैली होती है।

उदाहरण के तौर पर 'गोलकोण्ड'[१] के निर्माण को ही ले लें। मैं उसके निर्माण-कार्य के ब्यौरे में नहीं जा रहा, फिर भी यह कहना चाहूंगा कि हमारे पास न अधिक काम करनेवाले थे और न पर्याप्त धन फिर भी इतनी भव्य इमारत कैसे उठ खड़ी हुई यह एक चमत्कार था! एक अमरीकी वास्तुविद् अपने जापानी और चेकोस्लाव सहायकों के साथ यहां आ पहुंचे। पुरानी इमारतें तोड़ी गयीं, हमारे साधक और मजदूर एकजुट होकर दिन-रात काम करते रहे मानों शून्य में से चुपचाप, धीरे-धीरे एक शानदार इमारत हवा में खड़ी हो गयी। उन दिनों के पांडिचेरी के लिये यह एक अविश्वसनीय कहानी-सी है। माताजी ने इस कार्य में जो भूमिका निभाई मुझे उसपर आश्चर्य है। इसमें वे आंतरिक रूप से जो कार्य कर रही थीं उसे समझना तो मेरे बूते से बाहर की बात है लेकिन दिन के प्रकाश में वे जो काम करती थीं, वह भी कम आश्चर्यजनक न था। वे अपने चुने हुए लोगों के द्वारा कार्य-विषयक सभी बातें जान लेती थीं। अधिक-से-अधिक साधकों को उस काम में भेजा करतीं। जो कोई भी हो—चाहे वह युवा हो या वृद्ध—चाहे वह कुछ समय के लिये काम मांगता या पूरे दिन के लिये—उनका एक ही उत्तर होता "गोलकोण्ड में काम करो, गोलकोण्ड में काम करो," श्रीअरविन्द के साथ बातचीत में इस विषय की चर्चा वे रोज करतीं, उस काम की कठिनाइयों,

[१] आश्रम की एक अतिथिशाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असंख्य मुसीबतों के बारे में बतातीं और साथ-साथ उन सबके पार जाने के लिये उनकी सहायता की मांग भी करतीं। विशेषकर जब कोई महत्त्वपूर्ण काम हो और वर्षा उसमें बाधा डालने या उसे बिगाड़ने की धमकी देती हो तो माताजी उनकी विशेष सहायता के लिये निवेदन करतीं, जैसे जब छत पड़नी हो। हमने उन्हें कितनी बार प्रार्थना करते हुए सुना, "प्रभु, वर्षा नहीं होनी चाहिये।" धमकाते हुए बादल जुटे हुए हैं, तूफानी अशुभ पश्चिमी हवा जोरों से चीख रही है और पांडिचेरी की मूसलाधार वर्षा के आसार हैं! ऐसे समय हम आकाश की ओर ताकते और दिव्य शक्ति और प्रकृति की शक्ति की लड़ाई के परिणाम का अनुमान लगाते रहते। निश्चित रूप से दिव्य शक्ति जीत जाती; आहिस्ता-आहिस्ता उफनता तूफान अपनी शक्ति को काबू में कर लेता और अपनी गुफा में जा छिपता। जैसे ही काम समाप्त हो जाता जल मानों प्रतिशोध में मूसलाधार बरसाता। श्रीअरविन्द ने बताया कि इन प्राकृतिक शक्तियों का यही नियम है कि जब उन्हें रोका जाये तो बाद में इसी तरह वापस आती हैं। जब फसल काटने का समय हो तब भी माताजी की ओर से श्रीअरविन्द के पास सहायता के लिये प्रार्थना भेजी जाती कि वे वर्षा को कटाई के समय रोके रखें। वे मुसकुराते और अपना काम चुपचाप करते। अगर मैंने और कोई चमत्कार नहीं देखा हो, तो इस चमत्कार को मैं दृढ़ता से कहता हूं कि कई बार देखा था। गोलकोण्ड की छत-निर्माण के समय काम सारी रात चलता था और माताजी जितने व्यक्ति मिलते उन्हें संघटित करतीं और काम में लगा देतीं। माताजी की पुकार पर कितने उत्साह और आनन्द से हमारे युवक इस काम में कूद पड़ते थे! वे श्रीअरविन्द का नाम लेते ताकि इस श्रमसाध्य उद्योग में अधिक प्रेम और उत्साह से काम कर पायें! इस सामूहिक दल के पीछे हम अत्यधिक ऊर्जा के स्पंदनों को महसूस करते थे जो उसे प्रबल वेग से चलाती, सहारा देती और प्रेरणा देती थी। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह गोलकोण्ड—आश्रम के अतिथि-भवन—का निर्माण हुआ जो आधुनिक स्थापत्य का अद्‌भुत नमूना है। कई प्रवासी इस इमारत की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। श्रीअरविन्द के एक पत्र के अंश को, जिसमें गोलकोण्ड का उल्लेख है, मैं यहां उद्धृत करता हूं।

"... उन्होंने (माताजी ने) इस आधार पर गोलकोण्ड की योजना बनायी थी। सबसे पहले वे स्थापत्य का उच्च सौन्दर्य चाहती थीं और इसमें वे सफल हुईं। स्थपतियों और स्थापत्य को जाननेवाले लोगों ने उसे उत्साहपूर्वक विलक्षण सिद्धि घोषित किया है। एक व्यक्ति ने कहा है कि यह अपने ढंग की अनूठी, सर्वश्रेष्ठ इमारत है; इसकी तुलना में यूरोप या अमरीका की कोई इमारत खड़ी नहीं रह सकती। एक महान् और विख्यात फ्रेंच स्थपति के विद्यार्थी ने कहा कि जिस विचार को उसके गुरु स्थापत्य में चरितार्थ करना चाहते थे किंतु न कर पाये उसीको भव्य रूप से इस इमारत में उतारा गया है ...।"

(क्रमशः)

—नीरदवरण

विचार

भगवान् का व्यक्तित्व तो है पर गुण नहीं है। जैसा हम अपने पूर्वीय दर्शन में कहते हैं वे अनंत-गुण हैं, उनमें गुणों की अनंत विविधता है लेकिन कोई निश्चित सीमांकन या कठोर विशिष्टता या पारस्परिक असंगति नहीं है। उनकी अतिमानवीय क्रूरता उनकी अवर्णनीय दया में घुल जाती है और उसके साथ सामंजस्य बनाती है, उनकी भयावह शत्रुता उनके तीव्रतम प्रेम का एक मुखौटा है क्योंकि एकमात्र सत् होने के कारण वे उत्तरदायित्वहीन हैं और वे जिन समस्वरताओं का निर्माण करते हैं वे स्वयं उनकी नमनीय इच्छा की कल्पना हैं और वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्वरताएं सौन्दर्यबोध के विधानों द्वारा शासित हैं जिन्हें भगवान् ने अपनी मुक्त, अमोघ और अचूक तरंग द्वारा निर्धारित किया है। अपने अनंत व्यक्तित्व में से भगवान् इन गुणों का, उनकी अनिवार्य क्रियाओं तथा उनकी नियति का निर्माण करते हैं। हर दैवी स्रष्टा के साथ यही बात है जैसे होमर, शेक्सपीयर, वाल्मीकि, कालिदास। यह पूरी तरह सच है कि हर एक की अपनी भाषा और रचना-शैली है, अपनी पसंद की पद्धति या काव्य-कला की अपनी समस्वरता होती है जैसे इस सृष्टि के रचयिता ने इस सृष्टि को एक विशेष शैली और छंद, कुछ अपनी पसंद के निश्चित नियमों के अनुसार बनाया है जो अन्य सृष्टियों से भिन्न हैं जिनकी उसने अपनी अनंत सत्ता में रचना की होगी। लेकिन उस शैली और समस्वरता में वे स्रष्टा किसी निश्चित व्यक्तित्व से बंधे हुए नहीं हैं; वे अपनी रचनाओं द्वारा अपने व्यक्तित्व को नहीं, बल्कि अनंत को झीने-झीने रूप में प्रकट करते हैं। जो लेखक अपने व्यक्तित्व में सीमित होते हैं वे साहित्य के अच्छे कलाकारों में हो सकते हैं, परंतु वे महान् स्रष्टाओं में नहीं गिने जा सकते। क्योंकि स्रष्टा के लिये स्वाधीनता और अनंतता आवश्यक गुण हैं। केवल अनंत ही सृजन कर सकता है। ससीम केवल रचना कर सकता है। प्रतिकृति कर सकता है या अधिक-से-अधिक सुन्दर कला-कौशल प्रकट कर सकता है। एलिजाबेथ काल के सभी नाटककारों में केवल शेक्सपीयर ने ही जीवंत मनुष्यों का सृजन किया है। बाकी सब सराहनीय, छोटे-मोटे या दानवाकार रेखा-चित्र हैं, मनुष्यों की प्रतिमाएं या उनके व्यंग्य-चित्र हैं। लेकिन इस नियम का एक अपवाद है। हर एक आदमी अपने सर्वोत्तम क्षणों में किसी-न-किसी तरह सृजन कर सकता है, अपनी सत्ता में से एक जीवित-जाग्रत प्राणी या चरित्र निकाल सकता है। हमारी भारतीय भाषाओं में सर्जन का एक अर्थ है बाहर निकालना, अपनी सत्ता में से मुक्त करना। मिलटन ने कई सुस्पष्ट और सुन्दर या सूक्ष्म रेखाएं या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्णन तो दिये हैं लेकिन जीवित पात्र केवल एक है, विद्रोही फरिश्ता—शैतान। और शैतान भी पैरेडाइस लॉस्ट के केवल पहले चार सर्गों में जीवित है। जब मिलटन अपनी पतित अवस्था में अपना चित्रण करना बंद कर देता है और केवल अपनी कथा-वस्तु और विषय के बारे में सोचता है तो शैतान भी जीवित नहीं रहता। लेकिन महान् निर्वैयक्तिक स्रष्टा अपने छोटे-से-छोटे सर्जनों में भी जीवन का सर्जन किये बिना नहीं रह सकते। मैं निर्वैयक्तिक कह रहा हूं परंतु मेरा मतलब निर्गुण से नहीं है जो गुण से अछूता हो, मेरा मतलब है ऐसा जो गुण से बंधा हुआ और सीमित न हो—एक अनंत और अवर्णनीय व्यक्तित्व जिसका निर्माण नहीं किया जाता या जिसे होशियारी से रूप नहीं दिया जाता, बल्कि जिसका निर्माण एक अंतर्भासिक संकल्प की बेधक दृष्टि से किया जाता है और जो पूर्णता की पराकाष्ठा होता है।

—श्रीअरविन्द

प्राण की तपस्या

अगर तुम समग्र सौन्दर्य और सामंजस्य में जीने के आनंद की ओर खुलना चाहते हो तो तुम्हें अपने-आपको सुख-भोगों से वंचित रखना होगा।

यह स्वभावतः हमें प्राणिक तपस्या की ओर ले आता है : संवेदनों की तपस्या, शक्ति की तपस्या की ओर। प्राणमय पुरुष वास्तव में शक्ति का, उपलब्ध करनेवाले उत्साह का आधार है। प्राण में ही विचार संकल्प में बदलकर कर्म की सक्रियता का रूप लेता है। यह सच है कि प्राण ही कामनाओं और आवेगों, उग्र आवेशों और साथ ही उतनी ही उग्र प्रतिक्रियाओं की, विद्रोह और अवसाद की भूमि है। साधारणतः, इसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाज है गला घोंट देना, इसे संवेदनों से वंचित कर देना। वास्तव में, संवेदन ही इसका मुख्य आहार हैं और उनके बिना यह सो जाता है, शिथिल और मन्द पड़ जाता है और अंत में पूरी तरह खाली हो जाता है।

तो अगर हम अपने प्राण को भूखा नहीं मारना चाहते तो संवेदनों का न तो त्याग करना चाहिये, न उन्हें कम करना या भोथरा बनाना चाहिये। उनसे बचने की भी जरूरत नहीं है, बल्कि उनका बुद्धि और विवेक के साथ उपयोग करना चाहिये। संवेदन ज्ञान और शिक्षा के लिये बहुत अच्छे यंत्र हैं। उन्हें इस काम में उपयोगी बनाने के लिये जरूरी है कि उनका उपयोग अहंकारपूर्ण हेतु के लिये, आमोद-प्रमोद के लिये या सुख और आत्म-तुष्टि की अंधी अज्ञानमय खोज के लिये न किया जाये।

इन्द्रियों को हर चीज घृणा या अप्रसन्नता के बिना ले सकनी चाहिये और साथ ही उन्हें विभिन्न प्राणिक स्पंदनों के गुण, स्रोत और परिणाम के बारे में अधिकाधिक विवेक-शक्ति विकसित करनी चाहिये और यह जानना चाहिये कि वे भौतिक और प्राणिक सत्ता की प्रगति और उनके संतुलन में सहायक हैं या नहीं। इसके अतिरिक्त, भौतिक और प्राणिक जगत् को उनकी सारी जटिलताओं के साथ समझने और उनका अध्ययन करने के लिये साधन के रूप में इंद्रियों का उपयोग होना चाहिये। इस तरह वे रूपांतर के महान् प्रयत्न में अपना सच्चा स्थान लेंगी।

प्राण को कमजोर बनाकर नहीं, बल्कि उसे प्रकाशयुक्त, बलवान् और शुद्ध करके ही व्यक्ति सत्ता की सच्ची प्रगति में सहायता दे सकता है। अपने-आपको संवेदनों से वंचित करना भी उसी तरह हानिकर है जैसे भोजन से वंचित रखना। लेकिन जैसे भोजन का चुनाव बुद्धिमत्ता के साथ, शरीर के विकास और उसके व्यापार-विशेष को ध्यान में रखते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए करना चाहिये, उसी तरह संवेदनों का चुनाव और नियंत्रण भी विशुद्ध वैज्ञानिक ढंग की तपस्या के द्वारा, इस अत्यधिक सक्रिय यंत्र की उन्नति और पूर्णता को ही ध्यान में रखते हुए करना चाहिये, क्योंकि वह सत्ता के अन्य सभी भागों के विकास के लिये आवश्यक है।

प्राण को शिक्षा देकर, उसे अधिक शिष्ट, अधिक भावुक और अधिक सूक्ष्म या यूं कहें, अधिक सुरुचि-संपन्न—शब्द के अच्छे-से-अच्छे अर्थों में— बनाकर ही व्यक्ति उसकी हिंसामय उग्रताओं और पाशविकताओं पर विजय पा सकता है। ये चीजें प्रायः उसकी अशिष्टता और अज्ञानमय, सुरुचिविहीन क्रियाएं होती हैं।

वास्तव में, प्राण, जब शिक्षित और प्रकाशयुक्त हो तो, उतना ही महान्, वीर और निःस्वार्थ हो सकता है जितना अभी सहज रूप से शिक्षा के बिना अशिष्ट, अहंकारपूर्ण और विकृत है। अगर हर एक अपने अंदर सुख की खोज को अतिमानसिक पूर्णता की अभीप्सा में बदलना जाने तो यह काफी है। उसके लिये यदि प्राण की शिक्षा अध्यवसाय और निष्कपटताके साथ काफी आगे बढ़ायी जाये तो एक ऐसा क्षण आता है जब उसे लक्ष्य की महानता और उसके सौन्दर्य के बारे में विश्वास हो जाता है और वह भागवत आनंद को पाने के लिये अपनी इंद्रियों के तुच्छ और भ्रांतिजनक संतोषों को त्याग देता है।

—श्रीमां

——

तुम्हारा यहां से चले जाना इसमें जरा भी सहायक नहीं होगा। बाह्य उपाय व्यर्थ हैं; परिवर्तन "अंतर" में होना चाहिये। अपने निश्चय पर दृढ़ रहो। और फिर मेरी सहायता भी काम करेगी।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपनों का देश

. . . हम अपने स्वप्न क्यों भूल जाते हैं ?

क्योंकि तुम हमेशा एक ही स्थान पर स्वप्न नहीं देखते। तुम्हारी सत्ता का वही भाग हमेशा स्वप्न नहीं देखता और तुम हमेशा उसी स्थान पर स्वप्न नहीं देखते। यदि तुम अपनी सत्ता के सभी भागों के साथ सीधे, सचेतन, निरंतर संपर्क में रहते तो तुम अपने सभी स्वप्नों को याद रख सकते लेकिन सत्ता के बहुत थोड़े भाग ही संपर्क में हैं।

उदाहरण के लिये, तुम सूक्ष्म-भौतिक में, अर्थात्, भौतिक के बिलकुल नजदीक ही, एक स्वप्न देखते हो। साधारणतः ये स्वप्न बड़े सवेरे, यानी नींद के अंत में, लगभग चार-पांच बजे के बीच में दिखायी देते हैं। यदि तुम जागते ही अचानक कोई गति न करो, यदि तुम बहुत स्थिर रह सको, बिलकुल चुपचाप और जरा सावधान—चुपचाप सावधान—और एकाग्रचित्त रह सको तो तुम उन्हें याद कर सकोगे, क्योंकि सूक्ष्म-भौतिक और भौतिक में संबंध स्थापित हो जाता है—यह बहुत कम ही होता है कि संबंध न हो।

अधिकतर तुम स्वप्न इसलिये भूल जाते हो क्योंकि स्वप्न देखते समय तुम एक अवस्था में होते हो और फिर दूसरी अवस्था में चले जाते हो। उदाहरण के लिये, जब तुम सोते हो तो तुम्हारा शरीर नींद में होता है, तुम्हारा प्राण सोया रहता है, फिर भी तुम्हारा मन क्रियाशील होता है। इसलिये तुम्हारा मन स्वप्न देखना शुरू करता है, यानी, उसकी क्रिया कम या अधिक समन्वित होती है, कल्पना बहुत सक्रिय होती है और तुम भांति-भांति की चीजें देखने लगते हो, असाधारण घटनाओं में भाग लेते हो . . .। कुछ समय बाद, वह सब ठंडा हो जाता है और मन भी ऊंघने लगता है। प्राण जो अभी तक सो रहा था, जाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठता है, वह शरीर में से बाहर निकल आता है, घूमता-फिरता है, इधर-उधर जाता है, सब तरह की चीजें करता है, प्रतिक्रिया करता है, मार-पीट करता है, वह सब तरह की चीजें करता है। प्राण बहुत साहसी होता है। वह निगरानी करता है। वह जब बहादुरी के आवेश में आता है तो जेल में पड़े बंदियों को बचाने के लिये या शत्रुओं को नष्ट करने के लिये झपटता है या बड़ी अद्‌भुत खोजें करता है। इससे मानसिक स्वप्न कहीं पीछे जा पड़ता है। वह बिलकुल मिटा दिया, भुला दिया जाता है। स्वभावतः तुम उसे याद नहीं कर सकते क्योंकि प्राण का स्वप्न उसकी जगह ले लेता है, लेकिन अगर तुम अचानक उसी समय जाग जाओ तो वह याद रह सकता है। ऐसे लोग हैं जिन्होंने ये परीक्षण किये हैं, जो रात के निश्चित समय पर उठ बैठे, जब वे अचानक उठे तो उन्हें स्वप्न याद था। तुम्हें बहुत हड़बड़ी नहीं करनी चाहिये, बल्कि साधारण ढंग से उठना चाहिये, तब स्वप्न याद रहेगा।

कुछ समय बाद, प्राण सैर पूरी करके आराम करना चाहता है, अपने तरह-तरह के साहस-कार्यों के अंत में बिलकुल थककर विश्राम और शांति चाहता है। तब कोई और चीज जाग जाती है। मान लो, तब सूक्ष्म शरीर सैर के लिये निकल पड़ता है। वह गति करना शुरू करता है और घूमना-फिरना शुरू करता है। कमरों का निरीक्षण करता है ...। यह क्या! यह चीज वहां थी अब यहां आ गयी और वह चीज दूसरे कमरे में थी अब इस कमरे में है आदि-आदि। अगर तुम हिले-डुले बिना जाग जाओ तो तुम्हें बातें याद रहती हैं। लेकिन यह स्वप्न प्राण की सभी कहानियों को चेतना में कहीं पीछे धकेल देता है। अब वे भुलायी जा चुकी हैं और तुम उन स्वप्नों को याद नहीं कर सकते। लेकिन अगर जागते समय तुम जल्दी में न हो, तुम एकदम बिस्तर छोड़ने के लिये बाधित न हो, बल्कि जितनी देर चाहो आंखें खोले बिना ही लेटे रह सको, तो अपने सिर को वहीं बना रहने दो जहां वह था और अपने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको एक शांत दर्पण की तरह बनाकर वहां एकाग्रचित्त होओ। तुम अपने स्वप्न की जरा-सी दुम पकड़ लो। उसे पकड़कर, हिले-डुले बिना खींचना शुरू करो। बहुत धीरे-धीरे खींचो। पहले एक भाग आयेगा, थोड़ी देर में दूसरा भाग आयेगा। तुम पीछे की ओर जाते हो, अंतिम भाग पहले आता है, हर चीज पीछे की ओर जाती है, धीरे-धीरे और फिर अचानक सारा स्वप्न फिर से सामने आ जाता है : "आहा, यह रहा। वह ऐसा था।" सबसे जरूरी यह है कि कूद मत पड़ो, हिलो-डुलो मत। सारे स्वप्न को अपने-आप कई बार दोहराओ—एक बार, दो बार, जबतक कि सारी चीज पूरे विस्तार के साथ स्पष्ट न हो जाये। एक बार वह स्वप्न जम जाये तब भी तुम बिना हिले-डुले पड़े रहो और आगे बढ़ने की कोशिश करो, और अचानक किसी और की दुम तुम्हारी पकड़ में आयेगी। वह ज्यादा दूर है, ज्यादा अस्पष्ट है लेकिन फिर भी तुम उसे पकड़ सकते हो। और यहां भी पकड़े रहो, उसे पकड़कर खींचो। तुम देखोगे कि सब कुछ बदल गया है और तुम किसी और ही दुनिया में जा पहुंचे हो। अचानक एक और ही अपूर्व अनुभव होता है—यह एक नया स्वप्न है। यहां भी वही प्रक्रिया रखो। तुम स्वप्न को अपने आगे एक बार, दो बार दोहराओ जबतक कि उसके बारे में विश्वास न हो जाये। तुम सारे समय बिलकुल शांत बने रहो। तब तुम अपने अंदर और अधिक गहराई में घुसना शुरू करो, दूर, दूर चलते चले जाओ और तुम्हें अचानक एक अस्पष्ट-सा रूप दिखायी देता है, एक संवेदन होता है, एक अनुभूति होती है . . . हवा के एक झोंके की तरह, मंद समीर की तरह, जरा-सी सांस : और तुम कहते हो : "ओहो ! ओहो !" . . . वह एक आकार लेता है—और तीसरी शृंखला शुरू होती है। तुम्हारे पास बहुत समय होना चाहिये, बहुत धीरज होना चाहिये। तुम्हें मन और शरीर में बहुत शांत होना चाहिये, बहुत शांत और तुम अपनी सारी रात की कहानी, अंत से शुरू तक पूरी-पूरी सुना सकोगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कसरत किये बिना भी जो लंबी और कठिन है, स्वप्न याद करने के लिये, चाहे वह अंतिम हो या बीच का कोई स्वप्न जिसने तुम्हारी सत्ता पर जोरदार असर डाला है, तुम्हें जागने पर वही करना चाहिये जो मैंने अभी बताया है : इस बात का खास ख्याल रखो, तकिये पर सिर न हिले। एकदम शांत रहो और स्वप्न को लौट आने दो।

कुछ लोगों में एक स्थिति और दूसरी स्थिति के बीच कोई रास्ता नहीं होता, बीच में छोटी-सी दरार होती है और वे एक से दूसरे पर कूदते-फिरते हैं। सत्ता के सभी स्तरों के बीच कहीं कोई राजमार्ग नहीं जिसमें चेतना कहीं भी कटती न हो। यह एक छोटे काले सूराख के समान है जिसके बारे में हमें याद नहीं रहता। यह एक छोटी खाई के समान है जहां चेतना को बढ़ाना जरूरी है। पुल बनाने में बहुत देर लगती है। इसमें भौतिक पुल बनाने की अपेक्षा ज्यादा समय लगता है . . .। बहुत कम लोग यह बनाना चाहते हैं और बनाना जानते हैं। हो सकता है कि वे रात को शानदार कार्य करते हों, पर उन्हें कुछ भी याद नहीं रहता या कभी-कभी सबसे अंत का, सबसे नजदीक का अत्यंत भौतिक कार्य याद रहता है, बिना समन्वय की गतियां याद रहती हैं—अर्थहीन स्वप्न।

लेकिन जितने विभिन्न प्रकार के दिन और रात की गतिविधियां हैं, उसी तरह उतने ही प्रकार की रातें और उतने ही प्रकार की नींद होती है। ऐसे दिन अधिक नहीं होते जो एक समान हों। हर दिन अलग होता है। सब दिन एक नहीं होते, रातें भी एक नहीं होतीं। ऊपरी दृष्टि से तुम और तुम्हारे दोस्त भले एक ही चीज कर रहे हों, लेकिन हर एक के लिये वह अलग है और हर एक की अपनी ही प्रक्रिया होनी चाहिये।

६ मई, १९५३

'श्रीमातृवाणी' खण्ड ५
पृ० ३३—३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे का-सा विश्वास

श्रद्धा का अवतरण होने के लिये कौन-सी शर्तें हैं ?

सबसे आवश्यक शर्त है बच्चे का-सा विश्वास, बच्चे का-सा निश्छल विश्वास कि चीज होकर रहेगी। बच्चा अपने-आपसे इसके बारे में पूछता तक नहीं; जब उसे किसी चीज की जरूरत होती है तो उसे विश्वास होता है कि वह अवश्य आयेगी। तो यह है, इस प्रकार का विश्वास—निश्चय ही यह सबसे जरूरी शर्त है।

अभीप्सा करना अनिवार्य है। लेकिन कुछ लोग बड़े आंतरिक संघर्ष के साथ अभीप्सा करते हैं, श्रद्धा और श्रद्धा के अभाव में, विश्वास और अविश्वास में, विषय के बारे में निश्चित आशावाद और अपने-आपसे "संकट कब आयेगा ?" पूछते हुए निराशावाद के बीच संघर्ष। अगर सत्ता में यह चल रहा हो तो तुम अभीप्सा भले करते रहो, पर तुम्हें कुछ भी नहीं मिलता और तुम कहते हो : "मैंने अभीप्सा की पर कुछ हाथ न आया।" इसका कारण यह है कि तुम सारे समय विश्वास के अभाव से अपनी अभीप्सा को ढाते रहे हो।

. . . "मुझे जिस चीज की जरूरत होगी, वह मुझे दी जायेगी; अगर मैं प्रार्थना करूं तो उत्तर मिलेगा ही; अगर मैं कठिनाई में हूं और सहायता मांगूं तो सहायता मिलेगी—केवल इतना ही नहीं कि वह आयेगी, बल्कि वह सब कुछ व्यवस्थित कर लेगी।" अगर सहज, निष्कपट, बिना ननुनच करनेवाला विश्वास है तो वह सबसे अच्छा कार्य करता है, और अद्‌भुत परिणाम आते हैं। तुम अपने मन के विरोधों और संदेहों के कारण सब कुछ बिगाड़ देते हो। कठिनाई के समय इस प्रकार की धारणाओं से : "ओह, यह तो असंभव है ! मैं यह कभी न कर पाऊंगा। मैं जिस अवस्था में हूं उसे बिलकुल नहीं पसंद करता, लेकिन अगर यह बिगड़ जाये, अगर मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यादा-ज्यादा नीचे खिसकता जाऊं, अगर, अगर, अगर, अगर, अगर . . ." इसी प्रकार तुम अपने और जिस शक्ति को ग्रहण करना चाहते हो उसके बीच दीवार खड़ी कर लेते हो। चैत्य पुरुष में यह विश्वास होता है, उसमें यह बिना किसी छाया, बिना किसी बहस के, बिना किसी विरोध के आश्चर्यजनक रूप से होता है। और जब ऐसा हो तो ऐसी कोई प्रार्थना नहीं होती जिसका उत्तर न मिले, ऐसी कोई अभीप्सा नहीं होती जो सिद्ध न हो।

—श्रीमां

('सूर्यालोकित पथ' से)

भगवान् का लक्ष्य और अभिप्राय

जब कोई अपनी आत्मा को खोजने के लिये आवश्यक आंतरिक प्रयास करता है, उसके साथ एक होने की और उसे अपने ऊपर शासन करने का अधिकार देने की कोशिश करता है तो बहुधा इस शोध के कारण एक अद्‌भुत सम्मोहन आता है जिसके परिणाम-स्वरूप वह सहज रूप से अपने-आपसे कहता है "मुझे जो चाहिये वह मुझे मिल गया, मुझे अनंत आनंद मिल गया ! और अब मुझे किसी और चीज की परवाह नहीं।"

वास्तव में जिन लोगों ने यह खोज की है उन सबके साथ यही हुआ है और कुछ लोगों ने तो इस अनुभूति को सिद्धि के सिद्धांत के रूप में स्थापित कर दिया और कहा, "यह हो गया तो सब कुछ हो गया, और करने के लिये कुछ भी बाकी नहीं रहा; तुम लक्ष्य तक, मार्ग के अंत तक पहुंच गये।"

वास्तव में इससे आगे जाने के लिये बहुत साहस की जरूरत है। आदमी जिस आत्मा को पाता है उसे निर्भीक योद्धा होना चाहिये, जो दूसरों के दुःख देखकर अपने-आपको यह दिलासा देती हुई अपने आंतरिक उल्लास से ही संतुष्ट नहीं हो जाती कि जल्दी हो या देर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे भी इसी स्थिति में जा पहुंचेंगे, मैंने जो प्रयास किया है यह प्रयास करना दूसरों के लिये भी अच्छा है। या व्यक्ति आंतरिक ज्ञान की इस अवस्था से "बहुत ज्यादा शुभेच्छा" या "बड़ी गहरी अनुकंपा" के साथ दूसरों की ऐसी सहायता करे कि वे उसतक पहुंच सकें और यह कि जब हर एक उसे पा ले, बस संसार का अंत हो जायेगा और यह उन सबके लिये अच्छा ही होगा जो दुःख को पसंद नहीं करते!

लेकिन ... एक "लेकिन" आ जाता है यहां। क्या तुम्हें पूरा विश्वास है कि अपने-आपको अभिव्यक्त करते समय परम प्रभु की यही इच्छा थी और उनका यही अभिप्राय था?

समस्त सृष्टि, सारी वैश्व अभिव्यक्ति अगर यही है तो यह एक भद्दा मजाक है। अगर इसमें से निकल जाना ही एकमात्र उद्देश्य हो तो इसे शुरू ही क्यों किया गया! इतना अधिक संघर्ष करने का, इतना कष्ट उठाने का लाभ ही क्या है, ऐसी चीज बनाने का उपयोग ही क्या है जो यदि बाहरी तौर पर देखा जाये तो इतनी दुःखद और नाटकीय है? अगर उसका उद्देश्य केवल यही था कि उसमें से बाहर निकल आना सिखाया जाये—तब तो उसे शुरू न करना ही ज्यादा अच्छा होता।

लेकिन, अगर तुम चीजों की गहराई में जाओ, यदि केवल अहंकार से ही नहीं, अहंभाव से भी छुटकारा पाकर आदमी अपने-आपको पूरी तरह दे दे, बिना कुछ बचाये, पूरी तरह और निष्काम भाव से दे दे, और भगवान् की योजना को समझ सके तो उसे पता लगेगा कि यह एक भद्दा मजाक नहीं है, ऐसा कष्टदायक पथ नहीं है जिससे तुम जरा मार खाकर फिर से आरंभ-बिंदु पर जा पहुंचते हो; बल्कि इसके विपरीत यह तो समस्त सृष्टि को सत्ता का आनंद, सत्ता का सौंदर्य, सत्ता की महानता, उदात्त जीवन की भव्यता, जीवन का सातत्य सिखाने के लिये है और है उस आनंद, उस सौंदर्य और उस महानता का सतत प्रस्फुटन। तब हर चीज का एक अर्थ हो जाता है ...

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे ही आगे बढ़ते चलो

प्यारी मां! श्रीअरविन्द यहां कहते हैं: "उसका (भगवान् का) 'प्रेम' और 'आनंद' उस अनंत दिव्य 'प्रेमी' का 'प्रेम' और 'आनंद' है जो सभी वस्तुओं को उनके पथ से अपनी सुखमय एकता की ओर खींच रहा है।"

(श्रीअरविन्द, 'योग-समन्वय')

सभी वस्तुएं भगवान् के द्वारा आकर्षित होती हैं। क्या विरोधी शक्तियां भी भगवान् के द्वारा आकर्षित होती हैं?

यह निर्भर करता है दृष्टिकोण के ऊपर, हम ऐसा नहीं कह सकते। कारण एक संभाव्य आकर्षण तो है, पर वह इतना प्रच्छन्न और इतना गुह्य है कि उसके अस्तित्व को पहचाना भी नहीं जा सकता।

'जड़-तत्त्व' में, जिसका बाह्य रूप तमस् है (यह केवल बाह्य रूप है, पर फिर भी) भगवान् के लिये आकर्षण का होना एक तथ्य की अपेक्षा कहीं अधिक एक संभावना है; अर्थात् वह एक ऐसी चीज है जो विकसित होगी, पर जो अभीतक इस ढंग से विद्यमान नहीं है कि वह बोधगम्य हो।

यह कहा जा सकता है कि समस्त चेतना, चाहे वह इसे जाने या न जाने—यदि वह इसे नहीं जानती तो भी—भगवान् की ओर आकर्षित होती है। परंतु इस बात को प्रस्थापित करने के लिये वहां कोई चेतना पहले से ही अवश्य होनी चाहिये।

और मानव-प्राणियों के बीच भी, जो वर्तमान समय में पृथ्वी पर सबसे अधिक सचेतन प्राणी हैं, बहुत बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं जो गुप्त रूप से भगवान् की ओर आकर्षित होते हैं, पर जो इस विषय में कुछ भी नहीं जानते और फिर कुछ लोग ऐसे भी हैं जो जान-बूझकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस आकर्षण को अस्वीकार कर देते हैं। संभवतः, उनकी अस्वीकृति के अंदर, उसके पीछे, कोई ऐसी चीज होती है जो तैयारी करती रहती है; परंतु यह न तो स्वेच्छापूर्वक की जाती है और न ज्ञानपूर्वक। . . .

सच पूछो तो, अंततः, प्रत्येक वस्तु भगवान् के द्वारा आकर्षित होगी। केवल, कुछ तो सीधे मार्ग हैं और कुछ चक्करदार रास्ते जिनमें समीप आने से पहले मनुष्य को बहुत दीर्घकाल तक ऐसा लगता है कि वह भगवान् से बहुत दूर जा रहा है। और कुछ ऐसी सत्ताएं हैं जिन्होंने चक्करदार रास्तों को ही चुना है और जो यथासंभव अधिक-से-अधिक देर तक वहां बनी रहना चाहती हैं। तो स्पष्ट ही ये ही वे सत्ताएं हैं जो भगवान् के विरुद्ध युद्ध करती हैं।

यद्यपि, जो सत्ताएं उच्चतर प्रकार की होती हैं, वे बिलकुल अच्छी तरह यह जानती हैं कि यह एक पूर्णतः व्यर्थ और निरर्थक संघर्ष है, इसका कोई फल नहीं, फिर भी वे इसमें सुख पाती हैं। यदि यह चीज उन्हें सर्वनाश की ओर भी ले जाये तो भी उन्होंने इसे करने का निर्णय कर लिया है।

ऐसे मानव प्राणी भी हैं जो पाप-कर्म में लिप्त रहते हैं—किसी एक या दूसरे पाप में, जैसे मद्यपान या स्वापक औषधियों के इंजेक्शन—और वे अच्छी तरह जानते हैं कि यह चीज उन्हें सर्वनाश और मृत्यु की ओर ले जा रही है; परंतु वे जान-बूझकर उसे करना पसंद करते हैं।

उनमें अपने ऊपर संयम नहीं होता।

एक क्षण हमेशा ऐसा होता है जब प्रत्येक व्यक्ति में संयम होता है। और यदि व्यक्ति ने एक बार "हां" न कहा होता, यदि व्यक्ति ने निर्णय न कर लिया होता तो वह उसे न करता।

एक भी मनुष्य ऐसा नहीं है जिसमें अपने ऊपर लादी गयी चीज का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिरोध करने की शक्ति और क्षमता न हो—यदि उसे प्रतिरोध करने दिया जाये। लोग तुमसे कहते हैं : "मैं अन्यथा कर ही नहीं सकता"— इसका कारण यह है कि अपने हृदय की गहराई में वे अन्यथा करना चाहते ही नहीं; उन्होंने अपने पापाचार का दास बनना स्वीकार कर लिया है। एक क्षण ऐसा होता है जब मनुष्य इसे स्वीकार करता है।

और मैं थोड़ा और भी आगे बढ़ रही हूं; मैं कह रही हूं, एक क्षण ऐसा होता है जब व्यक्ति बीमार पड़ना स्वीकार कर लेता है। यदि व्यक्ति बीमार पड़ना स्वीकार न कर ले तो वह बीमार नहीं पड़ेगा। बस, लोग अपने विषय में और अपनी आंतरिक क्रियाओं के विषय में इतने अचेतन होते हैं कि वे यह जानते भी नहीं कि वे क्या कर रहे हैं।

परंतु सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि तुम किस तरीके से वस्तुओं की ओर देखते हो। एक विशेष दृष्टिकोण से देखा जाये तो इस जगत् में कोई चीज पूर्ण रूप से निरर्थक नहीं है। केवल, जो चीजें एक विशेष मुहूर्त में संतोषप्रद और स्वीकार्य थीं वे दूसरे क्षण वैसी नहीं रहतीं। और जब वे स्वीकार्य नहीं रह जातीं तो लोग यह कहना आरंभ कर देते हैं कि वे बुरी हैं, क्योंकि तब उनसे छुटकारा पाने की इच्छा जाग्रत् हो जाती है। परंतु विश्व के इतिहास में (समस्या को अपने छोटे-से ग्रह तक सीमित करने के लिये हम यहांतक कह सकते हैं कि संसार के इतिहास में), मैं समझती हूं कि एक विशेष मुहूर्त में सभी विद्यमान वस्तुओं की अपनी आवश्यकता और अपना महत्त्व था। और जैसे ही मनुष्य आगे बढ़ता है वैसे ही ये चीजें पीछे ढकेल दी जाती हैं अथवा उनके स्थान पर दूसरी चीजें आ जाती हैं जो अतीत से संबंध रखने के बदले भविष्य से संबंध रखती हैं। अतएव, जिन वस्तुओं का अब कोई प्रयोजन नहीं रह जाता उनके विषय में लोग कहते हैं : "ये बुरी हैं", क्योंकि मनुष्य उन्हें बाहर ढकेल देने के लिये अपने अंदर एक उत्तोलक पाने की, आदत से छुटकारा पाने की कोशिश करता है। परंतु एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष मुहूर्त में शायद वे बुरी नहीं थीं, और दूसरी ही चीजें बुरी थीं।

जीवन के कुछ तरीके, अनुभव करने के कुछ तरीके, काम करने के कुछ तरीके होते हैं जिन्हें मनुष्य अपने अंदर बहुत दीर्घकाल तक सहन करता है, और जो तुम्हें परेशान नहीं करते, तुम्हें बिलकुल निरुपयोगी या बुरे या अपने अंदर से निकाल देने लायक नहीं मालूम होते। और फिर एकाएक एक दिन, हम नहीं जानते क्यों, और न हम यह जानते हैं कि क्या हो गया है, पर दृष्टिकोण बदल जाता है, मनुष्य वस्तुओं की ओर ताकता और कहता है : "परंतु यह कैसी बात है ? यह चीज मुझमें है, मैं अपने अंदर इस चीज को लिये हुए हूं ? परंतु यह तो असह्य है, मैं अब इसे बिलकुल नहीं चाहता।" और वह चीज तुम्हें एकाएक बुरी प्रतीत होती है क्योंकि अब ऐसी चीजों के त्यागने का समय हो गया है, क्योंकि तुमने जो मनोभाव ग्रहण किया है या संसार में अपनी प्रगति के पथ पर तुमने जो कदम उठाये हैं उनके साथ ये चीजें मेल नहीं खातीं। ये चीजें अन्यत्र होनी चाहियें, वे अब अपने स्थान में नहीं हैं, इस कारण तुम उन्हें बुरी समझते हो। परंतु वही चीजें जो तुम्हें बुरी प्रतीत होती हैं शायद दूसरे एक निम्नतर स्तर के लोगों के लिये अत्युत्तम होंगी।

संसार में सर्वदा कुछ लोग ऐसे होते हैं जो हमारी अपेक्षा अधिक मंद, अधिक अचेतन, अधिक बुरे, अधिक अज्ञानपूर्ण होते हैं। अतएव जो स्थिति तुम्हारे लिये असहनीय है जिसे तुम और नहीं रख सकते, जिसे अदृश्य होना ही चाहिये वह संभवतः उन लोगों के लिये बहुत ज्योतिर्मय हो सकती है जो निम्नतर भूमिका पर रहते हैं। भला किस अधिकार से तुम यह कहने जा रहे हो : "यह बुरा है ?" बस, तुम इतना ही कह सकते हो : "मैं अब इसे नहीं चाहता, मैं इसे नहीं चाहता, यह मेरी वर्तमान जीवन-पद्धति के साथ मेल नहीं खाती, मैं वहां चला जाना चाहता हूं जहां इन चीजों के लिये अब कोई स्थान नहीं है; वे अब अपने स्थान में नहीं हैं, अब इन्हें कहीं अन्यत्र जाकर अपना स्थान ग्रहण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने दो।" परंतु हम उनके विषय में कोई फैसला नहीं कर सकते। यह कहना असंभव है : "यह चीज बुरी है।" हम अधिक-से-अधिक यही कह सकते हैं : "यह चीज मेरे लिये बुरी है, यह अब मेरे लिये ठीक अपने स्थान पर नहीं है, इसे अवश्य दूर होना चाहिये।" बस, इतना ही। और फिर मनुष्य इसे अपने पीछे पथ पर छोड़ देता है।

और इस प्रकार सोचने और अनुभव करने पर उस व्यक्ति के मुकाबले प्रगति करना कहीं अधिक, बहुत अधिक आसान हो जाता है जो निराश होकर बैठ जाता है और मन-ही-मन सब प्रकार की शोचनीय बातें कहता है और यह कहता है कि मैं कैसा हूं, कैसी विपत्ति भोग रहा हूं, कौन-कौन-से दोष मुझमें हैं और कितनी असंभव बातें मुझे घेरे हुए हैं आदि-आदि। उस समय मनुष्य कहता है : "नहीं, नहीं, वे चीजें अब यहां अपने स्थान पर नहीं हैं, उन्हें कहीं और जाना होगा जहां वे अपने ठीक स्थान पर होंगी और जहां उनका स्वागत किया जायेगा। जहांतक मेरा प्रश्न है, मैं आगे बढ़ रहा हूं, मैं एक सीढ़ी के ऊपर चढ़ने जा रहा हूं, मैं एक अधिक विशुद्ध, अधिक अच्छी और अधिक पूर्ण ज्योति की ओर बढ़ूंगा, और इसलिये ये सब चीजें जो अंधकार को पसंद करती हैं समाप्त हो जानी चाहियें।" बस इतना ही।

प्रत्येक बार जब मनुष्य अपने अंदर कोई ऐसी वस्तु देखता है जो वास्तव में घिनौनी होती है तो निश्चय ही उससे यह सिद्ध होता है कि उसने प्रगति की है। अतएव, विलाप करने और निराशा में डूब जाने के बदले उसे प्रसन्न होना चाहिये; उसे कहना चाहिये : "आह ! यह अच्छा है, मैं आगे बढ़ रहा हूं।"

४ जनवरी, १९५६

'श्रीमातृवाणी', खण्ड ८
पृ० ४-८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजी और श्रीअरविन्द के साथ एक शिष्य का पत्र-व्यवहार

जब मैं यहां पहली बार दर्शन के लिये आया तो मुझे तीसरी अनुभूति हुई। एक रात मैंने कुछ ऐसा सुना जिसकी परिक्रमा की-सी गति थी, वह मेरे सिर के ऊपर उतर रहा था। जैसे ही मैंने यह ध्वनि सुनी कि मैंने सफेद लिबास पहने उन्हीं महिला के छोटे आकार को ऊपर से अपने अंदर उतरते देखा और वे हृदय के मध्य भाग में रुक गयीं। तब से आप जानती ही हैं कि मेरे अंदर क्या हुआ और हो रहा है। यह 'शक्ति' और यह 'व्यक्तित्व' कौन है ? उनका दूसरी के साथ क्या संबंध है, दूसरी का पहली के साथ और तीनों का आपके साथ क्या संबंध है ? मैं उनके और आपके प्रति कैसे सच्चा बन सकता हूं ? क्या करके मैं आपको और परम प्रभु को संतुष्ट कर सकता हूं ?

श्रीअरविन्द : आत्मोद्घाटन और भगवान् के प्रति बढ़ते हुए आत्म-दान द्वारा।

ये सभी माताजी के अंतर्दर्शन हैं और माताजी ने तुम्हें पहली बार देखकर जो अनुभव किया था उसके साथ मेल खाते हैं।

२२ मार्च १९३८

मनुष्य के अंगूठे के जितनी बड़ी प्रदीप्त ज्वाला हृदय-क्षेत्र में है—यह क्या है माताजी ? इसे मैंने कुछ रातों पहले और आज दोपहर को देखा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द : यह हृदय में जलती चैत्य अग्नि है। उपनिषद् में हृदय के अंदर की चैत्य सत्ता को अंगूठे के आकार का बताया गया है—"अङ्गुष्ठ-मात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा"—पहले यह ऐसी चैत्य ज्वाला के रूप में अभिव्यक्त हो सकती है।

८ अप्रैल १९३८

हे मां! हे प्रेम! वर दे कि मेरे हृदय में यह ज्वाला स्थिर और दीप्त होकर जले। आपके चरण कमलों के लिये मुझे सच्चा प्रेम और सच्ची भक्ति दीजिये। हे मेरी आत्मा की अन्तरात्मा! तुम्हारे बिना मैं कहीं का न रहूंगा, मेरा सच्चा जीवन और लक्ष्य पूरी तरह से तुम्हारी कृपा पर आश्रित है। मैं स्वयं को धार्मिक रूप से तुम्हारे पथ-प्रदर्शन में निवेदित कर रहा हूं।

माताजी: मेरे प्रिय बालक,

तुम्हें अपने रास्ते पर ले जाने और तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करने के लिये मेरी सहायता, प्रेम और आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ हैं।

स्नेह के साथ।

११ अप्रैल १९३८

माताजी, आपने 'क' को कैसा पत्र लिखा है! आप एक दिन मेरे सिर को चकरा देंगी अगर वह अभीतक चकरा नहीं गया है! लेकिन मैं जानता हूं, यह केवल उसे विश्वास दिलाने के लिये है।

माताजी: नहीं, मैं जो कहती हूं, हमेशा मेरा वही अभिप्राय होता है।

मेरे प्यारे बालक को प्यार और आशीर्वाद।

४ मई १९३८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाश्वत मां,

मैं अपनी चेतना में बहुत गहरा धंस गया हूं और आप पहले की अपेक्षा कहीं अधिक दूर प्रतीत हो रही हैं। आप अपनी सारी सृष्टि की शाश्वत मां हैं और आपके बहुत-से बच्चे हैं। लेकिन आपकी परम कृपा ही हमारी एकमात्र शरण है और अपनी सुरक्षा के लिये आपके सिवाय हम और किसकी ओर मुड़ें ? लेकिन वर दीजिये कि आपकी कृपा अब अधिक स्पष्ट रूप में हस्तक्षेप करे ताकि मेरी पार्थिव आंखें उस मलिन और भारी पर्दे के बावजूद, जो उनके सामने है, आपकी क्रिया को देख और उसे कुछ-कुछ समझ सकें। और वर दीजिये कि आपकी कृपा मेरे हृदय कमल को पूरी तरह से विकसित कर दे ताकि मैं अंतरात्मा को सम्मोहित करनेवाली आपकी उपस्थिति, उसके मन-मोहक सौंदर्य और भलाई और माधुर्य की पूर्ण भव्यता से भरपूर अंतर्दर्शन का सौभाग्य पा सकूं, ताकि मेरी सारी अपवित्रता धुल जाये और मन की अस्थिरता और आवेश के तूफानी उठाव शांत हो सकें। मैं अपनी अंतरात्मा को आपके हाथों सौंपता हूं।

माताजी : फिर भी मैं तुम्हें अपने अधिक निकट अनुभव करती हूं और मैं तुम्हारे अंदर एक ऐसा उद्‌घाटन देख रही हूं जो पहले कभी न था। मुझे ऐसा लगता है कि जल्दी ही तुम सतह की प्रत्यक्ष रुक्षता के पीछे, सचेतन प्रेम की सदा जलनेवाली ज्वाला को पा लोगे।

आशीर्वाद।

४ जुलाई १९३८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा लक्ष्य

मानवजाति की वर्तमान उपलब्धियों में से कोई, चाहे वे कितनी भी महान् क्यों न हो, हमारे लिये अनुकरण करने योग्य आदर्श नहीं बन सकती। मानव आदर्शों के परीक्षण-क्षेत्र के रूप में विशाल जगत् पड़ा है।

हमारा उद्देश्य बिलकुल भिन्न है और अगर अभी सफलता के अवसर बहुत कम हैं, फिर भी हमें विश्वास है कि हम भविष्य को तैयार करने के लिये काम कर रहे हैं।

मैं जानती हूं कि बाह्य दृष्टिकोण से हम जगत् की बहुत-सी वर्तमान उपलब्धियों से नीचे हैं, परंतु हमारा उद्देश्य मानव मानदण्ड के अनुसार पूर्णता नहीं है। हम किसी और चीज के लिये प्रयास कर रहे हैं जो भविष्य की है।

आश्रम की स्थापना इसीलिये की गयी है और उसका उद्देश्य भी यही है कि वह नये जगत् का पालना बने।

ऊपर की प्रेरणा, ऊपर की पथ-प्रदर्शिका शक्ति और ऊपर की सर्जक-शक्ति नयी उपलब्धियों के अवतरण के लिये कार्यरत हैं।

केवल अपनी त्रुटियों, अपनी अपूर्णताओं और अपनी असफलताओं के नाते आश्रम वर्तमान जगत् का है।

मानवजाति की वर्तमान उपलब्धियों में से किसी में वह शक्ति नहीं है जो आश्रम को उसकी कठिनाइयों में से बाहर निकाल सके।

आश्रम के सभी सदस्यों का पूर्ण परिवर्तन और अवतरण करते हुए 'सत्य' के 'प्रकाश' की ओर सर्वांगीण उद्घाटन ही उसे अपने-आपको चरितार्थ करने में सहायता दे सकते हैं।

निःस्संदेह, यह बहुत कठिन कार्य है, लेकिन हमें इसे पूरा करने की आज्ञा मिली है और हम धरती पर केवल इसी उद्देश्य से हैं।

हम परम प्रभु की 'इच्छा' और 'सहायता' में अडिग विश्वास के साथ अंत तक चलते चलेंगे।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

'श्री नवजात मेमोरियल वार्षिक भाषणों' का आयोजन १९ और २० अप्रैल को पांडिचेरी यूनिवर्सिटी में यूनिवर्सिटी द्वारा ही किया गया। इसके भाषणकर्ता थे—डॉ० डी. राजगणेशन जो प्रोफ़ेसर और यूनिवर्सिटी ऑफ चैन्नइ के शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष भी हैं। उनका विषय था "श्रीअरविन्दोज़ इंटरप्रेटेशन ऑफ ड्रीम्स फाउण्ड इन इण्डियन कल्चर।"

२३, २४ और २५ मार्च २००१ को सोसायटी की महाराष्ट्र शाखा ने मुम्बई के सोफिया भाभा ओडिटोरियम में तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। विषय था—'आत्म-विकास। कार्यशाला का आयोजन श्रीअरविन्द आश्रम के श्री श्रद्धालु और श्रीमती श्रुति ने किया।

वल्लभ विद्यानगर (गुजरात) की सरदार पटेल यूनिवर्सिटी ने २३ और २४ मार्च २००१ को एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया। विषय था—२१वीं सदी में श्रीअरविन्द के प्रकाश में चेतना का परिवर्तन।" इनकी तीन तकनीकी कार्यशालाओं में १६ लोगों ने भाग लिया।

सीन्द्री (बिहार) शाखा ने २४ अप्रैल २००१, दर्शन-दिवस पर, सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जहां उन्होंने 'ओरो अवाइर्स' नामक एक योजना प्रस्तुत की, जिसमें सीन्द्री के स्थानीय विद्यालय के श्रेष्ठ विद्यार्थियों को उनकी वार्षिक परीक्षा के उपरान्त श्रीअरविन्द तथा श्रीमां की पुस्तकें भेंट-स्वरूप दी गयीं। 'हिन्दुस्तान टाइम्स' ने ३० अप्रैल के अपने दैनिक में इसके बारे में लिखा कि 'ओरो अवाइर्स' की पुस्तकें हमारे किशोर-किशोरियों को भारतीय संस्कृति का सुन्दर परिचय देने के साथ-साथ उनके मानसिक, प्राणिक तथा भौतिक क्षेत्रों को भी विकसित करने में पूरी मदद करती हैं। इस सारे कार्यक्रम ने लोगों को भारतीय संस्कृति के मूल्य और उसकी आत्मा को एक नये प्रकाश में दर्शाया। कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नडियाद (गुजरात) शाखा ने १ अप्रैल २००१ को श्रीअरविन्द के पवित्र देहावशेष की स्थापना-दिवस की जयन्ती मनायी। इस अवसर पर श्रीमती ज्योतिबेन थानकी भक्ति पर बोलीं, उन्होंने 'दिव्य संस्पर्श' नामक गुजराती पुस्तक का विमोचन भी किया जिसके लेखक हैं श्री किरीट ठक्कर।

घोषणाएं

सोसायटी का वार्षिक अधिवेशन सोसायटी के बीच ऑफिस में पांडिचेरी में १२, १३ तथा १४ अगस्त को होगा जिसकी सूचना आपको पिछले अंक में दी जा चुकी है, लेकिन कृपया ध्यान दें कि अगस्त २००१ में श्री नाडकर्णी द्वारा संचालित सावित्री अध्ययन सत्र इस वर्ष किन्हीं अपरिहार्य कारणों से नहीं हो पायेगा।

श्रीअरविन्द भवन, ११०, गंगाधर चेट्टी रोड, उलसूर, बैंगलोर—३६००४२ में स्थित श्रीअरविन्द सोसायटी की शाखा में एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो वहां की अतिथिशाला, रसोई इत्यादि की व्यवस्था का कार्यभार संभाल सके। कृपया विस्तृत जानकारी के लिये शाखा के सेक्रेटरी श्री एम. एम. भट्टाचार्यजी से सीधा पत्र-व्यवहार करें।

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा..... .... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Entered in Barcode

Signature with Date
10/5/08

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri